जैन आगमसाहित्यमां गुजरात



संशोधन प्रन्थमाळा-प्रन्थांक ८ मो

रोठ पूनमचंद करमचंद कोटाचाळा-ग्रंथमाला ग्रं. १ शेठ भोळाभाई जेशिंगभाई अध्ययन-संशोधन विद्यासवन

जैन आगमसाहित्यमां गुजरात

लेखक

डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा, एम. ए., पीएच. डी. अध्यक्ष, गुजराती विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा; गुजराती अने अर्थमागधीना मृतपूर्व अध्यापक, भो. जे. विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद

गुजरात विद्यासभाः अमदावाद

प्रकाशक:
रसिकलाल छो. परीख,
अध्यक्ष-भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन,
गुजरात विद्यासभा,

मद्र, अमदावाद

भावृत्ति पहेली

वि. सं. २००८

प्रत ५००

ई. स. १९५२

को. रू पांच

मुद्रक: जयन्ती घेलाभाई दलाल, वसंत प्रिन्टिंग प्रेस, घीकांटा रोड, सिबिल होस्पिटल सामे, घेलाभाईनी वाडी, अमदावाद

निवेदन

गुजरात विद्यासमाना भो. जे. अध्ययन—संशोधन विद्यामवनमां जे संशोधन—प्रंथो तैयार करी प्रकट करवामां आवे छे तेनुं एक अंग जुदा जुदा धर्मो अने संप्रदायोनुं साहित्य संशोधननी शास्त्रीय दृष्टिए तैयार कराववानुं छे. आ कार्यमां शेठ पूनमचंद करमचंद कोटावाळा ट्रस्टना वहीवटदारो शेठश्री प्रेमचंद क. कोटावाळा अने शेठश्री भोळाभाई जेशिंगभाई एमणे आ संस्थाने नीचे जणावेली शरते जैन साहित्यना ग्रंथो तैयार करी प्रकट करवा दान कर्युं छे. ए माटे भो. जे. विद्याभवन ट्रस्ट एमनुं आभारी छे.

शरत

"जैन संस्कृतिनां तमाम अंगोनुं—जेमके द्रव्यानुयोग आदि "चार अनुयोगोनुं, तेमज काव्य शिल्प कळा इतिहास आदिनुं "साहित्य तैयार करावो प्रकट करवुं. आमां मूळ संस्कृत "प्राकृतादि प्रंथोनां शिल्प आदिना सचित्र इतिहास वगेरेनो "समावेश करवो."

उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग अंगे संशोधननी योजना विचाराती हती त्यारे गुजरातना इतिहासने महत्त्वनुं स्थान आपवामां आव्युं हतुं. उपलब्ध साधनोने आधारे इतिहासने फलित करवानुं काम अने नवां साधनोने उपलब्ध करवानुं काम—ए वे कार्यदिशाओ स्पष्ट हती. पहेली दिशामां थयेला कामनी नोंघ लेतां जणायुं के ई. स. १८५६ मां प्रकट थयेल रासमाळा अने ई स. १८९६ मां प्रकट थयेल रासमाळा अने ई स. १८९६ मां प्रकट थयेल गुंधे १—खंड ए १ वे अंग्रेजीमां लखायेला ग्रंथोनुं हजी पण महत्त्व ले. रासमाळानो गुजराती अनुवाद गुजरात विद्यासभाए १८६९—७० मां प्रकट कर्यों हतो. गेझेटियर उपरथी गुजरातनो

इतिहास रेखा ह्रपे आ ज संस्थाए १८९८ मां प्रकट कर्यों हतो. आ अरसामां जे नवी सामग्री एकठी थती हती तेनो उपयोग करी अने पहेलां संगृहीत थयेली सामग्रीनो नवेसरथी विचार करी इतिहास लखवाने अवकाश हतो; अने तेथी आ संस्थाए १९३७-३८ मां 'गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास ' वे भागमां प्रकट कर्यों; अने १९४५ मां 'गुजरातनो सांस्कृतिक – इतिहास '-इस्लामयुग-पहेलो भाग प्रकट कर्यों. ए पञी १९४९ मां प्रो. अबुझफर नदवीना उर्दूमां लखेला गुजरातना इतिहासना १ ला खंडनो अध्यतन अनुवाद २ भागमां प्रसिद्ध कर्यों.

प्रो. कोमिसेरियेटे अंग्रेजीमां गुजरातनां मुस्लिम राज्योनो इतिहास १९३८ मां स्वतंत्र रीते प्रकट कर्यो

गुजरातनां साधनोने शोधी अने एना उपरथी मुस्लिम राज्य पहेलांना इतिहासनो पहेलो खरहो तैयार करवानो यश स्व. हा. भगवानलाल इंद्रजीने ले; अने मुस्लिम राज्योनो इतिहास लखवामां सुरतवासी खा. सा. फझलल्लाह ल्रुगुल्लाह फरीदीनी मोटी मदद हता, एम गेझेटियर उपरथी जणाय ले. स्व. रणलोडमाई उदयरामे 'रासमाळा 'नो अनुवाद करतां अनेक सुवारावधारा अने पूर्तिओ मूळ प्रथमां उमेर्यों हतां. प्रो. होडीवाळा अने प्रो. कोमिसेरियटे मुस्लिम राज्योना समयना इतिहास माटे घणी सामग्री संशोधित करी ले. श्री. दुर्गाशंकर शालीए गुजरातनो राजपूत युगनो इतिहास लखतां तमाम सामग्रीनो लगभग उपयोग कर्यों ले; अने हमणां ज नवी आहत्तिनी तैयारी करी अत्यार सुधीनां नवां संशोधनोनो पण समावेश करी आप्यों ले, जे हवे पळी थोडा ज समयमां प्रसिद्ध थशे. "काव्यानुशासन" नो उपोद्धात लखती वेळा पुराणकाळथी लई सोलंकोओना समय सुधीनां यावदुपलब्ध साधनोना बळ उपर मारा तरफथी पण

विशेष स्वरूपे विचारणा करवामां आवी हती. श्री. रत्नमणिराव भीमराव गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास लखतां काईपण ज्ञानसाधन रही न जाय एनी तकेदारी राखे छे. श्रो. अबुझफर नदवीए पण मुस्लिम बधां साधनोनो उपयोग करी सांस्कृतिक इतिहास लखी राख्यो छे.

सामग्री उपरथी इतिहासने फल्रित करवानी दिशामां पिष्टपेषण करतां विशेष प्रगति करवी होय तो हवे नवां साधनोनी शोध करवानो अने एने उपलब्ध करवानो प्रयत्न थवो जोईए एम लागवाथी संशो-धन विभागे प्रारंभमां आ बीजी दिशामां कार्यक्रम योज्यो. १९३३ मां आचार्यश्री मुनि जिनविजयजीए गुजरात साहित्य सभाना मानाई सम्य तरीके प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक इतिहासनी साधनसामप्री उपर विचारप्रेरक अने वृत्तिप्रेरक व्याख्यान आप्युं हतुं. ए मार्गे पोते असाधारण श्रम उठावी कार्य करे छे अने सिंघी जैन प्रंथमाळामां अने ए पूर्वेनां एमनां प्रकाशनोमां पोते संशोधित संगृहीत सामग्री प्रकट कर्ये जाय छे. संशोधन विभागनी योजनामां वे खाणोमांथी साधनो वहार काढवानो अमारो कार्यक्रम ए ज दिशामां वीजो फांटो छे. एक खाण ते हुराणो अने बीजी जैन आगमो-निर्युक्तिओ-भाष्यो-चूर्णिओ. आ बंने आकरोमां इतिहासनां साधनो माटे जे 'खोदकाम' थवुं जोईए ते थयेछं नहि; एथी आ दिशामां भो. जे. विद्याभवन तरफथी आदरवामां आवेली प्रवृत्तिना प्रथम फळ तरीके अध्यापक उमाशंकर जोबीए तैयार करेल **पुराणोमां गुजरात** ए ग्रंथ १९४६ मां प्रसिद्ध करवामां आव्यो, त्यारे बीजुं फळ ते आ जैन आगम-साहित्यमां गुजरात प्रसिद्ध थाय छे.

जैन आगम साहित्यमांनु लगभग पांच छाख श्लोक पूर संस्कृत प्राकृत साहित्य जोई वळी स्थळप्रतीको तारववानुं भिन्न भिन्न आगमो—अने ए उपरना साहित्यमांना उल्लेखोने एकत्रित करवानुं, एक स्थळनां अने एक ज व्यक्तिनां जुदां जुदां नामोने एक स्थाने समाववानुं, अने एक ज नाम धरावतां जुदां जुदां स्थळो अने व्यक्ति-ओने अलग अलग पाडवानुं इत्यादि काम घणी धोरज चीवट अने श्रीणवट मागी ले ले. आ दरेकने अवतरण प्रमाणीथी पुष्ट करी प्रत्येक विगतने एना प्राप्य प्रामाणिक स्वरूपमां नोंधवानुं विपुल-श्रमसाध्य कार्य प्रो. डा. मोगीलाल सांडेसराए साध्युं ले. आम करती वेळाए भिन्न मिन्न विद्वानोए रज् करेला मतो अने प्रमाणोनी विवेचनपूर्वक समालोचना करी शक्य होय त्यां पोतानो मत आ विद्वान संशोधके प्रमाणपुरःसर रज् कर्यों ले.

आ कीमती प्रन्थ **पूनमचंद क. कोटावाळा ट्रस्ट्**नी सहायथी प्रसिद्ध थाय छे, तेथी अहीं एनी सविशेष साभार नींघ घटे छे

ता. १-':-'५२ भद्र, अमदावाद रसिकलाल छो. परीख अध्यक्ष, भो. जे. विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा

प्रास्ताविक

गुजरातना इतिहासने लगती सामग्रीना साधनप्रनथो तैयार कराववानी गुजरात विद्यासभानी योजना अनुसार, 'पुराणोमां गुजरात'- ना अनुसंधानमां आ 'जैन आगमसाहित्यमां गुजरात 'तैयार थयेल छे. जैन साहित्य अने तेमां ये जैन आगमसाहित्यमुं शास्त्रीय दिष्टि- कोणथी अध्ययन अने संशोधन हजी बाल्यावस्थामां छे; ए साहित्यनी तथा एनी साथे संबंध धरावती परंपराओ तथा अनुश्रुतिओनी अनेक रीते तपास हजी हवे करवानी छे, अने ते कारणे, प्राचीन भारतीय संस्कृतिना अभ्यास माटे विविध दृष्टिए नवीन लागती माहिती तथा संशोधनना अनेक कोयडाओना उकेल माटे प्रयत्न करवा प्रेरे एवा रसप्रद मुद्दाओ एमांथी प्राप्त थाय छे. आ प्रन्थमां आगमसाहित्यमांथी मळती प्राचीन गुर्जर देशना राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहासना अभ्यासमां उपयोगी थाय एवी, भौगोलिक स्थळो, व्यक्तिविशेषो तथा अन्य विषयो—' नेम्स अन्ड सब्जेक्ट्स '—ने लगती सामग्री सूचिना रूपमां संकलित करी छे.

प्रारंभमां आपणे ए जोवुं जोईए के 'जैन आगमसाहित्य' एटके छुं. साहित्यरसिकोमां पण केटलीक वार 'जैन साहित्य' अने 'जैन आगमसाहित्य' ए बन्नेनी भेदरेखा परन्वे एक प्रकारनो संस्रम प्रवर्ते छे एम जोवामां आन्युं छे. 'जैन साहित्य' एटके जैनो द्वारा रचाये छं साहित्य, जेमां जैन धार्मिक विषयो उपरांत विविध बिनधार्मिक विषयो उपर पण जैनोए संस्कृत, प्राकृत, अपभंश तथा प्रादेशिक भाषाओमां रचेला साहित्यनो समावेश थाय छे. प्राचीन भारतीय वाङ्मयना लिखत तेमज शास्त्रीय तमाम प्रकारोना नमूनाओ आपणने जैन साहित्यना प्राप्त थाय छे. 'जैन आगमसाहित्य' एटके जैनोना मूल धार्मिक प्रत्थों—'स्किप्चर्स' अथवा 'केनन '-तथा ते उपरनुं भाष्यानक अने

टीकात्मक साहित्य. अर्थात् 'जैन आगमसाहित्य 'नो समावेश 'जैन साहित्य 'मां थई जाय छे.

११ अंग (मूळ १२ अंग, पण एमांनुं बारमुं अंग 'दृष्टिवाद' छुन्त अई गयेछं होवाथी ११ अंग), १२ उपांग, ६ छेदस्त्र, ४ मूछस्त्र, १० प्रकीर्णक, तथा 'अनुयोगद्वार सूत्र' अने 'नंदिस्त्र' ए २ छूटां स्त्रो मळी कुछ ४५ आगमप्रन्थो गणाववामां आवे छे. बीजी एक गणतरी अनुसार ८४ आगमो पण छे. अहीं ४५ आगमवाळी गणतरी अनुसारना प्रन्थो छीघा छे.

उपर कह्युं ते प्रमाणे, 'आगमसाहित्य 'मां मूछ आगमप्रन्थो उपरांत ते उपरना तमाम टीकात्मक साहित्यनो समावेश थाय हो. टीकात्मक साहित्य चार प्रकारनुं छे: निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि अने वृत्ति. मूल प्रन्थो तथा ते उपरनां आ चतुर्विध विवरणोनो अर्थ एकसामटो व्यक्त करवा माटे केटलीक वार 'पंचांगी' शब्दनी प्रयोग करवामां आवे छे. मूल आगमग्रन्थो आर्ष प्राकृत भाषामां छे. जे सामान्य व्यवहारमां 'अर्धमागधी' कहेवाय छे. आगमोने वीतराग-तीर्थकरनी वाणी गणवामां आने छे अने परंपरा प्रमाणे, ते गणधरभाषित अर्थात् सुधर्मा-स्वामी जेवा महावीरना गणधर अथवा पर्दाशध्य वडे व्याकृत छे. छतां भाषा, निरूपणरीति, शैली, गद्यपद्यना भेदो वगेरे अनेक रीते आगमोमां अनेक थरो माऌम पडे छे. 'नंदिसूत्र ', 'दशवैकालिक सूत्र ', 'अनुयोग-द्वार सूत्र ' अने ' प्रज्ञापना सूत्र ' जेवां आगमो तो जैन परंपरा प्रमाणे ज अनुक्रमे देवर्धिगणि क्षमाश्रमण, शय्यभवसूरि, आर्य रक्षितसूरि अने आर्थ स्थाम जेवा व्यक्तिविशेषोनी रचनाओ गणाय हो. भाषाकाय पृथक्करणना घोरणे ' उत्तराध्ययन सूत्र ' 'आचारांग सूत्र ' 'दशवैका-छिक सूत्र ' जेवा आगमग्रन्थोने सौथी प्राचीन गणवानुं विद्वानोनुं वलण छे अने एवा प्रन्थोनो संकलनासमय भगवान महावीरना निर्वागथी

झाझो अर्वाचीन निह होय एवं अनुमान थाय छे. पण एकंदरे जोतां, कोई निश्चित प्रमाण न होय तो आगमप्रन्थोने अमुक चोकस शता-व्दीमां ज मूकवानुं मुश्केल छे. वळी मगधमां, मथुरामां अने वलभीमां एम ज्ञण वार आगमोनी संकलना थई हती अने लेवटे ई. स. ४५४ मां वलभीमां वधां आगमो लेखाधिरूढ थयां हतां -ए बधा समय दरिमयान थयेलां भाषाकीय अने बीजां परिवर्तनो ध्यानमां राखवानां छे (जुओ आ प्रन्थमां देविद्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, वलभी, स्कन्दिल आर्थ, इत्यादि). आगमो अत्यार सुधीमां अनेक वार छपायां छे, पण तेओनी शास्त्रीय, समीक्षित वाचनाओ हजी तैयार थई नथी, ए पण एक मुश्केली छे. आगमसाहित्य अने प्राचीन प्रन्थमंडारोना आजीवन सम्यासी प्रमुनिश्री पुण्यविजयजीए ए माटेना महाभारत कार्यनो प्रारंभ थोडांक वर्ष पहेलां कर्यों छे अने आपणे आशा राखीए के आपणने नजदीकना भविष्यमां आगमोनी तथा ते उपरना तमाम टीकात्मक साहित्यनी समीक्षित वाचनाओ मळशे.

निर्युक्ति अने भाष्य ए मूल आगमप्रन्थो उपर प्राकृत गाथामां थयेलां संक्षित विवरणो छे. मुद्रित वाचनाओमां तेमज हस्तिलिखत प्रतोमां पण घणी वार निर्युक्ति अने भाष्यनी गाथाओ एटली मेळसेळ थयेली होय छे के तेमने निर्युक्ति अने भाष्य तरीके अलग करवानुं काम घणुं मुश्केल छे. चूर्णि ए प्राकृत गद्यमां—कोई वार संस्कृत अने प्राकृतना मिश्रण जेवा गद्यमां—मूळ प्रन्थोनुं विवरण छे. वृत्ति अथवा टीका ए संस्कृत गद्यमां थयेलां विवरणो छे. जूनामां जूनी उपलब्ध संस्कृत टीकाओ आठमा सैकामां थयेला आचार्य हरिभद्रसूरिनी छे. त्यारपछी शीलांकदेव, शान्तिस्रि, अभयदेवस्रि, द्रोणाचार्य, मलधारी हेमचंद्र अने मलयिरि जेवा महान आचार्योए प्रमाणभूत संस्कृत

अत्यारे केटलाक शिक्षितो वातचीतमां अर्धे देशी भाषामां अने अर्धे अंप्रेजीमां बोले छे, एना जेवं आ नथी?

टीकाओनी क्या परंपरा चालु राखी हती. आ परंपरा ओळामां ओछुं भराढमा सैका सुधी चालु रहेली छे, अने कोई कोई दाखलामां ठेठ अर्वाचीन काळमां पण जैन आचार्योए आगमप्रन्थो उपर संस्कृत टीकाओ रचेली छे. संस्कृत टीकाओमां पण दृष्टान्तो, कथानको अने बीजां अवतरणो घणुंखरं प्राकृतमां आवे छे, जे प्राचीननर रचनाओमांथी शब्दशः लेवायां हशे एवं अनुमान थाय छे. मुकाबले अर्वाचीन काळमां रचायेली संस्कृत टीकाओ पण आ तेमज बीजी अनेक रीते प्राचीनतर परंपराओनी ऋणी छे अने ए कारणे एमनुं मूल्य ते ते समयमां रचायेला बीजा सामान्य प्रन्थोनी तुलनाए घणुं वधारे छे.

बत्रीस अक्षरनो एक श्लोक ए गणतरी प्रमाणे तमाम उण्लब्ध जैन आगमसाहित्य आशरे साडाछ लाख श्लोकप्रमाण छे. सने १९४३ ना जुलाईमां गुजरात विद्यासभाना अनुस्नातक अने संशोधन विभागमां (हवे शेठ भो. जे. विद्यासवनमां) अध्यापक तरीके हुं जोडायो त्यारथी आगमसाहित्यमांथी प्राचीन भारतना सांस्कृतिक अभ्यास माटेनी सामग्री संकल्तित करवानुं कार्य आरंभ्युं हतुं. लगभग तमाम मुद्रित आगमसाहित्य—जेनुं प्रमाण आशरे सवापांच लाख श्लोकप्रमाण करतां कंईक वधारे थाय छे—सने १९५० सुधीमां जोवाई गयुं. एमांथी प्राचीन गुर्जर देश तथा ते साथे संबंध धरावता विषयोनी माहिती अलग तारवीने आ ग्रन्थ तैयार कर्यों छे.

आशरे सवा लाख क्षोकप्रमाण जेटलुं आगमसाहित्य हजी अप्रसिद्ध छे. एमां केटलीक महत्त्वनी चूर्णिओ, टीकाओ अने थोडाक मौलिक प्रन्थोनो पण समावेश थाय छे. एमांथी मळती सामप्रीनुं प्रकाशन आ पुस्तकनी पूर्तिरूपे करी शकाय.

भगवान महावीरनुं जन्मस्थान तेमज प्रवृत्तिक्षेत्र मगध हतुं; जैन श्रुतनी संकलना माटे सौ पहेलो परिषद पण मगधना पाटनगर पाटलि- ,पुत्रमां वीरिनर्वाण पछी बीजी शताब्दीमां मळी हती. जैन आगमना मूळ प्रत्थो पण स्वामाविक रीते ज मगधमां रचायेळा छे. मुख्यत्वे आ कारणे आगमना मूळ प्रत्थोमां गुजरात विशे थोडा अछडता उल्लेखो मळे छे, अने ते पण मुख्यत्वे बाबीसमा तीर्थिकर नेमिनाथना जीवन अने यादवोना इतिहास साथे संबंध धरावे छे. प्राचीन गुर्जर देशमां रचायेछी टीकाचूर्णिओमांथी ज आपणने विशेष माहिती प्राप्त थाय छे.

वळी आ पुस्तकमां संकिलत थयेली सामग्री जेम प्राचीनतम मूल प्रन्थोमांथी छे तेम १७ मा--१८ मा सैकामां रचायेली टीकाओ-मांथी पण छे. अमुक वस्तु जे रचनामांथी मळे छे ते रचना (मात्र मूल आगमोना अपवादने बाजुए राखतां) कया समयनी छे तेनी नोंध संदर्भसूचिमां करी छे, जेथी वाचकने कालानुक्रमनो ख्याल आवे. ज्यां चोकस साल नथी मळती, पण अनुमाने समय नक्की थई शके छे त्यां ए प्रकारनो उल्लेख कर्यों छे.

जैन आगमसाहित्यमां गुजरात. "पण गुजरात एटले ! गुज-रातनी सीमाओ तो समये समये बदछाती रही छे. वळी एक चोक्कस प्रदेशने आपणे अभ्यासिवपय बनावीए तोपण तेने पूरी रीते समजवा माटे आजूबाजूना प्रदेशोनो पण परिचय आपणने होतो जोईए. एटले, आ पुस्तकमां, आजे आपणे जेने गुजरात नामे ओळखीए छीए ते प्रदेशनी सीमा उपर ध्यान केन्द्रित करवानी साथे साथे, आसपासना प्रदेशोना . . . उल्लेखोनो पण समावेश कर्यों छे.

" दूंकामां सूचवी शकाय के गिरनारना, ई. स. १५० ना, क्षत्रप राजा रुद्रदामाना, शिलालेखमां जे प्रदेशो गणावाया छे ते बधा ज प्रदेशोने आवरो लेबानो ख्याल राख्यो छे. अलबत्त, लंबाण राळवा माटे प्रधानगौणविवेक जाळववो पड्यो छे. आजना गुजरातमां परिसीमित थता प्रदेशोने अपायुं छे तेटलुं महत्त्व पडोशना ने दूरना

प्रदेशोने हमेशां आपी शकायुं नथी."

प्रत्येक अगत्यना विधान माटे मूळ साहित्यनो आधार आप्यो छे, जेथी अभ्यासीने ते ते स्थान जोवानुं सरळ पडे. प्रन्थनुं शीर्षक सूचवे छे ते प्रमाणे निरूपण मुख्यत्वे जैन आगमसाहित्यमांथी प्राप्त थती सामग्रीने अनुलक्षीने कर्युं छे, छतां ए ज विषयोने लगती सामग्री अन्य साधनोमांथी अनायासे प्राप्त थई छे त्यां तेनो पण तुल्लनात्मक विनियोग कर्यों छे.

आ संकलनामां प्राचीन भारत तेमज प्राचीन गुर्जर देशना इतिहास परत्वे जे ज्ञातव्य वस्तुओं छे ते माटे जिज्ञास वाचकने प्रस्तुत विषयोनां शीषिको जोवा भलामण छे. पण एमांथी प्रधानपणे ऊपसी आवता केटलाक मुद्दाओं प्रत्ये आ प्रस्तावनामां ध्यान खेंचवानुं घटित जणाय छे.

सौ पहेलां जातिओ देशनाम अने स्थळनाम लईएः जातिओनां नाम उपरथी देशनाम पडेलां छे ए दृष्टिए बन्नेने साथे लेवामां एक प्रकारनुं औचित्य पण छे.

आभीर जातिनी वसाहतो, उत्तरोत्तर दक्षिण दिशामां खसती जती हती एवा 'पुराणोमां गुजरात ' (पृ. ४५) ना अनुमानने जैन आगमसाहि यमांथी स्पष्ट अनुमोदन मळे छे. आभीर देश दक्षिणा-पथमां हतो एवं विधान अहां छे, एटछं ज निह, पण आभीर देशनां जे नगरो अचलपुर, वेणातट, तगरा इत्यादि गणाव्यां छे ए पण दक्षिणापथनां छे (पृ. २०). आम छतां अन्यत्र पण आभीरो हता; जेमके कच्छमां आभीरो जैन-धर्मानुयायी होवानुं कह्युं छे (पृ. ५). 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी शीलांकदेवनी टीका प्रमाणे, शूदने खीजमां 'आभीर,' विणिकने 'किराट ' अने ब्राह्मणते ' डोड ' कहेता, ए सूचवे छे के शीलांकः

१. उमारांकर जोषी: 'पुराणोमां गुजरात', प्रास्ताविक, पृ. ११

देवना समय सुधीमां 'आभीर' शब्दनो अर्थ हलको बनी गयो हतो (पृ. २१).

मालव जाति प्राचीनतर अवंति जनपदने 'मालव' नाम आपवामां कारणभूत छे. ए जातिना लोको त्यां लंटफाट माटे अप्क्रमण करता, मनुष्योनुं अपहरण करता, अने तेमने गुलाम तरीके वेची देता (पृ. १३८-४०). आगमसाहित्यमां कविचत् ' मालव ' अने ' बोधिक ' जातिने अभिन्न गणी छे (पृ. १३८). एमने विशेनी प्रकीण माहिती टोकाओमांथी सारा प्रमाणमां मळे छे (पृ. १२०-२१). यादवो अने एमनी गणसत्ताक राज्यपद्धति विशे पण केटलुंक जाणवा मळे छे (पृ. ८७). कुशावते अने शौरिपुर वे हतां: एक उत्तरमां अने बीजुं पश्चिममां (पृ. ४९). नवां स्थानोने जूनां नामो आपवानुं स्थळान्तर करती जातिओनुं वल्लण एमां जणाय छे. आ नामोनो संबंध यादवोना स्थळान्तर साथे छे.

'बृह्कल्पसूत्र' (उद्देशक १, सूत्र ५०) अने 'निशीधसूत्र' जेवां छेदसूत्रोमांथी जाणवा मळे छे के भगवान महावीर ज्यारे साकेत नगरना सुभूमिभाग उद्यानमां निवास करता हता त्यारे तेमणे उपदेश कर्यो हतो के "निर्प्रन्थो अने निर्प्रन्थीओने पूर्वमां अंग—मगध सुधी, दक्षिणमां कौशांबी सुधी, पश्चिममां स्थूणा सुधी अने उत्तरमां कुणाला (उत्तर कोसल) सुधी विहार करवो कल्पे छे. एटलुं ज आर्थक्षेत्र छे. एनी बहार विहरवुं कल्पतुं नथी. पण एनी बहार ज्यां ज्ञान दर्शन अने चारित्र्यनी वृद्धि थाय त्यां विहरी शकाय. " ए पछी केटलीक

⁹ आ सूत्रनां अंतिम वे वाक्यो आ प्रमाणे छे: 'एताव ताव आरिए खेते णो से दृष्पइ एतो बाहिं। तेण परं जत्थ नाण-दंसण-चिरताइं उस्सप्पंति ति वेमि।' उपर में दरेलो अर्थ 'बृहत्कल्पसुत्र'ना टीकाकार आचार्य क्षेमकीर्तिने अनुसरीने छे. डा. जगदीशचन्द्र जैने एनो अर्थ जरा जुदी रीते द्वयों छे: 'इतने ही क्षेत्र आर्थ क्षेत्र है, बाकी नहीं, क्योंकि

शताब्दीओ बाद अशोकना पौत्र राजा संप्रतिना आश्रयथी जैन श्रमणो दूर दूरना प्रदेशोमां विचरवा लाग्या अने आन्ध्र, द्रविड, महाराष्ट्र अने कुडुक (कूर्ग) ज्यां पूर्वे साधुओ जता नहोता त्यां पण श्रमणोनो सुखविहार प्रश्नयों. ए समयथी नीचे प्रमाणे साडीपचीस आयंदेशो गणावा लाग्या, जेनो मोधम उल्लेख पण आगमसाहित्यमां वारंवार मळे छे: मगध (राजधानी राजगृह), अंग (चंपा), वंग (ताम्नलिति), किलंग (काचनपुर), काशी (वाराणसी), कोशल(साकेत), कुरु (गजपुर-हस्तिनापुर), कुशावर्त (शौरपुर), पांचाल (काम्पिल्यपुर), जांगल (अहच्लिश), सुराष्ट्र (द्वारवती), विदेह (मिथिला), वत्स (कौशांबी), शांडिल्य (नंदिपुर), मल्य (मिडिलपुर), मत्स्य (वैराट), वरणा (अञ्ला), दशाण (मृत्तिकावती), चेदि (शुक्तिमती), सिन्धु-सौवीर (वीतिभय), शूरसेन (मथुरा), मंगि (पावा), वद्दा (मासपुरी), कुणाला (श्रावस्ती), लाड (कोटिवर्ष), केकयीनो अर्धभाग (श्वेतिका).

आ स्विमां आन्ध्र महाराष्ट्रादि प्रदेशोनो उल्लेख नथी ए ध्यान खेंचे छे. कोंकण के ज्यां जैन साधुओ विचरता हता एनं नाम पण एमां नथी. गुजरात अने राजस्थानना जे प्रदेशो पाछळथी जैन धर्मनां प्रमुख केन्द्रो बन्यां ए पण एमां नथी. पण एकंदरे एम कही शकाय के संप्रतिना राज्यकाळ पछीना समयमां भारतमां जैन धर्मना प्रभावनो सर्वसामान्य नकशो ए रजू करे छे.

इन्हों क्षेत्रोमें निर्मन्थ भिक्षु और भिक्षुणियों के ज्ञान-दर्शन और चारित्र अक्षुण्ण रह सकते हैं। '('भारत के प्राचीन जैन तीर्थ, 'पृ. १४). ज्ञान दर्शन अने चारित्र्यनी वृद्धि थती होय तो 'अर्थक्षेत्र 'नी बहार विहार थई शके एवो प्राचीन टीकाकारेगों अर्थ मने संगत लागे छे. 'आर्यक्षेत्र 'नी सामाजिक स्थिति जैन साधुओना कडक आचारपालनने अमुकूळ हती; पण जेम जेम अन्य प्रदेशोमां जैन धर्मनो प्रचार थयो तेम तेम विहारक्षेत्रनो विस्तार पण वध्यो.

हिन्दुस्तान माटे 'हिन्दुग देश''एवुं नाम ई. स. ना सातमा शतक आसपासनी 'निशीथ सूत्र'नी चूर्णिमां मळे छे (पृ. २१८). अत्रत्य साहित्यमां आ नामना आटला प्राचीन उल्लेखो विरन्न छे.

गृहस्थो रहेता होय एवां मकानोमां साधुओ रहे ए वस्तु कच्छमां दोषरूप गणाती नहोती (पृ. ३२) ए बतावे छे के साधुओने रहेवा योग्य मकानो—उपाश्रयोनो त्यां अभाव हशे. मरु देशमां खनिज तेल होवानो निर्देश (पृ. १२६) ठेठ भाष्य जेटलो जूनो होई खूब अगत्य धरावे छे.

पालि साहित्यमां निर्दिष्ट अरिष्टपुर उपरांत महाराष्ट्रमां बोजुं एक अरिष्टपुर हतुं (पृ. ५). अर्कस्थली अने कालनगर ए बे आनंदपुरनां पर्याय नामो हतां (पृ. १४, १९). आनंदपुर कोई काले सूर्यपूजानुं केन्द्र हरो एवो तर्क करवाने 'अर्कस्थली' ए नाम प्रेरे छे. आनंदपुर नामे बोजुं एक नगर विन्ध्याटवी पासे हतुं (पृ. १९). ते उत्तर गुजरातना आनंदपुर—बडनगरथी भिन्न होवुं जोईए. श्रूरसेन जनपदना पाटनगर मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं (पृ. २३); जो के मथुराथी भिन्न एवुं इन्द्रपुर नामनुं अन्य नगर पण हतुं (पृ. २४). उत्तर मथुरा अने दक्षिण मथुरानो पृथक निर्देश छे (पृ. १२२, १९२). उत्तर मथुरा ते श्रूरसेन जनपदनी अने दक्षिण मथुरा ते महुरा क्षेमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को थई शमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्को वर्ष शमपुरा नथी. पादलिप्तना स्मरणार्थ थई होवानी अनुश्रुति छे (पृ. ९९). श्रीकृष्णना चरित्रवर्णन साथे संबंध धरावतुं शंखपुर ए उत्तर गुजरातनुं शंखेश्वर संभवे छे (पृ. १७३–७४). 'सूत्रकृतांग सूत्र 'नो शीलांक

९ ए तरफ केन्द्रीय सरकारना 'जियोलैं।जिकल सर्व्हें 'नुं ध्यान खंचवामां आव्युं छे अने ए खाताए आ माहितीनो साभार स्वीकार कयों छे ए नोंधवुं अप्रस्तुत नहि गणाय,

देवनी वृत्तिमां उद्भृत थयेला एक प्राकृत हालरडामांनुं नगर सिंहपुर ए सौराष्ट्रनुं सिंहपुर-शीहोर हरो के बनारस पासेनुं सिंहपुरी (प्. २०१) ए विचारवा जेवो प्रश्न छे. ए ज हालरडामां निर्दिष्ट हस्तकल्प के हस्तिकल्प ए निःशंक्रपणे भावनगर पासेनुं हाथब छे (पृ. २१५), जे एक काळे विशेष राजकीय अगत्य धरावतुं होत्रुं जोईए. कोसुंबा-रण्य ए दक्षिण गुजरातमां कोसंबा आसपासनो समृद्ध जंगलविस्तार छे (पृ. ५६-५७). जेनी आसपास धूळनो प्राकार होय एवा गामने ' खेट ' (प्राकृत ' खेड ') कहेता (पृ. ६१–६२). समय जतां ' खेट ' सामान्य नाममांथी विशेषनाम बनी गयुं, जेम के खेडा. जो के गुजराती, मराठी अने हिन्दी-पंजाबीमां 'खेडुं ', 'खेडें ' अने ' खेडा ' शब्द ' गाम 'ना सामान्य अर्थमां पण छे. ' खेट ' अथवा तेनो तद्भव जेमां अंगभूत होय एवां स्थळनाम पण अनेक स्थळे छे (पृ. ६१-६२). जल अने स्थल एम बन्ने मार्गोए ज्यां जई शकाय एवा नगरने 'द्रोणमुख 'कहे छे एना उदाहरण तरीके भरुकच्छ, ताम्रहिति अने स्थानक-थाणा आपवामां आवे छे (पृ. ७९, ११०, २११). कच्छमां 'दोण 'नामे एक गाम छे एनो व्युत्पत्तिगत संबंध द्रोणमुखमांना 'द्रोण' साथे हरो ! माळवाना दशपुर (मंदसोर) नगरनं नाम सिन्ध्-सौबीरना राजा उदायनना सहायक दश राजाओए ए स्थळे पडाव नाख्यो हतो तथा प्राकार बांध्यो हतो ए उपरथी पडचुं एवी अनुश्रुति नोंधाई छे (ृ. ८१–८२).

धर्मी अने संप्रदायो : बौद्धो अने जैनो वन्चे घणां स्पर्धा अने वादिववाद चालतां (पृ. ५९-६१, ६८-६९, १९५-९६). गुजरात अने राजस्थानमां जैनो उपरांत बौद्धोनी वसती सारा प्रमाणमां हती एवं साधार अनुमान थई शके छे. भरुकच्छमां एक बौद्ध स्तूप हतो. ए नगरमां जैनोना सुप्रसिद्ध अश्वाववोध तीर्थनो कवजो बौद्धोए लीधो हतो, ते खपुटाचार्ये छोडान्यो हतो. गोविन्दाचार्य नामे बौद्ध

मिक्षु जैन आचार्यने पराजित करवा माटे जैनोनी विद्या शीख्या हता, पण पछी पोते ज जैन थई 'गोविन्दिनर्युक्ति नि रचना करी हती (पृ. ६८–६९). मथुराना 'देविनिर्मित स्तूप' उपर बौद्धोए आधिपत्य जमान्युं हतुं, एनो कवजो मथुराना राजाए जैनोने पाछो सोंप्यो हतो (पृ. १२०–२१).

बौद्ध उपरांत अन्य मतोनी पण वात आत्रे छे. आर्थ रक्षितना मामा गोष्टामाहिले मथुरामां एक अक्रियाबदीने पराजित कर्यो हतो, पण पछी तेओ पोते ज अबद्धिक नामे निह्नव थया हता (पृ. ६९).

प्राचीन भारतना लोकधर्मोमां यक्षपूजा घणी लोकप्रिय हती. आनंदपुरमां यक्षनी अने नागविलकामां नागनी पूजा थती (पृ. ९४). मथुरामां भूतगुहा नामे व्यंतरगृह—यक्षायतन हतुं (पृ. १२२) अने द्वारका पासे नंदन उद्यानमां सुरिप्रय नामे यक्षनुं आयतन हतुं (पृ. २०३). सुराम्बर नामे यक्षनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं (पृ. २०३). भरुकच्छ पासेना गुडशस्त्र नामे नगरमां यक्ष साधुओने उपद्रव करतो एने खपुटाचार्ये शान्त कर्यो हतो (पृ. ५९). एक ब्राह्मणे 'मुल्लिस्सर' नामे व्यंतरनी उपासना करी होवानी कथा मळे छे (पृ. ११४). भरुकच्छथी उज्जयिनी जवाना मार्ग उपर आवेला नटिप्टक गाममां नागगृह हतुं (पृ. ९१). अर्थात् त्यां पण नागपूजा थती. अनेक नगरोना परिसरमां आवेलां उद्यानोमां यक्षायतनो हतां अने त्यां लोको यात्राए जता. एनां थोडांक उदाहरणो आपणे आगळ नोंधीछुं.

भरकच्छथी दक्षिणापथ जवाना मार्गमां 'महीगृह' नामनुं भागवतोनुं एक मन्दिर हतुं अने एमां 'मही'—बाणथी वींघायेही कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती (पृ. ५७. ११३-१४).

अग्निपूजकोनो उल्लेख पण क्विचित् आवे छे गिरिनगरमां एकः अग्निपूजक विणक दर वर्षे एक घरमां रत्नो भरीने पछी ए घर सळगावी

अग्निमुं संतर्पण करतो हतो. एम करतां एक बार आखुं नगर बळी गर्युं हतुं (पृ. ६६).

जैन आचारना इतिहासनी दृष्टिए अगत्यना पण एक वे उल्लेखों आ ग्रन्थमां छे. राय्यातर—बसित आपनार कोने गणवो ए संबंधमां लाटाचार्यनो मत नोधार्येलो छे (पृ. १६२—६३). लाटाचार्य, एमना नाम उपरथी, लाटना वतनी हरो एम अनुमान थाय छे. दशपुरनो राजा कदाच आर्थ रिस्तिन दीक्षा निह लेवा दे ए भयथी तोसलिपुत्राचार्य रिक्षितने लईने अन्यत्र चाल्या गया हता, ए जैन अनुश्रुति प्रमाणे पहेली शिष्यचोरी हती (पृ. ८०).

उद्यानो : जैन श्रमणो घणी वार नगरपरिसरमां आवेलां उद्यानोमां निवास करता. एटले हवे उद्यानी विशेना थोडाक उल्लेखो जोईए. इक्ष्मगृह उद्यान दशपुरमां आवेलुं हतुं. त्यां रहोने आर्थरिक्षते चातुर्मास कर्यों हतो (पू. २२). ए प्रदेशमां शेरडीनुं वावेतर थतुं हशे एवी अटकळ आ उद्यानना नाम उपरथी करी शकाय के कोरंटक उद्यान भरुकच्छना ईशान खूणे हतुं (पृ. ५५). कोरंटक अथवा कांटा-सेरियाना कमनीय छोडवाओ उपरथी आ उद्याननुं नामकरण थयुं हरी. उज्जयिनीना स्नपन उद्यानमां पण साधुओ ऊतरता (पृ. २११). ' स्नपन ' नाम, त्यां कोई स्नानागार हरो एवो, तर्क करवा प्रेरे छे. द्वारका पासे नंदन उद्यानमां सुरिप्रय यक्षनं आयतन हतुं ए आपणे उपर जोई गया. ए उद्यान द्वारकाने ईशान खुणे रैवतकनी पासे हतुं (पू. ९१). केटलांक सूत्रोमां रैवतकनो उल्लेख पर्वत तरीके छे, ज्यारे पछीना समयनी केटलीक टीकाओमां एनी उल्लेख उद्यान तरीके छे (पृ. १५७). सिन्धु-सौवीर देशना पाटनगर वीतिभयनी पूर्व-दिशामां मृगवन नामे उद्यान हतुं (पृ. १७०). सारनाथ पासेना उद्यानने पालि साहियमां 'मृगदाव ' कहेल छे ते साथे आ नाम

सरखावी शकाय. जैन तेम ज बौद्ध साहित्यमां बीजां अनेक उद्यानोनी उल्लेख छे.

उत्सवो : उद्यानोनी साथे उत्सवो पण संकळायेळा हता. 'संखडि' एटले उजाणी, आनंदपुरना लोको शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वती ना किनारे जई संखंडि करता (पृ. १९). प्रभासतीर्थमां अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखडि थती (पू. १५, १०६). मथुरामां भंडीर यक्षनी यात्रामां लोको गाडां जोडीने जता (पृ. ३३, ११९). कुंडलमेंठ नामे व्यंतरनी यात्रामां भरुकच्छना लोको संखडि करता (पृ. ४४, ११०-११). छाटदेशमां गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल-संखिंड नामे उत्सव थतो (पृ. १६१). एनुं बीजुं नाम भूमिदाह हतुं. ए उत्सवनं वर्णन मळतुं नथी, पण कोंकणादि देशोमां गिरियज्ञ नामे उत्सव दररोज संध्याकाळे थतो होवानो उल्लेख अन्यत्र छे (पृ. ५३), ते ए ज हरो एवुं अनुमान थाय छे. महाराष्ट्रमां भादरवा सुद पडवाने दिवसे श्रमणपूजानो उत्सव थतो, एमां लोको साधुओने वहोरावीने अद्वमना उपवासनुं पारणुं करता (पृ. १३५). उज्जयिनी, माहेश्वरी, श्रीमाल वगेरे नगरोना लोको उत्सवप्रसंगोए एकत्र थईने मदिरापान करता. ए मदिरापान करनाराओमां ब्राह्मणीनो पण समावेश थतो (पु. २०).

रीतिरवाजो: जैन साधुओ आखा देशमां पगे चालीने पर्यटन करता. चोमासाना चार महिना बाद करतां बाकीना आखा ये वर्षमां मोटा मागना साधुओ सतत परित्रजन करता. 'बृहत्कल्पसूत्र'ना भाष्यमां 'जनपदपरीक्षा ' प्रकरणमां कह्युं छे के जनपदिवहार करवाथी साधुओनो दर्शनविद्युद्धि थाय छे. एमां साधुओने विविध देशोनी भाषाओमां कुशल बनवानुं कह्युं छे, जेथी तेओ लोकोने एमनी पोतानी

ज भाषामां उपदेश आपी शके. वळी विविध प्रदेशोना रीतरिवाजो अने दैशिक परिस्थितिथी माहितगार थवानं पण सूचन एमां करेलुं छे. आ बधां कारणे भारतवर्षना विविध प्रदेशोना रीतरिवाजोने लगती प्रकीर्ण पण मूल्यवान सामग्री आगमसाहित्यमांथी प्राप्त थाय छे ए प्रकारना थोडाक लाक्षणिक उल्लेखो अहीं जोईए: क्रोंकणवासीओ पुष्प अने फळनो प्रचुर प्रमाणमां उपयोग करता. उत्तरापथ अने बाल्हिकना लोको सक्त खाय छे तेम कोंकणवासीओ 'पेज्जा' (सं. पेया) अर्थात चोखानी राब हे हो. त्यां भोजनना प्रारंभमां ज राब अपाय हे (पृ. ५२). अत्यारे पण कोंकणमां मुख्य खोराक चोखा छे ते आ साथे घ्यानमां राखवानुं छे. सोपारकना वे श्रावकोमां एक शाकटिक (गाडुं चलावनार) अने बीजो वैकटिक (दास्त गाळनार) हतो (पृ. १८५-८६). ए बतावे छे के वैकटिको बहिष्कृत नहोता. पडोशना महाराष्ट्रमां पण कलालो बहिष्कृत गणाता नहोता; एटछं ज नहि. पण एमनी साथे बीजाओ भोजन लई शकता (१. १३५). जो के दक्षिणापथमां कलाल अने लोहकार जात्यधम गणाता (प्र. १६०), महाराष्ट्रमां मद्यनी दुकानमां मद्य होय के न होय, पण तेनी उपर ध्वज फरकाववामां आवतो, जे जोईने मिक्षाचर आदि त्यां जता नहि (पु. १३४). जे प्रकारना स्त्रीओना पहेरवेशने लाटवासीओ 'कच्छ ' कहेता एने महाराष्ट्रीओ ' भोयडा ' कहेता. स्त्रीओ बाल-पणथी मांडी छप्न थया बाद सगर्भा थतां सुधी कच्छ बांधती. सगर्भा शया पछी भोजन करवामां आवतुं, स्वजनोने बोलावी वस्र पाथरवामां आवतं, अने ए समयथी कच्छ बांधवानं बंध थतुं (पृ. १६०). मरुस्थल आदि रेताळ प्रदेशोमां मार्ग मूलो न जवाय माटे मार्गमां कीलिकाओ ठोकवामां आवती एवा उल्लेखो छे (प. १२४). मरुस्थलना पहेरवेशने लगती पण केटलीक रसिक माहिती मळे छे (पु. १२५). करोडपतिओ महोत्सव प्रसंगे पोताना मकान उपर कोटिपताका चडावता (पृ ६४). 'कोटिध्न ' तथा एमांथी व्युत्पन्न थयेला गुजराती सब्द 'कोटिधन ' नो संबंध आ साथे जोडाय छे. सतीनो रिवान कोई काळे चौलुक्योमां विशेष प्रचलित हशे एम एक सुभाषित उपरथी लागे छे (पृ. ७१-७२). आ उपरांत आभीर, मालव आदि जातिओ; आनंदपुर, डिंभरेलक, ताम्र-लिप्ति, द्रीप, मथुरा आदि नगरो तथा कोंकण, बन्नासा (बनास नदी) आसपासनो भाग, महाराण्ट्र, लाट, सिन्ध, सुराष्ट्र आदि प्रदेशोनी विशिष्टताओ तथा लाक्षणिक रीतरिवान माटे आ प्रन्थनां ते ते शीषको जोवा विनंति छे.

वाणिज्य : वाणिज्य विशे पण केटलीक अगत्यनी माहिती मळे छे. त्रिभुवननी सर्व वस्तुओ जेमां मळे एवा वस्तुभंडारो-' कुत्रिका-पण'—विशेना उल्लेखो खास ध्यान खेंचे छे. उज्जयिनी अने राजगृह जेवां प्राचीन भारतनां महान नगरोमां एवा भंडारो हता. एमां वस्तुनुं मूल्य खरीदनार व्यक्तिना सामाजिक दरज्जा प्रमाणे लेवामां आवतुं ए वात खूब रसप्रद छे (पृ. २६—२७, ४४—४५). कुत्रिकापण साथे संबंध धरावती केटलीक लोककथाओ नौंबायेली छे (पृ. ११२, ११५—१६) ए बतावे छे के लोकमानसे एनी स्पृतिने केवी रीते संघरी हती. भरकच्ल पासेनुं मूततडाग कुत्रिकापणमांथी खरीदायेला एक मूते बांध्यं हतुं एवी अनुश्रुति छे.

वेपारना एक मथक तरीके 'द्रोण गुख'नी व्याख्या उपर स्थळनामोनी चर्चा करतां आपी छे. वेपारनु केन्द्र होय एवा नगरने 'पत्तन' पण कहेवामां आवतुं. 'पत्तन' बे प्रकारनां होयः ज्यां जलमार्गे माल आवे ते जलपत्तन, जेमके द्वीप (दीव) अने काननद्वीप; ज्यां स्थळमार्गे माल आवे ते स्थलपत्तन, जेमके मथुरा अने आनंद्पुर, केटलाक टीकाकारोप प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन' अने 'पत्तन' एवां वे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बेना जुदा अर्थ आप्या छे (पृ. ९७).

मालव जातिना लटाहओं मनुष्यनुं हरण करीने एमने गुलामों तरीके वेचता ए उपर कहुं छे. गिरिनगरनी त्रण स्त्रीओं उज्जयंत उपर गई हती त्यारे चोरों एमनुं हरण करी गया हता अने पारसकूल — इरानी अखातना किनारा उपर तेमने वेची हती (पृ. ६६). भरुकच्छमां आवेला एक परदेशों वेपारीए कपटी श्रावकपणुं घारण करीने केटलीक रूपवती साध्वीओने वहाण उपर बोलावी एमनुं हरण कर्ये हतुं (पृ. ११२). मथुरामां 'देवनिर्मित स्तूप'नो महिमा करवा माटे केटलीक श्राविकाओं साध्वीओनी साथे गई हती एमनुं हरण करवानो प्रयास बोधिक जातिना लटाहओं ए कर्यों हतो, पण एक साधु जेओ पूर्वाश्रममां राजपुत्र हता, तेओए एमने छोडावी हती. (पृ. १२१) आ बधा उल्लेखों गुलामोना वेपार उपर प्रकाश पाडे छे. जैन सूत्रोमां अन्यत्र (दा. त. 'राजप्रक्षीय,' सू. ८३, पृ. १४७) जुदा जुदा देशोमांथी आवेली दासीओनो यादी आपी छे एमांथी पण जगतभरमां व्यापेला गुलामोना वेपारनुं सूचन थाय छे.

वेपारीओनी प्राचीन 'श्रेणी'ओ (guilds) ने लगतो एक महत्त्वनी अनुश्रुति मळे छे. सोपारक ए भारतना पश्चिम किनारे वेपारनुं मथक हतुं अने आ अनुश्रुति प्रमाणे, त्यां वेपारीओनां पांचसो कुटुंबो हतां. ए वेपारीओनुं एक महाजन हतुं. ए महाजन पासे पोतानी कचेरी अने एमां मोटुं सभागृह हतुं, जेमां पांचसो प्तळीओ हती. अर्थात् ए सभागृह शिल्पकलानी दृष्टिए पण नोधपात्र हशे. एमनो माफ थ्येलो कर राजाए छेवा धार्यो ए सामे विरोध करतां बधा वेपारीओ मरण पाम्या, ए वस्तु जूनां महाजनोना संगठनना प्रतीक जेवी छे (पृ. २०८). उज्जयिनीमां एक बार मोटी आग लागी हती अने नगरनो घणो भाग बळी गयो हतो त्यारे जे वेपारीओए नगरनी बहार वखारो राखी हती तेमणे पोताना मालनां अनेकगणां नाणां उपजाव्यां हतां (पृ. २८) ए वात पण ध्यान खेंचे एवी छे.

त्रण दिशाए समुद्रथी वींटायेल सौराष्ट्रमां बहोळो वेपार चालतो हतो. (पृ. २०४).

प्राचीन सिकाओ विशे ठीक माहिती मळे छे. सिकाओनुं नानुं सरखुं कोष्ठक आपेछुं छ अने एक प्रदेशना सिकानी बीजा प्रदेशना सिकामां केटली कीमत थाय ए पण केटलाक दाखलामां जणावेछुं छे (पृ. ८९, १८०-८१). 'कािकणी' एक नानो सिकाे हतो अने एनुं मूल्य वीस कोडी बराबर थतुं. पण राजपुत्रोना संबंधमां प्रयोजाय त्यारे 'कािकणी' शब्दनो अर्थ 'राज्य' थतो ए नोधपात्र छे (पृ. ३४, ४३). चक्रवर्तीनां रत्नोमां कािकणीरत्ननो पण समावेश थतो ते उपरथी एम हशे ?

स्थापत्य अने कला: अर्धमागध ए स्थापत्यनो एक विशिष्ट— कदाच मिश्र—प्रकार हरो एम लागे छे (पृ. १५) अर्धमागधी भाषानी जेम ! अभिनयने घंघा तरीके स्वीकारनार नटोनां जुदां गाम हतां एम रोहकनी वार्ता बतावे छे (पृ. २८). नटिपटक गाममां (पृ. ९१) नटोनी वस्ती हरो एम एना नाम उपरथी कल्पना थाय छे. कोकास अने एनां यंत्रकपोतोनुं कथानक (पृ. ५०—५१) प्राचीन भारतमां यंत्रकलाना अभ्यास माटे जोवा जेवुं छे. 'राजप्रश्रीय सूत्र'मां नृत्य अने संगीत विशे विस्तृत अने 'अनुयोगद्वार सूत्र'मां संगीत विशे संक्षिप्त निर्देशो छे ते आ विषयना अभ्यास माटे घणा उपयोगी छे; जो के आ पुस्तकनी मर्यादामां एनो समावेश थई सक्यो नथी.

विद्याध्ययन : प्राचीन विद्याध्ययननी घण। अगत्यनी परंपराओ--खास करीने जैनोने संबंग छे त्यांसधी-आगमसाहित्यमां सचवायेली छे. वेदोना परंपरागत संक्रमणनी जेम आगमोनां संकलन अने संगोपननी पाछळ स्मृति अने बुद्धिना महान पुरुषार्थो रहेला छे. प्राचीन काळथी मांडी आगमवाचना (पृ. ८३, ८४, ९४) ए गैंभीर अध्ययनने पात्र विषय छे. आगमोनी रचना पूर्व भारतमां थई, पंग ए छेखाधिरूढ पश्चिम भारतमां थयां ए पण जैन धर्मना इतिहास अने तेनां दशान्तरो माटे एक नौधपात्र हकीकत छे, मध्यकाळमां गुजरातनी संस्कारितानुं तेमज गुजरातमां जैन धर्मनुं प्रमुख केन्द्र अणहिलवाड पाटण हतुं. आचार्य हरिभद्रनी टीकाओ सिवाय आगमो उपरनी बधी मुख्य टीकाओ अणहिलवाड के आसपासना प्रदेशमां रचायेली छे (पृ. ८-९). आगमोना विवेचनमां रोकायेला पंडितो परस्पर सहकारथी कार्य करता हता. नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरिनी टीकाओनी सहाय विना पछीना काळमां गमे तेवा प्रकांड पंडित माटे पण आगमोना अर्थो समजवानं मुक्केल थई पडत. एमनी ए टीकाओनं शोधन दोणाचार्ये कर्युं हतुं (पृ १०-१२). द्रोणाचार्यनी सहायमां एक पंडित-परिषद हती. द्रोगाचार्य ए पाटणना चौछन्य राजा भीमदेव पहेलाना मामा हता अने तेमणे पोते 'ओधनिर्युक्ति ' उपर टीका रची इती (पृ. ८३). 'आचारांग सूत्र ' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र ' उपर टीकाओ लखनार शीलाचार्य अथवा शीलांक ते पाटणना स्थापक वनराजना गुरु शीलगुणसूरि एवी एक अनुश्रुति छे, एटले अणहिल-वाडमां आगमोनुं अव्ययन ओछामां ओछुं ए नगरनी स्थापना जेटछं जुनुं छे, अने एनो वारसो हरिभद्राचार्य आदि राजस्थानमां थयेछा टीकाकारी तरफथी मळेळी छे. पाटणमां थयेला आगमीना बीजा महान टीकाकारो मलधारी हेमचंद्र (कलिकालसर्वेज्ञ हेमचंद्रथी भिन्न) अने आवार्य मलयागिरि छे. मलगारी हेमचंदने मळवा माटे राजा सिद्धराज जयसिंह वारंवार एमना उपाश्रये भावतो (प. २१९). एमना हस्ताक्षरवाळी एक ताडपत्रीय पोश्री खंमासना मंडारमां मोजूद छे. आगमो उपर गुजरातमां प्रमाणमूत संस्कृत टीकाओ ठेठ अराढमा शतक सुधी रचाती रही छे अने आज सुधी आगमोना अध्ययननी प्राचीन परंपरा अहीं अविच्छिन्नपणे चाछ रहेळी छे.

विद्याध्ययनने लगता बीजा पण केटलाक आत्यना उल्लेखों अहीं संघराया छे. भरुकच्छना वज्रमूित आचार्य विशेनुं कथानक गुजरातना एक प्राचीन किव विशे थोडीक माहिती भाषे छे (पृ. १६५—६६). कालकाचार्य आजीवको पासे अष्टांग महानिमित्तनों अभ्यास कर्यो हतो (पृ. ४०). आजीवको नियतिवादी हता, एटले निमित्तशास्त्रना अभ्यास प्रत्ये एमणे खास ध्यान आध्युं हशे, अने एथी ज कालकाचार्य जेवा महान आचार्य ए माटे एमनी पासे जवाने आकर्षया हशे. मूळ आगमोमां (दा. त. 'उत्तराध्ययन सूत्र'नुं १५ मुं अध्ययन) साधुओ माटे ज्योतिष तेमज वैद्यकनो अभ्यास वर्ष्य गणेलो छे, पण मध्यकाळमां चैत्यवासीओए ए बन्ने शास्त्रोने लगभग पोतानां करी छीधां हतां ए पण समयनी बलिहारी छे.

उज्जयिनीनो विद्यार्थी अस्तविद्या शीखवा माटे कौशांबी जाय छे अने शंखपुरनो विद्यार्थी वाराणसीना कछाचार्थ पासे शीखे हे (पू. १) ए उल्लेखो विद्याभ्यास माटे देशान्तरोमां जवानी प्रमाणमां व्यापक प्रवृत्तिना सूचक छे. अहण महनुं कथानक प्राचीन भारतमां मह्नविद्याना इतिहास उपर सारो प्रकाश पाडे छे (पृ. ६-८).

खुत ग्रन्थो : नष्ट थई गयेला अनेक शाबीन प्रम्थोना उल्लेखो अने क्वचित् एमांथी अवतरणो आगमसाहित्यमां मळे छे. आ पुस्तकः मां नीधायेला एवा प्रन्थो विशे जोईए. चौद पूर्व-दिष्टवाद विशेना उल्लेखो ठेर ठेर मळे छे. 'नन्दिस्त्र'मां तो एनो अनुक्रम पण आप्यो छे. पूर्वो घणा सैका पहेलां नाश पामी गयेलां होवा छतां - अथवा कदाच ए कारणथी - पछीना काळमां तमाम जैन प्रनथकारो तथा सामान्य जैन प्रजाना मानस उपर पण एनो अद्भुत महिमा अंकित थयेलो रह्यो छे.

अन्य विलुप्त रचनाओमां कालकाचार्यकृत 'प्रथमानुयोग' (पृ. ४०), अधाचारांगसूत्र ना 'शस्त्रपरिज्ञा ' अध्ययनना विवरणरूपे लखायेली गोविन्दाचार्यनी 'गोविन्दनिर्युक्ति' (पृ. ६८-६९), पादिलि ताचार्यकृत महान प्राकृत कथाप्रनथ 'तरंगवती' अथवा 'तरंग-लोला' (पृ. ९८) तथा एमनी ज बीजी एक रचना 'कालज्ञान' (पृ. ९९), 'तत्वार्थसूत्र' उपरनी आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (पृ. १२८), ' निशीथसूत्र ' उपर सिद्धसेननी टीका (पृ. १९७), 'योनि-प्रामृत ' शास्त्र (पृ. १९७), ' विशेषावश्यकभाष्य ' उपर जिन-भदगणिनी स्वोपज्ञ टोका (पृ. २२०), इत्यादिनो उल्लेख थई शके. शीलाचार्य, अभयदेवसूरि, मलयगिरि आदि आगमोना टीकाकारोए एवी पूर्वकालीन टीकाओना उल्लेख कर्या छे, जे आजे मळती नथी (१. ११, १२९, १७७, इत्यादि). कदाचित् एमनी सुविशद अने विस्तृत टोकाओ ज पूर्वकालीन टीकाओनी विलुप्तिमां निमित्त नहि बनी हाय ? सातवाहन हालना प्राकृत सुभाषितसंग्रह 'गाथासप्तराती 'मां पादिलिमाचार्यनी गाथाओ उद्घृत थयेली छे (पृ. ९९) ते कां तो 'तरंगवती मांथीं होय अथवा एमनी बीजी कोई कृतिमांथी होय. 'ज्योतिष्करंडक' उपरनी पादलिशाचार्यनी वृत्ति नष्ट थयेली मनाती हती, पण ते जेसलमेरना प्रन्थभंडारमांथी थोडा समय पहेलां पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीने मळी छे (पू. ९८). ए ज प्रमाणे 'जंबुद्दीप-प्रज्ञति नी मलयगिरिनी वृत्ति नाश पामी होवानु ए प्रत्थना बीजा बे टीकाकारोए नोव्युं छे (पृ. १२८), परन्तु ए वृत्ति पण जेसलमेरना मंडारमांथी जडी छे.

भाषाशास्त्रः भारतीय आर्य भाषानी द्वेती यक मूमिकाना अभ्यास माटे विपुल सामग्री आगमोमांथी मळे एमां वशुं आश्रयं नथी. बधा ज मूळ आगमप्रन्थो प्राकृतमां छे एटली हकीकत ए विषयमां एमन् महत्त्व बताववा माटे बस छे. आ प्रस्तावनाना प्रारंभमां ज कहां छे ते प्रमाणे. जुदा जुदा सूत्रप्रनथोनी भाषाना स्वरूपमां केटलोक नोयपात्र तफावत छे. वळी आगमसाहित्यनी पहेली संकलना मगधमां थई अने त्यार पछीनी संकलनाओ ईसवी सननी चोथी शताब्दोमां एटके के वीरनिर्वाण पछी नवमी शताब्दीमां मथुरा अने वलभोमां थई अने सर्व आगमो एनी ये पछी एक सैका बाद देवर्घिगणिना अध्यक्षपणा नीचे वलभीमां एक-सामटां लिपिनद्ध थया. ए बधा समय दरमियान तेमज त्यार पछी एनी नकलो अने नकलोनी पण नकलोनी जे अनेक शाखाप्रशाखाओ थई तेने परिणामे ए प्रन्थोनी भाषामां अनेकविध फेरफारो थया हुईो, तोपण भारतीय आर्थ भाषानी प्राकृत भूभिकाना अध्ययन माटे एक तरफ जैन आगमसाहित्य अने बोजी तरफ पालि साहित्य ए बन्ने मळी परम महत्त्वनी सामग्री पूरी पांडे छे. मूळ आगमो तथा ते उपरनां निर्देक्ति अने भाष्योनी आर्ष प्राकृत, चूर्णिओनी आ करतां भिन्न तो पण आर्षनी कोटिमां ज गणवी पडे तेवी प्राकृत-जेमां संस्कृतनं पण विलक्षण मिश्रण थयेलुं घणी वार नजरे पडे छे, अने मध्यकाळनी संस्कृत वृत्तिओमांनां प्राकृत कथानको, जेमनी माधा केटलीक वार चूर्णिओनी लगोलग आवी जाय छे तो केटलीक वार स्पष्ट रीते प्रकृष्ट महाराष्ट्री प्राकृत होय छे-आ सर्वेनुं पूरं अन्वेषण हजी शयं नथी. आगमसाहित्यनी सभीक्षित वाचनाओ बहार पडे त्यारे ज ए कार्य थई शके.

वळी आगमोनी संस्कृत वृत्तिओमां आवता शब्दो अने रूढि-

प्रयोगो जेने सामान्य रीते 'जैन संस्कृत' कहेवामां आवे छे—जे एक प्रकारनी 'मिश्र संस्कृत ' होई बौद्धोनी 'गाथा संस्कृत ' साथे एनी तुलना थई शके—जूना गुजरातीनी असरथी जे परिष्ठावित होई गुजरातीना सामान्य ज्ञान विना ए समजाय पण माग्येज, ए कारणे हर्टेल जेवा विद्धाने जेने 'प्रादेशिक संस्कृत ' (Vernacular Sanskrit) कही छे, एनो व्यवस्थित अभ्यास एक करतां वधु प्रन्थो मागो ले एवो विशाळ विषय छे, अने जैन कथासाहित्य तेमज प्रबन्धसाहित्यमां पण ए ज प्रकारनी संस्कृतनो प्रयोग होई एनी अभ्यासमर्थादा आगुप्रसाहित्यनी बहार पण विस्तरेली छे. संस्कृत उपर प्रादेशिक भाषाओए करेली असरना दृष्टिकोणथी ए सर्व साहित्यनुं अवलोकन फळदायी नीवडरो. संस्कृते लोकभाषाओ साथे केवुं समाधान साध्युं ए जेम एमांथी जणारो तेम लोकभाषानां पण अनेक मुलायेलां स्थि अने अर्थोनी तेमज ए रूपो तथा अर्थोनी पाछळ रहेलां मानसिक बळोनी एमांथी भाळ मळरो.

पण आ पुरतकनी मर्यादामां आ बधी वस्तुओनो समावेश करवानुं अशक्य हतुं. अहीं तो राजकीय अने सांस्कृतिक अगत्यनी वस्तुओनी साथोसाथ भाषाकीय अगत्यना पण जे मुद्दा नौंधाया छे तेमांना केटलाक तरफ ध्यान दोर्थ छे.

पंजाबनुं मूल स्थान (मुलतान), सौराष्ट्रनुं स्थान (थान), अने मुंबई पासेनुं स्थानक (थाणा), एमांना 'स्थान ' स्थानक ' पदान्तोनो संबंध भाषा अने सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए विचारवा जैसो छे. मुलतान अने थान तो सूर्वपूजानां प्राचीन केन्द्रो छे, थाणा बिशे वधु संशोधन आवश्यक छे (पृ. २११). भारतनां प्राचीन नगरोने अंते आवतो संस्कृत 'कृत 'अने प्राकृत 'कड ' पदान्त तथा जाना जेनी भारतनी प्राचीन वसाहतोनां केटलांक नगरोनां नामोनो

'कर्त ' पदान्त, ए सर्वनुं साम्य पण ए ज रीते ध्यान खेंचे छे (पृ. ४६-४७). 'गिरनार ' अर्वाचीन भाषामां पर्वतवाची विशेषनाम छे, पण एनुं मूळ संस्कृत 'गिरिनगर 'मां छे (पर्वतनुं नाम तो उज्जयंत छे), अने 'कोडिनार ', 'नार ' वगेरे अन्य स्थळनामोमांनो 'नार ' पण संस्कृत 'नगर 'मांथी प्राकृत 'नअर ' द्वारा व्युत्पन्न थयेलो छे (पृ. ६६). आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां, पुराणोनी जेम, अर्वाचीन मरूचने माटे, 'भरुकच्छ ' प्रयोगनी व्यापकता छे ए वस्तु सूचवे छे के 'भरूच 'नी व्युत्पत्ति, सामान्य रीते मनाय छे तेम, संस्कृत 'मृगुकच्छ 'मांथी नहि, पण 'भरुकच्छ 'मांथी 'भरुअच्च ' द्वारा साधवानी छे (पृ. ११०-१२). 'खेट ' अने तेनी साथे संबंध धरावतां नामोनी चर्चा आगाउ करेली छे. कुडुक्क (पृ. १५९), लाट (पृ. १५९-६०), कोंकण (पृ. ५३), महाराष्ट्र (पृ. १३५) आदि प्रदेशोनो भाषाना लाक्षणिक शब्दप्रयोगोनी नोंध टीकाकारोए वारंवार करेली छे. एक प्रदेशनी भाषाना शब्दो वगर समज्ये बीजे बोलनार केवी रीते हास्यपात्र थाय छे ए पण बताव्युं छे (पृ. १३५).

लोकवार्ता अमे पुराणकथा: जैन साहित्यनो एक मोटो माग कथाप्रधान छे. आगमसाहित्यना चार अनुयोगो पैकी एक कथानुयोग छे. मूळ आगमो तथा ते उपरनी चूर्णिओ अने टीकाओमां अर्ध- ऐतिहासिक कथाओ अने लोककथाओनो विपुल मंडार छे. जैनोना कथासाहित्यना उदभव अने विकासनो तुलनात्मक अभ्यास ए एक स्वतंत्र विषय छे, अहीं केवळ आ पुस्तकने अनुलक्षीने प्रस्तुत कथ- थितन्य रजू कर्युं छे.

अगडदत्त (पृ. १-५), अष्टण (पृ. ६-८), इन्द्रदत्त (पृ. २३), कोकास (पृ. ५०-५२) आदिनी कथाओ होक-वार्ताओं छे; जो के एमां ऐतिहासिक अनुश्रुतिओना अंशो रहेला छे

ए चोकस. भरुकच्छनी उत्तरे आवेला भूततडागने लगती वार्ता (पृ. ११५) तथा बौद्रो अने जैनोनी स्पर्धाने लगती केटलीक वार्ताओ (दा. त. प. १७२-७३) ए पण होककथाओं ज छे. पादिलिप्ता-चार्य (पृ. ९८) अने नटपुत्र रोहकती (पृ. १५७-५८) हाजर-जवाबीनी वातोमांनी केटलीक प्रकीना समयमां राजा भोज अने कवि कालिदास तथा अकबर अने बिरबलने नामे चढेली हाजरजवाबीनी वातो छे. चोरशास्त्रना प्रणेता गणायेला मूलदेवने लगती भिन्न भिन्न कथाओं (पृ. १४४-४८) पण लोकवार्ताओनी कोटिमां जरो; जो-के मुलदेव पोते एक ऐतिहासिक व्यक्ति हरो एवं केटलाक विद्वानीनुं मंतव्य छे. अवंतिसुकुमाल, अशकटापिता, थावच्चापुत्र आदिनां कथा-नको जे खोरबर जैन पुराणकथा (Mythology)ना अंश बनी गयां हे एमां पण लोकवार्तानां तत्त्वो मिश्रित थयां हरो एवं स्वामाविक अनुमान थाय छे. जैन अने बौद्र साहित्यमां होककथाओनुं ज धर्म-कथाओमा रूपान्तर करवामां आव्यं छे ए सिद्ध हकीकत छे. आगळ वधीने एम पण कही शकाय के दुनियाभरनी पुराणकथाओं अने देव-कथाओनो अनादिकाळथी लोककथाओ साथे संबंध रहेलो छे.

यादवकुळमां थयेला, बाबीसमा तीर्थंकर अरिष्टनेमि अथवा नेमिनाथ विशेना उल्लेखो आ पुस्तकमां अनेक स्थळे (पृ. २४, ४९— ५०, ८०—८१, ९६, इत्यादि) जोवामां आवशे. तेओ श्रीकृष्णना काकाना दीकरा हता. जैन साहित्यमां सर्वत्र यादवकुळनो इतिहास नेमिनाथना चरित्रनी आसपास गूंथायेलो छे; बाह्मण पुराणोमां यादवोनो इतिहास मुख्य अंशोमां जैन साहित्यमां अपायेला वृत्तान्त साथे साम्य धरावे छे. मात्र नेमिनाथनो वृत्तान्त, तेमनो नामोल्लेख पण, एमां मळतो नथो! जैन धर्मनौ स्थापना महावीर करी नहोतो, महावीर तो नबीन धर्मना प्रवर्तक करतां प्राचीन धर्मना सुधारक अने समुद्धारक हता. तेमनी पूर्वेना त्रेवीसमा तीर्थंकर पार्श्वनाथ निःशंकपणे ऐतिहासिक

व्यक्ति पुरवार थया छे अने ए सिवायना बाबीस तीर्थकरो पैकी केटलाकनी ऐतिहासिकतानां प्रमाणो मळे तो नवाई जेवुं नथी. बौद्ध प्रन्थ 'महावग्ग' (१. २२, १३) अनुसार बुद्रना समयमां राजगृहमां सातमा तीर्थिकर सुपार्श्वनाथनुं मन्दिर हतुं. ए ज प्रन्थ जणावे छे के आजीवक संप्रदायनो उपक नामे तपस्वी अनंतनाथनो उपासक हतो. जैनो अने आजीवकोना गाढ ऐतिहासिक संपर्कनो विचार करतां आ अनंतनाथ ते चौदमा तीर्थंकर संभवे छे. अलबत, आवां प्रमाणो तार्किक दृष्टिए सुपार्श्वनाथ के अनंतनाथनी एतिहासिकता पुरवार करे के केम ए विशे मतभेद रहेवानो, पण महावीरना समयमां तेमज ए पूर्वे प्राचीनतर तीर्थंकरो पूजाता हता ए हकीकत तो एमांथी निर्विवादपणे फलित थाय छे. नेमिनाथना विषयमां वात करीए तो, मात्र पछीना काळनां चरित्रोमां ज नहि, परन्तु भाषा छंद तेमज अन्य दृष्टिबिन्दुए सौथी प्राचीन पुरवार थयेला मूल आगमप्रन्थोमां नेमिनाथ विशे तेमज यादवोना इतिहास विशे पुष्कळ सामग्री मळे छे. ' वसुदेव-हिंडी' जेवा प्राचीन कथाप्रन्थनो ठीक मोटो गणी शकाय एवो अंश ए वृत्तान्त वडे रोकायेलो छे. ज्यारे बीजी तरफ पुराणादिमां भागवत संप्रदायना कथयितन्यने रज् करवामां उपयोगी थाय एटले ज अंशे यादवकुळना वृत्तान्तनो विनियोग करवामां आव्यो छे. आ बधुं जोतां नेमिनाथनुं इतिहासमां अस्तित्व नहि होय अने तेओ केवळ देवकथानी ज व्यक्ति हरो एवो तर्क भाग्येज साधार गणारो. पुराण-कारोए श्रीकृष्णना चरित्रनी आसपास यादवकुळनो इतिहास गूंथवा माटे नेमिनाथना जीवनवृत्तान्तने जाणी जोईने पडतो मुक्यो हशे एवी कल्पना थाय छे.

जैन कथाओमां आवतां सांबनां तोफानो श्रीकृष्णनां बालचरित्रोनी याद आपे छे (प. १८९-९२).

गुजरातना मध्यकालीन इतिहासने लगती एक अनुश्रुति प्रमाण-

मां अर्वाचीन कही शकाय एवी एक टीकामां नोंधायेळी छे. अमीष्ट स्त्रीनी कामना करतां मनुष्य दुःखी थाय अने स्त्रीनी प्राप्ति थवा छतां पुत्रादिनी आशाथी दुःखी थाय, ए संबंधमां राज। सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण टीकाकारे आप्यु छे (पृ. १९५), ते सिद्धराज माटे आ प्रकारनी किंवदन्ती छोकप्रसिद्ध हशे एम सूचवे छे.

अंते, मर्यादित समयमां एकले हाथे बधुं आगमसाहित्य तपास-वानो प्रयत्न ए दिरयो उहोळवा जेवुं एक साहस हतुं. साथे शिक्षण अने संशोधननां बीजां कार्यो पण चालु राखवानां हतां. आ बधां कारणोए तेमज मारी अणसमज के सरतचूकने कारणे आ पुस्तकमां बूटीओ रहेवा पामी हशे ते विद्वानो बतावशे तो उपकृत थईश.

आभारदर्शन

आ पुस्तक तैयार करवानुं काम सौ पहेलां मारा विद्यागुरु पू.
मुनिश्री पुण्यविजयजीने सोंपायुं हतुं, पण तेओए आगमवाचनानुं
भगीरथ काम हाथमां लीधुं तथा लगभग ए अरसामां गुजरात विधासभाना अनुस्नातक विभागमां मारी निमण्क थई, एटले ए काम
मने सोंपायुं. आ कामने अंगे बधो समय तेमना तरफथी स्चनो तैमज जोईतां पुस्तकोनी सहाय मळती रही हती ए बदल तेमनो ऋणी
छुं. भो. जे. विद्याभवनना अध्यक्ष श्री. रिसकलाल छो. परीखने आ
आखुं पुस्तक, छापवा आपतां पहेलां, साधन्त बतान्युं हतुं. तेमनां
स्चनोने परिणामे पुस्तकनुं मूल्य वध्युं छे एम कहेवामां हुं लेशमात्र
अत्युक्ति करतो नथी. आचार्य श्री. जिनविजयजी अने पं. सुखलालजी
संघवी साथे पण आ कार्य अंगे वखतावखत चर्चा थई हती. श्री.
उमाशंकर जोषीकृत 'पुराणोमां गुजरात' आ पहेलां प्रसिद्ध थयेलं
छे, एनी योजनानो लाभ स्वाभाविक रीते अहीं मने मळ्यो हतो,
अने एकित्तत सामग्रीनी न्यवस्थानो श्रम प्रमाणमां हळवो श्रयो हतो,

आ पुस्तकनी तैयारीनां प्रारंभनां केटलांक वर्ष दरिमयान अमे बन्ने भो. जे. विद्याभवनमां सहाध्यापको हता त्यारे एमनी साथे वारंवार उपयोगी विचारिविनिमय, अन्य उपरांत, आ काम अंगे पण थयो हतो. प्रूफ जोवाना तेमज मुद्रणनी व्यवस्थाना कार्यमां विद्यासभाना क्युरेटर अने गुजरातीना अध्यापक श्री. केरावराम का. राास्त्रीनी सहाय घणी मृल्यवान हती तथा डां. हरिप्रसाद राास्त्री अने अन्य सहाध्यापको साथे पण केटलांक अगत्यना मुद्दाओं अंगे चर्चा—विचारणा थई हती. तपस्वी मुनिश्री कान्तिविजयजीए केटलांक प्रन्थो पूरा पाड्या हता तथा श्री. धीरुमाई ठाकरे 'निर्शीथ चूर्णि 'ना टाइप करेला पांच दुर्लम ग्रन्थो उपयोग माटे मेलवी आप्या हता. श्री. अंबालाल आशाराम जेतलपुरियाए केटलंक आगमसाहित्य तपासवामां सहाय करी हती. वडेादरा युनिवर्सिटीमां मारा सहकार्यकर श्री. इन्द्रवदन अंबालाल दवेए आ पुस्तकनी सूचि काळजीपूर्वक तैयार करी आपी छे. ए सर्व सज्जनो प्रत्ये आ स्थले हुं कृतज्ञभाव व्यक्त करं छुं.

' अध्यापक निवास ' प्रतापगंज, **चडोदरा** ता. ११-४-**१**९५२

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा

संक्षेप-सूचि

- अनु : अनुयोगद्वार सूत्र मलघारी हेमचन्द्रनी वृत्ति समेत : प्रकाशक षागमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४
- अनुषू : अनुयोगद्वार सूत्र—चूर्णि : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम
- अनुहा: अनुयोगद्वार सूत्र—हारिभदीया वृत्ति (ई. स. नो ८ मो सैको): प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम
- अनुहें : अनुयोगद्वार सूत्र-मलघारी हेमचन्द्रनी वृत्ति (ई. स. नो १२ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४ (उपर 'अनु 'वडे निर्दिष्ट संस्करण)
- अरा: अभिधान राजेन्द्र: प्रन्थ १ थी ७ : संपादक विजयराजेन्द्रसूरि, रतलाम, ई. स. १९१३—३४
- आचू : आवश्यक सूत्र—चूर्णि, पूर्वभाग अने उत्तरमाग : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम
- आनि : आवश्यक सूत्र-निर्युक्ति (नीचे 'आम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)
- आम : आवश्यक सूत्र—आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२ मो सैको), भाग १ थी ३ : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२८—३२
- आशी : आचारांगे सूत्र—शीलांकदेवनी वृत्ति (८ मा सैका आसपास), भाग १-२ : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७२— ७३; एनुं पुनर्मुद्रण जैनानंद पुस्तकालय, सूरत तरफथी थयुं छे.
- आसूचू : आचारांग सूत्र-चूर्णिं : कर्ता जिनदासगणि महत्तर (ई.

स. नो ७ मो सैको) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केसरीमळजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९९८

आह : आवश्यक सूत्र-हरिभद्रसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ८ मो सैको): प्रकाशक दे. ला. जैन पुरतकोद्धार फंड, मुंबई

आहेहा: मलधारी हेमचन्द्र (ई. स. नो १२ मो सैको) सूत्रित हारिभदीय आवश्यकवृत्तिटिप्पण: प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, ई. स. १९२०

ओनिद्रो : ओघनिर्युक्ति—द्रोणाचार्यनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७५

ओनिभा : ओघनिर्युक्ति-भाष्य,

(उपर 'ओनिद्रो' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

औत्रुअ : औपपातिक सूत्र-अभयदेवस्रिनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७२

अंद : अंतकृत्दशा सूत्र : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६ अंदवृ : अंतकृत्दशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको).

(उपर 'अंद' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

उ : उत्तराध्ययन सूत्र

(नीचे 'उशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

उकः उत्तराध्ययन सूत्र—उपाध्याय कमल्संग्रुमकृत टीका (सं. १५४४=ई. स. १४८८) : संपादक मुनि जयंतिवजयजी उच् : उत्तराध्ययन सूत्र—चूर्णि : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांवर संस्था, रतलाम, सं. १९९८

- उनि : उत्तराध्ययन सूत्र—निर्युक्ति. (नीचे 'उशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)
- उने : उत्तराध्ययन सूत्र-नेमिचन्द्रनी वृत्ति (सं. ११२९=ई. स. १०७३) : संपादक विजयउमंगसूरि, सं. १९९३
- उशा: उत्तराध्ययन सूत्र-शान्तिसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको): प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड; भाग १ अने २, सं. १९७२; भाग ३, सं. १९७३
- कि : कल्पसूत्र—उपाध्याय धर्मसागरकत किरणावली टीका (सं. १६२८=ई. स. १५७२): संपादक पं. दानविजय, भावनगर, सं. १९७८
- कको : कल्पसूत्र—उपाध्याय शान्तिसागरकृत कोमुदी टोका (सं. १७०७=ई. स. १६५१), प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरी-मलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९९२
- कदी: कल्पसूत्र—जयविजयकृत दीपिका टीका (सं. १६७७=ई. स. १६२१): संपादक पं. मफतलाल झवेरचंद, प्रकाशक महोपाध्याय यशोविजय पुस्तकालय, राधनपुर, सं. १९९१
- कम्रु : कल्पसुत्र—उपाध्याय विनयविजयकृत सुबोधिका टीका (सं. १६९६=ई. स. १६४०) : प्रकाशक दे. छा. जैन पुस्तकोद्धार फंड, सूरत, सं. १९६७
- कसं : कल्पसूत्र-खरतरगच्छीय जिनप्रभसूरिकृत संदेहविषौषधि टीका (सं. १३६४=ई. स. १३०८) : संपादक पं हीरालाल हंसराज, जामनगर, सं १९६९
- चं : चंदावि इसय प्रकीर्णंक (' प्रकीर्णकदशक 'मां मुद्रित, प्रकाशक :

आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३). अलग पण छपायुं छे: संपादक विजयक्षमाभदस्सरि, पाटण, सं. १९९७

जिरको : जिनरत्नकोश : हिर दामोदर वेल्णकर, भाग १, पूना, ई. स. १९४४

जीकचू : जीतकल्पचूर्णि : संपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद, सं. १९८३

जीकचूव्याः जीतकल्पचूर्णिः विषमपद व्याख्या—कर्ता श्रीचन्द्रसूरि (सं. १२२७=ई. स. ११७९) (उपर 'जीकचू' वडे निर्दिष्ट संस्करण).

जीकमा : जीतकल्पभाष्य :

(नीचे 'जीकस्' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

जीकस् : जीतकल्पस्त्र-कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण (ई. स. नो ७ मो सैको) : संपादक मुनिश्री पुण्यविजयजी, अमदावाद, सं. १९९४

जीम : जीवाभिगम सूत्र-आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई.

जेस्: जेसलमेर भांडागारीय ग्रन्थस्चि: पं. लालचंद्र भगवानदास गांधी, वडोदरा, ई. स. १९२३

जैसाइ : जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास : श्री. मोहनलाल दलीचंद देसाई, मुंबई, ई. स. १९३३

जंप्र : जंबुद्दीपप्रज्ञपि

(नीचे 'जैशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

जंप्रशा : जंबुद्दीपप्रज्ञति-वाचक शान्तिचंद्रनी वृत्ति (सं. १६५० = ई. स. १५९४) : प्रकाशक दे. हा. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९७६

ज्ञाः ज्ञाताधर्मकथा सूत्र

(नीचे 'ज्ञाधअ' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

ज्ञाधअ : ज्ञातात्रर्मिकथा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं. ११२० = ई. स. १०६४), प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९१६

ज्योकम : ज्योतिष्करंडक-मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२ मो सैको) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९८४

ज्यांडि : ज्यांग्रांफिकच डिक्शनेरी ऑफ ॲन्स्यन्ट ॲन्ड मिडीवल इन्डिया : नंदलाल दे, लंडन, ई. स. १९२७

दवै : दशवैकालिक सूत्र (नीचे 'दवैहा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

द्वैचृ : दश्वैकालिक चूर्णि-जिनदासगणि महत्तरकृत (ई. स. नो ७ मो सैको) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९८९

द्वैस : दशवैकालिक सूत्र-समयसुन्दरकृत टीका (सं. १६९१ = ई. स. १६३५) : जिनयशःसूरि प्रन्थमाळा, खंभात, सं. १९७५

द्वैहा : दशवैकालिक सूत्र-हारिभद्रीया वृत्ति (ई. स. मो आठमो सैको) : प्रकाशक दे. छा. जैन पुस्तकोद्धार फंड, सं. १९७४

निच् : निशीथ सूत्र-चूणि (टाइप करेली नकल) : संपादक आचार्य विजयप्रेमसूरि, भाग १ थी ५, सं. १९९५-९६

निभा : निशीध सूत्र-भाष्य (उपर 'निचू' वड़े निर्दिष्ट संस्करण) नंचू: नंदिसूत्र चूर्णि-जिनदासगणि महत्तरकृत (. स. नो ७ मो सैको): प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरोमळजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, ई. स. १९२८

नंम : नंदिसूत्र—आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४

नंसू : नंदिसूत्र

(उपर 'नंम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

नंहा: नंदिसूत्र-हारिभदीया दृति (ई. स. नो ८ मो सैको): प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमछजी श्वेतांवर संस्था, रत्तछाम, ई. स. १९२८

पाय: पाक्षिकसूत्र-यशोदेवस्रिनी वृत्ति (सं. ११८८=ई. स. ११२४): प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९६७.

पिनिम: पिंडनिर्युक्ति—भाष्य अने मलयगिरिनी टीका (ई. स. नो १२ मो सैको) सहित: प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९७४

पुगु : पुराणोमां गुजरात : उमाशंकर जोषी, अमदावाद, ई.स. १९४६

प्रच : प्रभावकचिरित (सं. १३३४=ई. स. १२७८)-प्रभाचन्द्र-स्रिकृत : संपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद-कलकत्ता, ई. स. १९४०

प्रम: प्रज्ञापना सूत्र-मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२मो सैको):
प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, पूर्वीध-उत्तरार्ध,
सं. १९७४-७५

प्रव्या : प्रश्नव्याकरण सूत्र

(नीचे 'प्रव्याअ' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

प्रव्याअ : प्रश्नव्याकरण सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स.नो ११ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७५

प्रस् : प्रज्ञापना सूत्र : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, पूर्वार्ध-उतरार्घ, सं. १९७४-७५

बृकः बृहत्कल्पसूत्रः संपादक मुनिश्री चतुरविजयजी अने मुनिश्री पुण्यविजयजी, भाग १ थी ५, भावनगर, ई. स. १९३३— ३८; ६डो ग्रन्थ हवे पछी प्रसिद्ध थशे.

बृकक्षेः बृहत्कल्पसूत्र—आचार्य क्षेमकीर्त्तिनी वृत्ति (सं. १३३२=ई.स. १२७६)

(उपर 'बृक' वडे निर्दिष्ट सैस्करण)

बृकभा : बहत्कल्पसूत्र—संघदासगणि क्षमाश्रमणकृत भाष्य (ई. स. ना ६डा सैका आसपास)

(उपर बृक वडे निर्दिष्ट संस्करण)

बृकम : बृहत्कल्पसूत्र—आचार्य मलयगिरिनी पीठिका वृत्ति (ई. स. नो १२मो सैको)

(उपर 'बृक' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

भप : भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक ('प्रकीर्णकदशक 'मां मुदित): प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३

भसू: भगवती सूत्र: प्रकाशक आगमोदय समिति, भाग १-३, अमदावाद, सं. १९८२-८५

भसुक : भगवतीसूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं. ११२८=ई. स. १०७२)

(उपर 'भसू' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

- मसः मरणसमाधि प्रकीर्णक ('प्रकीर्णकदशक 'मां मुदित) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३
- राप्रमः राजप्रश्लीय सूत्र-मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स.नो १२ मो सैको): प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८१
- विको : विशेषावस्यक भाष्य –कोटचाचार्यनी वृत्ति (ई. स. ना ८मा सैका आसपास) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम
- विभा : विशेषावश्यक भाष्य—कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण (ई. स.ना ७ मा सैकानो प्रारंभ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरी-मलजी श्वेतांवर संस्था, रतलाम
- विसुअ : विपाक सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ११मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६
- वृद: वृष्णिदशा (निर्याविलिका 'मां मुद्रित): प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७८
- वंद्यः वन्दारुवृत्ति-श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र उपर देवेन्द्रसूरिनी वृत्ति (इ. स. नो १३मो सैको)ः प्रकाशक दे. ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९६८
- व्यभा : व्यवहार सूत्र—संघदासगणि क्षमाश्रमणकृत भाष्य (ई. स.ना छष्टा सैका आसपास)

(नीचे 'व्यम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

- व्यम : व्यवहार सूत्र-मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स.नो १२मो सैको): संपादक मुनि माणेक, अमदावाद
- श्राप्तरः श्राद्धप्रतिकमण सूत्र-रत्नशेखरसूरिनी वृत्ति (सं. १९४६=

- ई. स. १४४०) : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९६८
- सस्य : समवायांग स्त्र-अभयदेवस्रिनी वृत्ति (सं. ११२०= ई. स. १०६४) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९७४
- सुक्तचू : सूत्रकृतांग सूत्र जिनदासगणि महत्तरकृत चूर्णि (ई. स.नो ७ मो सैको) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, स १९९८
- सुकृशी: सूत्रकृतांग सूत्र-शीलांकदेवनी वृत्ति (ई. स. ना ८ मा सैका आसपास): प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं १९७३
- सूप्रम: सूर्यप्रज्ञति-मल्यगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२मो सैको): प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७५
- संप्र : संस्तारक प्रकीर्णक ('प्रकीर्णकदशक 'मां मुदित) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३
- स्थासूअ: स्थानांग सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं. ११२०=ई स. १०६४): प्रकाशक आगमोदय समिति, भाग १-२, सं. १९७६

सन्दर्भसूचि

[आ पूर्वे निर्देशायेला उपरांत उपयोगमां लेवायेला महत्त्वना प्रन्थोनी सूचि] आगमसाहित्य

अनुत्तरोपपातिकदशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स.नो ११मो सैको) समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६

उपासकदशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको) समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७६

दशाश्रुतस्कन्ध-संपादक उपाध्याय आत्मारामजी पंजाबी, जैन शास्त्रमाला नं. १, लाहोर, सं. १९९७

निर्याविष्ठिका (किप्पया, कप्पवडंसिया, पुष्फिया, पुष्फचूित्रया, विद्वित्सा ए पांच सूत्रो)-श्रीचन्द्रसूरिनी वृत्ति (सं. ११२८=ई स. १०७२) समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७८

प्रकीर्णकदशकम् (चउसरण, आतुरप्रत्याख्यान, महापरिज्ञा, भक्तपरिज्ञा, तंदुछवेयाछिय, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविद्या, देवेन्द्रस्तव, मरणसमाधि ए दश प्रकीर्णको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, संबई, सं. १९८३

श्रमणप्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति-पूर्वीचार्यकृत : प्रकाशक दे. त्वा. जैन पुस्तकोद्वार फंड, मुंबई, सं. १९६७

इतर साहित्य

अरुविहरटरी आफ इन्डियाः विन्सेन्ट स्मिथ, ४ थी आवृत्ति, आकरफर्ड, ई. स. १९३२

अर्छकारसर्वस्व (रुग्यककृत): संपादक पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३९ आबु, भाग १ : मुनि जयंतविजयजी, उच्जैन, ई. स. १९३३ इतिहासनी केडी : भोगीछाल ज. सांडेसरा, वडोदरा, ई. स. १९४५

इन्डिया ॲंझ डिस्काइब्ड इन घी अर्छी टेक्स्ट्स ऑफ बुद्धिशम ॲन्ड जैनिझम: बिमलाचरण टाँ, लंडन, ई. स. १९४१

इन्डो-आर्यन ॲन्ड हिन्दी : सुनीतिकुमार चेटरजी, अमदावाद, ई. स. १९४२

उज्जयिनी इन ॲन्स्यन्ट इन्डियाः बिमलाचरण ला, कलकत्ता, ई. स. १९४४

अ कम्पॅरिटिव अ-ड इटिमोलें जिक्ल डिक्शनरी आफ धी नेपाली लेंग्वेज : राल्फ लीली टर्नर, लंडन, ई. स. १९३१

ओ हिस्टरी ओफ इन्डियन लिटरेचर : बेल्यूम २ जुं : ऑम. विन्टरनित्स, कलकत्ता, ई. स. १९३३

के हिस्टरी अंक्ष इम्पोर्टेंन्ट अन्श्यन्ट टाउन्स अन्ड सिटीझ इन गुजरात अन्ड काठियावाड : अनंत सदाशिव अळटेकर, मुंबई, ई. स. १९२६

अतिहासिक संशोधन : दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, मुंबई, ई. स. १९४१

कर्निगहें स ॲन्स्यन्ट ज्योप्रफी ऑफ इन्डिया : संपादक सुरेन्द्र-नाथ मजमूदार साम्री, कलकत्ता, ई. स. १९२४

करकंडचरिउ (कनकामरकृत) : संपादक हीरालाल जैन, कारंजा, ई. स. १९३४

कादंबरी (बाणभद्दक्त): निर्णयसागर प्रेसनी सातमी आदृति, मुंबई, ई. स. १९२८

कान्यानुशासन (हेमचन्द्रकृत्), भाग २ जो, प्रस्तावनाः रसिकलाल छो. परीख, मुंबई, ई. स. १९३८

कुमार (मासिक)

कैंग्त्रिज हिस्टरी अ।फ इन्डिया, बेल्युम १ (अन्दयन्ट इन्डिया): संपादक इ. जे. रेप्सन, केंग्त्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, ई. स. १९२२

खंभातनो इतिहास : रानमणिराव भीमराव जोटे : अमदावाद, ई. स. १९३५

गुजराती साहित्यसंमेलन : १२मुं अधिवेशन : अहेवाल अने निबंधसंप्रह, अमदावाद, ई. स. १९३७

गाथासप्तराती (सातवाहन हालकृत) : संपादक पं. मथुरानाथ शास्त्री, ३ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३३

गुजरातनो मध्यकाछीन राजपूत इतिहास, भाग १-२ : दुर्गा-शंकर केवळराम शास्त्री, अमदावाद, ई. स. १९३७-३९

गुजरातना अतिहासिक छेखो. भाग १ : संपादक गिरिजाशंकर: वहाभजी आचार्य, मुंबई, ई. स. १९३३

चतुर्माणी : संपादक एम. रामकृष्ण किन अने एस. रमानाथ शास्त्री, पटणा, ई. स. १९२२

चत्वारः कर्मप्रन्थाः (देवेन्द्रसूरिकृत) : संपादक मुनि चतुर-विजयजो, भावनगर, ई. स. १९४७

जर्नेल ओफ धी औरियेन्टल इन्स्टिट्यूट (त्रैमासिक) जैन साहित्य और इतिहास: नाथुराम प्रेमी, मुंबई, ई. स. १९४२ जैन साहित्य संशोधक (त्रैमासिक)

जैनिझम इन नार्थ इन्डिया : सी. जे. शाह, मुंबई, ई. स. १९३२ ट्राइब्स इन ॲन्स्यन्ट इन्डिया : बिमलाचरण स्ट्रा, पूना, ई. स. १९४३

डाइनेस्टिझ औष धी कलि एजः औफ. इ. पार्जिटर, औषस्फर्ड युनिवर्सिटो प्रेस, ई. स. १९१३

डिक्शनरी ऑफ पालि प्रें।पर नेम्स, भाग १–२ः जी. पी. मलाल-सेकर, छंडन, ई. स. १९३८

तत्त्वार्थसूत्र (वाचक उमास्वातिकृत) : संपादक पं. सुखलालजी, २ जी आवृत्ति, अमदावाद, ई. स. १९४०

तंत्रोपाख्यान : संपादक सांबिशव शास्त्री, त्रिवेन्द्रम्, ई. स. १९३८

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र (आचार्य हेमचन्द्रकृत) : भावनगर, ई. स. १९०६-१३

दशकुमार चरित (दंडीकृत): संपादक नारायण बालकृष्ण गोडबोले अने टी. वेंकटराम शास्त्री, ८ मी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९१७

देवतामृर्तिप्रकरण अने रूपमंडन : संपादक उपेन्द्रमोहन सांख्य-तीर्थ, कलकत्ता, ई. स. १९३६

द्वचाश्रय महाकाव्य (आचार्य हेमचन्द्रकृत), प्रन्थ १-२ : संपादक आबाजी विष्णु काथवटे, मुंबई, १९१५-२१

धूर्ताल्यान (हरिभद्रसूरिकृत) : संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, मुंबई, ई. स. १९४४

निघंटु आदरी, पूर्वार्ध-उत्तरार्धः वैद्य वापालाल ग. शाह, हांसोट, ई. स. १९२७-२८

निर्वाणकिलक्षा (पादिलिसाचार्यकृत) : संपादक मोहनलास भग-वानदास झवेरी, मुंबई, ई. स. १९२६

निह्नववाद : मुनि धुरंधरविजयजी, भावनगर, ई. स. १९४७

न्यायावतारवार्तिक वृत्ति (पूर्णतलगच्छीय शान्तिसूरिकृत) : संपादक पं. दलसुख मालवणिया, मुंबई, ई. स. १९४९

न्यू इन्डियन एन्टिक्वेरो (मासिक)

पाइअ-सइ-महण्णवो : पं. हरगोविन्ददास त्रीकमचंद होठ, कलकत्ता, ई. स. १९२३-२८

पुरातन प्रबन्धसंग्रह : संपादक जिनविजयजी मुनि, कलकता, ई. स. १९३६

पोलिटिकल हिस्टरी ऑफ ॲन्डयन्ट इन्डिया : हेमचन्द्र राय-चौधरी, ३ जी आवृत्ति, कलकत्ता, ई. स. १९३२

पंचतंत्र : संपादक अने अनुवादक भोगीलाल ज. सांडेसरा, मुंबई, ई. स. १९४९

प्रतिज्ञायौगन्घरायण (भासकृत) : संपादक टी. गणपितशास्त्री, त्रिवेन्द्रम, ई. स. १९१२

प्रबन्धकोश (राजशेखरसूरिकृत) : संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई. स. १९३५

प्रबन्धचिन्तामणि (मेरुतुंगाचार्यकृत): संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, इ. स. १९३३

प्रमेयकमलमार्तेड (प्रभाचन्द्राचार्यकृत) : संपादक पं. महेन्द्र-कुमार शास्त्री, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९४१

प्रेमी अभिनंदन प्रन्थ, टीकमगढ, ई. स. १९४६

बुडिस्ट इन्डिया : रहाइस डेविड्झ, न्यूयोर्क, ई. स. १९०३ बृहत् कथाकोश (हरिषेणाचार्य कृत) : संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, मुंबई, ई. स. १९४३

भारत के प्राचीन जैन तीर्थ : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, बनारस, ई. स. १९५२

भारतीय विद्या (अंग्रेजी मासिक) भारतीय विद्या (हिन्दी-गुजराती त्रैमासिक)

मराठी व्युत्पत्तिकोश: कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी, मुंबई, ई. स. १९४६

महावीर जैन विद्यालय रजत महोन्सव ग्रन्थ, मुंबई, ई. स. १९४१ मालविया कामेमोरेशन वॉल्यूम, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी, ई. स. १९३२

मेघदूत (कालिदासकृत): संपादक वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पणशोकर, १४ मो आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३५

मोढेरा : मणिलाल मूळचंद मिस्री, वडोदरा, ई. स. १९३५

लाइफ इन ॲन्ड्यन्ट इन्डिया एझ डिपिक्टेड इन धी जैन कॅनन: जगदीशचन्द्र जैन, मुंबई, ई. स. १९४७

लाइफ ओफ हेमचन्द्राचार्य: डा. ज्यार्ज व्यूलर, अनुवादक डा. मणिलाल पटेल, शान्तिनिकेतन, ई. स. १९३६

लीलावइ कहा (कोऊहलकृत) : संपादक डॉ. ए. एन. उपाध्ये, मुबई, ई. स १९४९

छेखपद्रति : संपादक सी. डी. दलाल, वडोदरा, ई. स. १९३५ वडनगर : कनैयालाल भाईशंकर दवे, वडोदरा, ई. स. १९३७ वसुदैव-हिंडी : प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) : भाषान्तर : भोगीछाछ ज. सांडेसरा, भावनगर, ई. स. १९४६

वसुदेव-हिंडो : प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) : मूल : संपादक मुनि चतुरविजयजी अने मुनि पुण्यविजयजी, भावनगर. ई. स. १९३०-३१

वसंत रजतमहोत्सव स्मारक प्रन्थ, अमदावाद, ई. स. १९२७ विविध तीर्थेकल्प (जिनप्रभस्रिकृत): संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई. स. १९३४

वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना : मुनि कल्याणविजय, जालोर, सं. १९८७

शंखेश्वर महातीर्थ : मुनि जयंतविजयजी, उज्जैंन, सं. १९९८ श्रमण भगवान महावीर : मुनि कल्याणविजयजी, जालोर, सं. १९९८

श्रीकालककथासंग्रह : संपादक पं. अंबालाल प्रेमचंद शाह, अमदावाद, ई. स. १९४९

सन्मतिप्रकरण (अनुवाद अने प्रस्तावना) : पं. सुखलालजी संघवी अने पं. बेचरदास दोशी, अमदावाद, ई. स. १९३२

सरस्वतीपुरागः संपादक कनयालाल भाईशंकर दवे, मुंबई, ई. स. १९४०

सिलेक्ट इन्स्किप्शन्स बेरिंग जान इन्डियन हिस्टरी ॲन्ड सिविलाइझेशन, वॉ. १ : संपादक दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता, ई. स. १९४२ स्टोरी ओफ कालक : नार्मन ब्राउन, वाशिंग्टन, ई. स. १९३३ स्थिविरावलिचरित अथवा परिशिष्ट पर्व (आचार्य हेमचन्द्रकृत): संपादक हर्मन याकोबी, २जी आवृत्ति, कलकत्ता, ई. स. १९३२

स्याद्वादमं जरी (मिल्छिषेणकृत) : संपादक आनंदशंकर बापुभाई ध्रुव, मुंबई, ई. स. १९३३

हम्मीरमदमद्नेन नाटक (जयसिंहस्रिकत) : संपादक चिमनलाल डाह्याभाई दलाल, वडोदरा, ई. स. १९२०

हेमचन्द्राचार्यः धूमकेतु, मुंबई, ई. स. १९४०

हैमसमीक्षा : मधुसुदन् मोदी, अमदावाद, ईःसः १९४२



शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
૭	? 6	मारी	मारो
२३	छेछी	नाम	नाम.
३८	4	पारसकुल	पारस कूल
४३	१०	ए	अ
५१	३	इर्ष्याळु	ईर्ष्याळु
६१	ø	हती	हतो
७०	\$8	टिकाकारोए	टीका कारो ए
१३०	१ १	'जंबुद्दीपप्रज्ञाप्ति'	'जं बुद्दीपप्रज्ति'
१८२	4	तथा तथा	तथा
१८३	4	'वसुदेव विंडी'	'वसुदेव-हिंडी'
१९६	२०	अर्वाचीत	अर्वाचीन
१९९	१२	ताम्रलिप	ताम्रलिप्ति

जैन आगमसाहित्यमां गुजरात

अगडदत्त

अगडदत्तनी कथा उत्तराध्ययन सूत्र (अध्य. ४) उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्ति (पृ. २१३-१६)मां तथा ए ज सूत्र उपरनी नेमिचन्द्रनी
वृत्ति (पृ. ८४-९४)मां आवे छे. शान्तिसूरिकृत वृत्त्यन्तर्गत कथा
प्रमाणे, अगडदत्त उज्जयिनीना जितशत्रु राजाना रथिक अमोधरथनो
पुत्र हतो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, शंखपुरना राजा मुन्दरनो पुत्र हतो).
पिताना मरण पछी अखिविद्या शीख्वा माटे ए पिताना एक मित्र पासे
कौशांबीमां गयो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, अगडदत्तना स्वन्छंदाचारथी कंटाळी
राजाए एने देशवटो आप्यो; चाराणसीमां पवनचंड नामे एक कछाचार्य
साथे परिचय थतां एने त्यां रही अगडदत्त अभ्यास करवा छाग्यो).
त्यां विद्या शीख्या पछी गुरुनी आज्ञा छई पोतानी प्रवीणता दर्शाववा
माटे ए राजकुछमां गयो; नगरमां अश्रुतपूर्व संधिन्छेद करता-खातर
पाडता एक चोरने पकडी छाववानी राजाए सूचना करतां एणे युक्तिपूर्वक ए चोरने तेम ज एणे एकत्र करेलो भंडार साचवनारी एनी
बहेनने—बन्नेने पकडी छीधां.

शान्तिसृरिनी वृत्तिमां अगडदत्तनी कथानो आटलो ज अंश आवे छे; पण नेमिचन्द्रदाळी कथामां प्रसंगिवस्तार लांबो छे. चोर पकडवाना एना पराक्रमथी प्रसन्त थईने राजाए अगडदत्तने पोतानी पुत्री कमल-सेना परणावी. कमलसेनाने तथा अगाउ कौशांबीमां अस्रविद्या शीखतां जेनी साथे पोताने प्रेम थयो हतो ते, श्रेष्टी बंधुदत्तनी पुत्री मदनमंज-रोने साथे लईने मार्गमां अनेक पराक्रम करतो अगडदत्त घेर जाय छे अने सुखपूर्वक रहे छे, पण एक वार पोतानी पत्नीनुं दुश्चरित जाण-वामां आवतां निवेंद पामी दीक्षा ले छे स्पष्ट छे के बन्ने वृत्तिओमां आपेली अगडदत्तनी कथा बे विमिन्न परंपराओने अनुसरे छे. शान्तिसूरिनी वृत्तिमांनी कथा अति संक्षेपमां, सरल गद्यमां रजू थयेली छे, ज्यारे नेमिचन्द्रनी टीकामांनी कथा ३२९ पद्योमां विस्तरेली होई एक स्वतंत्र कृति बनी रहे छे. बन्नेय संस्कृत टीकाओमां आ कथाओ तो प्राकृतमां ज छे ए दर्शांवे छे के तुलनाए पछीना समयनी टीकाओमां बन्युं छे तेम, आ कथाओ ब्राचीनतर मूल प्रन्थोमांथी यथावत् उद्घृत करेली छे. उत्तराध्ययन सूत्र उपरनी चूर्णि (पृ. ११६)मां चरिक पंक्तिमां अगडदत्तनी कथानुं मात्र सूचन करवामां आवेलुं छे.

मौद्ध अथवा बाह्यण साहित्यमां क्यांय अगडदत्तनी कथानुं स्पष्ट स्माद्धपान्तर जोबामां आवर्तुं नथी. एवुं स्वरूपान्तर प्राप्त थाय तो मूळ कथानुं स्वरूप तेम ज समय नकी करवामां ए अवश्य उपयोगी थाय, केम के ए तो स्पष्ट छे के जैन कर्ताए एक पराक्रमी क्षत्रिय युवकनां साहसोनुं निरूपण करती छोककथाने धर्मकथानुं रूप आप्युं छे.

जैन आगमेतर साहित्यमां अगडदत्तनी कथा एना सौथी प्राचीन स्वरूपे संघदासगणिकृत बृहत् प्राकृत कथाप्रन्थ 'वसुदेवहिंडी' (ई. स.ना पांचमा सैका आसपास) जे गुणाढचनी छप्त 'बृहत्कथा'नुं जैन रूपान्तर छे तेमां (पृ. ३७-३९) छे. शान्तिसूरिए जे कथानक उद्घृत कर्युं छे तेनी उपर 'बसुदेव-हिंडी'नी स्पष्ट असर छे अने केटलेक स्थाने तो देखीतुं शान्दिक साम्य छे, ज्यारे नेमिचन्द्रे उद्भरेखं कथानक, पात्रो अने स्थानोनां मिन्न नामो तथा केटलाक मिन्न कथाप्रसंगो सूचवे छे ते प्रमाणे, कोई जुदी परंपराने अनुसरे छे.'

अगददत्तनी कथा एक छोकप्रिय जैन धर्मकथा गणाई छे. ए बिशे संस्कृतमां एक 'अगडदत्त पुराण' रचायुं छे," अने जैन गुर्जर साहित्यमां अगडदत्त विशे अनेक नानी मोटी कृतिओ प्राप्त धई छे. अंसमेर] [५

१ उत्तराध्ययनभी उपर्युक्त वे टीकाओमां सचवायेली अगबदत्तनी कथानी वे विभिन्न पाटपरंपराओनो समावेश हा. चाकोबीए Erzahlungen in Maharastri ए प्रन्थमां कथों हो, तथा ए बन्नेना केटलीक युरोपीय भाषाओमां अनुवाद पण थया हो. 'वसुदेव-हिंही'-अंतर्गत कथाना अनुवाद माटे जुओ ए प्रन्थनुं में करेलुं गुजराती भाषाग्तर, पृ ४५-६०. उत्तराध्ययन-टीकाओमांनी कथाओ साथे 'वसुदेव-हिंही'मांना सथानकनी तुलना माटे जुओ 'न्यू इन्डियन ॲन्टीकवेरी,' वो. १ (पृ २८१-९९) मां हा. आल्सडार्फनो लेख 'ए न्यू वर्झन लाफ धी अगडदत्त स्टोरी. '

२ जिरको, पृ. १

३ जुओ 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १-२-३

अचलग्राम

अचलप्रामना भदिक कौटुम्बिकोए यशोधरमुनिनी पासे दीक्षा लीबी हती. आ अचलग्राम ए ज आभीरदेशमां आवेलुं अचलपुर के एथी भिन्न ए नक्की थई शक्युं नथी.

१ मस, गा. ४४९-५१

अचलपुर

आभीरदेशमां कृष्णा—वेणा नदीओना संगमस्थान पासे आवेलुं नगर. कृष्णा—वेणाना संगम आगळ आवेला बहाद्वीप नामे द्वीपमां वसता पांचसो तापसोने आर्थ वजना मामा आर्थ समितसूरिओ प्रति-बोध पमाडचो हतो; ए प्रतिबोध पामेल तापसोथी जैन साधुओनी बहाद्वीपक नामे शाखानो आरंभ थयो हतो.

जुओ आभीर

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४३; आम, पृ. ५१५; कसं, पृ. १३२; कसु, पृ. १३४; कि, पृ. १७१; कदी, पृ. १४९-५०; नंसू, पृ. ५१; बिनिम, पृ. १४४.

अजमेर

अजमेर. अजमेर पासेना, राजा सुमटपाल-शासित गाम हर्ष-पुरमां ब्राह्मणा यज्ञमां बकराने मारता हता त्योरे वियवनथसूरिए पोतानी ६] [अनमेर

मंत्रशक्तिथी वकराने वाचा अपीं, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो.

१ कम्रु, पृ. ५०९-१०; किक, पृ. १६९; कदी, पृ. १४८-४९.

अट्टण

अहण ए उज्जियिनीनो एक अजेय मह हतो. सोपारकनो सिंह-गिरि राजा मल्लोनी साठमारी करावती अने जे जीते एने घणं द्रव्य आपतो. अष्टण प्रतिवर्षे सोपारक जईने विजयचिह्न तरीके पताका लई आवतो. आथी सिंहगिरि राजाए एक माछीनं बळ पारखीने एने पोष्यो: अने ए मात्स्यिक—माछी मछ तरीके ओळखायो. बीजे वर्षे अङ्ग आव्यो त्यारे मास्यिक मल्ले एने हरावी दीघो. एक युवके पोताने हराव्यो तेथी मानभंग थयेछो अङ्ग सुराष्ट्रमां एनी बराबरी करे एवो बीजो मल छे एम सांभळीने एनी शोधमां सोपारकथी धराष्ट तरफ जतो हतो त्यां मार्गमां भरकच्छ पासे एणे एक खेडूत जोयो. ए एक हाथे हळ चलावतो हता अने बीजे हाथे फल्ही-कपास चूंटतो हतो (एमेणं इत्थेणं इलं वाहेति, एकेणं फलहीओ उपाडेइ). अट्टणे सुराष्ट जवानो विचार मांडी वाळचो अने ए खेडूतने धनवान बनाववानी छाछच आपी पोतानी साथे उज्जयिनी छई गयो अने एने मह्विद्या शीखवी. ए मह फलहीमछ तरीके प्रसिद्ध थयो. पछी एओ बन्ने सोपारक आव्या. त्यां फल्हीमल साथे मात्स्यिक मल्नुं युद्ध थयुं. पहेला दिवसे मल्लयुद्धनो कंई निर्णय थई शकयो नहि. ए सांजे अहुणे पोताना शिष्य फलहीने पूछचं के 'तारां कयां अंग दुखे छे ?' अने पछी तेणे कह्युं त्यां एने खूब मर्दन करावीने ताजो कथीं. बीजी बाजू, सिंहगिरि राजाए पोताना मात्स्यिक महने एवो ज प्रश्न कर्यो; त्यारे एणे गर्वथी उत्तर आप्यो के 'फल्रही बिचारो कोण छे ? हं एना बापनो पण पराजय करी शकुं एन छुं.' आशी बीजे दिवसे बले महोने सम युद्ध थयुं अने त्रीजे दिवसे मात्स्यिक मछ हार्यो अने मरण अट्टण] [७

पाम्यो, तथा अङ्ग सन्कार पामीने उज्जयिनी गयो. (आवश्यकसूत्र उपरनी चूर्णिमां अहीं सुधीनुं ज कथानक आप्युं छे.)

उज्जयिनी गया पछी एणे मह्युद्धनो त्याग करी दीधो. वळी यद्ध थई गयो होवाथी संबंधीओ एनुं अपमान करवा लाग्या. आथी संबंधीओने समाचार आप्या विना ज ए कौशांबी चाल्यो गयो. त्यां एक वर्ष आराम लईने रसायणो खाधां तथा बलिए थयो. पछी एक बार एणे कौशांबीना राजाना मह्न निरंगणनो मह्युद्धमां पराजय करीने एने मारी नाल्यो. पोतानो मह्न मरण पाम्यो एथी राजाए अङ्गलनी प्रशंसा करी नहि, अने तथी सभाजनोए पण न करी. आथी अङ्गो राजानी जाण माटे कह्युं के:—

साइइ वण सर्जणाणं, साइइ भो सर्जणिगा सर्जणिगाणं । णिइतो णिरंगणो अट्टणेण णिक्खित्तसत्थेणं ॥

[अर्थात् हे वन! पक्षीओने कहे, अने हे पक्षीओ! बीजां पक्षीओने कहो के जेणे रास्त्रो छोडी दीघां हतां तेवा अष्टणे निरंगणने मारी नाख्यो छे.]

आ उक्ति उपरथी राजाए एने अट्टण तरीके ओळख्यो अने एनो सत्कार कर्यो, तथा जीवन पर्यंत चाले तेटलुं द्रव्य आप्युं. द्रव्यलोमधी संबंधोओ पण अट्टण पासे आव्यां. परन्तु 'आ लोको फरी पण मारी पराभव करहों 'ए समजीने तथा पोतानी जातने जराग्रस्त जाणीने 'सचेष्ट लुं त्यांसुधी ज धर्म थईं शकहों ' एवी समजपूर्वक अट्टणे दीक्षा लीधी."

आ कथा, जेमां वास्तिवक सामाजिक स्थिति छोकवार्तास्त्रेपे निरूपण पामी होय एवो संभव छे ते प्राचीन भारतमां मल्लविद्याना इतिहास माटे घणी अगत्यनी छे, केम के हरिवंश भागवतादिमां कृष्ण-बलरामना तथा कंसना चरित्रप्रसंगमां तथा महाभारतादिमां दुर्योधन

[अट्टण

भीम आदिना चरित्रप्रसंगमां आवता मछ अने मछयुद्धना निर्देश बाद करीए तो ए प्रकारना उल्छेखो के कथानको प्राचीन साहित्यमां विरल छे. मछविद्याविषयक स्वतंत्र रचनाओमां हमणां जाणवामां आवेलुं एक 'मछपुराण' तथा कल्याणीना चौलुक्य राजा सोमेश्वरकृत सर्वसंप्रहात्मक संस्कृत प्रनथ 'मानसोल्लास' (ई. स. नो बारमो सैको)-मांनु 'मछविनोर' नामे प्रकरण गणावी शकाय. प्राचीन गुर्जर देशमां मछविद्याना इतिहास माटे जुओ गुजरात विद्यासमा—प्रकाशित मारी पुरितका 'ज्येष्ठीमछ ज्ञाति अने मछपुराण.'

उपर टांकेली कथामां महोनां मात्स्यिक अने फलही ए नामों जेम विशेष नामों नथी, पण अनुक्रमें जातिवाचक अने कियासूचक के तेम अङ्गण पण विशेष नाम लागतुं नथी, केम के 'अङ्गण'नो अर्थ व्यायाम हो, अने ए उपरथी अहीं सतत व्यायाम करनार एक सुप्रसिद्ध मल्ल माटे 'अङ्गण' नाम प्रचलित थयुं हशे एवं अनुमान वधारे पडतुं नथी.

- १. उने, पृ. ७९; उशा, पृ. १९२
- २. आचू, उत्तर भाग, पृ. १५२-५३; उशा, पृ १९२-९३; उने; पृ. ७८-७९. वळी जुओ व्यम, पृ. ३, ज्यां आम ने अनुसरतो आ कथानकनो सार आप्यो छे. आचूमां आ कथानक मास्स्यिक मल्लनुं मरण थाय छे स्यांसुधी ज आप्युं छे.

अगहिलपाटक

अणहिलवाड पाटण. उत्तर गुजरातमां सरस्वतीने किनारे आवेला लाक्खाराम नामना प्राचीन गामने स्थाने चावडा वंशना वनराजे सं. ८०२=ई. स. ७४६मां पोताना मित्र अणहिल भरवाडना नाम उपरथी बसावेलुं नगर, जे मध्यकालीन हिन्दु गुजरातनुं पाटनगर, तथा ईसवी सनना दसमाथी तेरमा सैकाना अंत सुधी पश्चिम भारतनुं प्रमुख नगर अने संस्कृतिकेन्द्र हतुं. जैन आगमसाहित्यना

इतिहासमां पाटणनुं विशिष्ट स्थान छे. आगमनां मूळ प्राकृत सूत्रो मगधमां रचायां तो ए उपरनी सौथी प्रमाणमृत विद्यमान संस्कृत टीकाओ, एक मात्र हरिभद्रसूरिकृत टीकाओना अपवादने बाद करीए तो, अणहिल-वाडमां अथवा आसपासना प्रदेशमां रचाई छे. आचारांग अने सूत्र-कृतांग सूत्र उपरनी शीलांकाचार्यनी सुप्रसिद्ध टीकाओ पाटणथी थोडाक ज माइल दूर आवेला गंभूता (गांभू)मां लखाई हतो. विकमना बारमा शतकना प्रारंभमां अर्थात् ईसवी अगियारमी सदीना उत्तरार्धमां नवांगीवृत्तिकार तरीके जाणीता थयेला अभयदेवसूरिए जैन आगमनां नव अंग उपर प्रमाणभूत टीकाओ पाटणमां रची अने ए ज नगरमां वसता बीजा एक प्रकांड पंडित दोणाचार्ये त्यां ज ए टीकाओनुं संशोधन कर्युं. सं. ११२९=ई. स. १०७३मां दोहडि श्रेष्ठीनी वसतिमां रहीने रचायेली नेमिचन्द्रनी उत्तराध्ययन उपरनी वृत्ति, सं. ११८०=ई. स. ११२४मां सौवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौषधशाळामां रहीने रचायेली पाक्षिकसूत्र उपरनी यशोदेवसूरिनी वृत्ति, तथा सं. १२२७= ई. स. ११७१मां जीतकल्पसूत्र उपरनी श्रीचन्द्रसूरिनी व्याख्यानी रचना पाटणमां थई. शान्तिस्रिनी उत्तराध्ययन वृत्ति, आचार्य मलय गिरिनी सरल अने शास्त्रीय वृत्तिओ, द्रोणाचार्यकृत ओघनिर्युक्ति वृत्ति तथा मलवारी हेमचंद्रकृत टीकाओ पण पाटणमां रचाई होवी जोईए एम एकंदरे पुरावाओंनो विचार करतां अनुमान थाय छे. आगमेतर विषयोमां पण गुजरातनी जे सर्वांगीण साहित्यप्रवृत्तिनुं पाटण सैकाओ सुधी केन्द्र हतुं तेनी चर्चा करवानं आ स्थान नथी.

वधु माटं जुओ अभयदेवसूरि, द्रोणाचार्य, नेमिचन्द्र, मलयगिरि, यशोदेवसूरि, शान्तिसूरि, शीलाचार्य, श्रीचन्द्रसूरि, हेमचन्द्र मलधारी इत्यादि.

अन्धकदृष्णि

यदुकुळना शौरि राजाना पुत्र, एओ शौरिपुरमां राज्य करता

हता अने पाछळथी एमणे द्वारकामां आवीने राज्य स्थाप्युं हतुं. एमने सुभद्रा राणीथी समुद्रविजय वगेरे दश पुत्रो थया हता, जेओ दश दशाह तरीके ओळखाया. एमणे पोताना मोटा पुत्रने राज्य सेांपीने दीक्षा लीधी हती.²

- १ जुओ दशाह
 - २ अंद, वर्ग १

अभयदेवसूरि

चंद्र (पाछळथी खरतर) गच्छना आचार्य जिनेश्वरसूरि तथा एमना भाई बुद्रिसागरसूरिना शिष्य आचार्य अभयदेवसूरिए जैन आगमप्रनथो पैकी नव अंग उपर संस्कृत टीकाओ रची अने तेथी तेओ नवांगीवृत्तिकार तरीके आळखाया. नीचे प्रमाणे नव अंगो उपर एमनी टीकाओ छे. ज्ञाताधमकथा (सं. ११२०=ई. स. १०६४), स्थानांग (सं. ११२०), समवायांग (सं. ११२०), मगवती (सं. ११२८=ई. स. १००२), उपासक दशा, अंतकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिक दशा, प्रश्रव्याकरण अने विपाक. औपपातिक टीका अने प्रज्ञापना ततीय पद संप्रहणी गाथा १३३ एमनी रचनाओ छे. आ उपरांत अभयदेवसूरिए जिनेश्वरसूरिकृत षट्स्थानक उपर भाष्य, हरिभद्रसूरिकृत पंचाशक उपर वृत्ति तथा आराधनाकुछक नामे स्वतंत्र प्रन्थ पण रच्यो छे. वळी अभयदेवसूरिनी विनंतिथी एमना गुरुभाई जिनचंद्र सूरिए 'संवेगरंगलाला' (सं. ११२५=ई. स. १०६९) नामे प्रन्थ रच्यो हतो.

अभयदेवस्रिनी उपर्युक्त आगमप्रन्थो उपरनी वृत्तिओनी प्रश-स्तिमां उल्लेख मळे छेते प्रमाणे, ए वृत्तिओनुं संशोधन निर्वृतिकुलना द्रोणाचार्ये कर्युं हतुं. वळी प्रशस्तिओ उपरथी अनुमान थाय छे के द्रोणाचार्य जेमां मुख्य हता तेबी एक पंडितपरिषद आ वृत्तिआना संशोधनमां रस छेती हती. मगवतीवृत्तिना छेलनमां जिनभद्रना शिष्य यशश्चेद्रे अभयदेवने सहाय करी हती.

स्थानांगदृत्तिनी प्रशस्तिमां अभयदेवस्र्रिए पोतानी वृत्तिरचनाना मार्गमां रहेली मुक्तेलीओनो निर्देश करतां उत्तम संप्रदाय—अध्ययन-परंपरानो अभाव, उत्तम ऊहनो अभाव, वाचनाओनी अनेकता, पुस्तकोनी अञ्चुद्धि आदिनो उल्लेख कर्यो छे. लास करीने भगवती सूत्र उपरनी वृत्तिमां एमणे पोताना पूर्वकालीन टीकाकारोना निर्देश कर्या छे, अने ए निर्देशोनुं स्वरूप जोतां ए स्पष्ट छे के ए पूर्वकालीन टीकाओ पैकी अमुक तो एमनी सामे हती, एटलुं ज निह पण चूर्णिथी ते भिन्न हती.

आ संबंधमां बीजी एक अनुश्रुतिनी नोंध करवा जेबी छे. 'प्रमा-वकचरित' (सं. १३३४=ई.स. १२७८)ना अभयदेवस्तरि—चरित'मां शासनदेवी अभयदेवस्रिने कहे छे के 'पूर्वे निर्दोष एवा शीलांक अथवा कोट्याचार्य नामे आचार्ये अगियार अंगो उपर वृत्ति रची हती; तेमां काळे करीने बे सिवाय बधां अंगोनो विच्छेद थयो छे, माटे संघ उपर अनुप्रह करवा माटे ए अंगोनी वृत्ति रचवानो उद्यम करो.' आ उपरथी अभयदेवस्रिए नव अंगो उपर वृत्ति रची.'°

आ अनुश्रुतिमांना शोलांक आचार्य ते शीलाचार्य होवा जोईए. एने आधारे कहीए तो शीलाचार्यनी आचारांग अने सूत्रकृतांग सिवाय बीजां ११ अंगो उपरनी वृत्तिओ अभयदेवस्रिना समय पहेलां नाश पामी गई हती. आथी अभयदेवस्रिए सुचित करेली वृत्तिओं कोई बीजा बिद्धाने स्केली होवी जोईए.

आगमसाहित्यना सौथी प्रमाणभूत टीकाकारोमां अभयदेवस्र्रिनी गणतरी थाय छे. ए टीकाओनी सहाय विना अंगसाहित्यनां रहस्य समजवानुं पछीना समयमां गमे तेवा आरूढ विद्वानो माटे पण छगभग अशक्य बन्युं होत. पछीना समयना टीकाकारो अने अभ्यासीओए निरंतर अभयदेवसूरिनो आधार लीधो छे. "

अभयदेवसूरिनुं परंपरागत चरित्र 'प्रभावकचरित 'ना 'अभय-देवसूरि—चरित'मां निरूपेछं छे.

'सन्मतितर्क' उपर 'तत्त्वबोधविधायिनी' अथवा 'वादमहार्णव' नामे टीका लखनार अभयदेवसूरि राजगच्छना होई नवांगीवृत्तिकारथी भिन्न छे. एक काळे अभयदेव नाम जैन साधुओमां खूब प्रचलित हतुं, अने अभयदेवसूरि नामना दश आचार्यो अत्यार सुधी जाणवामां आव्या छे. 'रे

- श्राधअ, प्रशस्ति २ स्थासूअ, प्रशस्ति ३ ससूअ, प्रशस्ति
 अ भस्अ, प्रशस्ति ५ जेस्, ए. २१
- ६ निर्भुतककुलनभरतलचन्द्रहोणाख्यसृश्मिख्येन । पण्डितगणेन गुणवित्रियेण संशोधिता चैयम् ॥ ज्ञाघअ, प्रशस्ति, श्लो. १०; प्रव्याअ, प्रशस्ति, श्लो. १० नमः प्रस्तुतानुयोगशोधिकाये श्रोद्रोणाचार्यप्रमुखपण्डितपर्षदे— स्थासुअ, प्रशस्ति

शास्त्रार्थनिर्णयसुसौरभलम्पटस्य विद्वन्मध्रवतगणस्य सदैव सेव्य: । श्रीनिर्वृताख्यकुलसन्तदपद्मकल्पः श्रीहोणसूरिरनवद्ययशःपरागः॥ शोधितवान् वृत्तिमिमां युक्तो विदुषां महासमृहेन । शास्त्रार्थनिष्कनिकषणकषपृद्वकल्पबुद्धीनाम् ॥ — भस्भ, प्रशस्ति, स्रो. ९-१०

अणहिलपाटकनगरे श्रीमदद्रोणाख्यसूरिमुख्येन । पण्डितगणेन गुणवित्रियेण संशोधिता चेयम् ॥ औसूत्र, प्रशस्ति, श्लो. ३

- ७ भसूअ, प्रशस्ति, श्लो. ७-८
- ८ सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सद्दृहस्य वियोगतः । सर्वस्वपरशास्त्राणामदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥

१३

वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः । सूत्राणामतिगामभीर्यान्मतभेदाच कुत्रचित् ॥ क्षूणानि सम्भवन्तीह केवलं सुविवेकिभिः । सिद्धान्तानुगतो योऽर्थः सोऽस्माद् प्राद्यो न चेतरः ॥

— भसूअ, प्रशस्ति, स्रो, १-३

९ 'आयंचिणओदएणं'ति इह टोकाञ्याख्या-आतन्यनिकोदकं कुम्भकारस्य यद्भाजने स्थित तेमनाय (!) मृन्मिश्रं जलं तेन । — ए ज, पृ. ६८४

क्विचिद्वीकावाक्यं क्विचिद्वि वच्चश्चौर्णमनघं क्विचिच्छाब्दीं वृत्ति क्विचिद्वि गमं वाच्यविषयम् । क्विचिद्विद्वद्वाचं क्विचिद्वि महाशास्त्रमपरं समाश्रित्य ब्याख्या शत इह कृता दुर्गमगिराम् ॥

—ए ज, २५मा शतकनी वृत्तिने अंते यद्वाङ्महामन्दरमन्थनेन शास्त्राणिवादुच्छलितान्यतुच्छम् । भावार्थरत्नानि ममापि दृष्टी यातानि ते वृत्तिकृतो जयन्ति ॥

—ए ज, ३०मा शतकनी वृत्तिने अंते.

१० प्रच, १९-श्लो. १०४-१३

११ उदाहरण तरीके जुओ कसु, पृ. २०-२१; किक, पृ. १२; जैप्रज्ञा, पृ. २०१.

१२ जुओ जैसाइ.

अभीचि

सिन्धु—सौवीरना राजा उदायननो पुत्र, उदायन राजाए महाबीर पासे दीक्षा छेतां पोताना पुत्र प्रत्येनी श्रेयबुद्धिश्ची राज्य तेने निह आपतां पोताना भाणेज केशोने आप्युं हतुं. आश्ची रिसाईने अभीचि पोताना अंतःपुर साथे सिन्धु—सौवीरनुं पाटनगर वीतभय छोडीने चंपामां कृणिक राजा पासे चाल्यो गयो हतो.

आमां आवती कृणिक ते महावीरनो समकालीन मगधनो राजा, जेने बौद्रो अजातरात्रु कहे छे. एनुं अैतिहासिकत्व निःसंदिग्ध छे. **१४**] [अमेचि

आमां आवती बीजी व्यक्तिओ केशी, अभीचि वगेरे पण अतिहासिक होवा संभव छे.

१ भसू, शतक १३, उद्देशक ६

अरिष्टपुर

महाराष्ट्नं एक नगर.

पालि साहित्यमां शिविराजाना राज्यनी राजधानी तरीके एक अरिष्टपुरनो उल्लेख छे, पण ते मिथिलाथी पांचालना मार्ग उपर आवेलुं होय एम जणाय छे. 'प्रश्नन्याकरणवृत्ति' अने 'बसुदेवहिंडी'मां अनुक्रमे अरिष्टपुर अने रिष्टपुरनो उल्लेख छे, पण एनो स्थाननिर्णय ए उपरथी थई शकतो नथी. अरिष्टपुर ते ज रिष्टपुर, एम पण एटला उपरथी निश्चितपणे कही शकाय नहि.

कद(च मथुरानी जेम अरिष्टपुर पण बे होय-एक उत्तरमां अने बीज़ं दक्षिणमां.

जुओ **रिष्टपुर**

रम्यमस्ति महाराष्ट्रेष्वरिष्टपुरपत्तनम् ।
 तत्र त्रिलोचनो राजा बमूव मुवि विश्रुतः ॥

— वंबु, पृ. ६७

- २ मलालसेकर, 'पालि शोपर नैम्स '
- ३ प्रव्याअ, पृ ८८
- ४ बसुदेव-हिंबी, पृ. ७८

अर्कस्थली

आनंदपुरनं बीजं नाम. अर्कस्थली नामनं निर्वचन एक ज रीते शक्य छे अने ते ए के कोई काळे अर्कस्थली पण कोटचर्कनी जेम अर्क-सूर्यनी पूजानं केन्द्र होय.

जिनप्रभस्रिना 'विविध तीर्थकल्प'मां वर्णवेखां मधुरानां नोचे प्रमाणे पांच स्थळोमां एक अर्कस्थल छे— अर्कस्थल, वीरस्थल, पग्न- स्थल, कुशस्थल अने महास्थल: जो के आमांनु अर्कस्थल ए आपणुं अर्कस्थली नथी.

ि १९

 भेक्तविवजासी दुणामे कए, जहा-आणंदपुर अक्तयली, अक्तयलि आणंदपुर, निच, उद्दे• ११. जुओ आनन्दपुर.

२ 'विविध तीर्थकल्प,' पृ. १८

अर्थमागध

अर्धमागध-धी जेम प्राकृत भाषानुं एक मिश्र स्वरूप छे तेम स्थापत्यनी पण एक पद्धति होय एम जणाय छे. अमुक प्रकारना मिश्र स्थापत्यने अर्धमागध नाम आपवामां आवतं हरो.

१ जंत्रनी वृत्तिमां उतारेंलो वर्णक-धवलहर अद्भागहविष्ममेलेख्य-सेलंसिटिश...तथा ए उपर शान्तिचन्द्रनी वृत्ति-धक्लगृहं सौधं अर्धमागध-विश्रमाणि-गृहक्तिषाः शैलसंस्थितानि-पर्वताकाराणि गृहाणि, जंत्रशा, पत्र १०७ अर्बुद

गुजरातनी उत्तर संस्हदे आवेलो आबुनो पहाड, जैंनोनां मुख्य तीथों पैकी एक.

प्रभास तीर्थमां अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संस्विड (उजाणी) करवामां आवती हती.

? कोंडलमें हिंदा प्रभासे, अंब्बुयं ॥ १९५०॥ प्रभासे वा तीथे अर्बुदे वा पर्वते यात्रायां संखंडिं: क्रियते । बुक्से, वि. ३, ए. ८८४. "प्रभासे अब्बुए य पन्वए जत्ताए संखंडी कीरति" इति चूर्णे विशेषचूर्णी च । — ए ज, ए. ८८३ टिं.

अवस्ति

उज्जयिनी जे जनपदनी राजधानी हतुं ते प्रदेशनुं-माळवानुं प्राचीन नाम. जो के जैनधर्मनुं ए एक प्रमुख केन्द्र हतुं, पण जैन आगम साहित्यमां जे 'आर्थक्षेत्र' तथा एमांना साडीपचीस आर्थदेशोनो उल्लेख के तेमां अवंति नथी.

जुओ उज्जयिनी, मालव

१ उदाहरण तरीके — अवंतीजणवए उज्जेणीए नयरीए ण्हवणुज्जाणे साहुणो समोसिरया, उने, पृ. ४; अवंतीजणवए पञ्जोयस्स रण्णो मंती खंडकणो नाम, व्यम, पृ. ९३; जनानां लोकानां पदानि अवस्थानानि येषु ते जनपदाः अवन्त्यादय..., आशी, पृ. २३१, इत्यादि. जुओ पुगु मां अवन्ति.

२ जुओ बृकसू, उदे. १, सू. ५० तथा ए उपरनी क्षेमकीर्त्तिनी वृत्ति.

अवन्तिवर्धन

उज्जयिनीना पालक राजानो पुत्र. राजाए दीक्षा लेतां अवन्ति-वर्धनने राज्य सौष्युं हतुं अने बीजा पुत्र राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)ने युव-राज बनाव्यो हतो. अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी स्त्रीने वहा करवा माटे भाईने मारी नाख्यो हतो; पण पाल्ळिथी पश्चाताप थतां भाईना पुत्र अवन्तिसेनने राज्य सौपीने एणे दीक्षा लीधी हती.

महावीरना समकाछीन, उज्जियिनीना राजा प्रद्योतने वे पुत्रो हता— पालक अने गोपालक. पालक अने अवन्तिवर्धन राजाना उल्लेखो पुरा-णादिमां पण छे (जुओ केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया, वॉ. १, पृ. ३११).

जुओ पालक, मणिपम, राष्ट्रवर्धन

१ आचू, उत्तर भाग, ए. १८९-९०. वळी वर, ए, ९०-९२ अवन्तिमुकुमाल

उज्जियनोनी भद्रा नामे रोठाणीनो पुत्र, आर्य सुहस्ती विहार करता एनी यानशाळामां आवीने वस्या हता. एक वार संन्याकाळे अवंतिसुकुमाल पोतानी वत्रीस पत्नीओ साथे रमण करतो हतो त्यारे निल्नीगुल्म अध्ययननुं आवर्त्तन करता आचार्यने एणे सांभळ्या. आश्री एने जातिस्मरण थयुं अने ए आचार्यनोशिष्य थयो. पल्ली अवंति-सुकुमाले आचार्यनी अनुज्ञा लई, स्मशानमां जई अनशनपूर्वक कायो- समें कयों, एना सुकुमार पगमांथी छोही टपकतुं हतुं तेनी वासथी पोतानां बच्चां सहित आवेछी एक शियाछणी अवंतिसुकुमाछनुं शरीर खाई गई अने ए कालधर्म पाम्या एक सगमां पत्नी सिवाय एमनी एकत्रीस पत्नीओए तथा माताए दीक्षा छोधी. सगमां वधूथी जन्मेला पुत्रे पोताना पिताना मरणस्थान उपर एक देवमन्दिर कराव्यं, जे महाकाल तरीके ओळखाय छे.

१ आबू, उत्तर भाग, पृ १५७. आगमसाहित्यमां अन्यत्र अवंति
सुकुमालना उल्लेखो माटे जुओ व्यम, पृ. ८०, तथा मस (गा. ४३५
३८), संप्र (गा. ६५-६६) अने भप (गा. १६०). हेमचन्द्रे आ प्रसंगतुं
वर्णन वधु विस्तारथी कर्यु छे; जुओ 'परिशिष्ट पर्व,' सर्ग ११, श्लो.
१५१-७७. अवन्तिसुकुमालना मृत्यतुं स्थान भाचूमां 'स्मद्यानमां कंथारकुडंग' अने मसमां 'वशकुडंग' बतावेछुं छे. आज पण ए स्थेळे कुडंगेथरतुं स्थान छे एम मस (गा. ४३८) नोधे छे. कुडंगेसर,' 'कुडंगेश्वर'
अथवा 'कुडुंगेश्वर' एवां नामे आ स्थाननो निर्देश अनेक प्रवन्धासमक
प्रन्थोमां छे. 'विविधतीर्थकरुप' (१४मो सैको)नी कोई कोई प्रतोमां एनो
'कुटुंवेश्वर' एवो पाठ छे (अरा, माग ३, ए. ५७८).आ 'कुटुंवेश्वर' नाम
सक्तन्दपुराणना आवत्त्यखंडमां पण छे ए सूचक छे (पुग, ए. २०). महाकाल अने कुडंगेश्वरनी एकता संबंधमां जुओ 'विक्रमस्मृतिमन्थ'मां डो.
शालोंटे काउझेनो छेख 'जैन साहित्य और महाकाल मन्दिर.'

अशकटापिता

आभीर जातिना एक साधु. एमनुं नाम अशकटापिता पड्युं ए विशे आवी कथा आपवामां आवे छे: ज्यारे गृहस्थावस्थामां हता त्यारे एमने त्यां अत्यंत रूपवती पुत्री जन्मी हती. ए मोटी अया पछी एने गाडानी आगळ बेसाडीने एओ जता हता, ते समये ए तरुणीने जोवा माटे पाछळ आवता आभीर तरुणीए आगळ पहोंची जवानी स्पर्वामां पोतानां गाडां उत्पथ उपर छई जतां गाडां भांगी गयां. आधी छोकोए ए तरुणीनुं नाम 'अशकटा' अने एना पितानुं 'अशकटापिता' पाडचुं. आ प्रसंगथी निर्वेद पामी अहाकटापिताए पोतानी पुत्रीने परणावीने दीक्षा छीधी.

१ उशा, पृ. १२९-३० (निर्युक्ति गा १२१); निच्, उहे॰ १ अश्वसेन वाचक

आ कोई दार्शनिक छे, अने 'वाचक' पदवी उपरथी जैन होय एम अनुमान थाय छे. विकमना अगियारमा शतकमां थयेला आचार्य शान्तिस्रिए पोतानी 'उत्तराध्ययन' टीकामां एमनो मत टांक्यो छे, ' एटले तेओ एथी प्राचीनतर छे. अश्वसेन वाचक विशे कंई विशेष जाणवामां नथी.

१ उक्तं चाश्वसेनवाचकेन-'आत्मप्रत्यक्ष आत्माय'-मित्यादि, अथायं न दागोवर इति नास्तीत्युच्यते, नायमप्येकान्तो, यतस्तेनैयोक्तम्-''न च नास्तीह तत् सर्वे चक्षुषा यत्र गृह्यते,' इत्यादि, उशा, पृ. १३२

आनन्दपुर

उत्तर गुजरातमां आवेलुं वडनगर. एनुं बीजुं नाम अर्कस्थली हतुं (जुओ अर्कस्थली). जमीन मार्गे वेपारनुं ए मोटुं मथक होवाथी तेने स्थलपत्तन कह्युं छे. आ नगरनो किल्लो ईंटोनो बनेलो हतो. आनंदपुर जैन धर्मनुं मोटुं केन्द्रस्थान होवुं जोईए. आनंदपुरथी मथुरा अने मथुराथो आनंदपुर जता तेम ज आनंदपुरमां वसता साधुओना अनेक उल्लेखो मळे छे भ वीरनिर्वाण सं. ९८०मां (अथवा ९९३मां) =ई. स. ४५४ (अथवा ४६७)मां ध्रुवसेन राजाने पुत्र वीरसेनना मरणथी थयेलो शोक शमाववा माटे आनंदपुरमां सभा समक्ष 'कल्पसूत्र' वांचवामां आव्युं हतुं एवा उल्लेख 'कल्पसूत्र'नी विविध टोकाओमां छे.

पुष्पमय मुकुट आनंदपुरमां सारा बनता हता तथा 'वेडिम' (जे प्राकृत शब्दनुं 'वेष्टिम' एवं संस्कृत रूप टीकाकारो आपे छे) एटले के वस्त्रादिना वेष्टनथी बनावेली पूतळीओ बगेरे माटे पण ए

आनन्दपुर] [१९

प्रख्यात हतुं. अनंदपुरमां थती यक्षप्जा जाणीती हती. आनंदपुरना लोका रारदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वतीना किनारे जईने संखिड — उजाणी करता हता. प्राचीनवाहिनी सरस्वती उत्तरगुजरातमां सिद्धपुर पासे छे, ज्यां हजी पण कार्तिकी पूर्णिमानो मोटो मेळो मराय छे अने आसपासना प्रदेशना लोको एकत्र थाय छे. वळी उपर्युक्त उल्लेख बतावे छे के आनंदपुर ए प्राचीनवाहिनी सरस्वतीर्था अदूरवर्ती होवुं जोईए, जे हालना वडनगर साथे ठीक बंब वेसे छे.

आनंदपुरमां प्रचिति केटलांक धाराधोरणोनो पण निर्देश मळे छे; जेम के कोईना उपर खड्गनो प्रहार थवाथी ए मरी जाय तो मार नारनो अंशी रूपक दंड थतो, प्रहार थाय पण मरे निह तो पांच रूपक, अने मोटो कलह करवा माटे साडातेर रूपक दंड थतो. "

आनंदपुर संवैधमां केटलीक लोकवार्ताओ पण आगमसाहित्यनी टीकाचूर्णिओमां संघराई छे :

आनंदपुरमां एक ब्राह्मण पुत्रवधूनो सहवास करतो हतो अने पछी उपाध्यायने कहेतो के— आजे स्वप्नमां मने पुत्रवधूनो सहवास थयो हतो. अनंदपुरनो बोजो एक चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयानो उल्लेख छे. अनंदपुर ब्राह्मणोनुं केन्द्रस्थान हतुं ए वस्तु आमांथो पण फल्ति थाय छे.

आनंदपुरनुं 'कालनगर' एवं पर्याय नाम एक स्थळे आपेलुं ' छे के सेंकडो अने हजारो हायीओथी संकुल विन्ध्य नामे अरण्य आनंदपुरनी पासे आवेलुं हतुं एवो एक उल्लेख ' पिंडनियुक्ति 'नी टीकामां छे. ' आ आनंदपुर ए उत्तरगुजरातनुं वडनगर नहि पण विन्ध्याटवी पासेनुं बीजुं काई आनंदपुर होवुं जोईए.

9 एना स्थान विषेनी साधारण चर्चा माटे जुओ पुगु मां आनन्दपुर. विविध साधनो उपरथी संकल्पित करेला वडनगरना संक्षिप्त इतिहास माटे जुओ श्री. कनैयालाल दवेकृत पुस्तिका 'वडनगर.' २ यत्र तु स्थलपथेन शकटादी स्थापितं भाष्डमायति तत् स्थल-पत्तनम्, सथा आनन्दपुरम् । — बृक्के ग्रन्थ २, पृ ३४२; वळी निचू, भाग २, षृ. ४९९

३ इष्टकामयः प्राकारी यथाऽऽनन्दपुरे, वृकक्षे, प्रन्थ २, ए. २५१

४ निचू, भाग २, पृ. ५३४; व्यम, भाग ३, पृ. ८६; ए ज, (उद्दे॰ ६ उपस्थी वृत्ति) पृ. ४७; सूक्तचू, पृ. २५३

५ कसं, ष्ट. १९८-१९; किक, ष्ट. १२९-३२; कदी, ष्ट. ११३-

- ६ दवैचू, पृ. ७६; अनुहे, पृ. १३; अनुहा, पृ. ७
- ७ आचू, ए. ३३१
- ८ बुकक्षे, प्रस्थ ३, पत्र ८८३-८४
- ९ अग्रुद्धिशेषी भरेली न्यम नी मुदित प्रतिमां (भाग १, ए. ५-६) 'रूपकाणामशीतिसङ्घदण्डो' पाठ छे, प्रन्तु पछीथी बीजा दंडोना जे आंकडा आप्या छे तेनी सुलनाए अहीं ८० 'सहस्र' न होय; आधी 'सङ्घदण्डो' पाठ सुधारीने 'साहसदण्डो' छोधो छे.
 - १० व्यम, भाग १, प्र ५-६
 - ११ आम, ए. ५८५; पाय, ए. ११
 - १२ आचू उत्तर भाग, पृ. २९१
 - १३ कसंवि. पृ ११९, जुओ कालनगर
- १४ आनम्दं नाम पुरं तत्र रिपुमर्दनी नाम राजा, तस्य भार्या धारिणी, तस्य च पुरस्य प्रत्यासन्न गजकुलशतसद्दस्तंकुलं विन्ध्यमरण्यं । पिनिम, पृ ३१

ગામીર

[१] दक्षिणापथमां कृष्णा अने वेणा नदीनी आसपासनी प्रदेश, जैमां अचलपुर, वेणातट, तगरा वगेरे नगरो आवेलां हतां. आभीर जाति उपरथी जेनुं नाम पडेलुं ले तेवा आभीर प्रदेश माटे जुदां जुदां पुराणोमां जे स्थलनिर्देश ले ए जोतां लागे ले के आभीरोनी वसाहतो उत्तरोत्तर दक्षिण तरफ खसती हती. जैन आगमोमां आभीरदेश दक्षिणापथमां होवानो निर्देश ले. आर्यसमित अने आर्यवत्र आ प्रदेशमां गया हता.

आभोर] [२१

'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां जुदां जुदां राज्यो अने देशोनां नामोनी एक स्चि छे तेमां 'आभीर' पण छे. '

[२] वर्तमानकाळमां 'आभीर' प्रदेशनाम तरीके रह्यो नथी, 'आहीर' जातिमां टकी रह्यो छे. जुदा जुदा वर्णो माटे खीजमां दप-राता शब्दोनो निर्देश करतां 'सृत्रकृतांग सृत्र' उपरनी शीलांकदेवनी वृत्तिमां कह्युं छे के— बाह्यणने 'डोड,' विणकने 'किराट' तथा शृद्धने 'आभीर' कहेवामां आवे छे.'

आभीर जातिमां प्रचलित दियरवटाना रिवाजनुं सूचन पण एक कथानकमां करवामां आव्युं छे : सुरप्राममां यशोधरा नामे कोई आभीरी हती, तेनो योगराज नामे पित अने वत्सराज नामे दियर हता. दियरनी पत्नीनुं नाम योधनी हतुं. एक वार देवयोगे योधनी अने योगराज समकाले मरण पाम्यां, एटछे यशोधराए घोताना दियर वत्सराज पासे याचना करी के 'हुं तमारी पत्नी थाउं.' पोतानी पत्नी मरण पामी हती ए विचारीने वत्सराजे पण एनो स्वीकार कर्यो. कुलाचारनी वात करतां आभीगेनी मंथनिकाशुद्धिनो स्वास निर्देश कर्वामां आव्यो छे, ए वस्तु एमनी गोपालनप्रधान जीवनप्रधानी घोतक हो.

कच्छमां जैन धर्म पाळता आभीरो हता एम एक स्थळे कह्युं छे. आनंदपुरनो एक दरिद्र चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयो हतो अने त्यांना आभीरोए एने प्रतिबोध पमाडचो हतो.

- 9 आभीरदेशेऽचलपुरासन्ने कन्नाकेन्नानद्योर्मध्ये ब्रह्मद्वीपे पश्चशती तापसानामभूत्, कसु, पृ. ५९३; सहेज जुदा शब्दोमां आज उल्लेख माटे जुओ किक, पृ. १७९ तथा कदी, पृ. १४९.
 - २ जुओ वेणातट.
 - ३ जुओ तगरा.
 - ४. जुओ पुगु मां आभीर.

- ्५ आचू, पृ. ३९७. वळी जुओ वज्र आर्य तथा समित आर्य.
 - ६ कमु, पृ. ४५७; किक पृ १५२; ककी, पृ. १८१-८२.
- ७ जगत्यर्था जगद्यां ये यथा व्यवस्थिताः पदार्थास्तानाभाषितुं शिलमस्य जगद्यभाषी, तद्यथा-ब्राह्मणं डोडमिति ब्र्यात्था विणजं किराटमिति श्रूदमाभीरमिति श्रूपाकं चाण्डालमित्यादि तथा काणं काणमिति तथा खञ्जं कुञ्जं वडममित्यादि तथा कृष्टिनं क्षयिणं यो यस्य दोषस्तं तेन खरपरुष ब्रूयात् यः स जगद्यभाषी। स्कृशी, पृ. २३४ जुओ 'भारतीय विद्या' मार्च-एप्रिल १९४० मां मारी लेख 'ए नोट आन भी वई किराट-ए डिसीटफुल मर्चन्ट.' वळी जुओ गुजराती साहित्य परिषद प्रकाशित मारा वडे अनूदित 'पंचतंत्र,' पृ. ११-१२, टिप्पण; तथा एनो उपोद्घात, पृ. ४३-४४ टिप्पण.
 - ८ पिनिम पृ. ६४.
- ९ कुलसमयः—कुलाचारो यथा शकानां पितृशुद्धिः, आभीरकाणां मन्थनिकाशुद्धिः, सूकृशी, पृ. ११.
 - १० आचू, उत्तर भाग, पृ. २९१. जुओ कच्छ,

आषादभृति

उज्जियनीमां आबाद अथवा आषादमूति नामे आचार्य हता. कालधमे पामता एक साधुने तेमणे कह्युं हतुं के 'तुं देवलोकमां जाय तो मने दर्शन आपजे.' आ पछी उन्मार्गे जता आचार्यने देवलोकमां गयेला पेला साधुए चमत्कारपूर्वक प्रतिबोध पमाडचो हतो, एवं कथानक छे.

१ निचू, भाग १, पृ. १९-२०; श्राप्रर, पृ. ३०

इक्षुगृह उद्यान

आ उद्यान दशपुरमां आवेलुं हतुं. त्यां रहीने आर्थ रक्षिते चातु-मीस कर्यो हतो.

'इक्षुगृह'नो शब्दार्थ 'शेरडीनुं घर' एवो थाय. तो आ प्रदेशमां ए काळे शेरडीनुं वानेतरं थतुं हशे एवी अटकळ करी शकाय ? जुओ दशपुर. १ व्यस्म, पृ. ४१-४२

इन्द्रदत्त

चिरकाळप्रतिष्ठित मथुरा नगरीमां इन्द्रदत्त परोहित हतो. प्रासाद-मां बेठेला एणे नीचे थईने जता जैन साधु उपर पग लटकतो राख्यो अने ए रीते एने माथे पग मूक्यानो संतोष मेळव्यो. एक श्रावक श्रेष्ठीए आ जोयुं, अने क्रोधायमान थईने एणे पुरोहितनो पग काप-वानी प्रतिज्ञा करी. ए माटे ए पुरोहितनां छिद्रो शोधवा लाग्यो, पग एमां सफळता नहि मळतां एणे साधुने वात करी. साधुए कह्यं के 'आगां पूछवानुं शुं छे ? सत्कार-पुरस्कार परीषह तो सहन करवो जोइए.' श्रेष्टीए कह्युं: 'पण में प्रतिज्ञा करी छे.' साधुए पूछचुं: 'पुरोहितने घेर अत्यारे छुं चाले छे ?' श्रेष्ठीए उत्तर आप्योः 'प्रासाद कराव्यो छे: एना प्रवेशमहोत्सव वखते ए राजाने भोजन आपहो. आचार्य बोल्याः 'ज्यारे राजा प्रासादमां प्रवेश करतो होय त्यारे तमारे एने हाथ खेंचीने आघो करवो अने कहेवुं के-प्रासाद पडे छे. एटले ए समये हुं विद्यार्थी प्रासादने पाडी नाखीश.' पछी श्रेष्टीए ए प्रमाणे कर्युं अने राजाने कह्युं: 'आ पुरोहित तो तमने मारी नाखवा इच्छतो हतो.' कुद्र थयेला राजाए पुरोहित श्रेष्टीने सोंपी दीघो. श्रेष्टीए पुरो-हितनो पग इन्द्रकीलमां मुक्यो अने पळा कापी नाख्यो.

विक्रमना तेरमा सैकामां गुजरातमां मंत्री वस्तुपाछे एक जैन साधुनुं अपमान करनार, वीसलदेव राजाना मामानो हाथ कापी नाख्यो हती—एवी प्रबन्धोमां मळती अनुश्रुति आ कथानक साथे सरखाववा जेवी छे.

१ उशा, पृ. १२५-२६; उने, पृ.४९

इन्द्रपुर

मथुरानुं बीजुं नाम जो के मथुराथी भिन्न एवं इन्द्रपुर नामे

एक नगर हतुं एवो उन्लेख पण अन्यत्र छे. आ बीजुं इन्द्रपुर ते उत्तर प्रदेशमां बुलंदशहर जिल्लामां डिमाई पासे आवेछं इन्दोर होतुं घटे, ज्यांथी स्कन्दगुप्तनुं गुप्त सं. १४६ (ई=. स. ४६६)नुं ताम्रपत्र मळेछं छे. ए ताम्रपत्रमां ज ए स्थाननुं इन्द्रपुर नाम आयुं छे (जुओ दिनेशचन्द्र सरकार, 'सिलेक्ट इन्सिकिश्शन्स', नं. २०), जेमांथी प्रा. 'इन्द्रपुर दारा 'इन्द्रोर' ब्युल्पन थाय.

9 वृत्तं महुराए चेव बीयं नामं इंदपुरं ति । आचू, उत्तर भाग पृ. १९३

२ आचू, पूर्व साग, पृ. ४४८-५०; आम, पृ. ४५३-५४

उग्रसेन

भोजवृिणना पुत्र अने कंसना पिता. एमनां बीजां संतानो अतिमुक्तक, राजीमती वगेरे हतां, जेमणे दीक्षा छीधी हती. जरासंधना भयथी नासीने ए कृष्णनी साथे द्वारकामां आव्या हता. उप्रसेननो वृत्तान्त अनेक जैन चरित्रप्रन्थोमां आवे छे, पण आगमसाहित्यमां तो एमने विशेना केवळ प्रकीणं प्रासंगिक उल्लेखो ज प्राप्त थाय छे.

१ उदाहरण तरीके दृद (पृ. ३८-४१) आदिमां द्वारवतीनो वर्षक; कसूनी विविध टीकाओमां नेमिनाथनो चरित्रप्रसंग, इत्यादि.

उज्जयन्त

गिरनार पर्वत. एना स्थान अने नाम विशेनी चर्चा माटे जुओ पुगुमां 'उज्जयन्त'.

जैन आगम साहित्य अनुसार, उज्जयंतनुं शिखर २२मा तीर्थंकर नेमिनाथनां दोक्षा, केवलज्ञान अने निर्वाणथी पवित्र थयेछं छे. नेमिनाथना निर्वाणना समाचार सांभळीने दक्षिणनी पांडुमथुरामांथी सुराष्ट्र बाजु आवेला पांडवो उज्जयत उपर आवी, घणुं तप करीने सिद्धिमां गया हता.

उज्जयंत. वैभार वगेरे पर्वतोने कोडापर्वत कहेवामां आव्या छे.⁸ उज्जयंत उपर घणा प्रपात—जळघोत्र हता.⁸ हाल तो गिरनार घोध माटे जाणीतो नथी. पण गिरनारनी तळेटीमां अशोके बंधावेछं सुदर्शन तळाव पृष्कळ पाणी भरावाने कारणे वारंवार फाटी जुद्धे एमां जुना काळना आ धोधनो पण हिस्सो होय.

उज्जयंतादि तीर्थोमां प्रतिवर्ष यात्राओ-उजाणीओ थती हती.

जुओ गिरिनगर तथा रैवतक

९ ज्ञाध, पृ. १२६-२७; वतृ. पृ. ३०; अ।म, पृ. २१४; कसु, पृ ३९९ थी आगळ; ककौ, पृ. १६९-७०, इत्यादि

- २ ज्ञाध, पृ. २२६-२७
- ३ भस्थ, शतक ७, उदे. ६
- ४ ब्कक्षे, भाग ३, पृ. ८२७; भाग ४, पृ. ९५७
- ५ उउजेंत णायसंडे सिद्धसिलादीण चेव जतास । समत्तभाविएसु ण हुंति मिण्छत्तदोसा उ ॥३१९२॥

उज्जयन्ते ज्ञातखण्डे सिद्धशिलायामेवमादिषु तीर्थेषु याः प्रतिवर्ष यात्रा:-सङ्ख्यो भवन्ति तासु गच्छतो मिध्यात्वस्थिरीकरणादयो दोषा न भवन्ति। एज, भाग ३, पृ. ८९३

उज्जयिनी

अवन्ति जनपदनुं पाटनगर. सम्राट् अशोके पोताना पुत्र कुणालने उज्जयिनी कुमारभुक्तिमां आप्यं हतुं. अने कुणालना पुत्र संप्रतिए त्यां रहीने आखा दक्षिणापथ तेम ज सुराष्ट्र उपर आधिपत्य जमान्यं हतुं.ै

उज्जयिनीमां जीवंतस्वामीनी प्रतिमा हती, तेने वंदन करवा माटे आर्य सहस्ती उज्जयिनी आन्या हता. आ सिवाय आर्य महागिरि, वण्डरुदावार्थ, आर्थ रक्षित, भद्रगुप्ताचार्य, आर्थ आषाद वगेरे अनेक आचार्यो उज्जियनीमां आवता हता. उज्जियनीना

र६] [उज्जयिनी

गर्दिभिल्ल राजाए कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं हरण कर्युं हतुं, तेथी कालकाचार्य राक लोकोने तेडी लाव्या हता ए अतिहासिक अनुश्रुति पण जाणीती ले. उज्जियनीमां स्नपन नामे उद्यान आवेलुं हतुं, ज्यां साधुओ आवास करता. उज्जियनीमां एक काले पांचसो उपाश्रयो हता.

पण उज्जयिनी केवळ जैन धर्मनं केन्द्र हतं एम नहि. भारत-वर्षना हृदयभागमां आवेलुं होइ ए जेम एक संस्कृतिकेन्द्र हतुं तेम वेपारनुं पण मोटुं मथक हतुं. दूर दूरना प्रदेशना लोको कार्यवशात उज्जयिनो आवता. उज्जयिनीना प्रद्योत राजानो आण भरुकच्छ उपर पण हती. एटले लाट अने उज्जियनीनो संबंध तो स्वाभाविक हो. भरुकच्छमांथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने प्रयोजन-वशात् उज्जयिनी मोकल्यो हतो. ैद्द काळना समयमां सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जयिनी जवा नीकळचो हतो अने मार्गमां एने रक्तपट (बौद्ध) भिक्षुओनो संगाथ थई गयो हतो. व आभीर देशना अचलपुर अने उज्जियिनी वच्चे पण एवो ज संबंध हतो अने एक समुदायना साधुओं आभीर देशनां नगरीमां तेम ज उज्जयिनी आस-पासना प्रदेशमां विहरता. अर्थ उज्जियनी अने कौशांबी वच्चे पण अवरजवरनो घणो संबंध हतो (जुओ उशा, पृ. १११). जो के मार्गमां गाढ अटवीमांथी पसार थवानं होवाथी प्रवासनां विन्न धणां हतां एम 'उत्तराध्ययन 'नी नेमिचन्द्रनी वृत्तिमां तथा 'वसदेवहिंडी'-मां आवता अगडरत्तना प्रवासवर्णन उपस्थी जणाय हो.

'कुत्रिक' अर्थात् त्रिभुवननी कोई पण वस्तु जेमां मळे एवा 'आपण' अर्थात् मोटा वस्तुभंडारो—'कुत्रिकापण' प्राचीन भारतनां वे महानगरो—उज्जयिनी तेम ज राजगृहमां हता.'' राजा प्रधोतना राज्यकाळ दरिमयान उज्जयिनीमां नव कुत्रिकापण हता. आ भंडारीमां वस्तुनी कीमत ते खरीदनारना सामाजिक दरजा प्रमाणे छेवामां उज्जयिनी] [२७

आवती. जे माणस दीक्षा छेवानो होय ते पोतानां जरूरी उपकरण, पोते सामान्य माणस होय तो कुन्निकापणमांथी पांच रूपियानी कीमते खरीदी शकतो, जो ते इम्य (छक्षाधिपति) अथवा सार्थवाह होय तो तेने एक हजार आपवा पडता अने जो ते राजा होय तो तेने एक हाल रूपिया आपवा पडता. एवी कथा छे के तोसिंछ नगरवासी एक विणके उज्जयिनीना कुन्निकापणमांथी ऋषिपाछ नामे एक व्यंतर खरीबो हतो अने पछी तेने प्रसन्न करीने एनी पासे ऋषितडाग नामे एक तळात्र बंधान्युं हतुं. ए ज प्रमाणे भरकच्छ-वासी बीजा एक विणके कुन्निकापणमांथी एक मृत खरीबो हतो अने तेनी पासे मृततडाग नामे तळाव बंधान्युं हतुं. विभुवननी कोई पण सजीव के निर्जीव वस्तु—भूत सुद्धां—कुन्निकापणमां अछम्य नहोती एवं आ कथानको सूचवे छे अने छोकमानसमां उज्जयिनी अने राजगृह जेवां नगरोनी वाणिज्यसमृद्धिए केवुं स्थान जमाव्युं हतुं ए बतावे छे.

प्राचीन भारतना सार्थ मार्गो-'ट्रेड रूट्स'-ना एक महत्त्वना संगमस्थान उपर उज्जयिनी आवेलुं हतुं

एक भोळा पतिने तेनी पुंश्वली पत्नी ऊंटनां लींडां वेचवा माटे उज्जयिनो मोकले छे अने पछी पोते विटसेवा करे छे एवुं कथानक पण मळे छे.

अहिक समृद्धि साथे जोडायेला मोजशोख अने मोगविलास पण स्वामाविक रीते ज उज्जयिनीमां प्रवर्तमान हता. 'बृहत्कलपसूत्र'-वृत्तिमांना एक कथानक प्रमाणे-एक देवीए विधवानुं रूप धारण कर्युं अने दासीओथी वींटायेली ते उपाश्रयमां आवी साधुने वंदन करीने बेठी. सायुए पूछ्युं के 'श्राविका! तुं क्यांथी आवी छे?' त्यारे ते बोली के 'पाटलिपुत्रमां हुं जन्मी छुं अने साकतना एक

[उज्जियिनी

श्रेष्ठी साथे मारं लग्न थयुं हतुं. पितनुं मरण थतां तीर्थयात्राना मिष्यो वडीलोनी रजा लईने भोगनी आकांक्षा करती हुं उज्जयिनी जाउं छुं. में सांभल्युं ले के उज्जयिनीमां परीषहथी पराजित थयेला घणा साधुओं ले. पण हवे तमने जोया पली मारं मन आगळ जवानी ना पाडे ले.

सर्वगणिकाप्रधान देवदत्ता उज्जयिनीनी गणिका हती अने विटोमां प्रधान मूलदेव पण उज्जयिनीमां वसतो हतो."

उज्जियनी, माहेश्वरी, श्रीमाल वगेरे नगरीओमां लोको उत्सव-प्रसंगोए एकत्र शईने मदिरापान करता हता. अने एवा लोकोमां माह्मणोनो पण समावेश थतो हतो. र

उज्जयिनीमां अमे तेनी आसपासमां राजाओ अने धनिकोनुं समाराधन करनारा वर्गोनी पण वस्ती हती. उज्जयिनीनी पासे नटोनुं एक गाम हतुं. २३ उज्जयिनीवासी अङ्गणमल्लनुं कथानक पण आ दृष्टिए रसप्रद हो. २४

उज्जयिनीमां एक बार मोटी आग लागी हती अने नगरनी घणी भाग बळी गयो हतो. आशी जे वेपारीओए नगरनी बहार पोतानो माल भयो हतो तेमणे अनेकगणा नाणां उपजान्यां हतां. "

मालव जातिना आक्रमणकारो उज्ययिनी अने आसपासना प्रदेशो उपर घणी वार हुमला करता अने माणसोनुं हरण करी जता तथा तेमने गुलाम तरीके वेची नाखता. समय जतां मालव जातिना छोको अवंतिजनपदमां वस्या हशे अने तेथी ए प्रदेश पण पालळथी 'मालव' नामथी ओळखायी हशे. सातमा—आठमा सैकाथी अवन्ति मालव तरीके ओळखाय छे, ध्यो केटलाक विद्वानोनो मत छे, पण 'अनुयोगद्वारसूत्र'मांना एक उल्लेखनो विचार करतां आधी ये जूना समयथी अवन्ति माटे 'मालव' नाम प्रचारमां होतुं जोईए. उ नोंध:—जुरां जुरां साधनो उपस्थी रचायेळा उज्जिक्सिना काळानु-क्रमिक इतिहास माटे जुओ बिमलाचरण ला-क्रत 'उज्जिक्स्नी इन एन्स्यन्ट लिटरेचर.' जो के ए इतिहास मुख्यत्वे बौद्ध अने बीजां साधनोने भाषारे लखायों छे. जैन साधनप्रन्थों एमना ध्यानमां तुलनाए ओहा आव्या जणाय छे.

- १ बुकक्षे, भाग ३, पृ. ९१७; अनुहा, पृ. १०.
- २ ए ज. वळी निचू, भाग २, पृ. ४३८
- ्र ३ बुकक्षे, भाग ३, ए. ९९८
 - ४ जुओ महागिरि आर्थ.
 - ५ जुओ चण्डरुद्राचार्यः
 - ६ जुओ रक्षित आर्थ.
 - ७ जुओ भद्रगुप्ताचार्य.
 - ८ जुओ आषाढभूति.
 - ९ जुओ कालकाचार्य.
 - १० उने, पृ. ४.
 - ११ आचू, उत्तर भाग, पृ. १९६
 - १२ ए ज, पृ. २०९
 - १३ एज, पृ. २७८
 - १४ उशा, पृ. १००

१५ वृक्तमा, गा. ४२१९; वृक्तमे भाग ४, ए. ११४५. आ विशे जुओ सातमी ओरियेन्टल कोन्फरन्समां मारो लेख 'ए नोट ओन धी कुन्निकाएण'. एना गुजराती सार माटे जुओ 'इतिहासनी केडी'मां 'कुन्निकाएण-प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स' ए लेख; वळी जुओ कुन्निकाएण.

- १६ बुकक्षे, भाग ४, पृ. १६४५-४६
- १७ ए ज.
- १८ दवेहा, ष्ट. ५७; स्थातूअ, ष्ट. २६१
- १९ बुक्सा, गा. ५७०५-६; बुक्क्षे, भाग ५, छ. १५०९
- २० उशा, ष्ट. २१८; जुओ मूलदेव.

२१ आसूचू, पृ. ३३३.

२२ उशा, पृ. १११.

२३ नंम, पृ. १४५. उड़्जथिनी पासेना एक गामना नटनी हाजर-जवाबी संबंधी घातो विशे जुओ 'प्रजाबंधु -गुजरात समाचार,' दीपोत्सवी अंक, सं. २००६ मां मारो लेख 'नटपुत्र रोहक अने राजा.'

२४ जुओ अट्टण.

२५ वृक्क्षे, भाग ५, पृ. १३६२-६३.

२६ ओनिद्रो, पृ. १९; आचू. पृ. २८३; उशा, पृ. २९४, इत्यादि

२० ' बुद्धिस्ट इन्डिया,' पृ. २८; ज्योडि, पृ. १३

२८ जुओ मालव.

उदयन

वत्सदेशनी राजधानी कौशांबीनो राजा; सहस्रानीकनो पौत्र, शतानीक अने मृगावतीनो पुत्र, वैशालीना गणसत्ताक राज्यना नायक चेटकनो भाणेज, अने जयंती श्रमणोपासिकानो भत्रीजो. वीणावादनमां निपुणताने कारणे ते 'वीणावत्सराज' तरीके ओळखातो हतो. अवंतिना राजा प्रचीत अथवा चंडप्रचीते पोतानी पुत्री वासवदत्ताने वीणा शीखववा माटे उदयनने युक्तिथी केद कर्यो हतो, परंतु उदयन बासवदत्ताने साथे छई केदमांथी नासी छूट्यो हतो. ' उत्तराध्ययन सूत्र ' उपरनी शान्त्याचार्यनी वृत्तिमां एक अंगविलेपन बनाववानुं प्रमाण आपेछं छे, अने वासवदत्ताए उदयननुं चित्त हरी लेवा माटे आ विलेपननो उपयोग कर्यो हतो एम कह्युं छे. '

वत्सराज उदयन अने वासवदत्ता अनेक संस्कृत काव्यनाटकोमां नायक—नायिका तरीके आवे छे ए सुप्रसिद्ध छे. पुराणोनी राजवंशा-वलीओमां शतानीक पछी उदयननुं नाम आवे छे (पार्जिटर, 'डाइने-रिटझ ओफ घ कलि एज,' पृ. ७, ६६, ८२) पालि साहित्यमां पण अनेक स्थळे उदयन—वासवदत्ता विशेनां कथानक मळे छे.

उदयन ए बुद्ध अने महावीरनी समकालीन अतिहासिक व्यक्ति तरीके पुरवार थयेल ले.

जुओ मद्योत

- १ मसू, शतक १२, उर्दे. २
- २ उशा. पृ. १४२
- ३ आचू, उत्तर भाग, पृ. १६१-६२
- ४ उद्या, पृ. १४३
- ५ जुओ मलालसेकर, 'पालि प्रोपर नेम्स '
- ६ जुओ ' केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया,' वो. १, ए. ३०८-१०/

उदायन

सिन्धु—सौवीर देशनो बळवान राजा. ते वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री प्रभावतीने परण्यो हतो. ते सिन्धु—सौवीर आदि सोळ जनपदोनो, वीतभय आदि त्रेसठ नगरोनो अने महासेन (चंडप्रधोत) आदि दश मुकुटबद्ध राजाओनो अधिपति हतो. उदायने पोताना भाणेज केशीने राज्य आपीने महाबीर पासे दीक्षा लीधी हती. केटलाक समय पछी महाबीरनी अनुज्ञा लईने ते पालो वीतभय आव्यो त्यारे आ पोतानुं राज्य पाछुं लेवा आव्यो हशे एम मानीने केशीए तेने विष खबराबीने मारी नाख्यो हतो.

- १ भस्, शतक १३ उद्दे० ६; उने, ए. २५२-५५; इ.स. ए. ५८७
 - २. आचू, उत्तर भाग, पृ. ३६-३७

एछकच्छपुर

दशाणिपुरनुं बीजुं नाम. दशाणिपुर एलकच्छ तरीके ओळखायुं एना कारणमां नीचे प्रमाणे कथानक आपवामां आवे छे—दशाणिपुरमां एक श्राविकानो पति मिध्यादिष्ट हतो. एना उपर कोषायमान थईने एक वार देवताए एनी आंखो फोडी नाखी, पण आथी श्राविकानो अपयश थशे एम जाणीने घेटानी आंखो ('एलगस्स अच्छीिंग') लावीने बेसाडी दीधी. सवारे ए मागसने लोको कहेवा लाग्या के 'तारी आंखो एलक-घेटा जेवी छे.' लोकोमां आवो पण प्रवाद थयोः कोई पूछे 'क्यांथी आवो छो?' तो एने जवाब मळतो 'ज्यां पेलो एलकच्छ ('घेटा जेवी आंखवाळो') छे त्यांथी.' आ प्रमाणे दशाणिपुरनुं एलकच्छ नाम थयुं.

आ नगर वत्थमा नदीना किनारे आवेलुं हतुं.ै गजाप्रपद तीर्थ पण एलकच्छनी पासे हतुं. आर्थ महागिरि विदिशामां जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाप्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकच्छ गया हता.

झांसी जिल्लामां मोथ तहेसीलमां आवेलुं एरल ते आ एलकच्छ हुरो एवो केटलाकनो मत छे. ^४

जुओ मजाप्रपद, दशार्णपुर, रथावर्त

- १ आचू, उत्तर भाग, पृ. १५६-५७; आसूच् पृ. २२६
- २ आचू, उत्तर भाग, पृ. १५६-१५७; आस्चू, पृ. २२६
- ३ दो वि जणा वहदिसि गता, तत्य जिणपिंडमं वंदिरुण अङ्ज-महागिरि एलकच्छं गता गयगगदं वंदका, आचू, उत्तर भाग, पू. १५६-५७
- ४ जगदोशचन्द्र जैन, 'लाइफ इन एन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ. २८२ कच्छ

भरत चक्रवर्तीना दिग्विजयवर्णनमां तेणे कच्छ देश उपर विजय क्यों होवानो उल्लेख छे.

कच्छमां आभीरो जैन धर्मानुयायी हता. आनंदपुरनो एक दिरद्र बाह्मण कच्छमां गयो हतो तेने ए आभीरोए प्रतिबोध पमाडचो हतो. देशाचारनी नेधि करतां कह्युं छे के कच्छमां गृहस्थो रहेता होय एवा आवासमां साधुओ रहे ए दोषरूप गणाई नथी.

जुओ आभीर

- १ जंब्र, पृ. २१८; जंब्रह्मा, पृ. २२०
- २ आचू, उत्तर भाग, पृ, २९१
- ३ बुक (विशेषचूर्णि), भाग २, पत्र ३८४ टि. 'कच्छ'नो मूळ अर्थ 'समुद्र अथवा नदीकिनारे आवेलो भीनाशवाळो प्रदेश ' एवो छे. प्राकृतमां पण एनो एवो अर्थ छे. सर॰ मालुयाकच्छ (ज्ञाध, श्रु. १, अध्य. १), भरुकच्छ आदि. कच्छ विशेना पौराणिक उल्लेखो माटे जुओ पुगु.

कमलसंयम उपाध्याय

खरतरगच्छना जिनभद्रसूरिना शिष्य कमलसंयम उपाध्याये सं. १५४४=ई. स. १४८८मां 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपर 'सर्वार्थसिद्धि ' नामे वृत्ति रची छे. कमलसंयमे सं. १५४९=ई. स. १४९३ मां 'कर्मस्तव' नामे कर्मप्रन्थ उपर विवरण रन्युं छे. आ सिवाय जूना गुजराती गद्यमां 'सिद्धांतसारोद्धार सम्यक्त्वोल्लास टिप्पन' ए तेमनी कृति छे.

- १ जुओ उक, प्रत्येक अध्ययनने अंते पुष्पिका
- २ जैसाइ, पृ. ५१७

कम्बल-सम्बल

मथुराना जिनदास श्रावक पासे कंबल-संबल नामे बे उत्तम बळद हता. एक वार मथुरामां भंडीर यक्षनी यात्रा हती त्यारे जिन-दासनो एक मित्र तेने पृछचा सिवाय ए बळदोने गाडे जोडवा लई गयो, अने तेणे वळी बीजाने आप्या. ज्यारे पाछा छाववामां आव्या त्याये कंबल-संबल खूब थाकी गया हता अने थोडा समय पछी तेओ अनशन करीने मरण पाम्या, तेओ मरीने नागकुमार थया हता: सरभिपुर जती वखते गंगा पार करतां महावीर जे नावमां बेठा हता तेने थयेलो उपद्रव ए नागकुमारोए टाळ्यो हतो एवं कथानक छे.

् जुओ **जिनदास**

१ आचू, पूर्व भाग पृ २८५; क्षानि, गा. ४६९-७९; बृकक्षे, भाग ५, पृ. १४८९; कमु, पृ. ३०६-७; किक, पृ. १०५; करी पृ. ९०; निचू, भाग ४, पृ. ८२४ मां आ कथानक छे, पण त्यां 'कंबल-संबल'नो नामनिर्देश नथी.

कसेरमती

ए नामनी नदी. ए घणी प्रसिद्ध हती. एने विशेना एक मात्र उपलब्ध उल्लेख उपरथी अनुमान थाय छे के कां तो एमां पाणी रहेतुं नहोतुं अथवा ए पाणी बेस्वाद हतुं.

आ नदीनो उल्लेख भरुकच्छवासी वज्रभूति आचार्यना संबंधमां आवे छे. एथी लाटमां अथवा आसपासना प्रदेशमां ते आवेली हरो

राजशेखरनी 'काञ्यमीमांसा' (त्रीजी आवृत्ति, पृ. ९२ तथा परिशिष्ट पृ. २८४)मां तेम ज अन्यत्र पौराणिक भूगोळ वर्णवतां भारतवर्षना नव भागोमां एक 'कसेरुमान्' प्रदेशनो उल्लेख छे; पण एने आ कसेरुमती नदी साथे केई संबंध होय एम लागतुं नथी.

१ दिहा सि कसेरमती, पीयं ते पाणियं, वर तुह नाम न दंसणयं। अत्र कसेर नाम नदी। तस्याः प्रसिद्धिरतीय। नवरं न प्रसिद्ध्यनुरूपं तस्याः पानीयमिति क्षेपः। व्यम (भा. गा. ५८-५९ उपरनी वृत्ति).

२ जुओ वज्रभृति आचार्य.

काकिणी

एक नानो सिको. वीस कपर्दक—कोडी बराबर एक काकिणी थती. ए सिको तांबानो हतो अने दक्षिणापथमां पण तेनो व्यवहार चाछतो हतो. एक भिखारीए रूपक वटावीने कांकिणीओ करी हती अने दररोज एक—एक कांकिणी ते वापरतो हतो एवं कथानक 'उत्तराध्ययन सूत्र 'नी शान्तिसूरिनी वृत्तिमां छे. अम छतां राजपुत्रोनी बाबतमां 'कांकिणी' शब्दनो अर्थ 'राज्य' एवो थतो हतो. जैन

मान्यता प्रमाणे चक्रवर्तीनां रत्नोमां 'काकिणी' रन्ननो पण समावेश थाय छे.

काकिणीनी कीमत रूपकना अंशीमा भाग बराबर हती एम डॉ. याकोबीए केटली टीकाओने आधारे कह्युं छे. 'काकिणी 'नुं बीजुं नाम 'बोडी ' हतुं एम सं. १४४९=ई. स. १३९३ मां पाटणमां लखायेला 'गणितसार 'ना गुजराती अनुवादमां आपेलां तोल, माप अने नाणानां कोष्ठको उपरथी जणाय छे. हलकी कीमतना सिका तरीके आचार्य हेमचन्द्रनां अपभंश अवतरणोमां 'बोड्डि 'नो प्रयोग छे."

- १ 'काकिणिः ' विंशतिकपर्दकाः, उशा, पृ. २७२
- २ ताम्रमयं वा नाणकं यद् व्यवहियते यथा दक्षिणापये काकिणी। बुकक्षे, भाग २ : पृ. ५७४
 - ३ उशा, पृ. २७६
 - ४ जुओ कुणाल.
- ५ उ. नो अंप्रेजी अनुदाद (सेकेड बुक्स ऑफ ध इस्ट, प्रन्थ ४५), पृ. २८
- ६ '२० कउडे कागिणी ते भणीइ बोडी'—बारमुं गुज. साहित्य-संमेलन, शहेवाल, इतिहास विभाग, पृ. ४०
- ७ 'केसरि न लह्ड बोड्डिअ वि गय लक्खेर्हि घेप्पंति'-- 'प्राकृत व्याकरण,' ४. ३३५

काननद्वीप

ज्यां जुदी जुदी दिशाओमांथी जळमार्गे माल आवतो हतो एवा जलपत्तन तरीके काननद्दोपनो निर्देश छे. एमां बहारथी नावद्दारा आवतुं भान्य खवातुं हतुं. भा द्दोपनुं 'काल्ल्णाद्दीप' एवं नाम पण पाठफेरथी मळे छे.

आ द्वीपनुं स्थान निर्णीत थई शक्युं नथी.

१ आसूचू, पृ. २८१; उशा, पृ. ६०५, उशामां आ साथे स्थलपत्तन तरीके मथुरानो उल्लेख छे, २ वृकक्षे, भाग ३, पृ. ३८३-८४ ३ आसूचू, पृ. २८१

कान्यकुब्ज

कनोज शहेर. कान्यकुब्ज नगरना राजा साथे एक जैन सूरिनो गोष्टिप्रबंघ 'आवश्यक सूत्र ' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमां छे. परतुत राजा ते कान्यकुब्जनो प्रतिहारवंशीय आम राजा अथवा नागमह बीजो (सं. ८६४-८९०=ई. स. ८०८-८३४) अने ए सूरि ते बप्पमिहसूरि होवा घटे. मोढेराथी कान्यकुब्ज, अने कान्यकुब्जथी मोढेरानां बप्पमिहसूरिनां पर्यटनो तथा आम राजा साथेनी तेमनी गोष्टि इत्यादिनुं वर्णन 'प्रभावकचरित'-अंतर्गत 'बप्पमिहसूरिचरित'मां प्राप्त थाय छे.

कान्यकुब्ज ए निःशंक रीते मध्यकालीन भारतनां सौथी समृद्ध नगरो पैकी एक हतुं. 'सूत्रकृतांग सूत्र ' उपरनी शीलाचार्यनी वृत्तिमां उद्भृत करवामां आवेला एक हालरडामां नकपुर, हस्तकल्प, गिरिपत्तन, सिंहपुर, कुक्षिपुर, आयामुख अने शौरिपुरनी साथे कान्यकुब्जनो पण निर्देश ले. रडता बालकने आ बधां नगरोना राजा तरीके वर्णवीने लानुं राखवानो प्रयास एमां ले.

- १ आम, पृ. ९२-९३
- २ मुनशी, 'ग्लोरी धेट वेंझि गुर्जर देश,' वा. ३, प्ट. ५९, ७५; भोझा, 'राजपूताने का इतिहास,' खंड १, प्ट. १६७
- ३ रात्रावण्युत्थिताः सन्तो हदन्तं दारकं धात्रीवत् संस्थापयन्त्यनेक-प्रकारेहल्लापनेः तद्यथा—''सामिओ सि नगरस्स य णक्कउरस्स य इत्थ-कृप्पगिरिपष्टणसीहपुरस्स य उण्णयस्स निन्नस्स य कुच्छिपुरस्स य कृणाकुउज-आयामुहसोरियपुरस्से य,'' सुकृशी, पृ. ११९

कार्तवीर्थ

हस्तिनापुरनो राजा, जे पुराणो प्रमाणे माहिष्मतीना सहस्रार्जुन तरीके प्रसिद्ध छे. जमदिश ऋषिनी पत्नी रेणुकानुं हरण कार्तवीर्यनो पिता अनंतवीर्य करी गयो हतो, एथी जमदिश्चना पुत्र रामे—परशुरामे एने मार्यो. आश्ची कार्तवीर्ये जमदिश्चनो वध कर्यो; परिणामे परशुरामे सात वार पृथ्वी नक्षत्री करी, जेना बदलामां कार्तवीर्यना पुत्र सुभूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो.

सुभूमें एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कयों ए वस्तु पुराणोमां क्यांय नथी ए नोंधपात्र छे.

१ सूक्तशी, पृ. १७०

कालकाचार्य-१

तुरुमिणी नगरीमां रहेतो भद्रा नामे ब्राह्मणीना तेओ भाई हता. तेमनो भाणेज—भद्रानो पुत्र दत्त ए नगरना राजाने हांकीने गादी पचावी पडचो हतो. एणे घणा यज्ञो कर्या हता. तेनी समक्ष कालका-चार्ये यज्ञोनी निन्दा करवाथी दत्ते आचार्यने केद कर्या हता. आचार्यनी भविष्यवाणी अनुसार, राजा पाछळथी भूंडे हाले मरण पाम्यो हतो. आ कालकाचार्ये इन्द्र समक्ष निगोदना जीवो संबंधी व्याख्यान कर्युं होवानी पण कथा छे.

आ कालकाचार्य गर्दभिछनो नारा करनार कालकाचार्यथी भिन्न तेम ज एमना पूर्ववर्ती होवानो मुनि कल्याणविजयजीनो मत छे. आ प्रथम कालकाचार्यनो समय तेमणे वीरनिर्वाण सं. ३०० थी ३७६ (=ई. स. पूर्वे २२६थी १५०)नो गण्यो छे. अ

- १ आच् , पूर्व भाग, पृ. ४९५-९६; आम, पृ. ४७८-७९
- २ 'प्रभावकचरित,' प्रस्तावना, पृ. २३-२४
- ३एज

कालकाचार्य-२

उज्जयिनीना विषयी राजा गर्दिमिछनो नाश करावनार तथा पर्युषणपर्वने भादरवा सुद पांचमने बदछे चोथना दिवसे करावनार तरोके आ आचार्य जैन इतिहासमां प्रसिद्ध छे. प्रथम कालकाचार्य ब्राह्मणपुत्र हता, ज्यारे आ द्वितीय कालकाचार्य, 'प्रभावकचरित' अनुसार, धारावासनगरना क्षत्रिय राजा वीरसिंहना पुत्र हता. एमनो जीवनकाळ मुनिश्री कल्याणविजयजीना मत प्रमाणे, वीरनिर्वाणनी पांचमी शताब्दीमां अर्थात् ईसवी सन पूर्वे १ छी सदीना अरसामां छे.

उज्जियनीना गर्दभिष्ठ राजाए कालकाचार्यनी युवान बहेन सरस्वती जे पण साध्वी हती तेनुं हरण करीने एने अंतःप्रमां दाखल करी हती. आथी कालकाचार्य पारसकुल-ईरानने किनारे जईने राकोने हिन्दुकदेश—हिन्द (जुओ **हिन्दुकदेश**) उपर आक्रमण करवा माटे तेडी लाव्या हता. पहेलां तो तेओ बधा सुराष्ट्रमां आव्या. वरसादनो समय होवाथी त्यां रोकाई जवुं पडचुं. पछी चोमासुं पूरुं थतां कालकाचार्ये शकोने गर्दभिल्ल उपर आक्रमण करवा माटे प्रेयी. लाटना राजाओ जेमनुं गर्दभिल्छे अपमान कर्युं हतुं तेओ पण साथे भळ्या; अने बधाए मळी उज्जयिनीने घेरी घाल्यो. आ बाजू , गर्दभिछ राजा गर्दभीविद्यानी साधना करतो हतो. गर्दभीना स्वरूपमां ए विद्या आवीने मोटो अवाज करती. एटले शत्रुसैन्यमां जे कोई एनो अवाज सांभळे ते रुधिर ओकतो धरती उपर पडतो. कालकाचार्ये आ रहस्य जाणीने अनेक बाणावळी योद्धाओने तैयार रहेवा कह्यूं के 'गर्दभी पोतानं मों पहोळं करीने शब्द करे त्यार पहेलां तमारे ते बाणवर्षाथी पूरी देवूं. ' तेओए तेम कर्युं, एटले गर्दभी क्रोधायमान थई गर्दभिल्ल उपर विष्टामूत्र करी, तेने लात मारीने चाली गई. अबळ बनेला गर्देभिछनो नाश करीने उज्जयिनी कबजे छेवामां आवी, तथा कालकाचार्ये पोतानी बहेनने पाछी संयममां स्थापित करी.

पर्युषणपर्वना तिथिपरिवर्तन संवंधमां आगमोक्त कथानक आ प्रमाणे छे: भरुकच्छमा^४ बल्लिमत्र राजा हतो, अने तेनो भाई भानुभित्र युवराज हतो. तेमनी बहेन भानुश्री नामे हती, जेनी पुत्र बलभानु हतो. कालकाचार्य एक वार विहार करता त्यां आव्या अने तेमनी देशना सांभळी बलभानुए दीक्षा लीघी. आथी रुष्ट थयेला बलमित्र-भानमित्रे कालकाचार्यने निर्वासित कर्या. वळी बीजी एक प्राचीन परंपरा प्रमाणे, बलमित्र-भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता. तेमणे पोताना पुरोहितनी शिखवणीथी तेमने निर्वासित कर्या हता. ज्योरे त्रीजा एक मत प्रमाणे, राजाए आखा शहरमां अनेषणा करावी हती-एटले आचार्यने क्यांयथी भिक्षा मळती नहोती. आथी तेमणे नगर छोडी दीधं. वर्षाकाळमां ज आचार्य प्रतिष्ठान जवा नीकळ्या अने त्यांना संघने तथा श्रावक राजा सातवाहनने अगाउथी पोताना आगमननी खबर आपी. त्यां जड्डैने आचार्ये भादरवा सुद पांचमने दिवसे पर्युषण करवानुं कह्यं, त्यारे राजाए कह्यं, 'ते दिवसे तो मारे छोकरूढि अनुसार इन्द्रमहोत्सव करवानी होय छे, माटे पर्व आपणे छठने दिवसे करीए.' आचार्य बोल्या के 'पर्वेनुं अतिक्रमण न थई शके. ' आथी राजाए चोथनुं सूचन कर्युं अने ते आचार्ये स्वीकार्युं. त्यारथी चोथना दिवसे पर्युषणनी उजवणी शरू थई.

अविनीत शिष्यना परित्यागनुं एक कथानक पण कालकाचार्यना संबंधमां छे. ए समये कालकाचार्य उज्जियनीमां रहेता हता. तेमनो कोई शिष्य भणवा इच्छतो नहोतो; आधी नाराज धईने, एमना बहु-श्रुत प्रशिष्य सागरश्रमण सुवर्णमृमिमां विहरता हता त्यां, कोईने खबर आप्या सिवाय तेओ चाल्या गया हता. सागरश्रमणे कालकाचार्यने ओळख्या विना गर्वथी व्याख्यान करवा मांडचुं. पाछळथी बीजा साधुओ आवी पहोंचतां रहस्यस्फोटन थयुं अने कालकाचार्ये सागरश्रमणने प्रजापरीषह सहन करवा—ज्ञाननो गर्व नहि करवा विशे उपदेश आप्या. कालकाचार्य आजीवको पासे अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास करवा मांटे गया होवानो उल्लेख संधदासगितना 'पंचकलप'

भाष्यमां छे; एटले बीजा अनेक प्राचीन जैन आचार्योनी जेम तेओ नैमित्तिक—ज्योतिषी हता. वळी निमित्तशास्त्रमां जैन आचार्यो करतां पण ए काळे आजीवको चढियाता हता एम आ उल्लेख पुरवार करे छे.

कालकाचार्य एक प्रन्थकार पण हता एनो पुरावो मळे छे.
सुप्रसिद्ध जैन कथाप्रन्थ 'वसुदेव-हिंडी 'ना प्रारंभमां 'प्रथमानुयोग'नो
आधार टांक्यो छे अने 'वसुदेव-हिंडी 'नी कथानो सारांश 'प्रथमानुयोग' प्रन्थमांथी उद्भृत थयो होवानुं सूचन त्यां करवामां आव्युं छे.
संवदासगणिना 'पंचकल्प' भाष्य प्रमाणे 'प्रथमानुयोग'ना कर्ता आर्य
कालक हता. बारमा अंग 'दृष्टिवाद'—अंतर्गत 'मूल प्रथमानुयोग'
जेनो सिवस्तर उद्धेख 'निदसूत्र 'मां श्रुतज्ञाननुं स्वरूप वर्णवतां करेलो
छे ते सुसंबद्ध प्रन्थरूपे नष्ट थतां तेनो पुनरुद्धार आर्य कालके कर्यो
होय एम अनुमान थाय छे. पण आर्य कालकनो पुनरुद्धृत 'प्रथमानुयोग' पण आजे घणा सैका थयां नाश पानी ग्रेंलो छे.

कालकाचार्य विशेना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगम साहित्यमां अनेक स्थळे छे.

आगमोत्तर साहित्यमां पण कालकाचार्यनी कथा ए साहित्यरचना माटे एक खूब ज लोकप्रिय विषय रह्यो छे. संस्कृत, प्राकृत तेम ज जूनी गुजरातीमां-गद्यमां तेम ज पद्यमां मोटी संख्यामां जुदा जुदा ज्ञात तेम ज अज्ञात लेखकोने हस्ते कालकाचार्यनो कथाओ रचाई छे अने 'कल्पसूत्र' तेम ज 'उत्तराध्ययन' जेवा आगमसाहित्यना पवित्र प्रन्थोनी जेम 'कालकाचार्य कथा'नी पण सचित्र हस्तप्रतो मळे छे.'°

'प्रज्ञापना सूत्र'ना कर्ता आर्य स्यामने केटलाक विद्वानो कालका-चार्यथी अभिन्न गणे छे.''

. उपर्युक्त बे कालकाचार्य. उपरांत ए ज**्नामना शीजा ए**क

आचार्य पण थया होवानुं अनुमान जैन शास्त्रो अने स्थविरावलीओं उपरथी केटलाक विद्वानों करे छे."

- 9 प्रच, ४-श्लो. ३-७.
- २ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना पृ. २३-२४
- ः ३ निचू, भाग 🤾 पृ. ५७१-७२
- ४ निचूनी टाइप करेली प्रतमां अहीं भरकच्छने बदले उज्जयिनी छे, पण अन्य मूळ प्रन्थोमां भरकच्छ छे एटले निचूना पाठमां केईक भ्रष्टता होवानुं अनुमान थाय छे.
 - ५ निच् , भाग ३, ए. ६३३
- ६ उच्, पृ. ८३-८४; उशा, पृ. १२७ (नि. गा. १२०); उने, पृ. ५०
 - ७ प्रच (अनुवाद), पृ. २३
 - ८ 'वसुदेव-हिंडी ' (अनुवाद) पृ. ३६
- ९ व्यम (उद्दे. १०), पृ. ९४; बुकक्षे, भाग ५, पृ. १४४८ तथा १४८०; बृकम, भाग १, पृ. ७३-७४; कसु, पृ. ५२४-२५; कदी, पृ. ११३-१५; ककी, पृ. १७३, १७६-७९; कदी, पृ. ३-५; कसंवि, पृ. ११८-१९; आप्रर, पृ ७, इत्यादि.
- १० कालकाचार्य विशेनी जूनी कथाओ माटे जुओ सारामाई नवाब-प्रकाशित 'श्रीकालक-कथासंमई.' एमां नथी सघराई एवी सोळमा सैकानी गुजराती गद्यमां लखायेली कथा माटे जुओ 'प्रस्थान,' फागण-चैत्र, सं. १९८८ मां मारो लेख 'कालकाचार्यकथा,' कालककथानी हाथप्रतोमां मळतां चित्रोना अभ्यास माटे जुओ नार्मन ब्राउनकृत 'स्टोरी ऑफ कालक.
 - ११ जुओ इयाम आर्य.
- १२ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. २३; 'कालकक्थासंब्रह,' प्रस्तावना, पृ. ५२-५३.

कालणद्वीप

् जुओ **काननद्वीप**

कालनगर

आनंदपुरनुं बीजुं नाम. त्यां ध्रुवसेन राजानो पुत्रमरणनो शोक शमाववा माटे 'कल्पसूत्र'नी वाचना थई हती.

जुओ आनन्दपुर

१ ध्रुवसेननुपस्य पुत्रमरणार्त्तस्य समाधिमाधातुमानन्दपुरे, संप्रति कालनगरमहास्थानाख्यया रूढे सभासमक्षमयं प्रन्थो वाचित्रतुमारच्य इति । कसंवि, पृ. ११८–१९. आ उल्लेखने शब्दशः स्वीकारीए तो कसंविना कर्ता जिनप्रमसूरिना समयमां (१४ मो सैको) आनंदपुर 'कालनगर' तरीके जाणीतुं हतुं. आ उल्लेख विचारणीय एटला माटे छे के जैन के अन्य साहित्यमां उपलब्ध थतां आनंदपुरनां अनेक नामोमां आ नाम नथी.

कालवेशिक

मथुराना जितरात्रु राजाना काला नामे वेश्याथी थयेला पुत्र. दीक्षा लीधा पली विहार करता तेओ मुद्गरीलपुर ज्यांना हतरात्रु राजा साथे तेमनी बहेन परणावी हती त्यां गया हता. त्यां प्रतिमा—कायो-त्सर्ग ध्यानमां रहेला हता त्यारे एक शियालणीए तेमने फाड़ी खाधा हता.

'भगवती सूत्र' (शतक १, उद्दे० ९)मां पार्श्वापत्य कालाश्य-वेशिपुत्र अणगारनो वृत्तान्त आवे छे ते आथी भिन्न छे के केम ए कहेवुं मुश्केल छे.

१ आ जैन पारिभाषिक शब्द छे, अने मूर्तिवाचक सर्वसाधारण 'प्रतिमा' शब्दथी भिन्न छे.

२ उशा, पृ. १२१; उने, पृ. ४७.

কুঙ্কুল :

जुओ कोङ्कण

कुञ्जरावर्त

कुंजरावर्त्त अने रथावर्त्त ए वे पर्वत पासे पासे आवेला हता.

जुओ रथावर्त्तगिरि

कुडङ्गेश्वर

उज्जयिनीमां अवंतिसुकुमालना देहोःसर्गना स्थान उपर तैना पुत्रे बंधावेलं मन्दिर.

जुओ अवन्तिसुकुमाल

कुणाछ

सम्राट् अशोकनो पुत्र. अशोक तेने उज्जियनी कुमार्भुक्तिमां आयुं हतुं. ते आठ वर्षनो थयो त्यारे अशोक तेना उपर एक पत्र पाठन्त्रो अने तेमां लख्युं के—'अधीयतां कुमारः' (कुमार विद्याभ्यास करे). पण कुणालनी अपर माताए ए उपर अनुस्वार मूकीने 'अधीयतां कुमारः' (कुमारने अंघ बनाववामां आवे) एम करी दीधुं. कुणाले तो पितानी आज्ञा शिरोशार्य गणीने तपावेली सळीथी आंखो आंजी अने अंघ बन्यो. आ वात जाणीने राजाए उज्जियनी अन्य कुमारने आपी, अने कुणालने बीजां गामडां आप्यां. कुणाल संगीतिवद्यामां निपुण हतो. एक वार अशोक पासे आवीने पडदा पाछळथी गान करीने तैणे अशोकने प्रसन्न कर्यों. अशोक पूछ्युं, 'तने शुं आपुं?' त्यारे कुणाल बोल्योः

चंदगुत्तपपुत्तो य विंदुसारस्स नतुओ। असोगसिरिणो पुत्तो अंघो जायइ कागिणि॥

(चंद्रगुप्तनो प्रपौत्र, बिन्दुसारनो पौत्र अने अशोकश्रीनो अंध पुत्र काकिणो मागे छे.)

अशोके पुत्रने ओळख्यो अने आहिंगन कर्युं. अमात्योए कह्युं के 'राजपुत्रोमी बाबतमां काकिणीनो अर्थ राज्य थाय छे.' पछी कुणालना पुत्र संप्रतिने राज्य आपवामां आन्धुं.

आ वृत्तांतमांनी बधी व्यक्तिओ ऐतिहासिक छे.

जुओ संप्रति

৭ जुओ **काकिणी. '**काकिणी'मां राज्यनी अर्थ तो केवळ অঙ্ধणाथीज आवी शके.

२ ब्रुकसा, गा, २९२-९४; ब्रुकम, भाग १, पृ. ८८-८९; ब्रुकक्षे, भाग ३, पृ. ९१७; अनुद्दा, पृ. १०-११; किक, पृ १६४-६५, इत्यादि.

कुण्डलमेण्ड

कुंडलमेंठ नामे व्यंतरनी यात्रामां भरुकच्छनी आसपासना घणा लोको संखडि-उजाणी करता हता.

१ कोंडलमेंड पभासे० बृक्सा, गा. ३१५०. तथा कुण्डलमेण्डनाम्नो वानमन्तरस्य यात्रायां भरकच्छपरिसरवर्ती भूयान् लोकः संखिंड करोति। बृक्क्षे, भाग ३, पृ. ४८३-८४. वळी जुओ त्यां ज ठिप्पणमां आपेछं सूर्णि अने विशेषचूर्णिनुं अवतरण—'' अहवा कोंडलमिंडे कोंडलमेंडो वाणमंतरो। देवद्रोणी भरुषच्छाहरणीए, तत्थ यात्राए बहुजणो संखिंड करेइ।...' इति चूर्णों विशेषचूणों च।

कुत्रिकापण

कुत्रिक एटले त्रणे भुवननी तमाम वस्तुओ जेमां मळे एवो आपण एटले दुकान ते कुत्रिकापण. कुत्रिकापणमां वस्तुनुं मूल्य खरीदनारना सामाजिक दरजा प्रमाणे लेवामां आवतुं. जे माणस दीक्षा लेवानो होय ते पोतानां जरूरी उपकरण, पोते सामान्य माणस होय तो पांच रूपियाने कीमते खरीदी शकतो, जो इभ्य (लक्षाधिपति) भथवा सार्थवाह होय तो तेणे एक हजार आपवा पडता, अने जो ते सजा होय तो तेणे एक लाख आपवा पडता. राजगृहमां श्रेणिकना सज्यकालमां धनिक श्रेष्ठीपुत्र शालिभदे दीक्षा लेती वखते पोतानुं रजोहरण अने पात्र कुत्रिकापणमांथी दरेक माटे एक लाख आपीने खरीद्यां हतां. महावीरस्वामीना जमाई क्षत्रियकुमार जमालिए दोक्षा

लीधी त्यारे^४ तेम ज राजा श्रेणिकना पुत्र मेघकुमारे दीक्षा लीधी त्यारे^५ पण एटली ज कीमते पात्र अने रजोहरण कुत्रिकापणमांथी खरीदवामां अव्यां हतां.

राजा चंडप्रद्यात ज्यारे अवन्तिजनपद उपर राज्य करतो हतो त्यारे उज्जियनीमां आवा नव कुत्रिकापण हता; तथा राजगृहमां श्रेणिकना राज्यकाळमां पण कुत्रिकापण हतो. वळी कुत्रिकापण साथे केटलीक लोकवार्ताओ पण जोडाई छे, जेमां कुत्रिकापणमां मृत पण मळता एम कह्युँ छे. आ प्रकारनी लोकप्रसिद्ध वार्ताओ कुत्रिकापणना चृत्तान्त साथे वणाई गई छे ए वस्तु ज बतावे छे के कुत्रिकापण ज्यारे केवळ भ्तकाळनी वस्तु बनी गयो हतो त्यारे पण लोकमानसे एनी स्मृति केवी रीते संघरी राखी हती.

कुत्रिकापण जेम त्रिभुवननी सर्व वस्तुओनो भंडार हतो तेम इच्छित वस्तु संपादित करवानी लिध्धवाळा अथवा संकल गुणना भंडार साधुने 'कुत्तियावणभूआ' ('कुत्रिकापण जेवा') कहा ले.

[नॉध:—कुत्रिकापण विशेना आगमप्राहित्यना केटलाक प्रासंगिक उस्लेखो माटे जुओ 'अभिधानराजेन्द्र,' प्रन्थ ३. वळी सातमी अखिल भारत प्राच्यविद्या परिषदना अहेवालमां मारो लेख 'ए नोट आन धी कुत्रिकापण' तथा 'इतिहासनी केडी'मां प्रन्थस्थ ययेलो लेख 'कुत्रिकापण अर्थात् प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स' जोवो.]

९ बुकभा, गा. ४२,१४ तथा ते उपरथी क्षेमकोत्तिंनी वृत्ति; मसूअ, शतक ९, उद्दे. ३३.

२ बुकसा, गा. ४२१५ तथा ४२२०-२२; बुकक्षे, साग ४, पृ. ११४४-४६.

३े ए ज

४ भस्, शसक ९, उद्देः ३३

५ हाध, पृ. ५३

६ वृक्तमा, गा. ४२२०; वृक्त्रे, पृ. ११४५-४६

o जुओ उ**उज्ञिधिकी**

८ ते णं काले णं से णं समये णं पासाविक्षण्या थेरा भगवंतो कुत्तियायणभूआ, वहुस्स्या, बहुपरिवारा पंचहिं अणगारसएहिं सिद्ध संपरिबुद्धा...भपू. शतक २, उदे. ५. जुओ एमांना अघोरेखित शब्द उपरनी अभयदेवसूरिनी बृत्ति —× × 'कुत्तिआषणभूष'ित कुत्रिकं स्वर्ग-मत्य-पातास्रत्थलां भूमित्रयं, तस्संभवं वस्तु अपि कुत्रिकम् , तत्संपादक आवणो इदः कुत्रिकापणः —तद्भूताः । समिरिहतार्थसंपादनलिधयुक्तत्वेन सकलगुणोपेतत्वेन वा तदुपसाः ।

कुमारपास्र

गुजरातनो प्रसिद्ध चौलुक्यवंशीय राजा (सं. ११९९-१२२९ = ई. स. ११४२-११७३). जैनवर्म प्रत्येनुं एनुं वलण जाणीतुं छे. कुमारपालनां बहेन अने बनेवी एकवार धूत रमतां हतां तेमां बनेवीए 'मूंडियाने मार' एम कहीने जैन साधुनी मश्करी करी हती एमांथी घोर वेरनां बीज ववायां हतां.

१ श्राप्रस् पृ. १३५.

कुम्भकार्कट

चंपानगरीना (केटलाकना मत मुजब, श्रावस्तीना) स्कन्दक राजाए पोसानी बहेन पुरंदरयसा कुंभकारकटना राजा दंडकी साथे परणावी हती. केटलाक समय पछी स्कन्दके दीक्षा श्रीषी अने विहार करतां ते कुंभकारकट जई पहोंच्यो, ज्यां दंडकीना आदेशथी एनो वध करवामां औंच्यो. स्कन्दक मरीने अग्निकुमार देव थयो अने तेणे आखुं ये नगर बाळीने भस्म करी नाल्युं. आम कुंभकारकट नगरने स्थाने अरण्य बन्युं अने दंडकना नाम उपरथी दंडकारण्य तरीके ओळखायुं.

दक्षिण गुजरातमां डांगथी शरू थता अने गोदायरी नदीनी आसपास सुधी विस्तरेला अरण्यने दंडकारण्य गणवामां आवे छे. वळी कुंभकारकटने अंते आवतो 'कट' पदान्त मोधपात्र छे. जो के जैन संस्कृतमां ए प्रयोजाय छे अने प्राकृतमां एनुं 'कड' एखं रूप अपाय छे, छतां मूळे ते संस्कृत 'कृत'मांथी ब्युत्पन्न अयेल छे. प्राचीन असे मध्यकालीन भारतमां संख्याबंध नगरोनां नामने अंते 'कट' पदान्त मळे छे, जेमके कोक्कट, भोगकट, वंशकट, वेणाकटक, इत्यादि. पंचासरना जयशिखरी उपर आक्रमण करनार भुवड कल्याणकटकनो राजा हतो ए जाणीतुं छे. ओरिसाना पाटनगर 'कटक 'नुं नाम आबी रीते मूळ कोई आखा नामनो संक्षेप हशे—जेम 'अणहिलवाड पाटण'नो संक्षेप 'पाटण' छे तेम. जावा वगेरे भारतनी प्राचीन वसाहतोनां 'जोग्यकर्त,' 'जकर्त' वगेरे नगरोमां नामोने अंते 'कर्त' पदान्त छे, ए संस्कृत 'कृत'मांथी छे, जेमांथी उपर्युक्त 'कर' पण ब्युतन्त थयेलो छे. गुजरातनां 'कडुं' 'कडी' वगेरे स्थळनामोनी ब्युतित आ रीते कृतकम् र नकटकम् रकडउं नकडुं तथा कृतिकारकडिआ रकडी एम साधी शकाय. संस्कृतमां 'कटक'नो एक अर्थ 'सैन्यनी छावणी' एवो थाय छे, ए आ साथे सरखावी शकाय. जो के त्यां पण ए शब्द प्राकृतमांथी संस्कृतमां लेखामां आव्यो होय ए ज संभवित छे.

जुओ दण्डकारण्य

१ बृकमा, गा. ३२७४; उच्, पृ. ७३; उने, पृ. ३६; उशा, पृ. ११४-१६; निचू, पृ. १११३.

२ कदी, पृ ११८

३ उसा, पृ. ८५

४ 'गुजरातना अतिहासिक लेखो,' भाग १, नं. ५४, ६०,८८

५ 'तंत्रोपाल्यान,' पृ. १२; 'पंचतंत्र' (अनुवाद), उपोद्धात, पृ. ३९.

६ चेटरजी, 'इन्डो-आर्यन ॲन्ड हिन्दी,' पृ. ६९.

कुम्भकारमक्षेप

वीतभय नगरनुं बीजुं नाम. ए सिनवल्लीमां आवेलुं हतुं. सिन्धु— सौवीरनो उदायन राजा जे साधु बनी गयो हतो तेणे अहीं एक कुंमकारना घरमां निवास कयों हतो. राजाना भाणेज केशीए एने झेर आपी मारी नाख्यो हतो, आथी देवोए झंझावात पेदा करी आखा नगरनो नाश करी नाख्यो. एमांथी एक मात्र कुंभकारनुं घर ज बच्युं. त्यारथी ए स्थळ कुंभकारप्रदेश (प्रा. कुम्भयारपक्खेव) तरीके प्रसिद्ध थ्युं.

'जातक' (नं. ४६३)मां रेतीना तोफानथी कुंभवती नगरीनो नारा थयानो उल्लेख छे ते उपर्युक्त कथानक साथे सरखावी शकाय

जुओ उदायन, वीतभय नगर अने सिनवङ्की

१ भाचू, उत्तर भाग ए. ३७

कुवलयमाला कथा

दाक्षिण्यांक उद्योतनस्रिए शक सं. ६९९ (ई. स. ७७७)ना छेल्ला दिवसे जाबालिपुर (जालोर)मां रचेली विस्तृत प्राकृत धर्मकथा. भारतना बीजा प्रदेशोना वासीओनी जेम लाटवासीओ अने गुर्जरोनी भाषानी लाक्षणिकता पण एमां स्चनरूपे वर्णवेली छे, जे खास तो एनी प्राचीनताने कारणे नोंधपात्र छे.

अभयदेवसूरिए 'कुवलयमाला कथा 'ना महेन्द्रसिंह नामे एक पात्रनो 'स्थानांगसूत्र 'वृत्तिमां निर्देश कर्यों छे. २

१ जुओ 'वसन्त रजत महोत्सव स्मारक श्रन्थ 'मां भाचार्थ जिनविजयजीनो लेख, 'कुवलयमाला; आठमा सैकानी एक जैनकथा.'

२ शोंडीरो यः शौर्यवता श्रूर एव रणकरणेन वशीकृतः पुत्रतया प्रतिपद्यते यथा कुवळयमाळाकथायां महेन्द्रसिंहाभिषानो राजयुतः श्रूयते, स्थासूभ, पृ. ५१६.

कुशावर्त

जैन साधुओए विहार करवा योग्य साडीपचीश देशो-आर्यक्षेत्र -पैकीनो एक देश, जेनुं पाटनगर शौरिपुर इतुं.१ 'वसुदेव-हिंडी'ना कथन प्रमाणे आनर्त, कुशावर्त, सुराष्ट्र अने शुक्रराष्ट्र ए चार जनपदो पश्चिम समुद्रने किनारे आवेला हता, अने ए जनपदोनी प्रधान नगरी द्वारवती हती. हवे, प्राचीनतर शौरिपुर यमुना नदीना किनारे हतुं अने शौरि राजाए पोताना नाना भाई सुवीरने ते सोपीने पश्चिममां कुशावर्तमां जईने शौरिपुर नामे नगर वसाव्युं हतुं अने यादवो पण जरासंधना भयथी पश्चिममां, द्वारवतीमां जईने वस्या हता. आ उपरथी अनुमान थई शके के कुशावर्त तेम ज शौरिपुर वे हतां—एक उत्तरमां अने बीजुं पश्चिममां. स्थळान्तर कर्या पछी नवां स्थानोने जूनां नामो आपवानुं जातिओनुं वलण जाणीतुं छे.

- १ बृकभा तथा बृकक्षे, भाग ३, छ. ९१२-१४; सूक्क्सी, छू. १२३.
- २ 'वसुदेव-हिंडी' (मूल), पृ. ७७; अनुवाद, पृ. ९२.
- ३ जुओ शौरिपुर.

कृष्ण वासुदेव

जैन पुराणकथा प्रमाण, नव वासुदेवो पैकीना छछा—नवमा वासुदेव, यादवोना नेता; बाबीसमा तीर्थकर नेमिनाथना काकाना दीकरा भाई. एमने माटे देवोए पश्चिम समुद्रने किनारे द्वारवती नगरी वसावी हती. कृष्ण वासुदेवनो प्रतिवासुदेव जरासंघ हतो. प्रबुम्न, सांब, भानु, सारण, जालि, मयालि, उवयालि, पुरुषसेन, वीरसेन आदि कृष्णना पुत्रो हता.

श्रीकृष्णनुं संपूर्ण चरित्र आगमसाहित्यना एके प्रन्थमां नथी. 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' जेवा प्रन्थना 'नेमिनाथचरित्र'मांथी तथा अन्य नेमिनाथचरित्रोमांथी तेम ज दिगंबर परंपराना पण ए प्रकारना प्रन्थोमांथी जैन परंपरा अनुसारनुं एमनुं चरित्र संकलित थई राके एम छे. आगमसाहित्यमां तो कृष्ण विरोनां संख्यावंघ प्रासंगिक कथानको अने प्रसंगोपात्त उल्हेखो मात्र प्राप्त थाय हे.

१ ज्ञाध, अध्य. १६; आचू, उत्तर भाग, प्ट. १६-१८; आम, प्ट. ३५६-५९; अंद वर्ग १-५; बृद, प्ट. ४१-४२; चं, गा. ११९; सस, गा. ३७७; उशा, प्ट. ११८; किकी, प्ट. ७, ३४-३५, १३०-४२; किसी, प्ट. ८, ३३, १६३-७०; कसु, प्ट. ६७, ७०-७१, ३९९-४२४; वष्ट. प्ट. ३४-३५; पाय, प्ट. ६७; इत्यादि. कृष्णना केटलाक संबंधीओनां चिरत्र माटे जुओ कंद.

केशी

सिन्धु-सौवीरना राजा उदायननो भाणेज. उदायने महावीर पासे दीक्षा लीधी त्यारे पोताना पुत्र अमीचि प्रत्येनी श्रेयबुद्धिथी तेने गादी नहि आपर्ता केशोने आपी हती; पण पाछळथी केशीए उदायनने झेर आपीने मारी नाख्यो हतो.

जुओ अभीचि अने उदायन

१ भसू, शतक १३, उद्दे. ६; उने, प्र. २५२-५५; कप्र, प्र. ५८७; आचू, उत्तर भाग, प्र. ३६-३७.

कोकास

एक निष्णात यांत्रिक. सोपारकना एक रथकारनी दासीमां ब्राह्मणथी उत्पन्न थयेलो ते पुत्र हतो. रथकारनी बधी विद्या तेणे शीखी लीधी हती. एक वार सोपारकमां दुष्काळ पडतां ते उज्जियनी आज्यो. ए वखते पाटलिपुत्रनो राजा जे काकवर्ण नामथी ओळखातो हतो, तेणे उज्जियनी कवजे करी हती. राजाने पोताना आगमननी जाण कराववा माटे कोक्रासे यंत्रकपोतो तैयार करावीने तेमनी द्वारा राजमहेलमांथी गंधशालि अर्थात् ऊंची जातनी डांगर मेळती. राजाए कोक्रासने बोलाज्यो तथा तेने वृत्ति बांधी आपीने यांत्रिक गरुड तैयार कराव्यो. कोक्रास वडे हंकाराता ए गरुड उपर बेसीने राजा देवीनी

कोकास]

साथे आकाशमां फरतो. पछी बधा राजाओने पण तेणे आ रीते पोतानो प्रभाव बतावीने वश करी छीधा.

हवे, एक वार राजानी बीजी एक इर्ध्याळु राणीए यंत्रने पाछुं लाववा माटेनी खीली काढी नाखी. गरुड आकाशमां ऊडचा पली आ वातनी राजाने खबर पडी. कलिंगदेशमां ऋषिप्राणित तळाव आगळ जोरथी ऊडतां गरुडनी पांख भांगी गई, अने सौ नीचे पडचां. गरुडनी पांख सांधवा माटे सामग्री मेळववा माटे कोकास नीकळ्यो अने एक रथकार पासे जड़ेने तेणे एनां उपकरणो माग्यां. रथकार उपकरण छेवा गयो, एटलामां तो कोकासे तेना रथनुं चक्र तैयार करी आप्युं. आ निपुणता उपरथी रथकारे अनुमान कर्युं के आ ज कोकास होवो जोईए. तेणे जईने पोताना राजाने खबर आपी. राजाए कोकासने तथा काकवर्ण राजा अने तेनी देवीने पकड्यां. पछी कर्हिंगना राजाए कोकास पासे पोताने माटे अने पोताना पुत्र माटे प्रासाद तैयार कराव्यो. आ पछो कोकासे काकवर्णना पुत्रने पत्र छएयो के 'हं किंगना राजाने मारुं एटले तुं मने अने तारां मातापिताने छोडाव. आ माटेनो नियत दिवस पण तेणे पत्रभां छल्यो. ए दिवसे कलिंगनो राजा पुत्र सहित प्रासादमां प्रवेश्यो. एटले कोकासे यंत्रनी खीली दबावतां पत्रसहित राजा मरण पाम्यो. काकवर्णना पत्रे नगर कबजे कर्यु तथा मातापिताने अने कोकासने छोडाव्यां.

कोक्कासनुं कथानक आगमेतर साहित्यमां सौथी प्राचीन स्वरूपे 'वसुदेव—हिंडी 'मां छे. बाल्यावस्थामां ते खांडणिया पासे बेसतो अने डांगरनी कुसकी ('कुक्कुसे') खातो, तेथी एनुंनाम कोक्कास पडचुं, एम 'वसुदेव—हिंडी ' नोंधे छे. जो के उपर्युक्त कथानक साथे तुलना करतां एना प्रसंगोमां कंईक फेर माद्यम पडे छे. 'आवश्यक चूर्णि '-वाळा कथानकमां यांत्रिक गरुड कलिंग देशमां ऋषिप्राणित तळाब आगळ ऊतरे छे, ज्यारे 'वसुदेव—हिंडी'मां कोक्कासे वनावेला वायुयानने

५२] [कोकासं

तोसिंह नगर आगळ ऊतरवानी फरज पडे हो. आ तोसिंह नगर पण किंहिंगमां आवेछं हतु ए अहीं नोंधवुं जोईए जेमां होकवार्ताजन्य कत्पनाना अंशो मोटा प्रमाणमां भळेला छे एवा आ विख्यात शिल्पीना कथानकमांथी किंहिंगना राज्य अने मगचना साम्राज्य वन्चेना प्राचीन-काळथी चाल्या आवता वैरनुं सूचन थाय छे, जेने अशोकना किंगि-विजयमांथी तथा किंहिंगचक्रवर्ती जैन सम्राट् खारवेलना उदयगिरि उपरनी हाथीगुंफाना छेखमांथी पण अनुमोदन मळे छे.

१ आचू, पूर्व भाग ए. ५४०-४१; आम, ए. ५१२-१३. वळी मात्र सूचनरूपे कोकासना निर्देश माटे जुओ व्यम, उद्दे० ५. प्राचीन भारतीय साहित्यमां अनेक स्थळे जडता वायुयानविषयक उल्लेखोना अभ्यास माटे जुओ 'इतिहासनी केडी 'मां प्रन्थस्थ थयेलो मारो लेख 'प्राचीन भारतमां विमान.'

२. 'वसुदेव-हिंडी' (मूल), पृ. ६१-६४; अनुवाद, पृ. ७४-७७ कोङ्कण

गुजरातनी दक्षिण सरहदने अडीन आवेलो कोंकणनो प्रदेश.
साधुए विहार करवा योग्य २५॥ आर्यदेशोमां कोंकणनो समावेश
थतो नथी अने कोंकणकने एक अनार्य जाति तरीके गणावेली छे,'
छतां आगमसाहित्यमां कोंकण विशेना संख्याबंध प्रकीर्ण उल्लेखो मळे
छे, जे सूचवे छे के समय जतां ए प्रदेशमां जैन धर्मनो ठीक प्रचार
थयो हतो अने त्यां जैन साधुओ वारंवार विचरता हता. 'कोंकण'
ए प्रदेश नाम 'कांकणक' ए जातिनाम उपरथी पडचुं जणाय छे
(जुओ कोङ्कणक).

कोंकणवासीओ पुष्प अने फळनो प्रचुर प्रमाणमां उपभोग करता हता. उत्तरापथ अने बाल्हिकना छोको जेम सक्त खाय छे तेम कोंकणवासीओ 'पेज्जा' (सं. पेया) अर्थात् चोखानी राब छे छे. ध्यां भोजनना प्रारंभमां ज आ राब अपाय छे. अध्यारे पण कोंकणमां चोला मुख्य खोराक छे ए वस्तु आपणे ध्यानमां राखवी जोईए. कोंकणादि देशोमां गिरियज्ञ नामनो उत्सव दररोज संध्याकाळे थाय छे. त्यां पाणीने 'पिच्च' कहेवामां आवे छे. संख्याबंध अर्वाचीन भारतीय भाषा-ओना 'पिचकारी,' 'पिच(क)दानी' जेवा शब्दोमांना 'पिच' अंगनुं संतोषकारक निर्वचन संस्कृतद्वारा थतुं नथी, एनो संबंध आ 'पिच्च' साथे हरो. संभव छे के रवानुकारी लागतो ए शब्द मूळे कोई आर्थेतर भाषामांथी होय.

कोंकणदेशोइसव पुरुषो सद्य पर्वत उपरथी गोळ, घी, घउं, तेल, वगेरे माल उतारे छे अने त्यां चढावे छे. कोंकणदेशमां भारे वरसादने कारणे जैन साधुने छत्री राखवानी पण अनुज्ञा आपवामां आवेली छे. कोंकणनी नदीओमां तीणा पध्थरो होवाने कारणे एमां चालवुं कष्टदायक छे.

कोंकणने एक स्थळे 'असंदीनद्वीप ' अर्थात् समुद्रनो भरतीथी परिखावित न थई जाय एवी प्रदेश कहेवामां आव्यो छे."

'कोंकणार्य' अथवा 'कोंकणकक्षान्त'—कोंकणवासी साधुनुं दृष्टान्त अनेक स्थळे आवे छे. दीक्षा छोगा पछी पोताना पुत्रादि माटे तेओ चिन्ता करता हता, एमने आचार्ये समजाव्या हता. एक कांकणवासीनी पत्नी मरण पामी हती, परन्तु एने एक पुत्र होवाथी फरी वार छग्न माटे कन्या मळती नहोती; आधी तेणे पोताना पुत्रने कपट करी वाणथी वींधीने मारी नाख्यो हतो, पदी पण एक कथा छे. एक कोंकणवासी श्रावकना आदर्श सत्यमाषणनुं दृष्टान्त 'आवश्यक चूर्णि'मां छे, जेमां तेणे पोताना पितानी सामे ज साक्षी पूरी हती.

१ जुओ कोङ्कणक.

२ वृकक्षे, भाग २, पृ. ३८४. वळी जुओ त्यां टिप्पणमां चूर्णि अने विशेषचूर्णिमांथी आपेर्ड अवतरण.

३ आशी, पु. ५; दवैचू, पू. ३१६

४ निचू, भाग १, पृ ४६.

५ वृक्तभा, गा. २८५५; वृक्क्षे, भाग ३, पृ. ८०७ चूर्णि भने विशेषचूर्णितु अवतरण पण त्यां आपेळ छे.

- ६ स्थासूअ, पृ ४९०; पाय, पृ. ५०.
- ७ आहे, पृ. ५५; आम, पृ. ५१२.
- ८ आशी. पृ. ३७१.
- ९ निचू, पृ. ८२७,

१० तत्थ जो आसासदीवो सो दुविधो—संदीणो असदीणो य, तत्थ संदीणो णाम जो जलेण छादेज्जति, सो ण जीवितत्थसंताणाय, जो पुण सो विच्छिण्णत्तणेण उसित्तत्त्रणेण य जलेण ण छादेज्जति सो जीवितत्थीणं त्राणाय, असंदीणो दीवो जहा कोंक्णदीवो, उत्तू, पृ. ११४-१५.

११ आचू, उत्तर भाग, पृ. ७७; पाय, पृ. ५६; कपु, पृ. ९; किंक, पृ. ५; कोंकणार्यना मात्र सूचनरूप निर्देश माटे जुओ जीकचू, पृ. १०, १४, १५ तथा जीकचृत्या, पृ. ४३

१२ आचू, उत्तर भाग, पृ. २४२-८३, आम, पृ. १३६; बुकम, भाग १, पृ. ५५.

कोङ्कणक

एक अनार्थ जाति, 'कुंकणा' नामथी ओळखाती आदिवासी प्रजा सुरत, थाणा, पश्चिम खानदेश, वगेरे जिल्लाओमां वसे छे तेने ज आ 'कोंकणक' गणवी जोईए. 'कोंकण' ए प्रदेशनाम आ जाति नाम उपरथी पड्युं हरो.

> १ प्रत्या, प्र. १४. २ प्रस्तु, प्र. ५४.

कोटिपताका

करोडपतिओ महोसवप्रसंगे पोताना मकान उपर समृद्धिस्चक कोटिपताका चढावता.

१ आचू, पूर्व भाग, पु. ४०७-४८; आम, पु. ४५२.

कोटयाचार्य

जिनभद्रगणिकृत 'विशेषावद्यक भाष्य 'ना विवरणकार. एमने 'आचारांग,' 'सूत्रकृतांग' आदि उपर वृत्तिओ छखनार शीळाचार्यथी अभिन गणवामां आवे छे.

जुओ शीलाचार्य

कोरण्टक उद्यान

भरकच्छनुं एक उद्यान. वोसमा तीर्थिकर मुनिसुनतस्वामी त्यां घणी वार समोसर्या हता. कोरंटक आदि उद्यानोमां जईने देवतानी समक्ष आछोचना करी प्रायश्चित्त छेवानुं विधान छे. वादी देवसूरिकृत 'स्याद्वादरनाकर'ना मंगछाचरण उपरथी जणाय छे के आ उद्यान भरुकच्छना ईशान खूणे आवेछं हतुं.

कोरंट अथवा कोरंटक एक वनस्पतिविशेष छे अने प्राकृत साहित्यमां एना उल्लेखो छे (जुओ 'पाइअ सद महण्णवो'). हेमचन्द्रना 'निषंदुशेष'मां गुल्मकांडमां, नरहरिकृत 'राजनिषंदु'मां तेम ज अन्य निषंदुओमां तेनो 'कुरंटक' तरीके उल्लेख छे. आ 'कोरंटक' के 'कुरंटक'ने गुजरातीमां 'कांटासेरियो' कहे छे. एनी जुदी जुदी चार जातो छे. 'निषंदु आदर्श'ना कर्ता श्री. बापालाल ग. वैय ए विशे ता. १४-१२-५० ना पत्रमां मने लखे छे "आप कोरंटक नामे उद्याननी वात करो छो ए मारे माटे नत्री माहिती छे, परन्तु आवो उद्यान होय तो नवाई जेवुं न कहेवाय. आ छोड अने तेमां ये एनी चारे जातो उद्यानमां होय तो एनं हश्य खरेखर रमणीय लागे तेवुं छे ज. परन्तु आ छोड छे. बहु सारुं पोषण मळे तो गुल्मनी कोटिमां आवे, परन्तु शक्ष तो आ नथी ज—सधन छायादार दक्ष तो नथी ज. परन्तु भरूचना ईशान खूणामां कोरंटक नामे उद्यान हतो ए माहिती मने खूब ज गमी छे. उद्यानमां बीजां वृक्षो तो होय ज, परन्तु आ

कमनीय छोडोए कोई रसिक किव के बीजानी दृष्टि खेंची छागे छे अने एटले ज आ नाम उद्यानने आप्युं लागे छे."

- १ तीर्थकरना महामंगल आगमन माटे प्रयोजातुं कियापद 'समोसरखं' अने नाम 'समोसरण' छे. ए जैन पारिभाषिक शब्द छे. एनी न्युत्पत्ति संस्कृत सम् + अव + स उपरथी छे.
 - २ व्यम, विभाग ३, पृ. १३७.
 - ३ 'निषंदु आदर्श,' उत्तरार्ध, पृ. २१९-२४.

कोसुंबारण्य

एक अरण्य, उयां जराकुमारनुं नाण वागवाथी कृष्ण वासुदेव मरण पाम्या हता.

द्वैपायन नामे परिवाजक जे सांब आदि सुरामत्त यादवकुमारोने हाथे मरण पामी अग्निकुमार देव थयो हतो तेणे द्वारकानुं दहन कर्या पछी बछराम अने कृष्ण सुराष्ट्र देश छोडीने पांडवो पासे दक्षिण मथुरा तरफ जता हता. द्वारकाथी पूर्व तरफ नीकळी तेओ हस्तिकल्प नगरमां आव्या, त्यांना राजा अच्छदंतने हरावी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोसुंबारण्य (प्रा. कोसुंबारण्य) नामे अरण्यमां आव्या. त्यां कृष्णने तरस छागतां बछदेव पाणी छेवा गया. ए समये कृष्णना मोटा माई जराकुमार, जेओ एमने हाथे कृष्णनुं मरण थशे एवी मविष्यवाणी नेमिनाथे भाखी होवाने कारणे द्वारकानो त्याग करीने अरण्यमां जईने रह्या हता ते शिकारोह्रपे आव्या अने ढोंचण उपर एक पग राखीने सूतेछा वासुदेवने मृग धारी तेमना पग उपर मर्मस्थाने बाण मारी तेमना मृत्यनुं कारण बन्या.

हस्तिकल्प ए भावनगर पासेनुं हाथब होवा संभव छे. कोसुं-बारण्य ए उपर्युक्त वर्णन प्रमाणे, सुराष्ट्रमांथी दक्षिण तरफ जतां आवे छे, अने दक्षिण गुजरातमां आवेला कोसंबा आसपासनो विस्तार जे आजे पण गुजरातनो समृद्ध अरण्यप्रदेश छे ते ज ए होई शके.

कौमुदिका]

भरकच्छथी दक्षिणापथ जवाना मार्गमां 'भहीगृह' नामथी ओळखातुं एक मन्दिर हतुं अने एमां भल्छी-बाणथी वीधायेछा पगवाळी कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती, एम 'निशीथचूर्णि' नोधे छे, तेथी आ विधानने सबळ अनुमोदन मळे छे.

वळी आर्य महागिरि अने आर्य मुहस्ती एक वार विहार करता 'कोसंबाहार 'मां आव्या हता, एम संप्रति राजाना पूर्वजन्मना वर्णन-प्रसंगमां 'निशीथचूर्ण ' (भाग २, पृ. ४३७) नोंघे छे. पण अहीं 'कोसंबाहार 'ए 'कोसंबी आहार '—'कौशांबी आहार'नो अपभ्रष्ट पाठ छे, अने उपर्युक्त गुजरातना कोसंबा साथे एने संबंध नथी, एम 'बृहत्कल्पसूत्र ' (क्षेमकीर्तिनी वृत्ति, भाग ३, पृ. ९१७—२१), 'परिशिष्टपर्व ' (सर्ग ११) आदि प्रन्थोमांना वर्णननी एनी साथे तुलना करतां जणाय छे.

- १ उने, पृ. ४०-४१; वतृ, पृ. ६७-६९. वळी जुओ अंद, पृ. १५-१६; स्थासूअ, पृ. ४३३. अंदमां भा स्थाननुं नाम 'कोसंबवणकाणण' (=कोसांबवनकानन) अने स्थासूअमां 'कोशांबकानन' आप्युं छे.
 - २ जुओ हस्ति ल्पः
 - ३ जुओ मलीगृह.
- ४ अन्तया ते विविद्दंता कीसंबाहारं गता। निचू, भाग २, पृ. ४३७.

कौम्रदिका

कृष्ण वासुदेवनी एक मेरी (प्रा. कोमुइआ). सामुदायिक उत्सवोनी घोषणा करवाना प्रसंगे वगाडवानुं ए उत्सववाद्य हतुं.

पुराणोमां चतुर्भुज विष्णुनां आयुधो पैकी एक कौमोदकी गदा छे, ए अहीं नोधवुं जोईए.

१ ज्ञाध, पृ. १००-१०१; ज्ञाधअ, पृ. १०१.

क्षेमकीर्त्त

वृद्ध तपागच्छना स्थापक विजयचंद्रसूरिना त्रण शिष्यो—वज्रसेन, पद्मचन्द्र अने क्षेमकीर्ति नामे आचार्यो हता. ए पैकी क्षेमकीर्तिए 'बृहत् कल्पसूत्र ' उपरनी वृत्ति जे पूर्वकाछीन आचार्य मलयगिरिए अधूरी मूकी हती ते सं. १३३२ (ई. स. १२७६)ना वर्षमां पूर्ण करी. ए वृत्तिनो प्रथमादर्श नयप्रभ आदि साधुओए लख्यो हतो.

१ जुओ मलयगिरि.

२ बुकक्षे, विभाग ६, पृ. १७१०-१२, प्रशस्ति.

क्षेमपुरी

सुराष्ट्रनुं एक नगर. त्यांना श्रावक राजा ताराचन्द्रना कुमार नरदेवनी धर्मकथा 'वन्दारुवृत्ति 'मां छे.'

क्षेमपुरीनो स्थाननिर्णय थई शक्यो नथी.

१ क्षेमपुर्यां सुराष्ट्रासु ताराचन्द्रस्य भूभुजः । पद्मेव पद्मनाभस्य प्रिया पद्मावतीत्यभूत् ॥ प्रजायेतां तयोः पुत्री रूपलावण्यसंयुत्ती । तत्रायो नरदेवाख्यो देवचन्द्रो द्वितीयकः ॥ वत्रु, पृ. ८६.

खण्डकर्ण

उज्जियनीना राजा प्रद्योतनो मंत्री. एक सहस्रयोधी मह प्रद्योतना दरबारमां आव्यो हतो अने पोतानी सेवा बदल एक हजार योद्धाओंने अपाय एटला वेतननी तेणे मागणी करी हती. खंडकणेनी सूचनानु-सार एना साहसनी परीक्षा कर्या पछी एनी मागणी मुजब वृत्ति बांधी आपवामां आवी हती.

९ व्यम, विभाग ३, पृ. ९३.

खपुटाचार्य

एक प्रभावक आचार्य. 'आवश्यकसूत्र 'नी चूर्णि अने वृत्तिमां

प्राप्त थता एमना वृत्तान्तनो सार आ प्रमाणे छे : खपुटाचार्य एक विद्यासिद्ध आचार्य हता. तेमनो एक भाणेज तेमनो शिष्य हतो. ते सांभळवा मात्रथी विद्याओ शीखी जतो हतो. हवे. गुडशस्त्र नगरमां एक बौद्राचार्य जैन साधुओ वडे वादमां पराजित थया पछी काळ करीने वृद्धकर नामे व्यंतर थयो हतो, ते साधुओने उपद्रव करतो हतो. आथी खपुटाचार्य पोताना भाणेज शिष्यने भरुकच्छमां बोजा साधुओ पासे राखीने गुडशक्रमां गया. त्यां यक्षना मन्दिरमां प्रवेशी वस्र ओढी सूई गया. पूजारी आन्यो, पण तेओ ऊठचा नहि. पछी राजानी आज्ञाथी तेमना उपर अनुचरो लाकडीओनो प्रहार करवा मंडचा, तो ए प्रहारो ऊलटा अंतःपुरमांनी राणीओने वाग्या. आशी राजा आचार्यने करगरवा लाग्यो. पछी आचार्य ऊठीने चाल्या अने यक्ष तथा बीजी मूर्तिओने पोतानी पाछळ चालग कहां, एटले ते पण चालवा मांडी, वे मोटी पाषाणनी कूंडीओने पण ए रीते पाछळ चलावी. गामना सीमाडे आवीने यक्ष अने बीजा व्यंतरोने मुक्त कर्या. एटले तेमनी मूर्तिओ पोतपोताने स्थाने गई, परन्त वे कंडीओ त्यां ज रहेवा दीघी.

बीजी बाजू, आचार्यने खबर पडी के तेमनो शिष्य—भाणेज विद्याप्रभावथी श्रावकोने घेरथी स्वादिष्ठ खोराक आकाशमार्गे ऊडतां पात्रोमां मंगावीने खाय छे तथा बौद्धोमां भळी गयो छे. भरकच्छना संघ तरफथी पण आचार्य उपर संदेशो आव्यो. आचार्य भरकच्छ गया. घेळां ऊडतां पात्रोनी आगळ तेमणे एक शिला गोठवी, एटळे बघां पात्रोनो तेनी साथे अथडाईने मुको थई गयो, अने शिष्य डरीने नासी गयो. पछी आचार्य बौद्धो पासे गया. बौद्धोए तेमने कह्युं के 'भगवान बुद्धने पंगे पडी.' त्यारे आचार्य बोल्या, 'आव वत्स, शुद्धोदनस्त ! मने बंदन कर!' एटळे बुद्धनी मूर्ति तेमने पंगे पडी. त्यां द्वार आगळ एक स्तूप हतो तेने पंगे पडवा कह्युं, एटळे ते पण नमी

पडचो. पछी बुद्धनी मूर्तिने ऊठवा कहां, एटले ते अर्धनत अवस्थामां रही, अने 'निर्प्रन्थनामित ' एवा नामथी प्रसिद्ध थई.

'प्रभावकचरित 'ना 'पादिलिसस्रिचरित'मां खपुटाचार्यनो वृत्तान्त आप्यो छे त्यां तेमने मृगुकच्छना राजा बलमित्र—भानुमित्र तथा कालकाचार्यना समकालीन कह्या छे. ए उल्लेखने जो अतिहासिक वस्तुस्चक गणीए तो, कालकाचार्य विशेनो मुनि कल्याण-विजयनो समय निर्णय ध्यानमां लेतां, तेओ वीरनिर्वाण पली चोथा सैकामां थयेला गणाय. 'प्रभावकचरित ' अनुसार, बौद्धोए मृगुकच्छना अश्वाववोध तीर्थनो कबजो लई लीधो हतो ते तीर्थ खपुटाचार्ये 'बिलाडा पासेथी दूध मुकाववामां आवे तेम ' छोडाव्युं हतुं. " आवश्यकस्त्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमां बौद्धोना खपुटाचार्ये करेला पराजयनो जे निर्देश छे ते अश्वावबोधतीर्थ विशेनो हशे. वळी 'प्रभावकचरित ' कहे छे के आय खपुटनी पाटे तेमना शिष्य उपाध्याय महेन्द्र बेठा हता, अने अश्वावबोधतीर्थमां तेमनी परंपरा हजी पण (एटले के 'प्रभावकचरित 'ना रचनाकाले, सं. १३३४=ई. स. १२७८ मां) विद्य-मान छे.

उपर्युक्त परंपरागत वृत्तान्तोमांथी चमत्कारनुं तत्त्व बाद करीए तो एटल स्पष्ट छे के खपुटाचार्यनो विहारप्रदेश मुख्यत्वे लाट आसपासनो हतो, मरूचमां ए काळे बौद्धो अने जैनोनी मोटी वसती हती तथा तेमनी वच्चे स्पर्धा चालती हता, एक बौद्ध स्तूप पण मरूचमां हतो, खपुटाचार्यनो एक शिष्य बौद्धो साथे मळी गयो हतो, बौद्धोए आचार्यनी गेरहाजरीमां जैनोना अश्वावबोध तीर्थनो कबजो लई लीधो हतो, पण आचार्ये युक्तिप्रयुक्तिथी बौद्धोने दूर कर्या हता अने पोतानी पट्टपरंपरा त्यां पुनःस्थापित करी हती.

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४२-४३; आम, पृ. ५१४. बुकमा

(गा. ५५९३) तथा वृकक्षे (भाग ५, पृ. १४८०) मां 'विद्यावली' तरीके खपुटाचार्थनो उल्लेख छे.

२ प्रच, ५-२हो. १४२-४६. जुओ बल**मित्र-भानुमित्र अने** कालकाचार्थः

३ प्रच, ५-%ो. २२४.

४ शकुनिकाविहार, जेना उपर वस्तुपाळ तेजपाळ सुवर्णना ध्वजदंडों कराव्या हता ते, अश्वावबोधतीर्थमां हती (जुओ ए प्रसंगना स्मारकरूपे रचायेली जयसिंहसूरिनी 'वस्तुगळ-तेजपालप्रशस्ति'). शकुनिकाविहारनी पाछळ्यी मस्बिद बनी गई छे, पण एनं आलेखन करतां शिल्पों आसु उपरना तेजपालना मन्दिरमां छे. (अश्वावबोधतीर्थ तथा शकुनिकाविहारना परंपरागत इतिष्टत तथा ए शिल्पानां चित्र माटे जुओ मुनि जयन्त-विजयजीकृत 'आबु,' पृ. १०९-१५. वळी 'त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित्र' पर्व ७, तथा 'विविधतीर्थकरप'मां 'अश्वावबोधकरप.')

५ टि. ४ मां निर्दिष्ट जयसिंहसूरि (ई. स. नो तेरमो सैको), जेओ आ तीर्थमां आवेला मुनि सुत्रतचैत्यना अधिष्ठायक इता तेओ खपुटाचार्यनी परंपरामां थयेला होवा जोईए.

खेट

- [१] जेनी आसपात धूळनो प्राकार होय एवा गामने खेट अथवा खेड कहेवामां आवे छे.
- [२] समय जतां 'खेट 'ए सामान्य नाममांथी विशेष नाम बनी गयुं. संख्याबंध टीकाप्रन्थोमां मळता एक कथानक प्रमाणे, खेडनो वतनी रुद्ध नामे बाह्मण खेतर खेडतो हतो त्यारे तेनो एक बळद गळियो थई जवाथी तेणे बळदने निर्देयपणे मार मार्यो अने परिणामे बळद मरण पान्यो, आशी तेनी ज्ञातिए तेने पंक्ति बहार कर्यो हतो.

आ खेट अथवा तेनो तद्भव शब्द जेना नाममा अंगभूत होय एवां गामो अनेक स्थळे छे;जेमके गुजरातनां खेडा, बेडब्बा,संखेडा,चानखेडा, [°]६२[°]]

आदि; महाराष्ट्रनां खेडेगांव, आदि. आथी उपर्युक्त कथामांनुं 'खेट' कयुं गाम हरो ए कही शकाय निह. 'उज्जड खेडे वाग्यो टोल्ल' ए अखानी पंक्तिमां तथा 'उज्जड खेडां फरी वसे निर्धेनियां धन होय' ए सुभाषितमां 'खेडुं ' शब्द 'गामडा'ना अर्थमां छे. मराठी 'खेडें,' तथा हिन्दी—पंजाबा 'खेडा' पण आ ज अर्थमां छे.

१ पांद्यप्राकारबद्धं खेडं, आशी, पृ. २५८; धूलप्राकारोपेतं खेटं ए ज, पृ. २९९. आ प्रकारना बीजा उल्लेखो माटे जुओ उत्ता, पृ. ६०५; ज्ञाषअ, पृ. ५५, १४०; बुकमा तथा बुकक्षे, भाग २, पृ. ३४२, इत्यादि.

२ कम्रु, पृ. ५८५-८६; किक, पृ. १९९; कदी, पृ. २२; ककी, पृ. २३४.

३ खेडा माटे जुओ पुगु मां खेटक.

खेट आहार

खेटकाहारनो उल्हेख वल्लभीनां दानपत्रोमां अनेक वार आवे छे.'
गुजरातना खेडा आसपासनो ए प्रदेश हतो. आहार ए एक वहीवटी
एकम छे. वळी वल्लभीना लेखोमां आहार अथवा आहरणीनो उल्लेख
पर्याय तरीके कर्यो जणाय छे. (जुओ हस्तकल्प टि. ६) 'आवश्यकचूर्णिं'
उत्तर भाग ए. १५२-५३ मां मरुकच्छ ' आहरणी 'नो निर्देश छे ते
आ दृष्टिए रसप्रद छे. अट्टण मल्लनो सहायक फल्लही मल्ल भरुकच्छ
आहरणीना एक गामनो ('भरुकच्छाहरणीए गामे') हतो एम त्यां कर्छं
छे. ' उत्तराध्ययन 'नी शान्तिसूरिनी (पृ. १९२) तथा नेमिचन्द्रनी
वृत्ति (पृ. ७९)मां 'भरुकच्छहरणीगामे ' एवो पाठ छे ते देखीती
अशुद्धि छे.

धान्य, इन्धन।दि पूरां पाडवा वडे जे प्रदेश जे नगरने माटे उपभोग्य बने ते एनो आहार गणाय एवो निर्देश आगमसाहित्यमां गजाग्रपद] [६६

छे. आहारनां उदाहरण तरीके मधुराहार, मीढेरकाहार, खेटाहार वगेरे आपेलां छे.

9 49, 9. 69.

२ क्षेत्राहारस्तु यस्मिन् क्षेत्रे आहारः क्रियते उत्पद्यते व्याख्यायते (१) यदि वा नगरस्य यो देशो धान्येन्धनादिनोपभौग्यः **६** क्षेत्राहारः, तद्यथा — मथुरायाः समासन्तो देशः परिभोग्यो मथुराहारो मोढेरकाहारः खेडाहार इत्यादि, सूक्तशी, पृ. ३४३; खेत्ताहारो जो जस्स णगरस्य आहारो, आहार्यत इत्याहारः, विसभो आहारोत्ति वृच्चति, जहा मधुराहारो खेडाहारो, सक्कच्, पृ. ३७६. सुकृच्मां 'आहार' अने 'विषय'ने पर्याय गण्या छे ए सूचक छे.

गजसुकुमाल

कृष्ण वासुदेवना नाना भाई. तेमनां लक्ष द्वारकाना सोमिल नामे एक ब्राह्मणनी पुत्री साथे नक्की थयां हतां, पण गजसुकुमाले तीर्थकर नेमिनाथनो उपदेश सांमळीने दीक्षा लीधी, अने रात्रे स्मशानमां जई कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या. आ वातनी सोमिल ब्राह्मणने खबर पडतां तेने गजसुकुमाल उपर घणो कोध चढचो अने रात्रे स्मशानमां जई गजसुकुमालना माथा उपर बळतां लाकडां मूकीने तेणे तेमनो वध कर्यो. ए समये शुबल ध्यानमां रहेला गजसुकुमालने केवल ज्ञान थयुं. श्रीकृष्णने आ वातनी खबर पडतां तेमणे सोमिल ब्राह्मणने देहान्त दंड कर्यों.

9 अंद पृ. ५-१४; आचू, पूर्व भाग, पृ. ३५५-५६; आम, पृ. ३५६-५९. गजपुकुमाल विशेना प्रासंगिक उल्लेखो माटे जुओ बुकभा, गा. ६१९६ तथा बुकक्षे, भाग ६, पृ. १६३७; ब्यम, विभाग ४, पेटा विभाग १, पृ. २८, इत्यादि.

गजाग्रपद

दशार्णपुर पासेना दशार्णकूट पर्वतनुं आ बीजुं नाम छे. एक वार त्यां महावीर स्वामी समोसर्या त्यारे इन्द्रे अरावत उपर बेसीने,

ि गजाग्र पद्

मारे समृद्धिपूर्वक त्यां आवीने तेमने वंदन कर्यां हतां. ए समये दशार्णकूट उपर अरावतनां पगलां पडवाथी ते पर्वत गजापपद नामथी ओळखायो. आर्थ महागिरि विदिशामां जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाप्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकच्छ (दशार्णपुर) गया हता.

जुओ एलकच्छ, दशाणपूर

१ आम, पृ. ४६८.

२ आचू, उत्तर भाग, पृ. १५६-५७.

गन्धहस्ती

एक प्राचीन आचार्य. 'आचारांग सूत्र' ना 'शलपरिज्ञा' अध्ययन उपरना तेमना विवरणनो उल्लेख ए सूत्र उपरनी शीलाचार्यनी टीकामां छे. 'तत्त्वार्थसूत्र 'ना टीकाकार तरीके पण अन्यत्र तेमनो उल्लेख छे. 'जीतकल्पभाष्य' मां गंधहस्तीनो श्रुतधर तरीके निर्देश छे. 'उत्तराध्ययन सूत्र ' उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्तिमां तथा 'आवश्यक ' उपरना मलधारी हेमचन्द्रना टिप्पणमां पण गंधहस्तीनो मत टांकेलो छे.

गंधहस्ती कोण ए विशे केटलोक मतभेद छे. प्रसिद्ध स्तुतिकार स्वामी समंतभद ए गंधहस्ती अने तेमणे 'तत्त्वार्थसूत्र' उपर रचेल भाष्य ए ज गंधहस्तिमहाभाष्य एवी मान्यता दिगंबर संप्रदायमां सामान्य रीते छे, ज्यारे बृद्धवादिशिष्य सिद्धसेन दिवाकर ए गंधहस्ती अने 'तत्त्वार्थसूत्र' उपर तेमणे व्याख्या लखी हती एवो मान्यता सामान्य रीते श्वेतांबर संप्रदायमां छे. पण पं. सुखलालजी अने पं. बेचरदासे 'सन्मतितर्क 'नी तेमनी प्रस्तावनामां सप्रमाण बताव्युं छे के गंधहस्ती ए सिहसूरिना प्रशिष्य अने भास्वामीना शिष्य, 'तत्त्वार्थभाष्य 'नी वृत्तिना कर्ता सिद्धसेन छे. आ बृत्तिमां सिद्धसेने अकलंकना 'सिद्धिविनश्चय 'मांथी अवतरणो आप्यां छे, एटले तेओ ईसवी सनना सातमा सैकाथी तो अर्वाचीन छे.

- शक्तपरिज्ञाविवरणमितगहनिमतीव किल वृतं पूज्यैः ।
 श्रीगन्धहितमिश्रैविवृणोमि ततोऽहमविश्वष्टम् ॥ आशी, पृ ७४.
- २ यदाह तत्त्वार्थमूलटीकाकृद् गन्धहस्ती, जंप्रशा, पृ. ३०६.
- ३ जीकमा, पृ. १९
- ४ उशा, पृ. ५१९; आहे, पृ. ११९
- ५ 'सन्मतितर्क,' प्रस्तावना, पृ. ५९
- ६ ए ज. पृ. ५९-६०.

गम्भूता

उत्तर गुजरातमां पाटण पासेनुं गांम् गाम. त्यां रहीने शीलाचार्ये अाचारांगसूत्र 'नी वृत्ति रची हती.'

जुओ शीलाचार्य

৭ आशी, पृ. २८८

गर्दभ

उज्जयिनीना यव राजानो युवराज. एणे पोतानी बहेन अडोलि-काने विषयसेवन माटे भोंयरामां पूरी हती.

कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं अपहरण करनार उज्जियनीना राजा गर्दभिल्लनुं आ स्मरण करावे छे. गर्दभ अने गर्दभिल्ल एक ज जणाय छे.

जुओ कालकाचार्य अने गर्दभिछ

१ बृक्क्षे, भाग २, ए. ३५९

गर्दभिछ

उज्जियनीनो राजा. एणे कालका चार्यनी बहेन सरस्वतीनुं अप-हरण कर्युं हतुं, तथी कालका चार्ये शकोने बोलावी गर्दिभिल्लनो उच्छेद कर्यो हतो.

जुओ **कालकाचार्य** अने **गर्दभ**

गिरिनगर

जूनागढ, गिरिनी तळेटीमां आवेलुं होवाथी ते 'गिरिनगर'कहेवाय छे.

गिरिनगरमां एक अग्निप्जक विणक दरवर्षे एक घरमां रत्नो भरीने पछी ए घर सळगावी अग्निनुं संतर्पण करतो हतो. एक वार तेणे घर सळगाव्युं, ए समये खूब पवन वायो, तेथी आखुं नगर बळी गयुं. बीजा एक नगरमां एक विणक आ प्रमाणे अग्निनुं संतर्पण करवानी तैयारी करे छे एम त्यांना राजाए सांभळ्युं, एटले गिरिनगरनी आगनो प्रसंग याद करीने तेणे एनुं सर्वस्व हरी लीधुं. गिरिनगरनी त्रण नव-प्रसुता स्त्रीओ उज्जयंत उपर गई हती त्यारे चोरो तेमनुं हरण करी गया हता अने पारसकूल—ईरानी अखातना किनारा उपर तेमने वेची दीधी हती एवं पण एक कथानक छे.

'सूत्रकृतांग 'नी शीलाचार्यनी दृत्तिमां उद्भृत थयेला एक हालरडामां रडता बाळकने गिरिनगर आदि नगरोनो राजा कहीने छानुं राखवानो प्रयास छे.

विशिष्ट पर्वतवाची 'गिरनार' शब्द गिरिनगर गिरिनअर गिरनार ए कमे ब्युत्पन्न अयेले छे. गुजरातमां 'नार' पदान्तवाळां बीजां पण स्थळनामो छे, जे आ साथे सरखावी शकाय; दा. त. नगर नअर नार (पेटलाद पासेनुं), कोटिनगर नोडिनअर नोडिनार, इत्यादि. 'गिरनार'नी बाबतमां, 'नगर' पदान्तवाळुं नाम पर्वत माटे रूढ अयुं एटलुं ज निह पण 'उज्जयंत', 'रैवतक' आदि पर्यायोने तेणे स्थानभ्रष्ट करी दीधा ए वस्तु शब्दोनी अर्थसंक्रान्तिनी दृष्टिए नोध-पात्र छे.

जुओ **उज्जयन्त अने रैवतक**

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ७१; आम, पृ. ८८; विको, पृ. २७८; अनुहा, पृ. १८; अनुहे, पृ. २७, २ आचू, उत्तर भाग, पृ. २८९

३ जुओ काम्यकुब्ज. बीजा केटलाक उल्लेखो माटे जुओ अनु, ए. १५९; आसूत्रू, ए. ३३९; जीम, ए. ५६; इत्यादि.

४ जुओ 'इतिहासनी केडी'मां प्रन्थस्य थयेलो 'गुजरातनाँ स्थळ-नामो 'ए मारो लेख.

गिरिनार

सौराष्ट्रमां आवेलो पर्वत, जेने प्राचीनतर साधनग्रन्थोमां 'उज्जयंत' कह्यो छे. ए माटे 'गिरिनार ' एवं तुलनाए अर्वाचीन नाम 'कल्प-सूत्र 'नी 'कौमुदी ' टीकामां मळे छे.'

जुओ उज्जयन्त अने गिरिनगर.

१ ततः प्रभुरन्यत्र विद्वत्य पुनरिष गिरिनारे समवस्तः, तदा रथनेमिदीक्षां जमाह । ककौ, पृ. १६९.

गुडशस्त्र नगर

आ नगर लाटदेशमां भरकच्छथी बहु दूर नहि एवे स्थळे आव्युं हशे, केमके खपुटाचार्य पोताना शिष्यने भरकच्छमां राखीने बृद्धकर व्यंतरनो उपद्रव शमाववा माटे गुडशक्षमां गया हता, अने पोतानो शिष्य शिथिलाचारी थईने बौद्धोमां भळी गयो होवाना समाचार मळतां पाछा भरकच्छ आव्या हता.

वधु माटे जुओ खपुटाचार्य

१ आचू, पूर्व भाग, ए. ५४२, आम, ए. ५१४

गुर्जर

गुजरातनो वासी.

जुदा जुदा प्रकारनां वैपरीत्यनां उदाहरण आपतां गुर्जरी मध्य देशनी भाषा बोळे एने भाषावैपरीत्य कह्युं छे. आवां वैपरीत्यथी हास्यरस निष्पन्न श्राय छे. 'कल्पसूत्र 'नी टीकाओमां 'राज्यदेश- नाम ' आप्यां छे तेमां अंग, वंग, किंछग, गौड, चौड, कर्णाट, लाट, सौराष्ट्र, काश्मीर, सौवीर, आभीर, चीन, महाचीन, बंगाल, श्रीमाल, नेपाल, जहाल (ककी नो पाठ सूचवे छे के 'डाहल ' जोईए), कौशल, मालव, सिंहल अने मरुस्थलनी साथे गुर्जर पण आप्युं छे.

१ रूपवयोवेशभाषाणां हास्योत्मदनार्थ वैपरीत्येन या विडम्बना— निवर्तना तत्समुत्पन्नो हास्यो रसो भवतीति संयोगः, तत्र पुरुषादेयों विदादि-रूपकरणं रूपवेपरीत्यं, तरुणादेर्वृद्धादिभावापादनं वयोवैपरीत्यं, राजपुत्रादेवीण गादिवेशधारणं वेशवेपरीत्यं, गुर्जरादेस्तु मध्यदेशादिभाषाभिधानं भाषावेपरीत्यं, अनुहे, पृ. १३९. अर्थात् अहीं 'वैपरीत्यं'ने हास्योत्पादननुं एक निमित्त कह्युं छे. एने माटेनो समुचित अंग्रेजी शब्द Incongruency छे, जे वर्तमान साहित्यविवेचनमां पण हास्यनुं एक निमित्त गणाय छे.

२ कप्त, पृ. ४५७; किंक, पृ. १५२. ककौ (पृ. १८१-८२) मां 'भोट' नाम वधारातुं छे.

गोप।लगिरि

वसितवाळा पर्वतोमां गोपालगिरि, चित्रकूट आदिनो उल्लेख छे. ' प्रबन्धकोश ' अनुसार गोपालगिरि कान्यकुट्ज देशमां आवेलो छे. ' पण विशेष पुरावाने अभावे एनो चोक्कस स्थाननिर्णय थई शके एम नथी.

- ९ गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरयः गोपासगिरि-चित्रकूटमभृतयः । ससूअ, शतक ७, उद्दे० ६ उपरनी वृत्ति.
- २ कन्यकुब्जदेशे गोपालगिरिदुर्गनगरे यशोवर्मनृपतेः सुयशादेवीकुक्षि-जन्मा नन्दनोऽहम् । 'प्रवन्धकोश,' पृ. २७.

गोविन्दाचार्य

गोविन्द नामे एक बौद्ध भिक्षु हतो तेने एक जैन आचार्ये वादमां अराढ वार पराजित कर्यों हतो. आथी तेणे विचार कर्यों के 'ज्यांसुधी हुं जैन सिद्धान्तनुं स्वरूप नहि समजुं त्यांसुधी जैन आचार्यने पराजित करी शकीश नहि.' आम विचारी तेणे ए ज आचार्य पासे दीक्षा लीधी. त्यां अभ्यास करतां एने सम्यक्त प्राप्त थयुं. गुरु पासेथी वतो लीधां अने बधी वात निखालसपणे करी. पली तेणे एकेन्द्रिय जीवनी सिद्धि करतो 'गोविन्दिनर्युक्ति' नामे प्रन्थ रच्यो.

'गोविन्दिनिर्युक्ति ' उपलब्ध नथी. 'बृहत्कल्पसूत्र 'ना वृत्तिकार आचार्य क्षेमकीर्तिए शास्त्र तरीके 'सन्मितितर्क ' अने 'तत्त्वार्थ 'नी साथे 'गोविन्दिनर्युक्ति 'नो सबहुमान उल्लेख कर्यो छे. ' आवश्यक-चूर्णि 'मां पण 'गोविन्दिनर्युक्ति 'ने दर्शनप्रभावक शास्त्र कह्युं छे. 'गोविन्दिनर्युक्ति 'नी रचना 'आचारांगसूत्र'ना 'शस्त्रपरिज्ञा ' अध्ययनना विवरणरूपे थई होवी जोईए तथा गोविन्दाचार्य विकमना पांचमा सैकामां विद्यमान हता एम पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए साधार रीते प्रति-पादन कर्युं छे.

१ निचू, उद्दे० १५; श्राप्रर, पृ. २७. श्रापर मां गोविन्दने 'वाचक' कह्या छे.

२ बृकक्षे, भाग ३, पृ. ८१६; भाग ५, पृ. १४५२.

३ आचू, पूर्व भाग, पृ. ३५३ 'गोविन्दनिर्युक्ति 'मांनी केटलीक दार्शनिक चर्चाना संक्षिप्त निर्देश माटे जुओ एज, पृ. ३१.

४ 'महावीर जैन विद्यास्य रजत महोत्सव प्रन्थ,' पृ. १९९--२०१.

गोष्टामाहिल

आर्थ रक्षितस्रिना मामा तेम ज तेमना परिवारना एक साधु.
एमणे मथुरामां एक अक्रियावादीने वादमां पराजित कर्यो हतो.
आचार्ये गच्छाधिपति तरीके तेमने बदले दुर्बल पुष्पिमत्रनो अभिषेक
कर्यो तेथी विरुद्ध पडी ते सातमा निह्नव—साचा धर्मना संघमां तड
पडावनार मिथ्यावादी बन्या. वीर निर्वाण सं. ५८४=ई. सं. ५८मां
दशपुरमां आ निह्नव उत्पन्न थयो. एमनो मत अबद्धिक तरीके
जाणीतो छे. कर्मोनो आत्मा साथे स्पर्श ज थाय छे, अने एथी
आत्मा कर्मथी बंधातो नथीं एम माननारो ए मत छे.

जुओ रक्षित आर्य

् १ आच्रु, पूर्व भाग, पृ. ४११; आम, पृ. ३९६-४०१; उद्या, पृ. १७२-८८.

२ विभा, गा. ३००९

्र एज, गा. ३००९-५० तथा विको, पृ. ७२-२९४; आचू, पूर्व भाग, पृ. ४१३-१५; आम, पृ. ४१५-१८.

४ ए ज. वळी अबद्धिक मतना सरळ गुजराती निरूपण माटे जुओ मुनि धुरंघरविजयजीकृत 'निह्नववाद', पृ. १६५-८२.

गौरीपुत्र

'गौरीपुत्रो 'तरीके 'भिक्षाको ' प्रसिद्ध छे ' एवो उल्लेख 'कल्पसूत्र 'ना टीकाकारो करे छे; एटले 'गौरीपुत्र 'तरीके तेओने समाजनो कोई चोकस वर्ग उदिष्ट छे. 'कल्पसूत्र 'नी टीकाओना रचिताओ चौदमा सैकाथी मांडी गुजरातमां थया छे. गुजरातमां मध्यकाळथी भाटचारणो 'देवीपुत्र 'तरीके प्रसिद्ध छे, तो टिकाकारोए नोंधेल 'गौरीपुत्रो 'भाट—चारणो केम न होय ?

भ भिक्षाका गौरीपुत्रका इति प्रसिद्धाः, कसं, पृ. ८५; कदी, पृ. ७३. चण्डमद्योत

जुओ प्रयोत

चण्डरुद्राचार्य

एमने विशेनुं कथानक नीचे प्रमाणे छे: उज्जयिनीमां स्नपन उचानमां एक वार साधुओ समोसर्या हता. एक उदात्तवेशी युवाने मित्रो सहित त्यां आवीने पोताने दीक्षा आपवा मागणी करी. 'आ अमारो परिहास करे छे 'एम मानीने साधुओए तेने चंडरुद्दाचार्य नीमना कोपशील आचार्य पासे मोकल्यो. चंडरुद्दाचार्ये भस्म मंगावी, लोच करी तेने दीक्षा आपी. मित्रो पाला गया. पछी परोदमां विहार करतां आचार्ये शिष्यने आगळ चालवा कह्युं. मार्गमां एक ठूंठा उपर आचार्य पडी गया; आशी क्रोध करीने तेमणे शिष्यना माथा उपर दंडनो प्रहार कर्यों पोतानुं माथुं फूटी जवा छतां शिष्ये सम्यवपणे ते सहन कर्यु प्रभातमां शिष्यनुं छोहीथो खरडाये छुं माथुं जो ईने आचार्यने पोताना दुर्वतननुं भान थयुं, अने क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थतां तेमने केवल ज्ञान थयुं '

कोपशील गुरुने पण विनयशील शिष्य प्रसन्न करी शके ए विषयमां चंडरद्राचार्येनुं दृष्टान्त आपवामां आवे छे. आ आचार्यनुं खरुं नाम रुद्र हरों, पण चंड प्रकृतिना होवाथी तेओ चंडरुद्र तरीके ओळखाया हरो—जेम अवंतिनो राजा प्रयोत चंडप्रयोत कहेवायो हतो तेम.

१ शाचू, उत्तर भाग, पृ. ७७-७८; उचू, पृ. ३१; उशा, पृ. ४९-५०; उने, पृ. ४-५; बृकमा, गा. ६१०३-४; बृकसे, पृ. १६१२-१३; पाय, पृ. ५६-५७.

चित्रकूट

आ मेवाडनो चितोडगढ होवा संभव छे. चित्रकूटमां तपश्चर्या करता सुकोशल मुनिने एक वाघणे फाडी खाधा हता. वसितवाळा पर्वतोमां गोपालगिरि, चित्रकूट आदिनो उल्लेख करेलो छे. आगमोना पहेला संस्कृत टोकाकार याकिनो महत्तरासूनु हरिभदसूरि चित्रकूटना विद्वान ब्राह्मण हता.

- १ मस, गा. ४६६
- २ गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरयः गोपालगिरि— चित्रकूटप्रमृतयः । ससूअ, शतक ७, उद्दे॰ ६ उपरनी वृत्ति.
 - ३ जुओ हरिभद्रसूरि.

चौंछुक्य

एक क्षत्रिय जाति. कुलकथाना उदाहरण तरीके ए विशे नीचेना

आशयनो एक स्रोक उद्भृत करवामां आवे छे—' अहो ! चौछक्य-पुत्रीओनुं साहस जगतमां सौथी विशेष छे, केम के प्रेमरहित होय तो-पण तेओ पतिनुं मृत्यु थतां अग्निमां प्रवेशे छे.'

१ एवं उपादिकुलोत्पन्नानामन्यतमाया यत् प्रशंसादि सा कुलकथा, यथा—''अहो चौलुक्यपुत्रीणां साहसं जगतोऽधिकम् । पत्युर्मृत्यौ विश्वत्त्यग्नौ याः प्रेमरहिता अपि॥ '' स्थास्भ, पृ. २१०; वळी जुओ प्रव्याअ, पृ. १३९ तथा पाय, पृ. ४८.

जडण

जुओ यवन

जयविजय

तपागच्छना विजयानंदस्रिना शिष्य वाचक विमलहर्षना शिष्य. तेमणे सं. १६७७=ई. स. १६२१ मां 'कल्पस्त्र' उपर 'दीपिका' नामे टीका रची हती. आ टीकानुं संशोधन भावविजय-गणिए कर्युं हतुं, अने तेनो प्रथमादर्श कर्ताए पोते पोताना शिष्य वृद्धिविजयनी प्रार्थनाथी तैयार कर्यों हतो.

९ कदी, प्रशस्ति.

जिनदत्त

सोपारकवासी श्रावक. तेनी पत्नीनुं नाम ईश्वरी हतुं. वज्रस्वामीना शिष्य वज्रसेन सोपारकमां आव्या त्यारे जिनदत्त अने ईश्वरी बन्नेए पोताना चार पुत्रो नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधरनी साथे दीक्षा लीधी हती. नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधर ए प्रमाणे साधुओनी चार शाखाओं आ चारथी प्रवर्ती.

जुओ वज्रसेन

१ कसु, पृ. ५१३; किक, पृ. १७१; कदी, पृ. १५१.

जिनदास

मथुरानो श्रावक. एनी पत्नीनुं नाम साधुदासी हतुं. तेमनी पासे कंबल—संबल नामे वे उत्तम बळदो हता. एक वार मथुरामां भंडीर यक्षनी यात्रा हती त्यारे जिनदासनो एक मित्र ए वळदोने गाडे जोडी लई गयो, अने तेणे वळी बीजाने आप्या. ज्यारे पाछा लाववामां आव्या त्यारे कंबल—संबल खूब थाकी गया हता, अने थोडा समय पछी तेओ अनशन करीने मरण पाम्या, एवी कथा अनेक टीका-ग्रन्थोमां छे.

जुओं **कम्बल-सम्बल**

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. २८१; आनि, गा. ४६९-७१; बुकक्षे, भाग ५, पृ. १४८९; कसु, पृ. ३०६-७; किक, पृ. १०५; कदी, पृ. ९०.

जिनदासगणि महत्तर

परंपरा प्रमाणे, आगमो उपरनी चूर्णि नामथी प्रसिद्ध संख्यावंध प्राकृत टीकाओना कर्ता. 'नंदिस्त्र ' उपरनी तेमनी चूर्णि शक सं. ५९८ च्हें. स. ६७६ मां रचायेली छे, एटले तेमनो समय ईसवी सनना सातमा सैकामां निश्चित छे. 'निशीधस्त्र ' उपरनी विशेष नामे चूर्णि पण तेमनी कृति छे. ' अनुयोगद्धारस्त्र ' चूर्णिनी प्रतोने अंते जिनदासगणिनो कर्ता तरीके नामोल्लेख छे. आ उपरांत 'आवश्यक' अने 'उत्तराध्ययन 'नी चूर्णिओ पण तेमनी कृतिओ गणाय छे. ' उत्तराध्ययन ' चूर्णिने अंते कर्ताए पोतानुं नाम आप्युं नथी, पण पोताना गृह तरीके गोवाल्य महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे. ' उत्तराध्ययन ' चूर्णिना कर्ता गोवाल्य महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे. ' उत्तराध्ययन ' चूर्णिना कर्ता गोवाल्य महत्तरना शिष्य जिनदासगणि महत्तर छे एम स्वीकारीए तो, चूर्णिमांना उल्लेख अनुसार तेओ वाणिज्य कुल, कोटिक गण अने वज्रशास्त्राना साधु हता एम मानवुं प्राप्त थाय छे. '

उपर्युक्त चूर्णिओनुं कर्तृत्व जिनदासगणि उपर आरोपित करवा माटेनां प्रमाण अहाँ जणाव्यां छे, पण ए सिवायनो चूर्णिओ जेमां कर्तानां नाम नथी, ते पैकी केटलीना तेओ खरेखर कर्ता छे एना पुरावा तपास-वाती जरूर छे. अहीं ए पण याद राखवुं जोईए के केटलीक चूर्णि-ओमां कर्ता तरीके अन्य प्रसिद्ध प्रन्थकारोनो उल्लेख छे. दा. त. सिद्धसेनगणिए 'जीतकल्पसूत्र ' उपर चूर्णि रची छे (जुओ सिद्धसेन-गणि), अने 'श्राद्धप्रतिक्रमण् सूत्र ' उपरनी विजयसिंहसूरिनी चूर्णिनो उल्लेख रत्नशेखरसूरिए कर्यो छे (जुओ विजयसिंहसूरि).

पछीना समयमां थयेला संस्कृत टीकाकारीए चूर्जिओनो उपयोग व्यापक प्रमाणमां कयों छे अने प्राकृत कथानको तो घणी वार चूर्णि-मांथी ज शब्दशः उद्भृत कर्या छे.

- १ शकराज्ञः पंचसु वर्षशतेषु व्यतिकान्तेषु अष्टनवतिषु नन्यध्ययन-चूणिः समाप्ता । नेचू, अंतभाग.
 - २ 'सन्मतितर्क,' प्रस्तावना, पृ. ३५-३६.
- ३ इति श्रीश्वेताम्बराचार्यजिनदासगणिमहत्तरपूज्यपादानामनुयोग-द्वाराणां चूर्णिः ।। अनुच, पृ. ९१.
 - ४ वाणिजकुलसंभूओ कोडियगणिओ उ वयरसाहीतो । गोवालियमहत्तरओ विक्खाओ आसि लोगंमि ॥ ससमयपरसमयविक ओयस्सी दित्तिमं सुगंभीरो । सीसगणसंपरिवृडो वक्खाणरितिष्पओ आसी ॥ तेसि सीसेण इमं उत्तरज्ञ्ञयणाण चुण्णिखंड तु । रङ्यं अणुग्गहृश्यं सीसाणं मंदबुद्दीणं ॥ उच्नू, पृ. २८३.

जिनभटाचार्य

'विशेषावश्यक भाष्य ' उपरनी कोटचाचार्यनी वृत्तिमां जिनभटा-चार्यनो मत बहुमानपूर्वक टांकेलो छे. याकिनी महत्तरासूनु हरिभद-सूरिए जे गच्छमां जैन दीक्षा लीधी हती तेना अधिपति आचार्यनुं नाम जिनभट हतुं, एटछं ज नहि, हरिभद्रस्रिए 'आवश्यक सूत्र 'नो टीकाने अंते स्पष्ट कहुं छे के पोते एनी रचनामां जिनमटना अभि-प्रायने अनुसर्या छे. आनो अर्थ ए थयो के जिनमटाचार्ये 'आवश्यक सूत्र ' उपर एक टीका रची हती, जे अत्यारे उपलब्ध नथी. 'विशेषा-वश्यक भाष्य ' उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्तिमां स्थळे स्थळे 'मूल-टीका ' अने ' आवश्यक मूलटीका 'मांथी उद्गरणो आप्यां छे ते जिनमटाचार्यनी टीकामांथी होवां जोईए.

- १ विको (मा. गा. ४९८ उपरनी बृत्ति), पृ. १८६
- २ प्रच, ९-श्लो. ३, ३०, १८१
- ३ समाप्ता चेय शिष्यहिता नाम आवश्यकषृत्तिटीका । वृत्तिः सिताम्बराचार्यजिनभटनिगदानुसारिणो विद्याधरकुलतिलकाचार्यजिनदत्त्-शिष्यधर्मतोयाकिनीमहत्तरासूनोरल्यमातुराचार्यहरिभद्रस्य । आह, अंतभाग.
- ४ आको, पृ. ६०९, ६०४, ६७५, ७९३, ८४६, ८५५ इत्यादि. जुओ पं. भगवानदासनी प्रस्तावना, पृ. १-४.

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण

' आवश्यक सूत्र 'ना सामायिक अध्ययननी भद्रबाहुनी निर्युक्ति उपर गाथाबद्ध ' विशेषावश्यक भाष्य ' तथा बीजा अनेक प्रौढ प्रन्थो रचनार आचार्य. ए महान भाष्यप्रन्थने अनुलक्षीने आचार्य मलयगिरिए जिनभद्रगणिने ' दुष्पमान्धकारनिमग्नजिनवचनप्रदीप ' कह्या छे.' जेसलमेर मंडारनी एक प्राचीन ताडपत्रीय प्रतने आधारे आचार्य जिनविजयजीए 'विशेषावश्यक भाष्य'नो रचनाकाळ शकाब्द ५३१=ई. स. ६०९ होवानुं निश्चितपणे पुरवार कर्यु छे.

जिनभद्रगणिए पोते 'विशेषावश्यक भाष्य' उपर एक टीका रची हती. ए अत्यारे उपलब्ध नथी, पण कोटचाचार्ये तथा मलधारी हेमचन्द्रे पोतानां विवरणोमां एनो निर्देश कर्यो छे. पछीना समयमां थयेला आगमसाहित्यना अनेक टीकाकारोए जिनभद्रगणिना अभिप्रायो टांक्या छे अथवा तेमनी रचनाओमांथी मानपूर्वक अवतरणो आप्यां छे.

हरिभद्र, हेमचन्द्र अने अभयदेवनी जेम जिनभद्र नाम पण जैन साधुओमां व्यापक प्रचार पाम्युं हतुं, अने जिनभद्र-नामधारी अनेक प्रन्थकारो आपणे जोईए छीए.

- 9 आह च दुष्यमान्धकारनिमग्नजिनवचनप्रदीयो जिनभद्दगणि-क्षमाश्रमण: x x x नम, पृ. ८७.
- २ 'भारतीय विद्या', भाग ३, सिंघी स्पृति अंकर्मा 'श्रीजिनभद्र-गणि क्षमाश्रमणनो सुनिश्चित समय ' ए छेख.
- ३ क्षमाश्रमणटीकार्या लियम्...विको, पृ. २६५; क्षमाश्रमण टीकाऽपीयं, ए ज, पृ ३०३ वळी पृज्यास्तु व्याचक्षते (पृ. ८५९) ए प्रमाणे जिनभदनो मोघम उस्लेख पण छे.
 - ४ जुओ विको मी पं. भगवानदासनी प्रस्तावना.
- ५ उदाहरण तरीके-भसूअ, भाग १, प्र. १२९; नहा, प्र. ५२; वृकक्षे, भाग १, प्र. २५६; भाग २, प्र. ४००; जीकचू, प्र. १, ३०; कसं, प्र. १९५; श्रार, प्र. १, २८, इत्यादि.

६ जैसाइ, पृ. ८४६

डिम्भरेलक

महिरावणमां पूर आवे त्यारे डिंभरेलक प्रदेशमां धान्य ववाय छे, प्वो उल्लेख छे.

डिंभरेलक कोंकणमां अथवा आसपासना प्रदेशमां आब्युं हरो, केम के 'पुरातन प्रवन्धसंग्रह'मां कोंकणना राजा मल्लिकार्जुनने 'महि-रावणाधिपति ' कह्यो छे. ै

१ क्वचिद्विपूरकेण, यथा बन्नासायां पूरादविरच्यमानायां तत्पूर-पानीयभावितायां क्षेत्रभूमौ धान्यानि प्रकोर्यन्ते; यथा डिम्भरेलके महिरावण-पूरेण धान्यानि वपन्ति । बुक्भा, मा. १२३९ ना विवरणरूपे बुकक्षे, भाग १, ६, १८३-८४ तगेरा] [७១

२ अन्यदा कुङ्कणे जालपतनं श्रुत्वा महिरावणाधिपति मिल्लिकार्जुनं प्रति द्तं प्राहिणोत् । पुरातनप्रबन्धसमह,' पृ. ३९

ढण्डणकुमार्

कृष्ण वासुदेवनो ढंढणा नामे राणीथी थयेलो पुत्र. एने विशे आ प्रमाणे कथानक मले छे: तेणे तीर्थंकर नेमिनाथनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी हती, पण पूर्वकर्मना उदयने कारणे एमने आहार प्राप्त थतो नहोतो. आधी पोतानी लिध्यथी आहार मले तो ज स्वीकारवो एवो अभिप्रह तेमणे लीधो हतो. हवे, एक वार ढंढण मुनि द्वारकामां गोचरी माटे नीकळ्या त्यारे मार्गमां कृष्णे तेमने वंदन कर्युं, आधी 'आ कोई प्रभावशाळी मुनि छे' एम धारीने एक गृहस्थे तेमने लाडु वहोराव्या. पली ढंढण मुनिए नेमिनाथ पासे जईने पोतानी लिब्धथी लाडु मळ्यानी वात करी, त्यारे नेमिनाथ कह्युं के 'ए आहार तो वासुदेवनी लिब्धनो छे.' आधी कया पूर्वकर्मने कारणे पोताने आहारप्राप्ति थती नथी ए विशे ढंढण मुनिए नेमिनाथने प्रश्न करतां तीर्थंकरे तेमनो पूर्वभव कह्यो अने अनेक खेडूतो अने बळदोने तेमणे आहारनो अंतराय पाडची हतो ए वात करी. आ सांमळी ढंढणमुनिए लाडुने परठवी दीधा अने पश्चात्तापनी भावना भावतां तेमने केवल-ज्ञान थयुं.

१ उशा, पृ. ११८-१५.

तगरा

'अनुयोगद्वार सूत्र 'मां 'समीप नाम 'नां उदाहरण आपतां कह्युं छे के गिरि पासेनुं नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनुं नगर ते वैदिशनगर (विदिशा), वेणा पासेनुं नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनुं नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनुं नगर ते तगरातट. आम तगरातट नगर तगरा नदीने किनारे आवेछं हतुं. टीकाओमां एनो संक्षेप करीने मात्र 'तगरा' तरीके उल्छेख करवामां आव्यो छे. राध आवार्य विहार करता तगरामां

96

आव्या हता अने तेमना शिष्यो उज्जियनीथी तगरामां तेमनी पासे आवी पहोंच्या हता. अरहमित्र नामे बीजा एक आचार्य पण तगरामां रहेता हता. एक तगरावासी आचार्य पासे सोळ शिष्यो हता, जेमांना आठ व्यवहारी (व्यवहारिक्रया-प्रवर्तक) अने आठ अव्यवहारी हता ए आठ व्यवहारी शिष्योनां नाम पुष्यमित्र, वीर, शिवकोष्ठक, आर्यास, अहैतक, धर्मान्यग, स्कन्दिल अने गोपेन्द्रदत्त ए प्रमाणे हतां.

तगरा नगर आमीर देशमां आवेछं हतुं. वि. सं. ९८९=ई. स. ९३३ मां वढवाणमां रचायेछा, दिगंगर आचार्य हरिषेणकृत 'बृहत् कथाकोश'मां 'तेरा' (तगरायतयरायतहरायतेरा) नगरने 'आमी-राख्य महारेश'मां बतावेछं छे. दिगंगर कवि कनकामरे अनियारमा शतकमां रचेछा अपभंश काव्य 'करकंडचरिउ' (४-५)मां तेरापुरनुं तथा त्यांना गुफामिद्रनुं वर्णन छे, तथा ए ज काव्य जैन धार्मिक दिश्य तैरापुरने केटछोक इतिहास पण आपे छे.

हैदराबाद राज्यना उस्मानाबाद जिल्लामां तीर्णा नदीना किनारे आवेलुं तेरा नामनुं गामलुं आ अतिहासिक तगरा नगरीनो अवशेष छे एम मानवामां आवे छे. अत्यारे पण त्यां प्राचीन जैन गुफाओना अवशेष विद्यमान छे.

जुओ आभीर

१ से किं तं समीवनामे १ २ गिरिसमीवे णयरं गिरिणयरं विदिसासमीवे णयरं वेदिसं णयरं बेन्नाए समीवे णयरं बेन्नायडं तगराए समीवे णयरं तगरायडं, से तं समीवनामे । अनु, पृ. १४९

२ उशा, पृ. २००

३ उनि, गा. ९२; उशा, पृ. ९०

४ व्यम, विभाग ४, पेटा विभाग २, पृ. ६८-७०

५ आसीराख्यमहादेशे तेराख्यनगरं परम् । तदा नीलमहानीलौ प्रयातौ विजिगीषया ॥ 'बृहत् कथाकाश,' ५६. ५२

६ 'करवंडचरिच,' प्रस्तावना, पृ. ४१-४८.

तरङ्गवती कथा

पादलिताचार्यकृत एक धर्मकथा. जुओ पादलिप्ताचार्य

ताम्रलिप्ति

ताम्रितिने 'दोणमुख ' कहेवामां आव्युं छे. जल अने स्थल एम बन्ने मार्गोए ज्यां जई शकाय ते दोणमुख. एना उदाहरण तरीके भरुकच्छ अने ताम्रिलिमनां नाम आपवामां आवे छे. सिन्धु, ताम्रिलिम आदि प्रदेशोमां मच्छर पुष्कळ होय छे एवो उल्लेख 'सूत्र-कृतांग सूत्र 'नी चूर्णिमां छे.

ताम्निने साधारण रीते बंगाळनुं तामछक गणवानो मत पुराविदोनां छे, पण गुजरातना रतंभतीर्थ—खंभातने पण प्राचीन काळ्यो ताम्निति तरीके ओळखवामां आवे छे एना मजबूत पुरावा छे, अने जैन आगमप्रन्थो उपरनी टीकाचूर्णिओ गुर्जर देशमां रचायेछी होई एमां बंगाळना ताम्निति करतां गुजरातना ज मोटा वेपारी मथक ताम्निति (खंभात)नो दोणमुख तरीके निर्देश होय एम मानवुं वधारे संयुक्तिक छे.

प्रभाचन्द्रसूरिना ' प्रभावकचरित ' (ई. स. १२७८)ना 'हेमान् चार्यचरित' (श्लो. ३२-४१) मां 'स्तंभतीर्थ' अने 'ताम्रलिति' ए बने नामो पर्यायो तरीके वापरेलां छे ए वस्तु पण अहीं नीधवी जोईए.

जुओ सिन्धु

१ दोहिं गम्मित जलेण विं थलेण वि दोणमुहं, जहां भर्यच्छ तामिलत्ती एनमादि, आसूचू, पृ. २८२. द्रोण्यो-नावो मुखमस्येति द्रोणमुखं-जलस्थलनिर्गम-प्रवेशं यथा स्युकच्छं ताम्रलिसिर्वा, उशा पृ. ६०५.

द्रोणमुखं जलस्थलिर्गमप्रवेश, यथा भरूकच्छं तामलिप्तिर्या, आशी, पृ. २५८. वळी जुओ प्रम, पृ. ४८.

जुओ भरकच्छ.

२ सूकृच्, पृ. १०१

३ ज्यांहि, पृ. २०३.

४ ' खंभातनो इतिहास,' पृ. १८-१९; तथा पुगुमां स्तम्भतीर्थः

तुम्बवनग्राम

अवन्ति जनपदमां तुम्बवनग्राममां धनगिरि अने सुनंदा ए दंपतीना पुत्र तरीके वजस्वामी जन्म्या हता.

जुओ वज्र आर्य

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ३९०; आम, पृ. ३८७.

तोसलिपुत्राचार्य

तोसलिपुत्राचार्य दशपुरमां आव्या त्यारे तेमनी पासे आर्थ रिक्षते दीक्षा लीधी हती. रिक्षित विद्वान होई राजाना प्रीतिपात्र हता; तेथी राजा कदाच दीक्षा निह लेवा दे एम धारोने आचार्य तेमने लईने अन्यत्र चाल्या गया हता. जैन अनुश्रुति प्रमाणे आ पहेली शिष्यचोरी ('पढमा सेहनिष्फेडिआ') हती.

१ आम, पृ. ३९४-९५; उने, पृ. २४; क्रिक पृ १७२-७३; इत्यादि.

थावच्चापुत्र

एने विशेनी कथा आ प्रमाणे छे: द्वारका नगरनी समृद्ध सार्थ-वाही थावच्चानो ए पुत्र हतो युवावस्थामां आवतां इभ्यकुळनी बत्रीस कन्याओ साथे तेनुं लग्न थयुं हतुं. एक वार अरिष्टनेमि तीर्थंकर द्वारकामां सुरिप्रय उद्यानमां समोसर्या हता. कृष्ण वासुदेव प्रजाजनो साथे तेमने वंदन करवा माटे आव्या. तेमनो उपदेश सांमळीने थावच्चापुत्रने प्रवज्या लेवानी इच्छा थई. माताए तथा वासुदेवे वर्णु समजान्या छतां ज्यारे एनो निश्चय चलायमान श्रयो नहि त्यारे वासुदेवे घोषणा करावी के 'जेओ मृत्युभयनो नाश करवा इच्छता होय छतां संबंबीओना योगक्षेमनी चिन्ताथी तेम करी शकता न होय तेओ थावच्चापत्रनी साथे दीक्षा है: एमना संबंधीओनो निर्वाह हं करोश. ' आयी केटलाक विचारक युवानीए थावच्चापुत्रनी साथे दीक्षा लीधी. पछी शावच्चापुत्रे तीर्थंकरना स्थविरो पासे चौद पूर्वोनं अध्ययन कर्युं. पोताना अंतेवासी बधा युवानोने तीर्थकरे थावच्चापुत्रने एमना शिष्य तरीके सोंपी दीधा, पछी विहार करतां शावच्चापुत्रे शैलकपुरनां शैलक राजाने उपदेश आप्यो अने ५०० मंत्रीओ सहित तेने श्रमणो पासक बनाव्यो. सौगंधिका नगरीनो नगरशेठ सुदर्शन शुक्र नामे परिवाजकना उपदेशथी तेना शौचमूलक प्रवचनमां मानतो हतो तेने पण थावच्चापुत्रे श्रमणोपासक बनाव्यो, एटळुं ज नहि, सुदर्शननो गुरु शुक्र पण थावन्चापुत्रनी वाणी सांमळी पोताना हजार तापसो सहित तेमनो शिष्य थयो. छेवटे थावच्चापुत्र पोताना परिवार सहित पुंडरीक (शत्रुंजय) पर्वत उपर गया अने अनशन करीने सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त थया.

१ हाध, श्रु. १, अध्य. ५ (शैलकहात)

दण्डकारण्य

जुओ क्रम्भकारकट

दशपुर

माळवामां आवेछं मंदसोर.

दशपुरनी स्थापना केवी रीते थई एनी परंपरागत इतिहास आम आपवामां आवे हो: वीतभय नगरना राजा उदायन पासे जीवंतस्थामी महावीरनी गोशीर्षचंदननी सन्दर काष्ठप्रतिमा हती ते उज्जियनीनो राजा प्रद्योत उठावी गयो हतो. ते पाछी मेळववा माटे उदायने दश राजाओने साथे छई प्रद्योत उपर आक्रमण कर्युं. प्रतिमा तो एने स्थानेथी ऊखडी नहि, पण प्रद्योतने केद पकडीने उदायन पाछो बळ्यो. वर्षाऋतुने कारणे मार्गमां तेओ पडाव नाखीने रह्या. कोई शक्य आक्रमणनो प्रतिकार थई शके ए माटे दश राजाओए छावणीनी आसपास धूळनो प्राकार बांध्यो. वर्षाकाळ पूरो थया पछी उदायन त्यांथी गयो, पण एना सैन्य साथे जे विणकवर्ग आव्यो हतो ते त्यां ज वस्यो. दश राजाओए प्राकार बांध्यो होवाने कारणे नगरनुं नाम दशपुर पड्युं.

आर्य रिक्षतसूरि दशपुरना पुरोहित सोमदेवना पुत्र हना. दीक्षा पहेलां त्राह्मण शास्त्रोनो विशेष अभ्यास करवा माटे तेओ दशपुरथी पाटिलपुत्र गया हता अने दीक्षा लीधा पछी पूर्वोनो अभ्यास करवा माटे आर्य वज्र पासे उज्जियनी गया हता. सातमो निह्नत्र गोष्ठा-माहिल दशपुरमां थयो हतो.

१ ज्यांडि, पृ. ५४.

२ आचू, पूर्व भाग, पृ. ३९७-४०१; आम, पृ. ३९२-९४; निमा, गा. ३९७३; निचू, भाग ३, पृ. ६४६; उने, पृ. २३; इत्यादि.

३ जुओ उपर्युक्त आचू, आम

४ स्थासू, पृ. ४१०. जुओ गोष्ठामाहिल. वळी दशपुर विशेना प्रकीर्ण उल्लेखो माटे जुओ ककी, पृ. २३४; किक पृ. १७२-७३, १९९; करी, पृ. २३; कसू, पृ. ५८७-८८.

दशार्णपुर

दशाणिपुर एलकच्छपुर तरीके पण ओळखातुँ हतुँ, तथा गजाप्र-पद तीर्थ एनी पासेना दशाणेंकूट पर्वेत उपर हतुं. दशाणेपुरमां दशा-र्णभद्र राजा राज्य करतो हतो.

जुओ एलकच्छपुर, गजाग्रपद

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ४७९; आम, पृ. ४६८.

दशाई

अंधकवृष्णिना दश पुत्रो, जेमां नेमिनाथना पिता समुद्रविजय सौथी मोटा हता तेओ दशाई अथवा दसार राजाओ तरोके जाणीता छे. ए दशाही पैकी सौथी नाना वसुदेवना पुत्र कृष्ण वासुदेव हना. एमनां नाम—समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमित, सागर, हिमवान, अवल, धरण, पूरण, अभिचंद, वसुदेव. कुन्ती अने मादी ए दशाहोंनी बहेनो हती.

- १ दवैचू, पृ. ४१.
- २ अंद, वर्ग १-२.

देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

दूष्यगणिना शिष्य. परंपरानुसार तेओ 'नंदिस्त्र 'ना कर्ता छे. वीरनिर्वाण सं. ९८०=ई. स. ४५४ (वि सं. ५१०) अथवा ९९३=ई. स. ४६७ (वि. सं. ५२३)मां तेमनी अध्यक्षता नीचे वलभीमां एक परिषद मळी हती अने तेमां जैन श्रुतनी छेवटनी संकलना करवामां आत्री हती. एमां आर्य स्कन्दिले तैयार करेली जैन श्रुतनी माथुरी वाचना देवर्विगणिए मुख्य वाचना तरीके सर्व-संमितिथी चाल राखी हती, अने आर्य नागार्जुननी वलभी वाचनाना मुख्य पाठमेदो 'वायणंतरे ' अथवा एवा अर्थनी नोध साथे स्वीकार्या हता. वलभी वाचनाना विशेष भेदो टीकाकारोए 'नागार्जुनीयास्तु पटित्त' एवा टिप्पण साथे टांक्या छे, एटले अध्ययन—अध्यापनमां वलभी वाचनानुं महत्त्व स्वीकारवामां आवतुं हतुं ए निश्चित छे. देवर्घिगणिए जैन श्रुतनी एक नवी वाचना तैयार करी एम न कहेवाय, पण तेमणे एक पूर्वकालीन वाचनाने सर्वमान्य बनाववानुं तेम ज बीजी वाचनाना मुख्य पाठमेदो साचवी राखवानुं महत्त्वनुं कार्य कर्युं. वळी

तमाम उपलब्ब आगमम्रन्थोने तेमना नेतृत्व नीचे एक चोकस पड़ित अनुसार एक साथे लिपिबद्ध करवामां आब्या ए पण जैन इतिहासमां एक घणा महत्त्वनो बनाव गणाय.

'नंदिस्त्र'ना प्रारंभमां देवधिंगणिनी गुरुपरंपरा आपवामां आशी छे. ए प्रमाणे तेओ महावीरथी बत्रीसमा युगप्रधान आचार्य छे. ए पृहाविष्ठ नीचे प्रमाणे छे: महावीर पछी आर्य सुधर्मा, जंबुस्वामी, प्रभवस्वामी, श्रय्यंभव, यशोभद्र, संभूतिविजय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, महागिरि, सहस्ती, बिलस्सह, स्वाति, श्यामार्य, शांडिल्य, समुद्र, मंगू, आर्य धर्म, भद्रगुप्त, वज्र, रक्षित, नंदिल, नागहस्ती, रेवतिनक्षत्र, म्रुबद्धीपक सिंह, स्कन्दिलाचार्य, हिमवंत, नागार्जुन, गोविन्द, भूतदिन्न, लौहित्य, दूष्यगणि, देवधिंगणि. 'कल्पसूत्र' अंतर्गत स्थविरावली अनुसार देवविंगणि महावीरथी ३२मा निह, पण ३४मा पुरुष हता. 'व्यां देवविंगणिनी गुरुपरंपरा नीचे मुजब आपेली छे—महावीर पछी सुधर्मा, जंबु, प्रभव, शर्यंभव, यशोभद्र, संभूतविजय—भद्रबाहु, स्थूलभद्र, सहस्ती, सुस्थित—सुप्रतिबुद्ध, इन्द्रदिल, दिन्न, सिंहगिरि, वज्र, रथ, पुष्यगिरि, फल्गुमित्र, धनगिरि, शिवभृति, भद्र, नक्षत्र, रक्ष, नाग, जेहिल, विष्णु, कालक, संपिलत—भद्र, वृद्ध, संघपालित, हस्ती, धर्म, सिंह, धर्म, शांडिल्य, देवधि.

जुओ नागार्जुन, भद्दि आचार्य, मथुरा, वलभी

९ नंम, पृ, ६५.

र कसं, ए. ११८-१९; किक, ए. १२९-३२; कस्, ३७५-७८; ककौ, ए. १५६; करी, ए. ११३-१५; इत्यादि.

३ नंसू, स्थिवरावली, गा. १-४१.

४ विविध पहावलीओमां प्राप्त देवधिंगणिनी गुरुपरंपरानी तुलनात्मक चर्चा मादे जुओ मुनि कल्याणविजयजीष्ट्रत वीरनिर्वाण संवत् ओर जैन कालगणना,' पृ. ११९ थी आगळ.

देविलाम्रुत

उज्जियनीनो राजा. एनी कथा आ प्रमाणे छे: पोताना केशमां पिळ्यां जोईने तेणे राणीनी साथे तापस तरीके दीका छीधी हती. राणी ए समये सगर्मा हती. यथासमये तेणे पुत्रीने जन्म आप्यो, पण प्रसूति-काळे ते मरण पामी. पुत्रीने बोजी तापसीओए उछेरी. पछी समय जतां युवावस्थामां आवेछी पुत्रीने जोईने देविलासुत मोहित थयो अने तेने आश्लेष करवा जतां भोय उपर पडी गयो. पोताना दुवैर्तननुं फळ अहीं ज प्राप्त थयुं छे, एम समजीने तेणे पुत्री साध्वीओने आपी अने पोते विरक्त थईने सिद्धिमां गयो.

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. २०२-३.

देवेन्द्रसूरि

तपागच्छना स्थापक जगन्चंदसूरिना शिष्य अने पद्धर. तेमणे 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' उपर इति लखो छे, जे 'वंदारुइति' नामे प्रसिद्ध छे.'

देवेन्द्रसूरि मंत्री वस्तुपालना समकालीन होई ई. स. ना तेरमा शतकमां विद्यमान हता. खंभातमां तेमनुं व्याख्यान सांभळनार श्रोताओमां वस्तुपाल पण एक हतो. देवेन्द्रसृरिए प्राचीन कर्मग्रन्थोनो उद्धार करीने 'कर्मविपाक,' 'कर्मस्तव,' 'बंधस्वामित्व,' 'षडशीति' अने 'शतक' नामे नव्य कर्मग्रन्थो तथा ते उपरनी स्वोपज्ञ टीकाओ रची. आ सिवाय पण बोजा केटलाक प्रन्थो तेमणे रचेला छे, जे पैको प्राकृत 'सुदर्शनाचरित्र'ना सहकर्ता तेमना गुरुभाई विजयचंद्रसृरिहता. देवेन्द्रसृरिनुं अवसान सं. १३२७=ई. स. १२७१मां थयुं हतुं.

१ वञ्च, पृ. ९६.

२ जैसाइ, पृ. ४०७-८.

द्रोणाचार्य

'ओवनिर्युक्ति'ना टीकाकार. नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरि-कृत वृत्तिओनुं संशोधन द्रोणाचार्य जेमां मुख्य हता एवी एक पंडितपरिषदे कर्युं हतुं. द्रोणाचार्य पूर्वाश्रममां क्षत्रिय हता तथा अणहिलवाडना चौल्लक्य राजा भीमदेव पहेलाना मामा हता. तेमनो समय विकमना १२मा शतकना पूर्वार्धमां अर्थात् ई. स. ना ११मा शतकना उत्तरार्धमां निश्चित छे. एमनुं मुख्य प्रवृत्तिक्षेत्र अणहिलवाड हतुं.

- १ जुओ अभयदेवस्ररिः
- २ प्रतापाकान्तराजन्यचकश्वकेश्वरोपमः । श्रीभीमभूपतिस्तत्राभवद् दुःशासनार्दनः ॥ शास्त्रशिक्षागुरुर्दोणाचार्यः सत्याक्षतत्रतः । अस्ति क्षात्रकुलोत्पन्नो नरेन्द्रस्यास्य मातुलः ॥ प्रच, १८-स्हो. ५-६.
- ३ जुओ अणहिलपाटक.

द्वारका-द्वारवती

द्वारकाना स्थान निशे सावार चर्चा माटे जुओ पुगु मां द्वारका-साडीपचीस आर्य देशो पैकी सुराष्टनी राजधानी तरीके द्वारवतीनो उल्लेख छे. आ नगरने नव योजन पहोळुं अने बार योजन लांबुं वर्णववामां आवेछं छे. एनी आसपास पथ्थरनो प्राकार हती ए दर्शावतो उल्लेख वस्तुस्थितिनो सूचक छे, जो के अन्यत्र एने सुवर्णना प्राकारवाळी वर्णवी छे. एनाथी ईशानमां रैवतक नामे पर्वत हतो. एमां नंदनवन नामे उद्यान हतुं अने त्यां सुरिप्रय यक्षनुं आयतन हतुं.

जुदे जुदे प्रसंगे अंधकवृष्णि, कृष्ण वासुदेव तथा बलदेवने द्वारकाना राजा तरीके वर्णवेला छे. वळी द्वारकाना विख्यात निवासीओमां समुद्रविजय प्रमुख दश दशारो, बल्देव प्रमुख पांच महावीरो, उप्रसेन प्रमुख सोळ हजार राजाओ, प्रद्युम्न प्रमुख साडात्रण करोड कुमारो, सांब प्रमुख सात हजार दुर्दांत पुरुषो, वीरसेन प्रमुख एकवीस हजार वीर पुरुषो, रुक्मिणी प्रमुख सोळ हजार देवोओ, अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओँ तथा बीजा अनेक साथवाडो आदि हता. आ उपरथी यादवोनी राजपद्धति वज्जी, लिच्छवी आदिनी जेम गणसत्ताक हती अने तेमां अनेक यादव-विशेषो राजा नाम धारण करी शकता हता एम अनुमान थाय छे.

प्रतिवासुदेव जरासंघना भयथी यादवीनो समूह मथुराथी द्वारका आग्यो हतो. " द्वारकाना नाश माटे आगमसाहित्यमां नीचे प्रमाणे कथा आपवामां आवे छे: यादवकुमारोए दारू पीने द्वेपायन ऋषिने मार्या हता. आथी बालतप करीने, द्वारवतीविनाशनुं निदान करीने मरण पानी द्वेपायन अग्निकुमार देव तरीके उत्पन्न थया हता. अग्निकुमारे द्वारवती वाळीने भरम करी दोधी हती. मात्र बलराम अने कृष्ण वे ज जण बचीने नीकळ्या हता."

१ प्र, पृ. ५५; सुक्तशी, पृ. १२३; वृकक्षे, भाग ३, पृ. ९१२-१४.

२ ज्ञाध, पृ. ९९ तथा १०१; बृद, पृ. ३८-४१; इत्यादि.

३ पाषाणमयः प्राकारो यथा द्वारिकायाम् , बुकक्षे, भाग २, पृ. २५१.

४ दा. त. बारवई नाम नगरी होत्था...चामीयरपवरपागारणाणा-मणिपंचवन्नकविसीसकसोहिया, ज्ञाध, पृ. ९९.

५ अंद, प्र. १; वृद, प्र. ३८-४१; ज्ञाघ, प्र. ९९; आम, प्र. ३५६; इत्यादि.

६ दा त. तत्थ णं बारवतीनयरीए कण्हे णाम वासुदेवे राया परिवसति, अंद, प्र. २.

तत्थ णं वारवतीए नयरीए अंधगवण्ही णामं राया परिवसति, ए ज, पृ. २.

तत्थ णं बारवतीए बलदेवे नामं राया होत्था, ए ज, पृ. १४. ७ आ यादीमां 'महसेन प्रमुख छप्पन हजार बळवान पुरुषो ' एटछं ज्ञाध (पृ. २०७) उमेरे छे.

८ वृद, पृ. ३८-४१; ज्ञाध, पृ. २०७; इत्यादि.

- ९ संभवतः एज कारणे 'अंतकृत् दशा'नुं विवरण करतां अभयदेवसूरिने लखनुं पड्युं छे के -तस्यां च द्वारिकावत्यां नगर्यामन्धकवृष्णि-र्यादविविशेष एव, अंदब, पृ. २.
- १० कंसमि विणिवाइए सावायं खेत्तमेयंति काऊण जरासंधभएण दसारवंगो महुराओ अवकमिऊण बारवइंगओ ति । दवैहा ए. ३६-३७
- ११ जुओ को सुम्बारण्य. द्वारकाना अन्य प्रासंगिक उल्लेखो तथा वर्णनो माटे जुओ नंम, पृ. ६०, ६१, ६२, १६१; बृकम, भाग १, पृ. ५६, ५७; वद्द, पृ. ३४-३५ तथा ६७-६९; पाय, पृ. ६७; कपु, पृ. ३९९-४२४; किंके. पृ. ३४-३५; ककौ, पृ. १६२-१६८, इत्यादि.

द्वीप

सौराष्ट्रनी दक्षिणे आवेलो दीवनो बेट.

जलपत्तन अर्थात् ज्यां जलमार्गे माल आवे छे एवा वेपारना मथक तरीके द्वीपनो निर्देश मळे छे. सातमा—आठमा सैका सुधी दीव सौराष्ट्रनी मुख्य भूमि साधे जोडायेलो हतो अने त्यार पली कोई म्रत्तरीय परिवर्तनोने कारणे ए टापु बनी गयो हतो एम स्चवती एक अनुश्रुति डा. अलतेकर नोंधे छे. पण ते उपर आधार राखी शकाय एम नथी, केमके सातमा सैकाना अरसामां रचायेली 'निशीथ सूत्र' उपरनी चूर्णिमां स्पष्ट कह्युं छे के दीव सुराष्ट्रनी दक्षिणे एक योजन दूर समुद्रमां आवेलो छे. 'निशीथ सूत्र' उपरना चूर्णि करतां प्राचीनतर भाष्यमां आ वस्तुनो सुचन रूपे उल्लेख छे तथा तेमांना 'दीवना सिक्का' माटे 'दीविच्चगाउ' शब्द ए स्थलनं द्वीपत्व सिद्ध करे छे. जैन टीकाचूर्णिओमां मोटे भागे वृद्धपरंपरानुं संकलन करेलुं होय छे, एटले आ उल्लेखोने तात्त्विक रीते सातमा सैका करतां केटलाक सैका जेटला प्राचीनतर गणवा जोईए.

दीवमां चालतो मुख्य सिक्को 'साभरक' कहेवातो. एने 'रूपक' कहो। छे, एटले ते चांदीनो होवो जोईए. वे साभरक बराबर उत्तरा पथनो एक रूपक अने उत्तरापथना वे रूपक बराबर पाटलिपुत्रनो एक रूपक थतो. वळी आ ज कोष्ठक बीजी रीते आपेछुं छे के दक्षिणा-पथना वे रूपक बराबर दाविड प्रदेशमां आवेल कांचीपुरनो 'नेलक' नामनो एक रूपक अने वे नेलक बराबर पाटलिपुत्रनो एक रूपक थाय ले.

- ै पत्तनं द्विधा-जलपत्तनं च स्थसपत्तनं च। यत्र जलपथेन नावादिवाहनारूढं भाण्डमुपेति तद जलपत्तनं, यथा द्वीपम् । वृक्क्षे, भाग २, पृ ३४२.
- २ 'एन्थ्यन्ट टाउन्स ॲन्ड सिटीझ इन गुजरात ॲन्ड काठियावाड,' पृ. २६.
 - ३ दो साभरगा दीविश्चगाउ सो उत्तरापधे एको । दो उत्तरापधा पुण पाडलियुत्ते **इ**विति एको ॥ (भा. गा. ९५२)
- "साहरको '' णाम रूपकः, सो य दीविच्चिको । तं दीवं सुरहाए दिक्खणेण जोयणमेत्तं समुद्दमवगाहिता भवति, निचू, भाग २, पू, १२५.
- ४ निभा, गा. ९५२-५३; निचू, भाग २, पृ. २२५; बृकमा, गा. ३८९१-९२; बृकक्षे, भाग ४, पृ. १०६९.

धनपाल पण्डित

- है. स. ना १७ मा शतकमां थयेला माळवाना राजाओ मुंज अने भोज बन्नेनो मान्य कवि. भोजना विनोद माटे धनपाले 'तिलक-मंजरी' नामे कथाप्रन्थ रच्यो हतो.
- 'श्राद्वप्रतिक्रमणसूत्र ' उपरनी रत्नरोखरस्रिनी वृत्तिमां धनपाल विरोना बे उल्लेखो छे. एक उल्लेख प्रमाणे, धनपाल वैदिक धर्माव-लंबी हतो, पण पोताना बंधु शोमनना संसर्गश्री तेणे जैन धर्मनो स्वीकार कर्यो हतो. वीजा उल्लेख प्रमाणे, प्रतिबोध पामेला धनपाले काव्य-

गोष्ठिमां भोजने विनोद कसववापूर्वक उपदेश आपोने तेनी पासे मृगया तथा यज्ञमां पञ्चवधनो त्याग कराव्यो हतो.

१ श्राप्तर, पृ ११८.

२ ए ज, पृ. ४१. धनपाल तथा तेनी कृतिओ माटे जुओ 'जैन साहित्य सशोधक,' खंड ३, अंक ३ तथा जैसाइ, पृ. २००-२०६ धनमित्र

आ विशेनी कथा नीचे प्रमाणे छे: उज्जियनीना धनिमत्र नामे विणिक पुत्र धनशर्मा साथे दीक्षा छोधी हतो. तेओए एक वार मध्या-हनकाळे विहार कथों हतो. क्षुछक (बाळसाधु) धनशर्मा तृषातुर थतां पिताए मार्गमां आवती एक नदीमांथी पाणी पीत्रा कहां धन-शर्माए पाणीनी अंजिल ऊंत्री करी, पण विचार करीने पाणीने सित्रत्त जाणीने न पीधुं अने पिपासा परीषह सहन करीने मरण पाम्यो.

९ उशा, पृ. ८७; उने, पृ.१९. आं बीजी कृतिभां कथानी केटलीक चमत्कारपूर्ण विस्तार आपवामां आच्यो छे.

धन्बन्तरि

द्वारकामां कृष्ण वासुदेवना वे वैद्यो हता—धन्वन्तरि अने वैतरणि. एमांनो धन्वन्तरि अमन्य—मुक्तिने अयोग्य हतो, ज्यारे वैतरणि भन्य—मुक्तियोग्य हतो. धन्वन्तरि साधुओने सावद्य औषध बतावतो, ज्यारे वैतरणि प्रासुक—निर्दोष औषध स्चवतो. धन्वन्तरिने आनुं कारण मुख्यामां आवे त्यारे ते कहेतो के—' में कंई श्रमणोने माटे वैद्यकशास्त्रनुं अध्ययन कर्युं नथी'

१ आचू, पूर्व भाग, ष्ट. ४६०-६१; आम, ष्ट. ४६१ धर्मसागर उपाध्याय

तपागच्छाचार्य हीरविजयसूरिना शिष्य. एमणे सं. १६२८=ई. स. १५७२ मां राजधन्यपुर-राधनपुरमां 'कल्पसूत्र ' उपर 'किरणा-वळी ' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती. अमदावादनिवासी संघवी कुंअरजीए ए टीकानी सेंकडो प्रतो लखावी हती.

9 किंक, प्रशस्ति, पृ. २०३-४. धर्मसागरे बीजा पण अनेक प्रन्यो रचेळा छे. एमनी खंडनप्रधान शैळीए तत्काळीन जैन समाजमां मोटो खळभळाट मचाव्यो हतो. एमनी रचनाओ माटे जुओ जैसाई, पृ. ५८२-८३.

ध्रवसेन

ध्रुवसेन राजाने पुत्रमरणथी थयेछो शोक शमाववा माटे आनंदपुरमां सभा समक्ष 'कल्पसूत्र ' वांचवामां आव्युं हतुं. '

जुओ आनन्दपुर

१ कसं, पृ. १९८-१९; कसु, पृ. १५-१६, ३७५-७८; किक, पृ. ९, १६, ११०; करी, पृ. ११३-१५; ककी, पृ. ९.

नटपिटक

भरुकच्छथी उज्जियिनी जवाना मार्गमां आवेछुं एक गाम.

मरुकच्छथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उज्जयिनी मोकल्यो हतो, पण मार्गमां कोई मांदा साधुनो सारवार माटे एने रोकावुं पडचुं हतुं, अने एम समय वीती जतां तेणे नटिपटक (प्रा. नडिपडअ) गाममां नागगृहमां चातुर्मास कर्यों हतो. े

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. २०९.

नन्दन उद्यान

द्वारकाना ईशान खूणे रैवतकनी पासे आवेलुं उद्यान.

जुओ द्वारका, द्वारवती अने रैवतक

नभोवाहन

भरुकच्छनो नभोवाहन राजा कोशसमृद्ध हतो. प्रतिष्ठाननो सालवाहन बलसमृद्ध हतो. दर वर्षे सालवाहन राजा भरुकच्छमे घेरो घालतो अने वर्षाऋतु वेसे एटले पोताना नगरमां पाछो जतो. नभोवाहन कोशममृद्ध हता, एटले वेरा ६२] [नभोवाहन

वसते जे कोई स।लबाहनना सैनिकोना हाथ अथवा माथां कापी लावे तेने हजारोनां इनाम आपतो हतो. सालवाहन पोताना माणसोने पराक्रमना बदलामां करां आपतो नहोतो: आशी तेनं सैन्य क्षीण शतं अने तेने प्रतिष्टान पाछा फरवं पडतुं. बीजे वर्षे फरी पाछो ते सैन्य साथे आवीने घेरो घालतो. आ प्रमाणे समय बीततो हतो. एम करतां युक्तिथी विजय मेळववा माटे एक वार सालवाहनने तेना अमारचे कहाँ के 'मारो अपराध थयो छे एम जाहेर करोने मने देशवटो आपो.' सालवाहने एम कर्य, एटले मंत्री भरुकच्छ गयो अने एक देवकलमां रह्यो. सालवाहननो ए निर्वासित मंत्री छे ए वात समय जतां जाहेर थई. नभोबाहने माणसे। मोकलोने एने बोलाव्यो, पण ज्यारे ए आव्यो नहि त्यारे राजा पोते त्यां आठ्यो अने पोताना मंत्री तरीके एनी ।नमणूक करी. पछी मंत्रीए नभोवाहनने सलाह आपी के 'पुण्यथी राष्य मळे छे, माटे बोजा भव माटे पुण्य संचित करो.' पछी नभोवाहने एना कहेवा प्रमाणे देवकुछो अने स्तूपो, तळाबो अने वावो बंधाव्यां तथा 'नभोवाहन खाई 'नामनी खाई खोदावी. एम द्रव्य वपराई गयुं, एटले मंत्रीए पोताना राजा सालवाहनने बोलाव्यो. एक वारना कोशसमृद्ध नभोवाहन पासे हवे पोताना मागसोने प्रीतिदान-रूपे आपवा जेवुं कंई नहोतुं, आथी तेने नासी जवुं पड्युं अने भरुकच्छनो कबजो सालवाहने लीघो.

नभोवाहननी राणीनुं नाम पद्मावती हतुं. वज्रभृति आचार्यनी कवि तरीकेनी ख्यातिथी आकर्षाईने ए आचार्यने मळवा गई हती.

पश्चिम भारतनो क्षहरातवंशीय शक-क्षत्रप नहपान ते ज आ नभोबाहन (प्रा. णहवाहण, णधवाहण) होई शके. एनो समय ईसवी सनना बीजा शतकना पूर्वाधिमां होय ए सौथी वधु संभिवत छे. ए समये महाराष्ट्रमां सालवाहन वंशनो गौतमीपुत्र शातकर्णि राज्य करतो हतो, ए ज आगमसाहित्यमां जेनो 'सालवाहन-सात-वाहन 'एवो नामनिर्देश कर्यो छे ए संभवे. सातवाहनो अने पश्चिम भारतना शक-क्षत्रपो वन्चे शत्रुवट चाली आवती हती ए इतिहास-सिद्ध छे. शातकर्णिना उत्तराधिकारी वासिष्ठीपुत्र पुळुमार्थाना एक लेखमां शातकर्णिने माटे 'खखरात-वस-निरवसेस-करस सातवाहन-कुल-यस-पतिथापन-करस' (=सं. क्षहरातवंश-निरवशेषकरस्य शात-वाहनकुलयशः प्रतिष्ठापनकरस्य) एवा शब्दो वापरीने एने क्षहरात-वंशनो उच्छेद करनार तरीके वर्णव्यो छे ए घणुं सूचक छे.

जुओ सातवाहन, सालवाहन

- ९ आचू , उत्तर भाग, पृ. २००-२०९.
- २ जुओ वज्रभूति आचार्य.
- ३ रायचौधरी, 'पोलिटिकल हिस्टरी आफ अन्ध्यन्ट इन्डिया,' पृ. २२१ थी आगळ.
 - ४ 'सिलेकुट इन्सिकिप्शन्स,' नं. ५८, टिप्पण १.
 - ५ ए ज, नं. ८३-८४.
 - ६ एज, नं. ८६.

नर्मदा

नर्मदा नदी. 'आवश्यक सूत्र 'नो चूर्णिनी एक कथामां स्त्री-चरित्रविषयक एक प्राकृत स्त्रोकनो पूर्वार्घ नीचे प्रमाणे छे :

दिया कागाण बीभेसि रुत्ति तरसि नंमदं ।

- 'विशेषावश्यक भाष्य ' उपरनी कोटचाचार्यनी वृत्तिमां नर्मदाना पूरनो उल्लेख छे.
 - १ आचू, उत्तर भाग, पृ. ६१. एक सुप्रसिद्ध संस्कृत स्रोकार्ध-"दिवा काकरवाद् भीता रात्रौ तरित नर्भदाम्"-नु आ प्राकृत छे. अथवा जनसमाजमां वहेती प्राकृत कहेवत उपरथी ज आ स्रोक बनाववामां आच्यो होय.
 - २ विको, पृ. १७०

नागवलिका

आ कोई नगरनुं नाम छे अने तेनो आनंदपुरनी साथे उल्छेख छे. आनंदपुरमां जेम यक्षप्जा थती तेम नागवलिकामां नागप्जा थती. नागवलिकानुं स्थान निश्चित थई शक्युं नथी.

१ इंदमहे इंदो, खंदो महासेणो, **रहो** रहमहे, मुगंदो बलदेवो, णागा णागवलियाए, जक्खा आणंदपुरे सिद्धा चेव, आप्नूचू, पृ ३३१.

नागार्जुन आर्य

वीरनिर्वाण पछी नवमी शताब्दीमां (आशरे ईसुनी चोथी शताब्दीमां) मथुरा अने वलमी एम बे स्थले अनुक्रमे स्किन्दलाचार्य अने नागार्जुन एम बे आचार्योए आगमवाचनानुं कार्य कर्युं. दुर्माग्ये आ वे आचार्यो परस्परने मळी शक्या निह, तथी तेमनी वाचनाओमां केटलाक मेद रही गया. देवर्द्धिगणिए ईसवी पांचमी शताब्दीमां ज्यारे आगमो लिपिबद्ध कराव्यां त्यारे स्किन्दलाचार्यनी माथुरी वाचनाने मुख्य वाचना तरीके स्वीकारी अने नागार्जुननी वालमी वाचनाना पाठोनो निर्देश 'वायणंतरे पुण' एवी नींघ साथे कर्यों. प्रशीना समयनी टीकाचूर्णिओमां पण नागार्जुनीय वाचनानी स्किन्दलाचार्यनी वाचनाथी भिनता 'नागार्जुनीयास्तु पठित्त' (नागार्जुनना अनुयायीओने अनुमत पाठ आवो छे) एवा उल्लेख साथे नोंघवामां आवी छे.

- १ 'बीर्निर्वाण संवत् और जैन कालगणना,' पृ १०४.
- २ जुओ कसू ने अंते.
- ३ उदाहरण तरीके उच्चू, पृ. ९९; उशा, पृ. १८६, २६३, २९०; आशी, पृ. १५०, १६६, १८०, २१६, १३२, २२८, २३२, २७४, इत्यादि.

नारद

शौरिपुर नगरना यज्ञयश तापसना पुत्र यज्ञदत्त अने पुत्रवधृ

सोमयशानो पुत्र. तेओ बाळकने अशोकवृक्ष नीचे मूकीने उंछवृति करतां हतां त्यारे जृंभक देवताओए तेने छईने उछेर्यो हतो तथा प्रज्ञप्ति, आकाशगामिनी आदि विद्याओं आपी हती. नारद महासमर्थे परिवाजक हता. तेमनो स्वभाव झगडो कराववानो हतो कृष्ण अने तेमनो पत्नीओ रुन्मिणी आदि वच्चे तेओ कछह उत्पन्न करावता अने बळी शमाबी देता.

ब्राह्मण परंपराना नारद मुनिने आम जैन परंपरामां एक परिवाजक तरीके वर्णवेला हो.

१ भाचू, उत्तर भाग, पृ. १९४.

नासिक्य

हालनुं नासिक. 'नासिक्यपुर'' अने 'नासिक्यनगर' तरीके पण एनो प्रयोग थयो छे. नासीकनो नंद नामे विणक पोतानी पत्नो सुन्दरीमां अत्यंत आसक्त होवाने कारणे 'सुन्दरीनंद' तरीके ओळखातो हतो.

बुद्धनो ओरमान भाई नंद पोतानी पत्नी सुन्दरीमां अत्यासक्त हतो, एने पराणे दीक्षा आपवामां आवी हती अने अनेक दृष्टान्तोथी वैराग्यमां स्थिर करवामां आव्यो हतो—एनी वार्ता वर्णवता अश्वघोषना 'सौन्दरानन्द 'काव्यना वस्तुनुं कोई स्वरूपान्तर उपर्युक्त उल्लेखमां रज् थयुं लागे छे.

जुओ सुन्दरीनन्द

- १ नंम, पृ. १६७.
- २ वष्ट, पृ. ५२.
- ३ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५६६; आम, पृ. ५३३.

नेमिचन्द्रसूरि

बृहर्गच्छना आम्रदेक उपाध्यायना ऋष्यः तेमणे योताना गुरुभाई

मुनिचन्द्रना वचनथी सं. ११२९-ई. स. १०७३ मां अणिहरू-पाटकमां दोहिंडि श्रेष्टीनी वसितमां रहीने 'उत्तराध्ययन सूत्र ' उपर वृत्ति रची. एज नगरमां अने एज वसितमां रहीने तेमणे सं ११४१-ई. स. १०८५ मां प्राकृत 'महावीरचिरत' रच्यु हतुं.

नेभिचन्द्रनुं सूरिपद्नी प्राप्ति पहेलांनुं नाम देवेन्द्रगणि हतुं.

- १ उने, प्रशस्ति.
- २ उने, प्रस्तावना, पृ. २
- ३ जिस्को, पृ. ४३; उने, पस्तावना, पृ. १.

नेमिनाथ

बाबीसमा तीर्थंकर. दश दशारी पैकी सौथी मोटा समुद्रविजय अने तेमनी राणी शिवादेवीना पुत्र. तेमना जन्म पूर्वे माताए चक्रनी रिष्ट-रत्नमय नेमि आकाशमां जोई हती, तेथी तेओ 'अरिष्टनेमि ' कहेवाया. कृष्णे तेमनो विवाह उप्रसेन राजानी पुत्री राजिमती साथे नक्की कर्यो हतो, पण लग्नमंडपमां नींतरेला माणसोने मांसनो खोराक आपवा माटे बांधेलां पशुओनो आर्तनाद सांभळीने नेमिनाथे वैराग्य पामीन रैवतक उद्यानमां दीक्षा लीधी हती. यादवकुळना अनेक युवानोए नेमिनाथ पासे दीक्षा लीधी हती. नेमिनाथ गिरनार उपर निर्वाण पाम्या हता

चोवीस तीर्थंकरो पैकी ऋषभदेव, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, नेमिनाथ अने महावीरनां चरित्रो साहित्यिक दृष्टिए सौथी वधारे होक-प्रिय बन्यां हो. अन्मितर साहित्यमां नेमिनाथनां संस्कृत-प्राकृत चरित्रो, स्तोत्रो, एमना जीवन विशेनां काव्यो वगेरे मळीने कुडीबंध कृतिओ जाणवामां आवेही हो.

१ कसं, पृ. १९९-२०.

२ कप्र, पृ. ३९९-४२३; किक, पृ. १६४; किकौ, पृ, १६२-७०; कही, पृ. १२०-२३; वर्ष, पृ. ३४-३५, इत्यादि.

पादकिताचार्य]

- ३ अंद, वर्ग १-५
- ४ जिरको, पृ. २१६-१९

पत्तन

वेपारनुं केन्द्र होय एवं नगर. पत्तन वे प्रकारनां होय छेः जलपत्तन अने स्थलपत्तन. ज्यां जलपत्तना माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलपत्तन. जलपत्तनना उदाहरण तरीके द्वीप (दीव) अने काननदीपनां नाम अपाय छे, ज्यारे स्थलपत्तन तरिके मथुरा अने आनंदपुर आपवामां आवे छे. केटलाक टीकाकारीए प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन 'अने 'पत्तन' एवां वे संस्कृत रहिषों स्वीकारीने वेना जुदा अर्थ आप्या छेः जेम के ज्यां नौकाओं मारफत जवाय ते पट्टन अने ज्यां गाडांमां के घोडे वेसीने तेम ज नौका मारफत जवाय ते पत्तन .

कालकमे 'पत्तन 'सामान्य नाममांथी विशेष नाम बन्धुं, अने गुजरातनुं मध्यकालीन पाटनगर 'अणिहल्लपत्तन 'मात्र 'पत्तन ' एवा ट्रंका नामे जाणीतुं थयुं. 'कल्पसूत्र 'नी 'कौमुदी 'नामे टीकाना कर्ता शान्तिसागर पोते ए टीका 'पत्तनपत्तन 'मां —एटले के पाटण-नगरमां लखो होत्रानुं जणांके ले.

9 उशा, पृ. ६०५; आशी, पृ. २५८; बृक**शा, गा १०९०;** बृकक्षे, भाग २, पृ. ३४२; वळी जुओ ज्ञाधअ, पृ. ५५, १४०.

- र जुओ भरकच्छ.
- ३ ककी, प्रशस्ति, श्लो. ४.

पाण्डमथुरा

जुओ मथुरा

पादलिप्ताचार्य

्एक प्रभावक आचार्य, जेमनुं नाम सौराष्ट्रना प्रसिद्ध जैन तीर्थ **१३** पादलिपपुर-पाछीताणा साथे जोडायेछं छे.

पादिलिप्ताचार्य पाटिलिपुत्रमां मुरुंड राजाना दरबारमां हता. एक वार मुरुंड राजा उपर यवनोए मीणवाळुं स्तर, कापीने सरखी करेली लाकडी तथा मुंवाळी मुदित दाबडी मोकली अने साथे संदेशो कहाव्यो के 'सूत्रनो अंत, लाकडीनो आदिभाग अने समुद्गकनुं द्वार बतावो.' पण आ कार्य कोई करी शक्युं निह. छेवटे पादिलिप्ते स्तर ऊना पाणीमां नाल्युं, एटले मीण ओगळी गयुं अने छेडा देखाया; लाकडी पण पाणीमां नाखी, एटले मूळनो भाग भारे होवाथी अंदर द्वन्यो अने दाबडी उपर लाख हती ते गरम पाणीमां बोळीने उखाडी.'

मुरुंड राजानी शिरोबेदना वैद्यो मटाडी शक्या नहे।ता, ते पादलिताचार्ये मंत्रशक्तिथी मटाडी हती एवं कथानक मळे छे.

पादिलिताचार्य यंत्रिविद्यामां पण कुराळ हता. तेमणे एक वार राजानी बहेनने बराबर मळती यंत्रप्रतिमा बनावी हती. ए प्रतिमा उन्मेषिनमेष करती हाथमां पंखो छईने ऊभेळी हती.

पादिलिताचार्ये 'तरंगवती ' नामनी एक विख्यात प्राकृत धर्मे कथा रची हती, जेना उल्लेखो आगमसाहित्यमां तेम ज अन्यत्र अनेक स्थळे प्राप्त थाय छे. मूळ कथा तो सैकाओ पहेलां नाश पामी गई छे, पण पादिलिशनी पछी थयेला परन्तु जेनो चोकस समय अनिश्चित छे एवा आवार्य वीरमङ् के वीरमद्रना शिष्य नेमिचन्द्रे १९०० प्राकृत गाथाओमां करेलो तेनो संक्षेप मात्र हालमां उपलब्ध छे. पादिलिसचार्ये 'ज्योतिष्करंडक ' उपर वृत्ति लखी हती एम आगमसाहित्यना सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरिना कथन उपरथी स्पष्ट छे. आ वृत्ति नष्ट थई गई हो अनुं मानवामां आवतुं हतुं, पण एनी हस्तिलिखत प्रति पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए जेसलमेरना प्रन्थमंडारमांथी शोधी कादी छे.

पादलिप्ताचार्य]

पादिल्ते दीक्षा अने प्रतिष्ठाविधि विशे 'निर्वाणकिलका ' नामें जाणीतो प्रन्थ रच्यो छे. आ उपरांत 'प्रभावकचरित 'ना 'पादिलित-स्रिचिरित 'मां तेमणे 'प्रश्नप्रकाश ' नामे उयोतिषप्रन्थनुं निर्माण कर्युं होत्रानो उल्लेख छे." चूर्णिओमां 'कालज्ञान ' नामे एक रचनानुं कर्तृत्व पण पादिलित उपर आरोपित करेलुं छे. पादिलितनी प्राकृत गाथाओ हालकृत प्राकृत सुमाषितसंप्रह 'गाथासप्तशती 'मां उद्भृत करेली छे.

'प्रभावकचरित ' नोंधे छे के पादिलिप्ताचार्य एक वार तीर्थयात्रा करता सौराष्ट्रमां ढंकापुरी (ढांक)मां गया हता. त्यां एमने सिद्ध नागार्जुननो समागम थयो. पछी नागार्जुने पोताना ए गुरुना स्मरणरूपे रात्रुंजयनी तळेटीमां पादिलिप्तपुर नामनुं नगर वसाव्युं, रात्रुंजय उपर जिनचैत्य करावी त्यां महावीरनी प्रतिमा स्थापित करी अने त्यां ज पादिलिप्तसूरिनी मूर्ति पण स्थापित करी.

पादिलिसाचार्यनो समय विकम संगतनी प्रारंभिक शताब्दीओमां निश्चित करवामां आव्यो छे. "एमनुं परंगरागत विस्तृत चरित 'प्रभा-वकचरित 'ना 'पादिलिसस्रिचरित 'मां मळे छे.

१ आचू, पूर्व भाग, ए. ५५४; आम, ए. ५२४-२५; नंम. ए. १६२.

र निचू, भाग ४, पृ. ८७२; विनिम, पृ. १४१-४२. विनिम मां मुकंडने प्रतिष्ठानपुरनो राजा कश्चो छे, ए मुद्रणदोष होवो कोईए, केम के ए ज कर्शए रचेळी अन्य वृत्तिओमां स्पष्ट रीते पाटलिपुत्रनो उन्छेख छे (जुओ उपर टिप्पण १).

३ बृकमा, गा. ४९१५; बृकक्षे, माग ५, पृ १३१५-१६. आ प्रकारनां 'स्रोरूपो' यवनविषयं मां पुष्कळ बने छे एम अहीं टीकाकार नोंधे छे.

४ निचू, भाग ३, प्र. ४७९; भाग ५, प्र. १०२९; निको, प्र. ४३३; बुकम, प्र. १६४-१६५; बुकक्षे, भाग ३, प्र. ७२२; भाग ५, पृ. १४८९; व्यम (उद्देष् ५ उपरनी वृत्ति) पृ ६, आगमेतर साहित्यमा 'तरंगवती'ना उन्लेखो माटे जुओ 'निर्वाणकलिका,' प्रस्तावना, पृ. १५–१६.

५ आ संक्षेपनी जर्मन अनुवाद प्रो. त्युमेने कर्यो छे. एना गुजराती भाषान्तर माटे जुओ 'जैन साहित्य संशोधक,' प्रन्थ २.

६ x x ज्योतिष्करण्डकमूलटीकायां श्रीपादलिष्तसूरिभि: उक्तं, सूप्रम, पृ. ७३

तथा चास्यैव ज्योतिष्करण्डकस्य टीकाकारः पादलिष्तसूरिराह—" एए उ सुसमादयो अद्वाविसेका ज्याहणा सह पवत्तंते, जुगैतेण सह समर्पित " ति । ज्योकम, पृ. ५२

७ प्रच, ५-श्लो. ३४७

८ प्रव एक. अनुवाद, प्रस्तावना, पृ. ३२; वळी जुओ व्यम (भा. गा. २६३ उपरनी वृत्ति)-यथा पादिलप्तकृतविवरणे कालझाने...

९ प्रच, ५-१% हो. २४७-३०६

१० 'निर्वाणकलिका,' प्रस्तावना, पृ १६

पालक

उज्जयिनीना प्रधोत राजाना वे पुत्रो हता—पालक अने गोपालक. एमांथी गोपालके दीक्षा लीधी, एटले पालक राजा थयो. एने वे पुत्रो हता—राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन) अने अवंतिवर्धन. तेमांथी अवंतिवर्धनने राजपदे अने राज्यवर्धनने युवराजपदे स्थापीने पालके पण राज्य भोगवीने दीक्षा लीधी हती.

'तित्थोगाली ' प्रकीर्णकमां जणाव्या प्रमाणे—जे रात्रिए भगवान महावीर निर्वाण पाम्या हता ते ज रात्रिए अवंतिमां पालक राजानो अभिषेक थयो हतो.

जुओ अवन्तिवर्धन

१ आचू, उत्तर भाग, ए. १८९; वर्व, ए ९०-९२.

२ जं र्यणि सिद्धिगओ अग्हा तित्यंकरो महावीरो । तं रयणिमवंतीए अहिसित्तो पाठगो राया ॥ 'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग १, पृ. ४९४

मतिष्टा**न**

महाराष्ट्रमां गोदावरीते किनारे आवेलुं पैठण.

प्रतिष्ठान गोदावरी नदीना तट उपर आवे छं हतुं. त्यां सालवाहन राजा राज्य करतो हतो. एनो अमात्य खरक नामे हतो. सालवाहन दर वर्षे भरुकच्छ, ज्यां नभोबाहन राज्य करतो हतो त्यां आक्रमण करतो हतो.

प्रतिष्ठानमां जैनोनी मोटो वस्ती हती तथा राजानु वलण पण जैनधर्मने अनुकूळ हतुं. आ नगरना संघ तथा राजाना अनुमोदनथीं कालकाचार्ये पर्युषण भादरवा सुद पांचमने बदले चोथे प्रवर्तान्युं हतुं व निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी अने तेमना भाई वराहमिहिर आ नगरना बाह्मणकुमारो हता.

- १ बुकक्षे, भाग ६, पू. १६४७
- २ जुओ नभोवाहन
- ३ जुओ कालकाचार्य.
- ४ 'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग ५, पृ. १३६९

पद्योत

उज्जियिनीनो राजा. ते उप स्वभावनो होवाथी चंडप्रद्योत तरीके ओळखातो हतो.

तेने आठ राणीओ हती, जेमांनी शिवादेवी वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री हती अने अंगारवती सुंसुमारपुरना राजा धुंधुमारनी पुत्री हती. एना मंत्रीनुं नाम खंडकर्ण हतुं (जुओ खण्डकर्ण). शकुन्त नामे एनो एक अंध मंत्री पण हतो (जुओ शकुन्त). प्रधोतना समयनुं

प्रचौत

उज्जयिनी भारतनां सौथी समृद्ध नगरो पैकी एक हतुं. एना समयमां उज्जयिनीमां नव कुत्रिकापण-त्रिभुवननी सर्व वस्तु जेमां मळे एवा वस्तुभंडारो हता.

प्रयोतना जीवननो घणो भाग पोताना पडोशी राजाओ जे एना साहुओ धता हता एमनी साथे लडवामां गयो हतो. पडोशी राज्यो साथेना आ कलहना परंपरागत बृत्तान्तो आगमसाहित्यमां मळे छेः

एक बार प्रद्योते राजगृह नगर घेर्यु. राजगृहना राजा श्रेणिकनो नंदा राणीथी थयेलो पुत्र अभयकुमार जे एनो मंत्री पण हतो तेणे प्रद्योत आव्यो ते पहेलां एना स्कंधावारनिवेशनी जग्या जाणी लीधी हती अने त्यां घणं धन दटाव्यं हतुं. पछी प्रद्योते आवीने पडाव नाख्यो एटले अभयकुमारे कहेवराव्यं के "तमारुं आखं सैन्य मारा पिताए फोडी नाल्युं छे; आ वात उपर विश्वास न पडतो होय तो छावणीमां स्वोदोनं जुओ. " आ प्रमाणे स्वोदतां द्रव्य नीकव्युं, एटले प्रद्योत दरीने नासी गयो. पण पाळळथी वस्तुस्थिति जाणवामां आवतां प्रदोते अभयकुमार उपर रोषे भराई तेने केद करवानो निश्चय कर्यों, तेणे एक गणिकाने राजगृह मोकली अने सहायक तरीके बीजी केटलीक गणिकाओ आपी. गणिकाए एक धर्मप्रेमी जैन विधवानी वेश धारण कर्यो. चैत्यपरिपाटीमां सौ अभयने घेर गयां. त्यां तेणे धर्मप्रेमी अभयने पोताने घेर जमवानं निर्मत्रण आप्यं अने भोळवीने मद्यपान करावी, केद करीने अवंति मेगो कर्यो. त्यां अभयकुमारे चातुर्यथी प्रदोतने प्रसन कर्यो, एटले प्रदोते एने छोडी मुक्यो. पण ए समये अभयकुमारे प्रश्लीतने कहां के "तमे मने कपटथी पकडी आण्यो हतो, पण हुं तो तमे पोकारो पाडता हशो अने अहींथी तमने उपाडी जईश. " थोडा समय पछी अभयकुमार राजगृहथी वे गणि-काओ लईने आव्यो अने वेपारीने वेशे उज्जयिनीमां रहेवा लाग्यो. तेणे

1 203

पोताना एक दासने गांडानो वेश धारण कराव्यो हतो अने तेने प्रबोत नाम आध्युं हतुं. एने दररोज खाटलामां बांधीने वैद्य पासे लई जवामां आवतो त्यारे ते 'हुं प्रद्योत छुं' एवी बूमो पाडतो हतो. हवे, पेली वे गणिकाओ जे अभयकुमार साथे रहेती हती तेमना सौन्दर्यथी आकर्षाईने एमनी कामना करतो प्रद्योत संकेत अनुसार त्यां आव्यो, एटले तेने अभयकुमारनी सूचनाथी पकडी लेवामां आव्यो, अने 'हुं प्रद्योत छुं' एवी बूमो ते पाडतो रह्यो अने एने उज्जियनी वच्चेथी खाटलामां बांधीने उपाडी जवामां आव्यो. नगरजनोए तेनी बूमो सांमळीने मान्युं के पेला प्रद्योतनामधारी गांडाने दररोजनी जेम वैद्यने त्यां लई जवामां आवे ले. राजगृहमां श्रेणिके प्रद्योतनो वध करवानो विचार कर्यो, पण अभयकुमारे तेने एम करतां अटकाव्यो. पाछळथी प्रद्योतने मुक्त करवामां आव्यो हतो.

सिन्धु—सौवीरना राजा उदायन साथे पण प्रद्योतने युद्धनो प्रसंग आव्यो हतो. उदायन पासे जीवंतस्वामी महावीरनी एक सुन्दर काष्ठ-प्रतिमा हती अने उदायननी देवदत्ता नामे एक कुन्जा दासी ए प्रतिमानुं संगोपन करती हती. प्रतिमाने वंदन करवा माटे गांधारथी आवेळा एक श्रावके आपेळी गुटिका ळेवाथी ए दासीनो काया कांचन वर्णी बनी गई हती अने ते सुवर्ण गुिलका तरीके प्रसिद्ध थई हती. नळिगिरे हाथी उपर आवीने प्रद्योते ए दासीनुं हरण कर्युं हतुं अने एना आप्रहने कारणे पेळो काष्ठप्रतिमा पण साथे ळीधी हती. आ खबर पडतां उदायन दश राजाओने सहायमां छईने उज्जियनी उपर चडी आव्यो अने प्रयोतने पराजित कर्यो; प्रयोत केद पकडायो अने उदायने एना कपाळ पर 'दासीपित' शब्द अंकित कर्यो. प्रतिमाने लेवा माटे उदायने घणो प्रयास कर्यो, पण ए तो एना स्थानेथी चिलत थई नहि. एटळे प्रद्योतने छईने उदायन पाछो सिन्धु—सौवीर तरफ चाल्यो. मार्गमां चाळतां पर्युषणनो समय आव्यो अने तेमां प्रद्योते उपवास करवानी

[प्रचीत

इच्छा व्यक्त करतां उदायने एने धर्मबंधु जाणीने मुक्त कर्यो अने खमाव्यो, अने कपाळमांनो 'दासीपति ' शब्द न वंचाय ए माटे त्यां सुवर्णपृष्ट बांध्यो अने प्रद्योतनुं शब्द एने पाछुं आप्युं. कहेवाय छे के त्यारथी राजाओ मस्तक उपर मुकुटने स्थाने पृष्ट बांधनारा थया.

वस देशना राजा शतानीक उपर पण प्रवीते आक्रमण कर्युं हतुं. प्रद्योतने आवतो सांभळीने शतानीक यमनाना दक्षिण किनारेथी उत्तर किनारे चाल्यो गयो. प्रदोत यमुना ओळंगी शक्यो नहिः अने छेवटे केटलोक हेरानगति वेठी पाछो फर्यो. केटलाक समय पछी एक चित्रकारे रातानीक साथेना अणबनावने कारणे एनी स्वरूपवान राणी मृगावतीनुं चित्र चीतरीने प्रदोतने बताव्युं, मृगावतीना सौन्द्र्यथी मोह पामीने प्रद्योते शतानोक पासे दूत मोकलीने मृगावतीनी मागणी करी: पण शतानीके दूतनो तिरस्कार करीने एने पाछो काढचो. आधी कोघे भरायेलो प्रधात कसदेशनी राजधानी कौशांबी उपर चडी आव्यो. तेने आवतो सांभळी अल्प बळवाळो शतानीक क्षोभ पाम्यो अने अतिसारथी मरण पाम्यो. आथी मृगावतीए विचार्य के " मारो बाळक पत्र नाश न पामे एम करवं जोईए. " आशी तेणे प्रदोत पासे दूत मोकलीने युक्तिपूर्वक कहेवराव्युं के " हुं तमारी पासे आवुं व्यार पछी मारा पुत्रने कोई पोडा करे एम थवुं न जोईए. " पछी मृगावतीना कहेदायी प्रचोते उज्जियनीनी ईंटोथी मृगावतीना नगरने दढ कराव्युं, एमां धान्य वगेरे भराव्युं. आ प्रमाणे प्रद्योतने भूर्ख वनाव्या पछी मृगावती फरी गई. ए अरसामां भगवान महावीर कौशांबीमां समोसर्या. तेमनी देशना सांभळीने मृगावतीए प्रद्योतनी अनुज्ञा लईने दीक्षा हेवानी इच्छा इव्यक्त करी. ए महान पर्षदानी छजाने कारणे प्रद्योत मुगावतीने वारो शक्यो नहिः अने मृगावतीए पोतानो पुत्र उदयन प्रद्योतने सोंगीने दीक्षा लीधी. ए समये प्रद्योतनी अंगारवती आदि

प्रभास] [१०६

आठ राणीओए पण महावीर पासे दीक्षा लीघी. उदयन पाछळथी प्रचोतनी पुत्री वासवदत्ताने परण्यो हतो.

प्रचोतने वे पुत्रो हता—प:लक अने गोपालक. एमांथी गोपालके दीक्षा लीधी हती, एटले एनी पली पालक गादी उपर आज्यो.

- ९ आचू, उत्तर भाग, पृ. १९९-२००; विको, पृ. ३३५
- २ वृक्तभा, गा ४२१४; वृक्क्षे, मन्थ ४, पृ. १९४४-४६. जुओ कुन्निकापण.
- ३ आचू, पूर्व भाग, ए. ५५७-५५८; उत्तर भाग, ए. १५८-५९; आम, ए. ५२७-२८
 - ४ जुओ दशपुर.
 - ५ आचू, पूर्वमाग, पृ. ४००; आम, पृ. २९२-९४:

विविध दिन्य अने मानव पात्रोने माटे केवा प्रकारना मुख्यो, पद्दन बंधो अने शिरोभूषणो योग्य छे ए माटे जुओ भरतनुं ' नाटयशास्त्र ' (काशीनी आदृत्ति), अध्याय २३, श्लो. १३२-४९; तथा ' विष्णुधर्मोत्तर पुराण,' तृतीय खंड, अध्याय २७, श्लो. ३३ अने आगळ.

- ६ आचू, उत्तर भाग, पृ. १६७
- ७ आचू, पूर्व भाग, पृ. ८८-९१; आम, पृ. १०१-४
- ८ जुओ **उद्यन**.
- ९ आचू, उत्तर भाग, पृ. १८९. प्रद्योत विशेना अन्य महत्त्वना कथारूप वृत्तान्तो अथवा उल्लेखो माटे जुओ नं म, पृ. १६६; कुकक्षे, भाग २, पृ. ५८७; कसु; पृ. ५८७-८८; किक, पृ. ९३ तथा १९९; कदी, पृ. २३; ककी, पृ. २३४.

पमास

सौराष्ट्रना दक्षिण किनारे आवेलुं प्रभासनीर्थ. ए तीर्थनी उत्पत्ति आ प्रमाणे आपवामां आवे छेः पांडवोना वंशमां पांडुसेन नामे राजा थयो हतो. तेनी वे पुत्रीओ मित अने सुमित समुद्रमार्गे सुराष्ट्रमां आवती हती. मार्गमां समुद्रनुं तोफान थतां बीजा लोको १४ १०६] प्रभास

स्कृत्द अने रुद्रने नमस्कार करवा लाग्या, त्यारे आ वे वहेनोए पोतानी जातने संयममां जोडी. छेवटे वहाण भांगी गयुं अने बन्ने जणीओ कालभूम पामी मोक्षे गई. लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थित देवे तेमनो महिमा कर्यों. त्यां देवोद्योत थयो, अने त्यारथी प्रभासतीर्थ थयुं.

भरत चक्रवर्तीना दिग्विजयवर्णनमां पश्चिममां प्रभासतीर्थनो उल्छेख छे, 'बहत्कल्पसूत्र 'नां भाष्य, चूर्णि अने वृत्तिमां प्रभास-तीर्थमां यात्रामां थती संखडी-उजाणीनो निर्देश छे.

- १ आचू, उत्तर भाग, पृ. १९७.
- २ आम, पृ. २३०. वळी जुओ 'वसुदेवहिंडी,' अनुवाद, पृ. २४१.
- ३ बुकमा, गा. ३९५०; बुकक्षे, भाग ३, पृ. ८८३-८४

पियग्रन्थसूरि

सुस्थित—सुप्रतिबुद्धना शिष्य प्रियमन्थस्रिए अजमेरु पासे आवेळा हर्षपुरमां पोताना विद्याचमत्कारथी यज्ञमां थतो पशुवध अटकाव्यो हतो.

जुओ **अजमे**र

१ किक, पृ. १६९, कम्रु, पृ. ५०९-१०; **कदी,** पृ. १४८-४९. फल**ही**

सोपारकना माहित्यक महने पराजित करवा माटे उज्जयिनीवासी अद्दणमल्डे भरुकच्छ पासेना एक खेडूतने तालीम आपी तैयार कर्यो हतो, जे फलही नामे प्रसिद्ध थयो हतों.

जुओ अट्टण

बनासा

उत्तर गुजरातनी बनास नदी.

' बहुत् कल्पसूत्र 'ना वृत्तिकार कहे छे के कोई स्थळे अति-

प्रथी पण धान्य पाके छे, जेम के बन्नासामां ज्यारे खूब प्र आवे त्यारे ए प्रथी भावित थयेछी क्षेत्रभूमिमां बीज वेरवामां आवे छे.

१ बृकक्षे, भाग २, पृ. ३८३.

वलभद्र

कृष्ण वासुदेवना मोटा भाई अने नवमा बलदेव. तेओ अत्यंत स्वरूपवान हता. द्वारका नगरीनुं दहन थयुं त्यारे बन्ने भाईओं जलदीथी त्यांथी नीकळीने दक्षिण तरफ जता हता त्यारे कोंसुंबारण्य-मां कृष्णनुं मरण थयुं अने कृष्णना शरीरने अग्निसंस्कार करीने बलभदे दीक्षा लीधी. सुमुख, दुर्मुख, कूपदारक, निषद, ढंढ वगेरे बलभदना पुत्रो हता.

बल्लभद्रनुं संपूर्ण चिरत्र आगमसाहित्यमां नथी, पण निषढ आदि तेमना बार पुत्रीए नेमिनाथ पासे दीक्षा लीधी हती तेनो बत्तान्त तथा बल्लभद्रना जीवनना केटलाक प्रसंगो अने तेमने विशेना उल्लेखो मळे छे. कृष्णनी जेम बलभद्रनुं चिरत्र पग नेमिनाथचिरत्र साथे संकळा- येलुं छे अने 'त्रिषष्टि '—अंतर्गत तथा विविध लेखकोए रचेलां 'नेमिनाथचरित्रो 'मां ते उपलब्ध थई शके.

- १ जुओ कोसंबारण्यः
- २ बृद; तथा अंद, वर्ग ४
- ३ उदाहरण तरीके-उशा, पृ. ११७; मस, गा. ४९६-९७; कसु, पृ. ३९९-४२४, किक, पृ. १३७-४२; इत्यादि.

वलिन-भानुमित्र

मरुकच्छना राजकर्ताओ. तेओ वे भाईओ हता. तेमना भाणेज बलमानुने कालका वार्ये दीक्षा आपी होताने कारणे आवार्यने भठक छं छोडीने प्रतिष्ठान चाल्या जवुं पड्युं हतुं. एक परंपरा प्रमाणे, बलमित्र-भानुमित्र कालका चार्यना भाणेज हता.

एमने माटे जुओ कालकाचार्य-२

बोधिक

एक अनार्य जाति, जे छूंटफाट करी त्रास वर्तावती हती. आगम-साहित्यमां बोविकोने मालगोथी अभिन्त गण्या छे. जुओ मालब-१

वळी जुओ उज्जयिनी, मथुरा

ब्रह्मद्वी प

आभीर देशमां कृष्णा अने वेणा नदीना संगम आगळ आवेलो एक द्वीप. त्यां वसता पांचसो तापसोने आर्य वजना मामा आर्य समितस्रिए प्रतिचोध पमाङ्यो हतो. ए प्रतिबोध पामेला साधुओशी जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक शाखानो प्रारंभ थयो हतो. 'नंदिस्त्र'ना प्रारंभ आपेलो देवर्द्धिंगणिनी गुरुषरंपरामां सिंहस्रिने 'ब्रह्मद्वीपक सिंह ' कहा छे.

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४३; आम, पृ. ५१५; कसं, पृ. १३२; कसु, पृ. १३४; किस, पृ. १७१; करी, पृ. १४९-१५०; नंसू, पृ. ५१; पिनिम, पृ. १४४.

२ जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण.

भट्टि आचार्य

दूष्यमणि क्षमाश्रमणना शिष्य महि आचार्यनो मत 'सूत्रकृतांग सुत्र 'नी चूर्णिमां टांकेलो छे.' जैन परंपरा अनुसार, मूळ आगमोने संकलित रूपे लिपियद करावनार देवर्द्धिगणि दूष्यगणिमा शिष्य छे. भिक्ट आचार्य ए देवर्द्धिगणिमुं जीजुं नाम हतुं के तेमने मानार्थे भिहि (सं. भर्षः) आवार्य एटले मुख्य आचार्य कृहेवामां आवता हता के पछी भिष्टि आचार्य दूष्यगणिना बीजा ज कोई शिष्य जेमने विशे अथार सुधीमां कंई जाणवामां आव्युं नथी एमनुं नाम हशे ए निश्चितपणे कहेवुं मुक्तेल छे.

सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणकाव्य 'रावणवध ' जे सामान्य रीते 'मिडकाव्य 'तरीके ओळखाय छे तेनो कर्ता 'महाबाह्मण महावैया-करण स्वामिपुत्र मिंड 'वलभीनो हतो, एटले वलभीमां मिंड नाम प्रचलित हतुं; अने देविर्द्धिंगणिनो निवास पण वलभोमां हतो, एटले मिंड ए देविर्धिंगणिनुं अपर नाम हाय ए कदाचित् संमवे छे.

> ९ अत्र दूषगणिक्षमाश्रमणशिष्या भहियाचार्या त्रवते...स्कृच्, पृ ४०५ २ नंम, पृ. ६५. जुओ देवर्द्धगणि क्षमाश्रमण.

भण्डीरवन

मथुरानी पासे आवेछं एक उद्यान. त्यां मंडीर यक्षनुं आयतन हतुं. लोको बळदगाडां जोडीने एनी यात्राए जता.

जुओ कम्बल-सम्बल, मथुरा भद्रग्रप्ताचार्थ

उज्जयिनीवासी एक आचार्य.

आर्थ रक्षित दशपुरमां पोताना गुरु तोसलिपुत्रावार्थ पासे अगि-यार अंग अने जेटलो दृष्टिवाद तेमने अवगत हता तेटलो शीख्या. पछी उज्जियनीमां दृष्टिवादना ज्ञाता आर्थ वज्र छे एम सांभळीने तेओ उज्जियनी गया. त्यां भद्रगुत नामे एक वृद्ध आचार्यनी संहेखना प्रसंगे आर्थ रक्षित निर्यामक तरीके रह्या अने तेमनी उत्तम शुश्रूषा करी. भद्रगुप्ताचार्थ काल्ड्यमे पाम्या पछी रक्षित वज्रस्वामी पासे साजानव पूर्वीनो अभ्यास कर्यी. पोताना अंतकाले भद्रगुप्ताचार्थ आर्थ रक्षितने कह्युं हतुं के "तमारे आर्थ वज्रनी साथे रहेतुं निह, कारण के जे तेमनी साथे रहेता ते तेमनी साथे ज मरण पामहीं." आर्थ आर्थ रक्षित वज्रस्वामीथी अलग रह्या हता.

१ आचू, पूर्वभाग, पृ. ४०३-४; उने, पृ. २३; किक, पृ. १७०-७३; करी, पृ. १४५.

भरुकच्छ

भक्षच, गुजरातनुं प्राचीन बंदर. आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां मोटे भागे आ नगरनुं 'महकच्छ ' नाम छे, 'सृगुकच्छ 'नो प्रयोग मुकाबछे पाछळनी संस्कृत टीकाओमां छे. 'भक्षच 'नी ब्युत्पत्ति भहकच्छ ७ महअच्च ७ भक्षच ए प्रमाणे साधी शकाय, जे 'भृगु-कच्छ 'मांथी शक्य नथी, ए वस्तु पण मूळ नाम 'भहकच्छ ' होवाना प्रसमां छे.

केटलेक स्थळे भरुकच्छने 'द्रोणमुख' कह्युं छे. जल अने स्थल एम बन्ने मार्गोए ज्यांथी जई शकाय ते द्रोणमुख. एना उदा-हरणमां तरीके भरुकच्छ अने ताम्रलिप्तिनां नाम आपवामां आवे छे. वळी केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दना 'पट्टन' अने 'पत्तन' एवां वे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बन्नेना जुदा अर्थो आप्या छे: उयां नौकाओं मारुकत जवाय ते 'पट्टन', अने ज्यां गाडांमां के धोडे वेसीने तेम ज नौकाओ द्वारा जवाय ते 'पत्तन,' जेमके 'भरुकच्छ.'

'आवश्यकचूणिं' (उत्तर भाग, ए. १५२-५३)मां एक स्थळे 'मरुकच्छने' 'आहरणी' अर्थात् 'आहार' जेवुं वहीवटी एकम कहेल छे (जुओ खेट आहार).

भरकच्छना ईशान खूणे कोरटक नामे उद्यान हतुं अने तेमां मुनि सुव्रतस्वामीनुं चैत्य हतुं. भरकच्छमां जैनो तेम ज बौद्रोनी मोटी वस्ती हती अने बन्ने वच्चे घणी वार परस्पर स्पर्धा चालती हती. भरकच्छमां जिनदेव नामे जैन आचार्ये भदंतिमत्र अने कुणाल नामे वे बौद्ध साधुओ जेओ वे भाईओ हता तेमने वादमां पराजित कर्या हता अने ते वे जण गोविन्दाचार्यनी जेम जिनदेवना शिष्यो थया हता एवो पण उल्लेख छे. भरकच्छनी पासे कुंडल्रमेण्ड नामे व्यंतरनुं

स्थानक हतुं अने एनी यात्रामां आसपासना प्रदेशना घणा लोको एकत्र थईने संखडि-उजाणी करता हता.

विक्रम पूर्वे पांचमी शताब्दीमां भरुकच्छ अवंतिना राजा प्रयोत अथवा चंडप्रयोतना आधिपत्यमां हतुं. प्रयोतनो दूत लोहजंघ एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो अने ते प्रयोतना हुकमो लईने वारंवार भरुकच्छ आवतो हतो आ प्रमाणे नत्रा नवा हुकमो लावतो एने बंध करवाने लोकोए तेने एक वार विषमिश्रित भाधुं आप्युं हतुं, पण मार्गमां मानश्चकन थतां लोड्जंघे ते खाधुं नहोतुं.

भरकच्छ अने उज्जियनी वच्चे सारो संपर्क हतो. भरकच्छमांथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उज्जियनी मोकत्यो हतो, पण मार्गमां एक मांदा साधुनी सारवार माटे तेने रोकाई जवुं पड्युं हतुं, अने एथी नटपिटक गाममां नागगृहमां एने चोमासुं गाळवुं पड्युं हतुं.

भरुकच्छमां नभोवाहन राजा राज्य करतो हतो त्यारे प्रतिष्ठाननो राजा सालवाहन ए नगर उपर दर वर्षे आक्रमण करतो हतो. कालकाचार्यना समयमां भरुकच्छमां वलिमत्र अने भानुभित्र ए बे भाईओ राज्य करता हता. कमोवाहनना राज्यकाळमां वल्लमूति नामे एक आचार्य भरुकच्छमां वसता हता. ए आचार्यने उत्तम कि तरीके वर्णवेला छे. अहण मल्लनो सहायक फलही मन्ल भरुकच्छ पासेना गामनो एक खेडूत हतो.

उपर कहां तेम, भरकच्छ जळमागें तेम ज स्थळमागें वेपारनं मोटुं भथक हतुं. मुख्यत्वे आ दृष्टिए प्रचोत जेवा माळवाना राजाने भरकच्छ उपर आधिपत्य जाळववानी जरूर लागी हरो. भरकच्छना वेपारीओ विशे केटलीक किंवदन्तीओ आगमसाहित्यमांथी मळे छे:

.भरुकच्छना कोई वेपारीए उज्जयिनीना एक कुत्रिकापणमांथी े

भृत खरीबो हतो. विणकती बुद्धियी पोते पराजित थयो एनी याद गीरीमां ए भूते भरुकच्छनी उत्तरे बार योजन दूर 'भूततडाग ' नामे तळाव बांध्युं हतुं." भरुकच्छमां आवेला एक परदेशी वेपारीए कपटी श्रायकपणुं धारण करीने, केटलीक रूपवती साध्वीओने पोताना वहाण उपर बोलाबीने तेमनुं हरण कर्युं हतुं."

भरुकच्छथी दक्षिण।पथ तरफ जतां मार्गमां भागवत संप्रदायना अनुयायीओ नुं एक मन्दिर आवेल हतुं. जेने जैनो 'भल्लीगृह' नामे ओळखता हता. 16

१ मुकाबले जूना कही श्वकाय एवा टीकाप्रन्थोमां उने (पृ. ६०५), व्यम (भाग ३, पृ. १२७), प्रम (पृ. ४८), वृक्स (पृ. ५२) अने वृक्क्षे (पृ. ३४२, ५९४ इत्यादि) 'सृगुकच्छ'नो प्रयोग करे छे, द्यारे चूणिओ अने भाष्योमां 'भरुकच्छ' (प्रा. भरुवच्छ) शब्दप्रयोग छगभग निरपवाद छे. पुराणोमां पण 'सृगुकच्छ'नी तुलनाए 'भारुकच्छ' अने 'भरुकच्छ'नी व्यापकता छे (जुओ पुगु).

२ दोहिं गम्मति जलेग वि थलेण वि दोणमुहं, जहा भरुयच्छं तामिलिती एवमादि, आसूचू, पृ. २८२.

द्रोण्यो-नावो मुखमस्येति द्रोणमुखं-जलस्थलनिर्गमप्रवेशं यथा भृगु-कच्छं ताम्रलिप्तिर्वा, उशा, पृ ६०५.

द्रोणमुखं जलस्थलिनर्गमप्रवेशं, यथा भरकच्छं तामलिप्ती वा, आशी, पू. २५८. वळी जुओ प्रम, पू. ४८.

'जीवाभिगंम सूत्र'नी मलयगिरिनी वृत्ति (पृ. ४०) मां 'द्रोण-मुख प्रायेण जलनिर्गमप्रवेशम्' छे, त्यां मुद्धित प्रतमां 'जल'नी पछी स्थल' शब्द रही गयो दशे एम भनुमान श्राय छे.

३ 'पट्टण ' ति पट्टनं पत्तनं वा, उमयत्रापि प्राकृतत्वेन निर्देशस्य समानत्वात् , तत्र यन्नौभिरेव गम्यं तत्पट्टनं, यत्पुनः शकटैघींटकैनौभिर्वा गम्यं तत्पत्तनं यथा भरकच्छम्। उक्तं च-" पत्तनं शकटैर्गम्यं घोटकैनौभिरेव च । नौभिरेव तु यद गम्यं पट्टनं तत्प्रचक्षते॥१॥ " जीम, पृ. ४०

पत्तनं जलस्थलनिर्गमभवेशं-यथा मृगुक्षच्छम् । उक्तं च-पत्तनं

शक्दैर्गेक्यं घोटकैनौंभिरेव घ । नोंभिरेव तु यद् गम्यं पष्टनं तत्प्रचक्षते ॥ व्यम्, भाग ३, पृ १२७

जुओ पत्तन.

- ४ जुओ कोरण्टक उद्यान.
- ५ जुओ खपुराचार्य.
- ६ आचू, उत्तर भाग, पृ २०१
- .७ वृकसा, गा. ३१५०; वृकक्षे, भाग ३, पृ. ८८३-८४. जुओ कुण्डलमेण्ठ
 - ८ आचू, उत्तर भाग, पृ. १६०-६१
 - ९ आचू, उत्तर भाग, पृ. २०९
 - १० जुओ नभीवाहन अने सालवाहन.
 - ११ जुओ कालकाचार्य.
 - १२ जुओ वज्रभूति आचार्य.
 - १३ जुओ अट्टण अने फलही.
 - १४ जुओ कुन्निकापण.
 - १५ बृकमा, गा. ४२२०-२२; बृकक्षे, पृ. १९४५-४६.
- १६ निचू, भाग ३, पृ ४९८; बृकभा, गा. २०५४; बृकक्षे, पृ ५९४
 - १० जुओ कोसुंबारण्य त भक्षीगृह.

भछीगृह

महीगृह संबंधमां नीचेना भावार्थनुं कथानक 'निशीयचूर्णि 'मां छे: एक साधु सार्थनी साथे मरुकच्छथी दक्षिणापथ जतो हतो. तेने कोई भागवते पृछ्युं, 'महीगृह ए ग्रुं छे ं' एटले साधुए द्वारवतीना दहनथी मांडीने वासुदेव कोसुंबारण्यनां प्रवेश्या अने जराकुमारनुं बाण वागवाथी तेमनुं मरण थयुं त्यांसुधीनी हकीकत कही संभळावी. आ प्रमाणे महीगृहनी उत्पत्तिनो सर्व वृत्तान्त तेणे कद्यो. आ सांमळीने मागवत देवपूर्वक विचार करवा लाग्यो, 'जो एम नहि होय तो आ

भिलीयह

श्रमणनो हुं घात करीश. पछी ते गयो, अने तेणे वासुदेवनो पग बाणथी वींघायेलो जोयो, एटले आवीने साधुने खमान्या अने कह्युं, 'में आ प्रमाणे चितन्युं हतुं, माटे क्षमा करो.'

आ कथानक उपरथी अनुमान थाय छे के कोसुंबारण्य के ज्यां जैन परंपरा अनुसार, जराकुमारनुं बाण पगमां वागवाथी कृष्ण वासुदेवे देहत्याग कर्यो त्यां पगमां भल्ली—बाणना घा होय एवा प्रकारनी वासुदेवनी मूर्ति हशे. जे मन्दिरमां आवी मूर्ति हशे ते भल्लीगृह तरीके ओळखातुं हशे.

ब्राह्मण परंपरा अनुसार, श्रीकृष्णनो देहोत्सर्ग प्रभासमां थयो हतो. ज्यां कृष्णने बाण वाग्युं हतुं ते जग्या त्यां भालकुं (भल्लकेश्वर) तरीके जाणीती छे तथा समुद्रकिनारे ज्यां तेमनुं अवसान थयुं हतुं त्यां देहोत्सर्गनुं तीर्थ छे.

> 9 निचू, (भा. गा. २३३० नी चूर्णि), भाग ३, ए. ४७९ २ जुओ कोसंबारण्य

भिछमास्र

जुओ श्रीमाल

भूछेश्वर

एक व्यंतर. गुज. ' भूलेश्वर.'

आनंदपुरना एक दरिद ब्राह्मणे भूळेश्वर (प्रा. भूलिस्सर)ना उपासना करी हती. व्यंतरे तेने कच्छमां ज्यां आभीरो श्रावक हता त्यां मोकल्यो हतो.

जैन शास्त्रोमां घणी वार शिव, ब्रह्मा आदि ब्राह्मण देवोने व्यंतर अश्रवा वानमंतर तरीके वर्णवेला होय छे; एटले अहीं भूलेश्वर व्यंतर वडे भूलेश्वर महादेव उदिष्ट छे एम अनुमान करवुं वधारे पडतुं नथी. भूलेश्वरनां मन्दिरो गुजरातमां छे तथा ईटर तरफना ब्राह्मणोमां भूलेश्वर विशेष नाम पण होय छे. अहीं, 'आवश्यकचूर्णि 'मां 'मूलिस्सर 'नो उल्लेख छे, एटले ए नाम ओछामां ओछुं आठमा सैका जेटलुं जूनुं छे. वळी प्रस्तुत उल्लेख एम सूचवे छे के आनंद-पुरमां 'मूलिस्सर 'नुं मन्दिर होवुं जोईए

प्राकृत 'मुल्ल' (गुज. 'मुल') अने 'मोल' (गुज. 'मोलो') ए देश्य शब्दो लागे छे. जो के केटलाक एनो संबंध सं. भद्र प्रा. मल्ल गुज. मलो इत्यादि साथे जोडे छे. आ शब्दोने तेम ज 'मूलिस्सर' शब्दमांना 'मूल ' अंगने महादेवना अर्थमां वपराता 'मोळानाथ,' 'मोळा शंभु' जेवा प्रयोगो साथे वाग्व्यापारगत संबंध हशे एवी स्वाभाविक कल्पना थाय छे.

१ कच्छे आमीराणि सड्ढाणि, आणंदपुरतो धिज्जातिओ दरिहो भूलिह्सरे उववासे ठितो, वर मग्गति, चाउवेज्जह्स भत्तमुहं देहि, वाणमंतरेण भण्गति—कच्छे सावगाणि भज्जवित्याणि ताणं भत्तं करेहि। आचू, उत्तर भाग, पृ. २९१

भूततडाग

मरुकच्छथी बार योजन उत्तरे आवेल एक तळाव.

ए विशेनुं परंपरापत कथानक आ प्रमाणे छे: भरुकच्छना एक विणके उज्जियिनीना कुत्रिकापणमांथी एक मृत खरीधो हतो. ए भृत एवो हतो के एने सतत काम आपवामां न आवे तो खरीदनारने मारी नाखे. विणके जे काम सोंखुं ते बधुं भृते क्षण वारमां करी दीधुं. आथी छेबटे विणके एने एक स्तम उपर चढवा ऊतरवानुं काम सोंखुं. भूते पोतानो पराजय स्वीकारी छोधो अने पराजयनुं कंईक चिह्न मूकवानी इच्छा व्यक्त करीने कह्युं के 'घोडा उपर सवारी करीने चालतां व्यां तुं पाछुं वाळीने जोईश त्यां हुं एक तळाव बांधीश.' विणके बार योजन जईने पाछुं वाळीने जोयुं अने त्यां भूते एक तळाव बांध्यं, जे भृततडाग नामथी प्रसिद्ध थयुं.'

भूततडाग

आ कथानकना काल्पनिक अंशो न स्वीकारीए तो पण मह-कच्छनो उत्तरे बारेक योजन दूर आवेलुं एक तळाव लोकश्रुतिमां भूततडाग नामे जाणीतुं हतुं एटली वस्तु तो निश्चित छे.

जुओ कुत्रिकापण

१ बृकमा, गा. ४२२०-२२; बृकक्षे, भाग ४, पृ. ११४५-४६

भृ**गुक**च्छ

जुओ भरकच्छ

मङ्गू आर्य

एक प्राचीन आचार्य. तेओ आर्य समुद्रनी साथे विहार करता सोपारकमां गया हता. तेमनुं शरीरस्वास्थ्य सारुं हतुं, ज्यारे आर्य समुद्र दुबंळ हता. वळी आर्य मंगू आचार्य बहुश्रुत, घणा शिष्योना परिवारवाळा तथा उचतिव्हारी हता. तेओ एक वार मथुरा गया हता. त्यांना श्रावको दररोज दूय, दहीं, घी अने गोळवाळो खोराक वहोरावता हता. बोजा साधुओ त्यांथी चाल्या गया, पण आर्य मंगूए जिह्वारसना छोमथी विहार न कर्यो. श्रामण्यनी विराधना करीने ते मरण पाम्या अने नगरनी निर्धमनी—नीकमां व्यंतर थया. पछी कोई साधु त्यांथी पसार थाय एटले ए व्यंतर प्रतिमामां प्रवेशीने मोटी जीम लांबी करतो, अने साधुओ पूछे त्यारे कहेतो के 'हुं जिह्वा-दोषथी व्यंतर थयो छुं अने तमारा प्रतिबोध माटे आव्यो छुं. माटे मारा जेवुं वर्तन तमे करशो नहि. 'वळी बीजो एक मत एवो छे के ज्यारे साधुओ जमवा बेसता त्यारे साधुओनी सामे ते पोतानो अलंकारखचित हाथ छंबावतो, अने ज्यारे पूछवामां आवे त्यारे उपर प्रमाणे कहेतो."

'नंदिसूत्र 'नी स्थिवरावलीमां आर्य समुद्रनी पछी आर्य मंगूने वंदन कर्ये। छे, एटले आर्य मंगू आर्य समुद्रना शिष्य संभवे छे. मणित्रभ] [११७

प्रस्तुत स्थितरावलीमां आर्थ मंगूने खूब आदरपूर्वक प्रणाम करेलां छे, ज्यारे उपर्युक्त कथानकनो ध्विन एथी ऊलटो ज छे. आथी एक जनामवाळा वे जुदा जुदा आचार्योनो पळीना समयमां थ्येला चूर्णिकारो अने टीकाकारोए संभ्रम कर्यों हुशे एम अनुमान थाय छे.

- १ व्यम (उद्दे॰ ६ उपरनी बृत्ति), पृ. ४४. जुओ समुद्र आर्थ.
- २ निचू, भाग ३; पृ. ६५०-५९; वळी जुओ आचू, उत्तर भाग, पृ. ८०; कुकम; पृ. ४४; श्राप्रर, पृ. १९२.
 - ३ तिसमुद्खायिकित्ति दीवसमुद्देख गहियपेयालं । वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्गंभीरं ॥२०॥ भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसणगुणाणं । वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥२८॥

नंसू, पृ, ४९-५०

४ 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र 'ना वे टीकाकारो देवेन्द्रसूरि (वद्र, पृ. ९२) भने रत्वरोखरसूरि (श्राप्रर, पृ. १९२) आ रसगृद्धिनी वात करतां 'मथुरा-मंगू ' आचार्यनो उल्लेख करे छे ते छु सोपारकवाळा मंगूथी भिन्नता दर्शाववा माटे हरो !

मणिप्रभ

उज्जयिनीना राजा पाठकना पुत्र राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)नो नानो पुत्र, जे पाछळथी कौशांबीनो राजा थयो हतो. पाछकना मोटा पुत्र अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी श्लीने वश करवा माटे माईने मारी नाख्यो हतो. आर्था तेना भाईनी श्ली धारिणी पोतानुं शीछ बचाववा माटे एक सार्थनी साथे कौशांबी चाछी गई हती. ए वस्वते ए सगर्भी हती. कौशांबीमां राजानी यानश छामां रहेती साध्वीओ पासे तेणे दीक्षा छीधी, पण पोताना गर्भनी वात करी नहि. पण पाछळथी ए वातनी स्ववर पडतां एने गुप्त राखवामां आवी अने एने पुत्रनो जन्म थतां नामसुद्राथी अंकित करीने राजाना आंगणामां मूकी देवामां आव्यो. ए पुत्र ते मणिप्रभ. कौशांबीनी राजा अजितसेन पण अपुत्र हतो,

११८] [मणित्रभ

तेथी तेणे मणिप्रमने पुत्र तरीके स्वीकार्यों. पुत्रप्रेमने छीघे धारिणीए अजितसेननी राणी साथे मैत्री करी. काळे करी अजितसेननी पछी मणिप्रम गादो उपर आव्यो. ए समये तेनो सगो भाई अवन्तिसेन जे अवन्तिवर्धननो पछी उज्जयिनीनी गादीए वेठो हतो ते कौशांबी उपर चढी आव्यो, अने बन्ने भाईओ बच्चे युद्ध थवानी तैयारी हती त्यां माता धारिणीए बन्ने पासे जईने तेमनो साचो बृत्तान्त कही संमळाव्यो, अने युद्ध रहेवा दईने बन्ने उत्साहपूर्वक नगरीमां प्रवेश्या. अने युद्ध रहेवा दईने बन्ने उत्साहपूर्वक नगरीमां प्रवेश्या.

- १ जुओ अवन्तिवर्धन.
- २ जुओ अवन्तिवर्धन.
- ३ आचू, उत्तर भाग, पृ. १८९-९०; वत्र, पृ ९०-९२

मण्डन सूत्रधार

सूत्रघार मंडनकृत ' वास्तुसार 'मांथी केटलाक श्लोको 'जंबुद्दीप-प्रज्ञित ' उपरनी शान्तिचन्द्रनी कृत्तिमां उद्भृत थयेला छे. ' मंडन ए नाम मध्यकाळमां गुजरात-राजस्थान अने माळवामां व्यापक विशेष-नाम 'मांडण 'नुं संस्कृतीकरण छे.

मंडन मेवाडना राजा कुंभकर्ण-कुंभाराणा (ई. स. नो १५ मो सैको)नो आश्रित हतो. 'रूपमंडन' आदि शिल्प अने वास्तुशास्त्रना संख्याबंध प्रन्थो तेणे रचेला छे.

विक्रमना पंदरमा शतकना अंतमां अने सोळमाना प्रारंभमां अर्थात् ईसुना पंदरमां शतकमां 'अर्छकारमंडन', 'काव्यमंडन', 'चंपूमंडन,' 'काव्यमनोहर' आदि प्रन्थो लखनार मंत्री मंडन अथवा मांडण माळवामां आवेला मंडपदुर्ग (मांडु)नो श्रीमाली विणिक होई सुत्रधार मंडनथी भिन्न छे.

१ एतःसंवादनाय सूत्रधारमण्डनकृतवास्तुसारोक्तरिप लिख्यते यथा-" चतुःषष्ट्या पदैवस्ति पुरे राजगृहेऽचैयेत् । एकाशीत्या गृहे भागः शतं प्राक्षादमण्डपे ॥ " इत्यादि १३ श्लोक टाक्या छे. जंप्रशा, पृ. २०८. २ जुओ ' देवतामूर्ति प्रकरण अने रूपमंडन,' प्रस्तावना, पृ. १-४ ३ जुओ हेमचन्द्राचार्य सभा प्रकाशित 'मंडनप्रन्थसंप्रह.'

मण्डिक

वेणातट नगरनो एक चोर, जे दिवसे तूनारानो धंधो करतो अने रात्रे चोरी करतो. ए ज नगरना राजा मूलदेवना हाथे ते पकडाई गयो हतो.

जुओ मूलदेव

मत्स्यदेश

२५॥ आर्य देशो पैको एक. एनुं पाटनगर वैराट नगरमां हतुं. मत्स्य देशमां जयपुर राज्यनो केटलोक भाग तथा अन्वर राज्य आवी जाय छे.

१ सूक्त्रशी, पृ. १२३; बुकक्षे, भाग ३, पृ. ९१२-१४ २ ज्यांडि, पृ. १२४-२९

मथुरा

२५॥ आर्थ देशो पैकी शूरसेना जनपदनी राजधानी. मथुरा नगरी घणी प्राचीन छे, अने तेथी एने 'चिरकाल-प्रतिष्ठित ' कहेवामां आवी छे अने त्यांना स्तूपने 'देवनिर्मित ' कह्यो छे. मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं. *

प्राचीन भारतना महत्त्वना सार्थमार्गो उपर आवेर्छ होई मथुरा एक महत्त्वनुं वेपारी केन्द्र ('पत्तन') हतुं, एथी ए 'स्थलपत्तन' तरीके वर्णवायुं छे.

मथुरामां भंडीर उद्यानमां सुदर्शन यक्षनुं आयतन हतुं. केटलेक स्थळे यक्षनुं नाम पण भंडीर यक्ष आपेछं छे. होको भारे उत्साहपूर्वक भंडीर यक्षनी यात्रामां गाडां जोडीने जता.

[मथुरा

' आवश्यक सूत्र 'नी वृत्तिमां आ यक्षायतननो परंपरागत इतिहास नीचे प्रमाणे आपवामां आव्यो छेः मथुरामां राजानी आज्ञाथी हुंडिक नामे एक चोरने श्ळीए चढाववामां आव्यो हतो. चोरना बीजा साथीओ पकडाई जाय ए माटे तेनी तपास राखवानी सूचना राजाए पोताना माणसोने करी हतो. जिनदत्त नामे श्रावक ए स्थळेथी पसार थतो हतो, तेनी पासे चोरे पाणी माग्युं. जिनदत्ते एने नवकार भणवानुं कह्युं अने पोते पाणी छेवो गयो. आ बाजू नवकार बोछता चोरनो जीव नीकळी गयो अने ते यक्ष थयो. राजाना माणसोए जिनदत्तने पकड्यो अने राजाए एने श्रूळी उपर चढाववानी आज्ञा करी. यक्षे अविध्यी आ बात जाणी. तेणे पर्वत उपाडीने नगर उपर मूक्यो अने कह्युं के 'श्रावकने खमावो, निह तो नगरनो चूरो करी नाखीश. ' आ पछी जिनदत्तने खमावीने वैभवपूर्वक एनो नगरप्रवेश कराववामां आव्यो, अने नगरनी पूर्व दिशाए यक्षनुं आयतन बंधाववामां आव्युं. आ वृत्तान्त उपरथी स्पष्ट छे के उपर्युक्त यक्षायतन मथुरानी पूर्व दिशाए होवुं जोईए.

राजकीय दृष्टिए मथुरा उत्तरापथनु एक अगत्यनुं शहेर हतुं अने ९६ गाम एनी साथे जोडायेलां हतां. आ दृष्टिए 'मथुराहार'नो उल्लेख नाधपात्र छे. '°

मथुरा जैन धर्मनु एक मोटुं केन्द्र हतुं. मथुरामां घरना बार-णानी ओतरंग उपर सौ पहेलां अहित्—प्रतिमानुं स्थापन करवामां आवतुं, अने एम न थाय तो ए मकान पडी जाय एम मनातुं. आवी स्थापनाने 'मंगलचैत्य' कहेता. मथुरा साथे संबंध धरावतां ९६ गामोमां पण मंगलचैत्यो हतां."

मधुरानो जैन स्तूप एटलो प्रार्चन हतो के एने 'देवनिर्मित स्तूप' कहेता.' कोई समये आ र्त्युपनो कवजो बौद्धोर लई लीधो सथुरा] [१२१

हतो. आना निर्णय माटे राजानी संमितिथी एम नक्की थयुं हतुं के 'जो स्तूप खरेखर रक्तपटोनो—बौद्धोनो होय तो ते उपर प्रभातमां राती पताका फरके अने जो जैनोनो होय तो त पताका फरके.' रात्रे देवताए स्तूप उपर खत पताका फरकावी ते प्रभातमां सौए जोयुं, अने ए रीते जैन संघनो विजय थयो.' आ अनुश्रुतिमांथी केति-हासिक दृष्टिए एवो निष्कर्ष नीकळी हाके के मथुराना जैन स्तूप उपर बौद्धोए आधिपत्य जमाव्युं हतुं, पण मथुराना राजाए ए स्तूप जैनोने पाछो सोंप्यो हतो.

उपर्युक्त देवनिर्मित स्तृपनो महिमा—उत्सव पण पर्वदिवसीए थतो. एक वार स्तूपनो महिमा करवा माटे केटलीक श्राविकाओ साध्वीओनी साथे गई हती. ए समये त्यां एक साधु, जेओ पूर्वाश्रममां राजपुत्र हता तेओ आतापना लेता हता. विश्व क जातिना लुटाम्ओए ए ल्लाओने पकडी अने स्तूपमांथी तेओ एमने बहार लाव्या. साधुने जोईने लीओए मारे आकंद कर्युं, ए सांमळी क्षत्रिय साधुए बोधिको साथे युद्ध करीने तेमने छोडावी.

देवनिर्मित स्तूप जेवा जैनोना प्रसिद्ध यात्राधाम पासेथा आवी रीते पूजार्थे आवेली स्त्रीओनुं लुटारुओ हरण करे ए वताने छे के आ घटनाना समय सुधीमां मथुरामांथी जैनोनुं वर्चस ठीकठीक प्रमाणमां घटचुं हशे अने स्तूपनी आसपासनो प्रदेश उज्जड जेवो बनी गयो हशे.

'स्त्रकृतांग स्त्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमां एक पुरातन गाथा उतारेलो छे,' एमां कुसुमपुर अने मथुरानो एको साथे एवी रीते उल्लेख छे, जे प्रस्तुत गाथाना रचनाकाळे कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) अने मथुरानुं एकसरखुं प्राधान्य सूचने छे. पाटलिपुत्रमां जैन श्रुतनी पहेली वाचना थया पछी केटलीक शताब्दीओ बाद स्कन्दिलाचार्ये १२२ं] [मधुरा

जैन श्रुतनी बीजी वाचना मथुरामां करी वाचन एने देवधिंगणि क्षमा-श्रमणे पोतानी छेवटनी श्रुतसंकलनामां मुख्य वाचना तरीके सर्वसंमत रोते स्वीकारी, ए वस्तु जैन इतिहासमां घणी महत्त्वनी छे, अने माथुरी वाचना माटे मुनि कल्यागविजयजीए निश्चित करेलो समय (वीर-निर्वाण सं. ८२७ थी ८४०=ई. स. ३०१ थी ३१४) मान्य राखीए तो, एवुं विधान निःसंदेह थई राके के चोथी राताब्दीमां मथुरा जैन धर्मनुं एवुं मोटुं केन्द्र हतुं, जेनी बरावरी पश्चिम भारतनुं वलभी ज करी राके एम हतुं.

भगवान महावीर मथुरामां आव्या हता एवो एक उल्लेख 'विपाक सूत्र 'मां छे. ' आर्थ मंगू' अने आर्थ रक्षित जेवा आचार्योए मथुरामां विहार कर्यो हतो. आर्थ रक्षित मथुरामां मृतगृहा नामना व्यंतरगृह—यक्षायतनमां हह्या हता ' अावश्यक सूत्र 'नी चूर्णिमां एक स्थळे मथुराने 'पाखंडिगव्म ' (सं. पाषण्डिगर्भ) कह्युं छे, ' ए बतावे छे के एमां बौद्धो अने अन्य संप्रदायना अनुयायीओनी वस्ती सारा प्रमाणमां हती.

- १ सूक्त्रशी, पृ. १२३; बुकक्षे, भाग ३, पृ. ९१२-१४
- २ चिरकालपइहियाए महुराए... उशा, पृ. १२५ ...
- ३ जुओ टि. १२.
- ४ जुओ इन्द्रपुर.
- ५ उशा, पृ. ६०५; आशी, पृ. २५८
- ६ महुरा नाम नयरी, भडीरे उज्जाणे, सुदंसणे जक्खे, विसूथ, पृ. ७०
 - ७ जुओ **भण्डीर यश्न.**
 - ८ आम, पृ. ५५५
 - ९ जुओ हि. ११
 - १० जुओ खेट आहार
 - ११ अरहंत पइहाए महुरानयरीए मंगलाई तु ।

गेहेसु चरचरेसु य छन्नउईगामअद्धेसु ॥ (भा. गा. १७७६)

मथुरानगर्या गृहे कृते मङ्गलनिमित्तमुत्तरङ्गेषु प्रथममहिष्प्रितिमाः, हरिष्ठाप्यन्ते, अन्यथा तद् गृहं पति । तानि मङ्गलचैत्यानि । तानि च तस्यां नगर्या गेहेषु चत्यरेषु च भवन्ति । न केवलं तस्यामेव किन्तु तस्यां नगर्या गेहेषु चत्यरेषु च भवन्ति । न केवलं तस्यामेव किन्तु तस्यां प्राप्तिविद्धा ये षण्णवित्सिख्याका प्रामाद्धीरतेष्वपि भवन्ति । इहोत्तरान् प्रथानां प्रामस्य प्रामाद्धे इति संज्ञा । आह च चूर्णिकृत्-प्रामद्धेषु ति देसभणिती, छन्नउईगामेषु ति भणियं होइ, उत्तरावहाणं एसा भणिइ ति । वृकसे, भाग २, पृ. ५२४. उत्तरापथमां प्रामने प्रामार्थ कहेवानी रूढि छे, एवो आमांनो निर्देश नोंधपात्र छे.

१२ निचू, भाग ३, प्र. ५९०; बुकक्षे, भाग ६, १६५६; ब्यम, भाग ४, पेटा वि. १, प्र. ४३

१३ व्यमा तथा व्यम (उद्दे० ५), पृ. ८

१४ निचू, भाग ३, पू, ५९७; बुकक्षे, भाग ६, पू. १६५६; ब्यम, भाग ४, पेटा वि. १, पू. ४३. 'बोधिक ' जातिनो उक्लेख 'महाभारत ' अने 'रामायण 'मां 'बोध ' तरीके छे. जुओ बिमलाचरण लॉ—कृत 'ट्राइब्स इन अन्ध्यन्ट इन्डिया', पू. ३९७. जैन आगमसाहित्यमां 'बोधिक 'ने 'मालव 'थी अभिन्त गणेला छे; जुओ मालव.

[मथुरा

१५ कुसुमपुरोप्ते बीजे मथुरायां नाड्कुरः समुद्भक्षति । यत्रैव तस्य बीजं तत्रैवोरपद्यते प्रसवः ॥ स्कृत्व्, पृ. ३७९-८०; स्कृशी, पृ. ३५०

१६ नंचू, पृ. ८; नंम, पृ. ५१; ज्योकम, पृ ४१; इस्यादि. वळी जुओ देवद्विंगणि क्षमाश्रमण.

१७ 'बीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना , पृ १८६

१८ जुओ जैन, 'लाइफ इन अन्द्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३०९.

१९ जुओ म गू आर्थ.

२० आचू, पूर्व भाग, पृ. ४११; आम, पृ. ४००

२१ आचू, पूर्व भाग, पृ. १६३

२२ सूक्त्रशी, पृ. ११८

२३ आचू, उत्तर भाग, पृ. २८७; व्यम, भाग ४, पेटा वि. पृ. ४७

🤏 अाचू, उत्तर भाग, पृ. १७७

२५ स्थासुअ, पृ. २५५

२६ द्वाध, पृ. २०८; जीक ब्रूच्या, पृ. ४०; निच्नु , भाग ४, पृ. ७४३; सस, गा. ४९४-५०३; भप, गा. १४५; आचू , उत्तर भाग, पृ. ३५-३६; इस्यादि

मथुरा मङ्गू आचार्य

जुओ मङ्गू आर्य

मरुस्थल

आजनो मारवाड. एनां मरु, मरुभूमि, मरुविषय, मरुदेश एवां नामो पण मळे छे. 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां 'राज्यदेशनाम' आप्यां छे तेमां 'मरुस्थल' छे. '

मरु आदि रेताळ प्रदेशमां रस्तो मूली न जनाय ए माटे मार्गमां कीलिकाओ होकवामां आने छे एवो उल्लेख आगमसाहित्यमां छे. महस्थल] [१२५

मरुविषयमां पाणीनी तंगी छे अने पाणी मेळववा माटे रात्रे दूर सुधी जवुं पडे छे. जलविकलताने कारणे मरुस्थलमां धान्यसंपत् जोईए एवी थती नथी. निष्णुण्यपिपासित मनुष्योने जेम पीयूष प्राप्त थतुं नथी तेम मरुमूमिमां कल्पवृक्षनो प्रादुर्माव थतो नथी.

मरमंडलनी केटलीक विशेषताओ पण नीधवामां आवी छे: 'यवनालक' (प्रा. जवणालओं) नामनो 'कन्याचोलक'—कन्याः ओनो पहेरवेश मरुमंडलादिमां प्रसिद्ध होवानुं कह्युं छे. एमां चिणयो— चोळी मेगां सीवी लेबामां आवतां, जेबी वस्त्र खसी पडे नहि. कन्याना माथेथी ते पहेरातो, एथी ए प्रकारना पहेरवेशने ऊपो 'सरकंचुक' पण कहेवामां आवतो. "

आ उल्लेख विशिष्ट महत्वनो छे, केम के एमां कन्याओना खास पोशाकने निर्देश छे. वळी प्राचीन संस्कृत साहित्यमां स्नोओना पहेरनेशमां 'नीवि 'नो निर्देश आवे छे ते वस्ननी गांठ छे, चिणयानी दोरीनी गांठ नथी, ए दृष्टिए पण आ वस्तु विचारवा जेवी छे. संभव छे के साडीनी नीचे चिणयो पहेरवानुं कोई परदेशी जाति के जाति-ओनी असरथी दाखल थयुं होय; दक्षिण भारतमां चिग्यानो पहेरनेश नथी ए पण आ दृष्टिए सूचक छे. उपर्युक्त उल्लेखमांना 'जवणालओ ' शब्दनुं 'जवण' (सं. यवन. ए शब्द शिथल अर्थमां गमे ते परदेशी जाति माटे प्रयोजातो हतो ए जाणीतुं छे) अंग पण घणुं करीने ए ज सूचवे छे. ए 'कन्याचोलक ' महमंडलादिमां प्रसिद्ध होयानुं कह्युं छे, एटले महमंडल सिवायना बीजा केटलाक प्रदेशोमां पण एनो प्रचार होवो जोईए. हेमचन्द्रना 'द्वचाश्रय ' महाक्राल्यमांथी एने लगतो एक रसिक उल्लेख प्राप्त थाय छे. एमां लतागृहमां रहेली मयणलानो 'चोलक ' जोईने एनो भावी पति कर्ण सोलंकी अनुमान करे छे के ए कन्य; होवी जोईए—

यच्चोलकमधास्तन्नाद्यापि कन्यात्वमृत्यगाः । आर्तेवास्था यदत्र त्वं स्मरस्तन्त्वां शरैरदात् ॥ (सर्ग ९, क्षो. १४५)

' हचाश्रय 'ना टीकाकार अभयतिलकगणि अहीं ' चोलक 'नो अर्थ समजावतां लखे छे—'यत्वं चोलकं कन्योचितं सर्वाङ्गीणक- उचुकविशेषमधाः परिधानेन।धारयस्तः ज्ञायते त्वमद्यापि कन्यावं नात्यगाः ।' अहीं 'चोलक 'ने 'कन्योचित सर्वांगीणकंचुकविशेष ' कहां छे, ए आगमसाहित्य—अंतर्गत उल्लेखने बराबर मळतुं आवे छे.

वळी 'बृहत् कल्पसूत्र ' उपरनी क्षेमकीर्त्तिनी टीकामां 'मरुतैल' नामना एक विशिष्ट तेलनो पण उल्लेख छे; ए तेल मरुदेशमां पर्वत-मांथी नीकळतुं. अर्थात् आ खनिज तेल छे. मारवाडमां पण एक काळे खनिज तेल नीकळतुं हतुं ए दृष्टिए आ उल्लेखने अनेक शक्य-ताओनो सूचक गणी शकाय.

तकामु घास नींदवा माटे जे नानुं लाकडुं (गुज. 'खरपडी ') हळ साथे खेतरमां फेरववामां आवे छे एने मरुमंडळमां 'कुलिक 'कहे छे एवो पण एक उल्लेख छे. "

- ९ जुओ **गुर्जर**.
- २ रेणुपचुरे प्रदेशे कीलिकानुसारेण गम्यते, अन्यथा पथर्त्रशः । सृकुचू, पृ. २४०

कीलकमार्गो यत्र वालुकोत्कटे मरकादिविषये कीलिकाभिज्ञानेन गम्बते। सुक्क्सी, पृ. १९६

- ३ निचू, भाग ५, पृ. १०९७
- ४ नंस, ष्टू. २३३
- ५ कसु, पु. २२०; ककौ, पु. ८७
- ६ बवनासको नाम कन्याचोलकः, स च महमण्डलादिप्रसिद्धश्ररणकः रूपेण कन्यापरिधानेन सह सीवितो भवति सेन परिधानं न खसति,

कन्यानां चेष मस्तकप्रदेशेन प्रक्षित्यते, अत एवायमूर्धः-सरकञ्चुक इति व्यपदिश्यते, तथा च तप्रादिव्याख्यानं कुर्वन्नाह भाष्यकृत्-'' x x जवना लड त्ति भणिओ उन्भो सरकंचुओ कुमारीए x x '' इति । आम, पू. ६८

- महतैलं-महदेशे पर्वतादुत्पद्यते । बृकक्षे भाग ५, पृ. १५९३ वृक्षमा, गा, ६०३१ मां 'महतेल्ल'नो उल्लेख छे जेनी टीकाइपे उपर्युक्त संस्कृत अवतरण छे, ए सूचवे छे के 'महतैल' विशेनो उल्लेख मुकाबले घणी प्राचीन छे.
- ८ 'कुलिकं ' लघुतरं काष्ठं तृणादिच्छेदार्थं यत् क्षेत्रे वाह्यते तत् मरुमण्डलादिप्रसिद्धं कुलिकमुच्यते ततश्च यदत्र हलकुलिकादिभिः क्षेत्राण्युप-क्रम्यन्ते..., अनुहे, पृ. ४४

मलयांगरि आचार्य

आगमस।हित्यना सौथी मोटा संस्कृत टीकाकारोमां आचार्य मलयगिरिनं स्थान छे. एमणे पोतानी अनेक कृतिओ पैकी एकेयमां रचनासँवत आप्यो नथी तेम ज पोताने विशे कशी माहिती आपी नथी. पोते रचेलुं ' शब्दानुशासन ' जे ' मुष्टिव्याकरण ' (मुठीमां माय एवं संक्षित व्याकरण) पण कहेवाय छे एमां तेमणे 'अरुणत् कुमारपालोऽरातीन् ' एवं उदाहरण आप्यं हे, अने एमां क्रियापद अवतन भूतमां होई कर्ता थोडाक समय उपर बनेला बनावनी वात करे छे एवं अनुमान स्वामाविक रीते थई शके. आचार्य मलयगिरि गुजरातमां थई गया छे ए तो निश्चित छे, पंग उपर्युक्त प्रमाणने आधीरे तेओ ई.स.ना बारमा सैकामां थयेला राजा कुमारपाल (ई. स. ११४३ – ११७३) ना समकालीन हता के एनी पछी थोडाक समये थया हता एवं अनुमान थई राके. वळी मलयगिरिए 'आवश्यक सूत्र ' उपरनी पोतानी वृत्तिमां 'आह च स्तुतिषु गुरवः ' एवी नोंघ साथे आचार्य हेमचन्द्रकृत ' अन्ययोगव्यव छेदद्वार्त्रिशिका 'मांथी ' अन्योन्य-पक्षप्रतिपक्षमायात्० ' (स्त्रो. ३०) ए स्त्रोक उद्भृत कर्यों हे, त्यां हेमचन्द्र माटे एमनुं नाम लीधा सिवाय 'गुरवः ' एवो बहुमानसूचक छतां परिचयप्रदर्शक मोधम निर्देश कर्यो छे ए उपरथी पण तेओ हेमचन्द्रना लघुवयस्क समकालीन होवानुं अनुमान थाय छे.

मलयगिरिए नीचेना आगमप्रन्थो उपर टीकाओ लखी छे: 'आवश्यक,' 'ओघनियुंक्ति,' 'जीबाभिगम,' 'ज्योतिष्करंडक,' 'नंदिसूत्र,' 'पिंडनियुंक्ति,' 'प्रज्ञापना,' 'भगवती' द्वितीय शतक, 'राजप्रश्रीय,' 'ज्यवहार सूत्र,' 'सूर्यप्रज्ञित,' अने 'विशेषावश्यक.' 'बहुत्कलपसूत्र'नी पीठिका उपर मलयगिरिनी वृत्ति छे, पण त्यार पछीनी वृत्ति आचार्य क्षेमकीर्तिए पूरी करी छे, ए उपरथी अनुमान थाय छे के 'बृहत्कलपसूत्र'नी वृत्ति लखतां लखतां ज मलयगिरिनुं अवसान थयुं हशे. 'जंबुद्दीपप्रज्ञिति'नी मलयगिरिनी वृत्ति नाश पामी होवानुं विधान सत्तरमा सैकामां थयेला टीकाकारो पुण्यसागर अने शान्तिचन्द्रे कर्युं छे, पण ए वृत्तिनी प्रत जेसलमेरना मंडारमांथी जाणवामां आवी छे. अा टीकाकारोने एनी प्रतो अलभ्य होत्री जोईए. वळी 'तत्त्वार्थ सूत्र' उपर पण मलयगिरिए एक टीका रची हती, जे आजे उपलब्ध नथी (जुओ टि. १९)

आगमप्रन्थोनी टोकाओ उपरांत मलयगिरिए केटलाक आगमेतर धर्मप्रन्थो उपर टीकाओ रची छे, अने जेमांथी एमनो समय नक्की करवामां उपयोगी थाय एवो उल्लेख प्राप्त थाय छे ते, उपर्युक्त मुधि-व्याकरण ' नामे ' शब्दानुशासन ' पण लख्युं छे."

मलयगिरिनी टीकाओमां उच्च कोटिनी विद्वता साथे सरलतानो सुभग समन्वय थयो छे अने परिणामे विद्वानो तेम ज विद्यार्थीओने ते एकसरली उपयोगो वनी छे. एमां एमणे प्रसंगोपात्त पोताना पूर्व-कालना वृत्तिकारोनो उल्लेख कर्यो होवाने कारणे आगमसाहित्यना इतिहास माटे ए केटलोक अगत्यनी सामग्री पूरो पांडे छे. जैम के— ' आवश्यक सूत्र ' उपर हरिभदस्रिनी वृत्ति होवानुं प्रसिद्ध छे, पण मलयगिरिए पोतानी ' आवश्यक दृत्ति'मां पूर्वकालीन दृत्तिओनो बहु-वचनमां निर्देश कर्यों छे, ए सूचक छे. हरिभद्र उपरांत बोजा एक आचार्य जिनमटनी टोका ज जो तेमने उदिष्ट होत तो निर्देश हि-भचनमां होत. पण बहुव चननो प्रयोग बतावे छे के ए सिवाय पण बीजी एक अथवा वधारे टीकाओ 'आवश्यकसूत्र' उपर होवी ओईए. 'विद्यतयः' एवो स्पष्ट उल्लेख होवाथी उपर्युक्त वे विदरणोमां चूर्णिनो समावेश करीने बहुवचनना प्रयोगनुं समाधान करतुं ए दूशकृष्ट लागे छे.

'ज्योतिष्करंडक, ''' पिंडनिर्युक्ति, ''' अने 'जीवाभिगम'नी'' वृक्तिओमां मलयगिरिए वारंवार ते ते प्रन्थो उपरनी 'मूल टीका'नी उल्लेख कर्यों छे. आ त्रणे सूत्रप्रन्थो उपर मलयगिरि पूर्वेनी कोई टीका आजे विद्यमान नथी. 'जीवाभिगम'नी 'मूल टीका'ना उल्लेखो 'राजप्रश्लीय'नी वृक्तिमां पण छे.'' 'प्रज्ञापना' तथा 'नंदिस्त्र' उपरनी हरिमदस्रिनी टीकाओनो उल्लेख तेमणे कर्यों छे.'

वळी पोतानी रचनाओमां मलयगिरिए पोतानी ज अन्यान्य वृत्तिओना उल्लेख कर्या छे, जे तेमनी कृतिओनी आनुपूर्वी नक्षी करवामां सहायभृत थाय छे. 'नंदिस्त्र' अने 'पिंडिनियुक्ति'नी वृत्तिओमां पोतानी 'धर्मसंप्रहणि टीका'नो उल्लेख तेमणे कर्यों छे. ए ज रीते 'ज्योतिष्करंडक'नी वृत्तिमां 'क्षेत्रसमास'नी टीकानो उल्लेख कर्यों छे. 'वृहत्कल्प सूत्र'नी पीठिकावृत्तिमां 'संस्कृत' शब्दनो अर्थ समजावतां तेमणे पोताना व्याकरणनो निर्देश कर्यों छे. ' ए ज प्रमाणे 'सूर्य-प्रज्ञित'नो वृत्तिमां पण तेमणे स्वर्रित 'शब्दानुशासन'नो उल्लेख कर्यों छे. '

'तत्वार्श्वमूत्र' उपरनी स्वरनित टीकानो उल्डेख एमणे 'प्रज्ञापना सूत्र' तथा 'ज्योतिषकरंडक'नी वृत्तिओमां कर्यो छे.'

'जीवामिगमसूत्र' उपरनी पोतानी वृत्तिमां 'देशीनाममाला' १७ ('पहकर-ओरोह संधाया' इति देशीनाममालावचनात्, जीम, पृ.१८८) अने 'नाममाला' ('मोहणघरगा' इति मोहण—मैथुनसेवा "रिमय मोहणस्याइं '' इति नाममालावचनात्, जीम, पृ २००) ए बे कोशप्रन्थो सूचित कर्या छे, पण एनणे आपेलां अवतरण अनुकमे हेमचन्द्रकृत 'देशीनाममाला'मां के धनपालकृत 'पाईअलच्छी नाममाला'मां नथी, एटले ए सिवायना कोई पूर्वकालीन कोशोनो आधार आचार्य मलयगिर अहीं टांक हे एम मानवुं जोईए.

पछीना समयमां थयेला आगमसाहित्यना टीकाकारोए मलयगिरिनी टीकाओना प्रसंगोपात आधार आध्या छे. जेमके—'श्राद्धप्रतिकमण सूत्र 'ना टीकाकार रत्नरोखरसूरिए मलयगिरिकृत 'राजप्रश्लीय ' वृत्तिनो आधार टांक्यो छे अने 'जंबुद्दीपप्रज्ञाप्ति 'ना टीकाकार शान्तिचन्द्रे 'बृहत्संप्रहणि, ' 'क्षेत्रसमास ' अने 'ज्योतिष्करंडक ' उपरनी तेमनी वृत्तिओनो बहुमानपूर्वक उल्लेख कर्यो छे.

- १ जैसाइ, पृ. २७३
- २ आम, पृ. ११
- ३ जैसाइ, पृ. २७३-७४
- ४ जुओ क्षेमकीर्ति.
- ५ तत्र प्रस्तुतोपाङ्गस्य वृत्तिः श्रीमलयगिरिकृतापि संप्रति कालदोषेण व्यवच्छिन्ना, जैप्रशा, पृ. २ वळी जुओ जिस्को, पृ. १३०-३१.
 - ६ जिस्को, पृ. १३०
 - ७ जैसाइ, पृ. २७४; जिरको, पृ. ३१२
 - ८ नत्वा गुरुपदकमलं प्रभावतस्तस्य मनदशक्तिरिप । आवर्यकिनिर्युक्ति विदृणोमि यथाऽऽगमं स्पष्टम् ॥३॥ वद्यपि विदृतयोऽस्याः सन्ति विश्वित्रास्तथापि विषमास्ताः । सम्प्रति जनो हि जडघीर्भूयानिति विदृतिसंरम्मः ॥४॥

आम पृ. १

९ जुओ जिनभटाचार्य

- १० ज्योकम, पृ १२१, १८६
- ११ पिनिम, पृ. ४२, ६२, ८१
- १२ जीम, ष्ट. ४, १५, १८६, १९४, **१००,** २०४, **२०५,** २.९, २१०, २१३, २१४, १३१, ३२१, ३५४, ४३८, ४४४, ४५०, ४५२, ४५७, इत्यादि.
- १३ राप्रम, ष्ट. ६२, ६४, ६८, ६९, ७०, ७१, ७५, ७९, ९३, इत्यादि.
 - १४ प्रम, पृ. ६११; नैम, पृ. २५०
 - ९५ नंस, पू. १९३; पिनिस, पू. २३
 - १६ ज्योकम, पृ. ५६-५७, १०१, १०७
- १७ मलयगिरिप्रमृतिव्याकरणप्रणीतेन लक्षणेन संस्कारमापादितं वृचन संस्कृतम् , वृक्तम्, पृ. ३.
 - १८ सूप्रम, २२३
 - १९ प्रम, पृ. २९८; ज्योकम, पृ. ८१
 - २० श्राप्तर, पृ. ३५
 - ३१ जंप्रशा, पृ. १२७, २१६
 - २२ जंप्रशा, षृ. २२९, ३४८, ३५७
 - २३ जंप्रशा, पृ. ८७

मलयपद्रण

सीपारकनी पासे आवेलुं शहेर. ए वेपारनुं मथक हतुं. एक सार्थवाह हजार वृषभ उपर माल भरीने त्यां गयो हतो.

मुंबई पासेनुं मलाड आ कदाचित् होय एवो तर्क थई शके. जो के एने पाटे कशो अतिहासिक आधार नथी.

> १ वसहाणं सहस्सेहिं सत्थवाहु व्य सी गओ । शलमग्गेण सोपारासन्तं मलयपष्टणं ॥ श्राप्रार, पृ ६६

महाकाल

अवन्तिसुकुनाछना पुत्रे उज्जयिनीमां पोताना पिताना मरणस्थान

१३२] [महाकाल

उपर बंधावेलुं देवमन्दिर 'महाकाल' तरीके ओळखाय है.

जुओ अवन्तिसुकुमाल

महागिरि आर्थ

स्थूलभद्रस्वामीना वे शिष्यो आये महागिरि अने आर्य सहस्ती नामे हता. एमां महागिरि सहस्तीना उपाध्याय हता. समय जतां महागिरिए साधुगण आर्थ सहस्तीने सोप्यो, अने ए काळे जिनकल्पनो विच्छेद थयो होवाथी गच्छनिश्रामां रहीने तेओ जिनकल्पने योग्य वृत्तिथी विहार करवा लाग्या. एक वार तेओ विहार करता पाटलिपुत्र गया. ए समये आर्थ सुहस्ती पण त्यां हता. पाटलिपुत्रनी वसुमूर्ति नामे एक श्रेष्ठी आर्य सुहस्तीना उपदेशथी श्रावक थयो हतो. एनां कुटुं-बीओने उपदेश आपवा भाटे आर्थ सुहस्ती एने घेर गया हता. ए वखते आर्य महागिरि भिक्षाने माटे त्यां आवी चढचा. आर्य सहस्तीए एमने वंदन कर्युं. आथी श्रेष्ठीए एमने विशे प्रश्न करतां सहस्तीए कहां के 'तेओ मारा गुरु छे.' आ सांमळीने श्रेष्ठीए पोतानां माण-सोने कहुं के 'ज्योरे आ साधु आने त्यारे--आ बधुं त्याग करवा ष्टायक भक्तपान छे-एम कहीने तमारे तेमने बहोराववुं.' बीजे दिवसे आर्य महागिरि आव्या खरा, पण आम कृत्रिम रीते वहोस्ववामां आवतां अन्न-पाणीमांशी कशुं पण तेममे लेवा लायक लाग्युं नहि. उपाश्रयमां पाछा आवीने तेमणे आर्थ सुहस्तीने कहुं के 'तमे गई काले मारो विनय करीने मारे माटे अनेषणा करी दीधी छे. माटे फरी वार तमारे आवं न करवं. ' सुहस्तीए महागिरिनी क्षमा मागी.'

कडक आचारपालन माटेना आर्थ महागिरिना आग्रहने लगतो बीजो एक बृत्तान्त पण मळे छे, जे अनुसार तेमणे आर्थ सहस्ती साथे आहारपाणी लेवानुं बंध कर्युं हतुं :

्र बीबंतस्थामीनी प्रतिमाने वंदन करवा माटे आर्थे सुहस्ती

उज्जयिनीमां आव्या हता. ए समये त्यां संप्रति सन्ना हतो. जीवंत-स्वामीनी रथयात्रामां रथनी सामे आर्य सुहस्तीने जोईने राजाने जाति-स्मरण थयुं अने पूर्वजन्ममां संप्रति पोतानो शिष्य होत्रानो बृत्तान्त आर्य सहस्तीए तेने कहाो. तेमना उपदेशयी संप्रतिए श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो. पछी राजाए पोताना रसोयाओने आज्ञा करी के 'रसोडामां जे कंई वधे ते अकृत अने अकारितना अर्थो साधुओने तमारे आपर्वु. ' बळी नगरना कंदोईओ, तेलीओ, छारा वेचनाराध्रो, होशीओ वगेरेने तेणे सूचना करो के 'साधुओने जे जोईए ते तमारे आपवुं; एनुं भूल्य हुं आपीश.' आ पछी साधुओने इन्छानुसार आहार अने वस्न मळवा मंडचां. आथी आर्थ महागिरिए आर्थ सुहस्ती-ने कह्युं के 'प्रचुर आहार वस्नादि साधुओंने मळे छे; माटे राजानी प्रेरणाश्री तो लोको आपता नथी ने ! ए बाबतमां तपास करो.' आर्य सुहस्ती बधुं जाणता हता, छतां पौताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी तेओ बोल्या के 'राजधर्मनुं अनुकरण करती प्रजा ज आ आहारादि आपे हो. एटले आर्य महागिरिए कहां: 'तमे बहुश्रुत होवा छतां <u>थोताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी आवुं बोलो छो, माटे हवेथी आपणे</u> बन्ने जुदा आहार लईशुं. १ पाछळथी आर्य सहस्तीए पोताना अप-राधनी क्षमा मागी हती अने बन्ने आचार्यो फरी वार सांभोगिक-साथे आहार लेता-श्रया हता.

आर्थ महागिरि दशाणीपुरनी पासे आवेला गजाप्रपदमां अनशन करीने काळधमें पाम्या हता.

जुओ सम्पति, सुइस्ती आर्य

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. १५५-५५

२ वृक्षमा (गा. २१४२) तथा वृक्ष्मे, माग ३, ए. ९१७-९१; निचू, भाग २, ए. ४३७-३८. वळी निचू, भाग ५, ए. १७१४-१६ (भा. मा. ५६९४-५७०८ उपस्मी चूर्णि) मां ए ज वृत्तान्त संक्षेपमां छे.

जीवन्तस्वामीनी प्रतिमा संबंधमां जुओं 'जर्नल ओफ धी ओरियेन्टल इन्स्टिटयुट,' प्रन्थ १, पृ ७२-७९ मां श्री उमाकान्त शाहनो लेख 'ए युनिक इमेज ओफ जीवन्तस्वामी.'

भाचू उत्तर भाग, पृ.१५७; आम, पृ. ४६८, जुओ गजाप्रपद

महाराष्ट्र

पश्चिम भारतनो महाराष्ट्र प्रान्त. महाराष्ट्रनी गणना जैन आगम-साहित्यमां अनायं देशोमां करेली छे. महाराष्ट्र, कुडुक आदि अनार्य देशोमां जैन साधुओनो विहार राजा संप्रतिना प्रयत्नने लीधे शक्य बन्यो हतो.

'प्रश्नव्याकरण सूत्र 'मां^२ 'महाराष्ट्र ' (प्रा. मरहट्ट) जातिने म्लेच्छ जाति तरीके गणावेली छे.

म्लेच्छ जाति तरं के 'मरहदू'नो उल्लेख जवल्ले ज मळे छे ए दृष्टिए आ नोधपात्र छे. अहीं 'म्लेच्छ' शब्द वडे कां तो परदेशी जाति के कां तो अहींना भूळ वतनी—बेमांथी एक उदिष्ट होय. भारत-ना बीजा अनेक प्रान्तोनां नाम जेम ते ते जातिओ उपरथी छे तेम महाराष्ट्रनुं नाम पण आ 'मरहदु' जाति उपरथी पडेलुं छे.

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां मागध, मालव, सौराष्ट्र अने कोंकणनी साथे महाराष्ट्रनो उल्लेख छे. महाराष्ट्रीओनी वाचालता प्रसिद्ध हती. 'व्यवहार सूत्र'ना भाष्यमां कह्युं छे के—अकूर मतवाळो आंध्रवासी, अवाचाल महाराष्ट्री, अने निष्पाप कोसलवासी सोमां एक पण देखातो नथी.

महाराष्ट्रना विविध रिवाजो अने रूढिओना उल्लेख आगम-साहित्यमां छे. 'महाराष्ट्र देशमां मद्यनी दुकानोमां मद्य होय के न होय, पण तेनी उपर ध्वज फरकाववामां आवे छे, जे जोईने भिक्षाचर आदि त्यां जता नथी. महाराष्ट्र देशमां ठंडा पाणीमां दीवडा मुक- वामां आवे छे. महाराष्ट्रमां प्रसिद्ध कोल्लुकचक्रपरंपरा-शेरडी पीलवाना कोलुनां चक्रोनो पण निर्देश छे. पालंक (गुज. पालख)नुं शाक महाराष्ट्र अने गोल्ल देशमां प्रसिद्ध छे. महाराष्ट्रमां नगन साधुनुं पुंश्चिह्क वीधीने एमां कडी नाखवानो रिवाज हतो. महाराष्ट्रमां कल्पपाल-कलालने बहिष्कृत गणवामां आवतो नहोतो; एनी साधे बीजाओ भोजन लई शकता. नीलकंबल आदि ऊननां वस्त्रो महाराष्ट्र देशमां घणां मोघां होय छे, छतां शियाळामां साधुओए ए धारण करवां, केम के ए सिवाय शीतनुं निवारण थतुं नथी. महाराष्ट्रमां भादरवा सुद पडवाना दिवसे 'श्रमणप्जा' नामे उत्सव थतो. एमां लोको साधु-ओने वहोराबीने अटुमना उपवासनुं पारणुं करता. करता. कालकाचार्य प्रतिष्टानमां पर्युषण कर्युं त्यारथी आ उत्सवनो प्रारंभ थयो हतो. वितिष्टानमां पर्युषण कर्युं त्यारथी आ उत्सवनो प्रारंभ थयो हतो.

महाराष्ट्रनी भाषाने लगता पण केटलाक उल्लेखो छे. मालव-महाराष्ट्रादि देशप्रसिद्ध विविध भाषाओ बोलवाथी सांभळनारने हास्य उत्पन्न थाय छे. महाराष्ट्रनी भाषामां खीने 'माउग्गाम,'" ह्ननी पूणीने 'पेछ,'" तथा पूणी बनाववा माटेनी काष्टशलाकाने 'पेछ-करण'" कहे छे. 'दशवैकालिक सूत्र'नी चूर्णि अनुसार, महाराष्ट्रमां संबोधनार्थे 'अण्ण' शब्द वपराय छे;' ए बतावे छे के अर्वाचीन मराठी शब्द 'अण्णा'नो प्रयोग ओछामां ओछुं आठमा सैका जेटला प्राचीन कालमां जाय छे.

'चोहिति' अथवा 'कुणिय' जेवा राब्दो बोलनार महाराष्ट्र प्रदेशमां हास्यपात्र थाय छे, ' एम 'निशीथचूर्णि' लखे छे. एनो अर्थ ए थयो के 'निशीथचूर्णि' ज्यां रचाई ए प्राचीन गुर्जर देशमां लगभग आठमा सैका सुधी आ शब्दो अश्लील गणता नहोता.

१. जुओ सम्प्रति.

२ प्रव्या (अधर्मद्वार), पृ. १४. तेमांनु अवतरण- x x x इमे य बहवे बहवे मिलक्खुजाती, के ते? सक-जवण-सबर-बद्धर-माय- मुक्ड-उद-भडग-तिस्थि-पक्षणिय -कुलक्षत-गोड- सीह्रल- पारस-कोंचध-दिवल-बिल्लद-पुलिद-अरोस-डोब-पोक्षण - गंधहारग-बह्नलीय-जल्ल- रोम-मास-बडस-मल्या-चुंचुया य चूलिया कोंकणगा मेत-पण्डव-मालव-महुर-भामासिया अणक्क-चीण-ल्हासिय-खस-खासिया-नेहुर-मरहृहु-मुहिअ-भारब-डोबिलग-कुहण-केकय-हूण-रोमग-क्क-मक्षण चिलासिवस्यवासी य पाबमतिणो × × ×. आ उपरांत 'प्रज्ञापना सूत्र ' (पद १, सू ३७) पत्र ५४ मां म्लेच्छ जातिओनी एक यादी छे, पण एमां 'मरहृद्व' नथी.

३ अनु, पृ १४३

४ भंध अकूरमययं अवि य मरहृदृयं अवोगिल्लं । कोसलयं अपावं सएसु एकं न पेच्छामो ॥ व्यमा, गा. १२६

ह्य्यकना 'अलंकारसर्वस्व ' (ई. स. नो १२ मो सैको) मां व्याजस्तुति अलंकारना उदाहरण तरीके आपेला एक श्लोकमां दाक्षिणात्यनी प्रकृतिमुखरतानो उल्लेख छे, एमां श्लोकनो कर्ता पोते दाक्षिणात्य जणाय छे-—

कि द्वतान्तैः परग्रहगतै; कि तु नाहं समर्थे— स्तूष्णीं स्थातुं प्रकृतिमुखरी दाक्षिणात्यः स्वभावः । गेहे गेहे विपणिषु तथा चस्वरे पानगोष्ठया— मुन्मत्तेव श्रमति भवतो वक्षमा हन्त कीर्तिः ॥

५ निचू (भा गा ११४७ उपर), भाग २, पृ. २५७; बुकक्को, भाग ३, पृ. ९२१

- ६ निचू, भाग ५, पृ. १९५३
- ७ बुकम, भाग १, पृ. १६७
- ८ बुकक्षे, भाग २, पृ. ३०३. गोल्ल देश ए गंतुर जिल्लामां गल्लाह नदीने किनारे आवेल गोली आसपासनो प्रदेश छे एवो केटलाक विद्वानोनो मत छे (जैन, 'लाइफ इन एन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ. २८६). आ विशे कदाच मतभेद संभवे तोपण गोल्ल देश दक्षिणमां होवा विशे शंका नथी, केमके ए शब्द ज द्राविड भाषानो छे. तामिल अने कन्नडमां 'गोल्ल' नो अर्थ 'भरवाड 'थाय छे. चंद्रगुप्तनो गुरु चाणक्य मोल्ल देशना चणक नामे गामनो वतनी हतो एवा उल्लेखो आगम-साहित्यमां छे (जुओ 'अभिधानराजेन्द्र,' माग २, पृ. १०११).

माध्यभिका]

चौलुक्ययुगना गुजरातना शिलालेखो अने साहित्यमां वणिकोनी एक 'गरूलक' जातिनो उस्केख छे, एनो संबंध दक्षिण भारत साथे इसे !

महाराष्ट्रविषये सागारिकं विद्वा तत्र विण्टकः प्रक्षिप्यते, बुकक्षे,
 भाग ३, पृ. ७३०

यद्वा कस्यापि महाराष्ट्रादिविषयोत्पन्नस्य साधोरङ्गादानं वेण्टकविद्धं, ततस्तद् दृष्ट्वा ब्रुवते—कथं नु नामासौ साधुधर्म न करिष्यति यस्थेयन्तः कर्णा विद्धाः ? ए ज. भाग ३, पृ. ७४१

१० ए ज, भाग २, पृ. ३८३-८४

११ एज, भाग ४, पृ. १०७४

१२ निच्, भाग २, पृ. ६३३

१३ जुओ कालकाचार्य-२.

१३ बुकक्षे, भाग ६, पृ. १६७०

१५ निचू, भाग ३, पृ. ४४६

१६ विको, पृ. ९२२

१७ एज

१८ दवैचू, पृ. २५०

१९ निचू, भाग ३, ए. ५५५

पहिरावण

कोंकणनी कोई नदी.

जुओ डिम्मरेलक

मात्स्यिक मल्ल

सोपारकनो एक मछ, जेने उज्जियनीना अष्टण मछने हाथे तालीम पामेला फलही मल्ले पराजित कर्यो हतो.

जुओ **अट्टण**

माध्यमिका

माध्यमिका नगरीनो उल्लेख ' विपाक सूत्र 'मां छे.

१३८] [माध्यमिका.

चितोडनी दक्षिणे आवेछं 'नागरी' नामे स्थान माध्यमिका छे एवो विद्वानोनो मत छे. हाल पण माध्यमिकामां केटलाक विरल प्राचीन अवशेषो छे.

- १ विसू, २-५
 - २ ज्यांडि, पृ. ११६

माछव-१

एक अनार्थ जाति, जेना नाम उपरथी अवन्ति जनपद मालव तरीके प्रसिद्ध थयो े आगमसाहित्यमां 'मालव' जातिने 'म्लेच्ल जाति 'रे तथा 'मालव ' देशने 'म्लेच्छ देश ' कह्यो छे. आ मालव म्छेच्छो पर्वतमाळाओमां रहेता अने वस्तीमां आवोने माणसोनुं हरण करी जता. 'निशीथचूर्णि' कहे छे के तेओ मालव नामना पर्वत उपर विषम प्रवेशमां रहेता. केटलाक ग्रन्थोमां 'मालव ' तेम ज 'बोधिक 'ने अभिन्न गण्या छे तथा तेओना आक्रमणनो भय आवी पडतां शीघ्र देशान्तर करवुं एवुं सूचन करेछुं छे. मालवने 'स्तेन '— चोर तेम ज ' उज्जयिनीतस्कर ' कहा छे. आ बीजा विशेषण उपरथी तेओ उज्जयिनी आसपासना प्रदेश उपर वारंवार आक्रमण करता ए हकीकत सूचित थाय छे. उज्जियनीना एक श्रावकपुत्रने चोर हरी गया हता अने तेने 'मालवक '-मालवदेशमां सूपकारने त्यां वेच्यों हतो. एवं कथानक मळे छे.ं मालव जातिना आक्रमणकारोनी उज्जयिनीमां केटली धाक हती एनं एक विशिष्ट दृष्टान्त 'ओधनिर्युक्ति 'ना भाष्यमां छे, जेनुं स्पष्टीकरण दोणाचार्यनी टीका करे छे. ए दृष्टान्त बास्तविक न होय तो पण परिस्थितिनुं द्योतक तो अवश्य छे. द्रोणाचार्य छखे छे: उज्जियनीमां वारंवार मालवोनं आक्रमण थतं अने तेओ मनुष्योने हरी जता एक वार कूनामां रहेंटनी माळा पडी गई (माला पतिता); कोई बोल्युं के 'माळा पडी.' बीजो कोई संभ्रममां एम समज्यों के 'मालवो आव्या छे' (मालवाः पितताः); अने एम नासभाग थई रही.' अणसमजुने मडकाववा माटे पण 'मालवस्तेन आव्या छे!' (मालवतेणा पिडया) एम कोई बोलतुं एवो निर्देश मळे छे.' आ उल्लेखो बतावे छे के बोलचालनी प्राकृतमां 'मालवाः' ने 'माला' पण कहेता हरो. 'ओघनिर्युक्ति' (गा. २६) मां 'सुभिए मालुज्जेणी पलायणे जो जओ तुरियं' ए प्रमाणे 'मालव'ने बदले 'माल'नो उल्लेख छे, ते पण आ अनुमाननुं समर्थन करे छे. हवे बीजी तरफ जोईए तो, संस्कृतमां (अने केटलीक अर्वाचीन भारतीय भाषाओमां) 'माल' शब्दनो अर्थ 'घरनो उपरनो भाग' थाय छे. बंगाळीमां 'मालभूभि'नो अर्थ 'पार्वत्य मूमि, उच्च प्रदेश ' थाय छे, अने पिश्चम बंगाळना 'मालभूम ' नामना द्धंगराळ जिल्लामां रहेती एक आदिवासी जाति पण 'माल ' जाति कहेवाय छे. प्राचीन गुर्जर देशना पाटनगर 'भिल्लमाल 'ना उत्तर अंगमां 'माल 'नो संबंध पण ए माल जाति साथे होय ए शक्य छे.

कोई वार समयस्चिकतावाळा माणसो हिंमत करीने आ छुटाराने केवी रीते पराजित करता एना पण उल्लेख छेः कोई गाम उपर मालव-शबरोना सैन्ये आक्रमण कर्ये हतुं. एमांना केटलाक बोधिकोए केटलीक साध्वीओनुं तथा एक क्षुलक—नाना साधुनुं अपहरण कर्ये. ए चोरो पोतानामांथी एकने साध्वीओ तथा क्षुलकनी सोंपणी करीने बीजांनुं हरण करवा माटे गया. हवे, ए एक चोर तरस्यो थतां पाणी पीवा माटे क्यामां कतर्यों. क्षुलके विचार कर्यों के 'अमने आटलां वधांने आ एक चोर छुं करी शक्वानो छे?' तेणे साध्वीओने कह्युं के 'आपणे आ चोर उपर पाषाणपुंज नाखीए.' साध्वीओए गमराईने ना पाडी, परन्तु क्षुलके तो एक मोटो पत्थर पेला चोर उपर नाख्यों, एटले वधी साध्वीओए पण एक साथे पथ्थरों नाख्या. एनाथी चोर मरण पाम्यों, अने क्षुलक साध्वीओने लईने सुरक्षित स्थळे गयों. 'श

आ माल्रवो ज्यारे पकडाता त्यारे तेमने हेडमां नाखवामां आवता. " माल्रवो स्वभावथी ज परुष वाणी बोलनारा हता एवो उल्लेख हो. "

मालवो ('मालोइ')ना जे गणसत्ताक राज्यनो सिकंद्रनी सवारीना काळे (ई. स. पूर्वे चोथो सैको) निर्देश छे ते पंजाबमां मुलताननी आसपास आवेलुं हतुं एवो विद्वानोनो मत छे. " आगम-साहित्यनो मालवदेश एनाथो अभिन्न छे के केम ए निश्चितपणे कहे वुं मुश्केल छे. परन्तु पोताना मूळ प्रदेशमांथी पर्यटन करता मालवो उज्जियनी आसपासनां जंगलोमां आव्या हशे अने त्यांथी उज्जियनी अने अवन्ति जनपदना प्रदेशमां चोरी, लूंट अने मनुष्यहरण करता हशे, अने कालकमे आ जातिनुं वर्चस वधतां अवंतिने पण 'मालव' नाम मळ्युं हशे.

जुओ अवन्ति, उज्जयिनी, बोधिक, मथुरा

- १ जुओ उङजयिनी.
- २ प्रन्या, पृ. १४; प्रस्, पृ. ५४. वळी जुलो स्कृशी, पृ. १२३, २०७.
- ३ द्वितीयमङ्ग आर्थदेशे मालवनामकम्लेच्छदेशेन, व्यम, भाग ३, पू. १२२
- ४ 'बोहिगा' मालवादिमेच्छा, ते पव्वयमालेसु ठिया माणुसाणि इरंति, निचू, भाग ५, पृ. १११०
- मालवा म्लेच्छिविशेषाः शरीरापहारिणः...च्यम (उद्दे ० ४ उपरनी वृत्ति), पृ. १३
- ५ मालवगो पञ्चतो तस्युविरं विसमेते तेणया वसंति, ते मालवतेणा । निच्, भाग २, ४. २९०
- ६ बोधिकाः मालवस्तेनाः, म्लेच्छाः पारसीकादयः तदादीनां भये समुपस्थिते शीघ्रं देशान्तरं गन्तन्यम् । बृकक्षे, भाग ३, पृ. ८८०

श्रीरेरायिंकाणामेकस्य च क्षुल्लकस्य **इ**रणं कृतम् । न्यम (उद्दे० ७ उपरनी -वृत्ति), पृ. ७१

बोधिक अने मालवनी अभिन्नता संबंधमा वळी जुओ टि. ४.

- ७ जीकमा, गा. ९३३
- ८ मालवा-उज्जयिनीतस्वराः । जीवच्या, पृ. ४३
- ९ उज्जेणीए **धा**वगस्स सुतो चोरे**हिं इ**रिडं मालवके सूयगारस्स हत्ये विक्कीतो, उच्, पृ. १७४

उउजेणीए सावगस्तो चोरेहिं हरिउं मालवके सूयगारस्त हत्थे विक्रीतो, उशा, पृ. २९४. आचू (उत्तर भाग, पृ. २८३) मां मालव देशनो उल्लेख नथी, पण उठजयिनीमांथी छोकराओने मालवो उपादी गया हता अने एमांथी श्रावकना छोकराने रसोयाए खरीयो हतो, एम कहां छे.

- १० ओनिभा गा. २६; ओनिद्री, पृ. १९
- ११ निचू, भाग २, पृ. २९०
- १२ व्यभा, गा. ४११; व्यम (उद्दे ७ ७ उपरनी वृत्ति), पृ. ७१
- १३ प्रायेण णिगलबंधी हिडिबंधणादिणा विवरेण करेति, जहा मालवाण, स्कुचू, पृ. ३६४
- ६४ द्रन्यतो नाम-न दुष्टभावतया पर्व भगन्ति किन्तु तत्स्वाभाव्यात्, यथा मालगः परुषवाक्या भवन्ति । बृकक्षे, भाग ६, ए. १६१९

१५ ज्योहि, पृ. १२२. जैन आगमसाहित्य सिवायनां साधनोमांथी प्राप्त थता मालव जातिना वृत्तान्त माटे जुओ 'ट्राइब्स इन ॲन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ. ६०-६५.

माळव-२

मध्य भारतनो माळवा प्रान्त. 'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रसंयोगनी वात करतां मागध, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र अने कोंकणनी साथे माछवकनो उल्लेख कर्यों छे.' स्पष्ट छे के अहीं 'माछवक' बढे जंगछी माछव-जातिना मूळ पहाडी वतननो निह, पण संभवतः अत्यारना माळवा प्रान्तनो निर्देश छे (जुओ माछव-१). ए रीते 'अनुयोगद्वार सूत्र'ना रचनाकाळे अवन्ति जनपद माटे 'मालव' नाम प्रचारमां होवुं जोईए एवुं अनुमान करी राकाय. 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेलां 'राज्येदेरानाम'मां मालव पण छे.

मालवमां 'मंडक'—मांडा नामनो खाद्य पदिष्य प्रसिद्ध छे. माल-वादिमां मसूर धान्यने 'चवलग' कहेवामां आवे छे. मसूर अने तुवेर ए वे धान्या माळवामां जाणीतां छे. त्रिपुटक ए पण माळवामां प्रसिद्ध धान्यविशेष छे. अळसी तथा एमांथी बनतुं वस्न ए बन्ने माळवामां जाणीतां छे. 'मन होय तो माळवे जवाय' एम माळवानुं दूरव स्ववती कहेवत गुजरातीमां छे, एनी साथे सरखावी शकाय एवो एक स्लोक 'कल्पसूत्र'नी केटलीक टीकाओमां छे. इन्द्रभूति, जेओ पळीथी महावीरना प्रथम गणधर थवाना छे तेओ महावीर पासे वाद करवा माटे जतां पोतानी विद्वत्ता विशे अभिमानपूर्वक कहे छे:

यमस्य मालवो दूरे कि स्थात् को वा वचस्विनः। अपोषितो रसो नूनं किमजेयं च चक्रिणः।।

(यमने माटे माळवा शुं दूर छे ? वचस्वी पुरुष कया रसनुं पोष्ण करतो नथी ? चक्रधारी विष्णु माटे खेरेखर शुं अजेय छे ?)

जुओ अवन्ति, उज्जयिनी

- १ अनु, पृ. १४३
- २ जुओ उज्जियिनी.
- ३ जुओ गुर्जर.
- ४ पिनिम, पृ. ७३
- ५ दवेच, पृ. २१२
- ६ श्राप्तर, पू. ९९
- ७ ए अ
 - ८ निवृ, भाग २, ष्ट. २३६; आम, प्ट. २६५; अनुहे, प्ट. ३५

९ कस, पृ. ३९९; कदी, पृ. १०४

माहेश्वर

जुओ माहेश्वरी

माहेश्वरी

माहेश्वरीनी स्थापना विशेनी कथा आ प्रमाणे छे:

पोतनपुरना राजा प्रजापितनं भद्रा नामे राणीथी अचल नामे पुत्र थयो हतो. अचल बलदेव हतो प्रजापितए पोतानी मृगावती नामे पुत्री साथे गान्धविविवाह कर्यो हतो; आश्री भद्रा पोताना पुत्र अचल साथे दक्षिणापथ चाली गई हती अने त्यां तेणे माहेश्वरी नामे नगरो वसाथी हती. ए नगरी मोटा अश्वर्यवाळी होवाथी माहेश्वरी (प्रा. माहेरसरी) कहेवाती हती. अचल पोतानी माताने ए नगर संपोने पालो पितानी पासे गयो हतो.

माहेश्वर, श्रीमाल अने उज्जियनीमां लोको समृहमां एकत्र शईने सुरापान करे छे एवो उल्लेख मळे छे. पुरिकापुरीना बौद्ध राजाए पर्युषण पर्वमां जिनपूजामां पुष्पोनो निषेध कर्यो हतो, तेथी वजस्वामी आकाशमार्गे माहेश्वरी जईने पोताना पिताना मित्र एक माळो पासेथी पुष्पो लाज्या हता. व

माहेश्वरी ए ज कार्तवीर्थनी माहिष्मती छे अने ते इन्दोरनी दक्षिणे चाळीस माईछ दूर नर्मदािकनारे आवेल महेश्वर अथवा महेश छे, एवो सामान्य मत छे. पण नर्मदातटे आवेल मान्धाताने पण माहिष्मती गणवामां आवे छे, उथारे श्री. क. मा. मुनशीना मत प्रमाणे हालनुं भरूच ते ज कार्तवीर्थनी माहिष्मती छे.

- १ आचू, पूर्व भाग, ष्ट. २३२
- २ आसूचू, पृ. ३३३. वळी जुओ उन्जियिनी.
- ३ कसु, पृ. ५११-१३; किक, पृ. १७०-७१

१४४] [मूळदेव

- ४ ज्यांडि, पृ १२०
- ५ पुगु, षृ. १६०
- ६ 'अतिहासिक संशोधन,' पृ. ५६१

मूलदेव

एक प्रसिद्ध विट अने ५तें, जे पाछळथी वेणातट नगरनो राजा थयो हतो. 'उत्तराष्ययन सूत्र'नी चूर्णि तथा ते उपरनी शान्तिसूरि अने नेमि-चन्द्रनी वृत्तिओमां मुलदेवनो वृत्तान्त प्रमाणमां विस्तारथी अने विगतथी आपेलो छे. चूर्णि अने शान्तिसूरि अनुसार, मूलदेव उज्जयिनीनो विट हतो. (नेमिचन्द्रना कथन मुजब, मूलदेव पाटलिपुत्रनो राजकुमार हतो अने पोताना पिताथी रिसाईने उज्जयिनीमां आत्रीने रह्यो हतो.) ते एक मोटो चतकार होवा उपरांत गीतकला अने मर्दनकलामां पण निपण हतो. उज्जियनीनी एक सुप्रसिद्ध गणिका देवदत्ता तेनी साथे प्रेममां पडी हती, परन्तु गणिकानी माता अचल नामे बोजा एक धनिक वणिकनो पक्ष करती होवाने कारणे मूलदेवने उज्जयिनी छोडीने चाल्यां जवुं पड्यं हतुं. पछी ए दक्षिणमां आवेला वेणातट नगरमां जर्डने रह्यो. त्यां कोईना घरमां खातर पाडतो हतो त्यारे नगररक्षकोए एने पकडी लीघो अने वधस्थान उपर लई जवा मांडचो. ए दिवसे नगरनो राजा अपुत्र मरण पाम्यो हतो. मंत्रीओ नवा राजानी शोधमां हता. ए माटे अधिवासित करेलो अश्व मूलदेव पासे आवी कभो. (नेमिचन्द्रना कथन मुजब, मुल-देवने जोईने हाथीए गर्जना करी, अश्वे हेषारव कर्यो, मृंगारे अभिषेक क्यों, चामरे वीजन कर्युं, अने कमळ तेनी उपर आवी रह्युं; ए प्रमाणे पांच दिव्य थयां.) एटले तेनी राजा तरीके अभिषेक थयो. पछी मलदेवे उज्जियनीना विकास राजा उपर पत्र लखीने तथा अनेक प्रकारनी भेट मोकलीने देवदत्ता गणिका पोताने सोंपवानी विनंति करी, अने विक्रम राजाए देवदत्तानी इच्छा जाण्या पछी, ते कबूल राखी. मूलदेव देवदत्तानी साथे सुखर्वक रहेवा छाग्यो. ए समये मंडिक नामे एक

मूलदेव] [१३५

चोर दिवसे लंगडा तूनारा तरीके रहेतो ने रात्रे शहेरमां खातर पाड़ीने लोकोने त्रास आपतो. एक वारना चोर मूलदेवे युक्तिप्रयुक्तिथी मंडिकने पकडचो अने तेनी पासेनुं बधुं द्रव्य लई लीधा पछी एने शूळीए चढाव्यो.

'व्यवहारस्त्र 'नां भाष्य तथा वृत्तिमां मूलदेवना राज्याभिषेकनो वृत्तान्त संक्षेपमां अने सहेज जुदी रीते आप्यो छे. वळी त्यां नगरनु नाम पण नथी. चोरी करतां पकडायेला मूलदेवनो वध करवानी राजाए आज्ञा करी हती, पण ए पछी तुरत ज राजा एकाएक मरण पाम्यो. राजा अपुत्र हतो, तेथी एनी पछी कोनो राज्याभिषेक करवो ए प्रश्न उपस्थित थयो. वैद्य अने मंत्रीए राजाना मरणनी वात गुप्त राखीने तथा राजा बोली शकता नथी एम जणावी, पडदामांथी राजानो हाथ लांबी करावी तेओ मूलदेवना अभिषेकनी सूचना करता होवानुं जणाव्युं. पछी एक वारनो आ चोर राजा थयो होवाथी सामंतो तेनुं योग्य सन्मान करता नहोता. राजदरबारमां पोतानी उपेक्षा करता सामंतोने जोईने मूलदेव बोल्यो के 'मारी आज्ञा पाळनार कोई छे के नहि !' ए समये तेना पुण्यप्रभावथी राज्यदेवता वडे अधिष्ठित अयेला चित्रमय प्रतीहारोए केटला ये सामंतोनां माथां कापी नाल्यां. आथी बाकीना सामंतो ताबे थई गया.

आचार्य हिरिभद्रस्रिए (िव. सं. ७५७-८२७=ई. स. ७०१-७०१) नर्म अने कटाक्षथी मरेलुं 'धूर्ताल्यान' नामे एक प्राकृत कथानक रच्युं छे, जेमां मूलदेव एक पात्र तरीके आवे छे आ धूर्ताल्याननुं वस्तु 'निशीथ सूत्र'नां भाष्य अने चूर्णिमां मळे छे. एमां मूलदेव, एलाबाढ, अने शश ए त्रण धूर्ती तथा खंडपाना नामे धूर्तानी वात छे. एमांना प्रत्येक धूर्तनी साथे बीजा पांचसो धूर्ती अने खंडपानानी साथे पांचसो धूर्ताओ हती. एक वार भरचोमासामां उज्जियनीनी उत्तरे आवेला जीणोंबानमां ए बधां ठंडीथी थरथरतां मूखे मरतां बेठां हतां त्यार मूलदेवे एम कह्युं के १४६] [मूलदेव

'आपणे दरेके पोतपोताना अनुभवो कहेवा, अने जेना अनुभवो खोटा पुरवार थाय तेणे आ धूर्तमंडळीने भोजन आपवुं. ' एमां त्रणे धूर्तीनी न मानी शकाय एवी वातोने पण बीजाओए ब्राह्मण शाक्षपुराणोमांनी ए प्रकारनी कथाओ रजू करी समर्थन आप्युं. आ पछो हरिभद्रसूरिना ' धूर्तांख्यान 'मां एम आवे छे के—खंडपानानी वातने कोई साची के खोटी कही शक्युं निह; सर्वेए हार स्वीकारी, अने पछी सौनी विनंतिधी खंडपानाए पोते भोजन पण आप्युं. पण ए बधुं निह वर्णवतां 'निशीध चूर्णि ' तो ' सेसं धुत्तक्खाणाणुसारेण णेयं (बाकीनुं ' धूर्तांख्यान ' प्रमाणे जाणी हेवुं) एम कहीने वात प्री करी छे छे. ' निशीध-चूर्णि 'नो समय पण ईसवी सनना सातमा सैकाधी अर्वाचीन नथी, एटछे ते जे 'धूर्तांख्यान 'नो उच्छेख कर छे ते हरिभद्रसूरिकृत होवानो संभव नथी. कां तो चूर्णिकार पासे बीजुं कोई प्राचीनतर प्राकृत ' धूर्तांख्यान ' होय अथवा आ धूर्तोनी होकप्रचित्त कथा जे पण ' धूर्तांख्यान ' कहेवाती होय, एनो उल्लेख तेमणे कर्यों होय

'आवश्यक सूत्र 'नी चूणिं अने वृत्तिमां मूलदेवना मित्र तरीके कंडरीकनुं नाम छे, जे हरिभद्रसूरिना ' घूर्ताख्यान 'मां एक पात्र तरीके छे. मूलदेवनां विदम्धता, घूर्तता अने बुद्धिचातुर्यनी कथाओ पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे छे. एक ठेकाणे बुद्धिवान पुरुषने 'मूलदेव जेवो ' कह्यो छे.

प्राचीन भारतनी लोककथामां अनर बनेलो आ मूलदेव खरेखर अतिहासिक न्यक्ति हरो एवो हैं। विन्टरनित्सनो मत छे; जो के मूलदेव विरोनो बधी वार्ताओ अतिहासिक हरो एवं कंई एमांथी फलित थतुं नथी. आगमेतर तेम ज जैनेतर संस्कृत—प्राकृत साहित्यमां मूलदेव विरोनां कथानको तथा एना मित्रोने लगता उल्लेखो संख्याबंध छे. राद्रक किना 'पक्षप्रामृतक भाण 'मां मूलदेव अने देवसेना (देव- दत्ता)नी प्रणयकथा आवे छे तथा ए भाणनो प्रवक्ता मूलदेवनो मित्र शश हो. महदेवनं 'कर्णीमृत' एवं नाम पण एमां हो. महाकवि बाणनी 'कादंबरी 'मां विन्ध्याटवीना वर्णनमां एक श्रिष्ट वाक्यखंडमां कर्णीप्रत (मूलदेव) अने तेना त्रण मित्रो-विपुल, अचल अने राशनो उन्लेख हो. काश्मीरी सोमदेव भट्टकृत ' कथासरित्सागर 'ना 'विषमशील लंबक 'नी छेल्ली वार्तामां-' स्त्रीमात्र कंई नठारी होती नथी. बधे कंई विषवश्लीओ होती नथी: अतिमुक्तलता जेत्री आम्रने वळगनारी वेलोओ पण होय छे '-ए सूत्र पुरवार करवा माटे मूलदेव पोताना ज रंगीला जीवननो एक प्रसंग राजा विक्रमादित्यने कही संभळावे छे, एमां पण मूलदेवनी साथे एनो मित्र शश छे. सं १२५५=ई. स. ११९९ मां रचायेलं पूर्णभद्र मुनिनं ' पंचाल्यान ', जे ' पंचतंत्र 'नं ज एक अलंकत संस्करण छे तेमां (तंत्र १, कथा १०) मूलदेव विशेनो एक रसप्रद उल्लेख छे: एक राजानी पथारीमां जू रहेती हती त्यां आवीने एक माकणे पण पोताने रहेवा देवानी विनंति करी. " जूए दाक्षिण्यथी माकणनी विनंति स्वीकारी, कारण के एक वार राजाने मूलदेवनं कथानक कहेवामां आवतुं हतुं त्यारे चादरना एक मागमां रहेली जूए ते सांभळ्यं हत्. एमां मूलदेवे देवदत्ता गणिकाने कह्यं हतुं के 'पगमां पद्धीने करेली विनंति पण जे मानतो नथी तेना उपर ब्रह्मा, विष्णु अने महादेव त्रणे कोपायमान थाय छे.' ए वचन संभारीने जुए माकणनी विनंति स्वीकारी. "

एक प्रकारनी गुप्त सांकेतिक भाषा मूलदेवप्रणीत होवाने कारणे 'मूलदेवी 'नामथी ओळखाती (जुओ कोऊहल-कृत 'लीलावई-कहा 'नुं संस्कृत टिप्पण, पृ. २८).

वळी मूलदेवने स्तेयशास अथवा चोरशास्त्रनो प्रवर्तक मानवामां आवे छे. " एने मूलश्री, मूलभद्र, करटक, कलांकुर, खरपट, कर्णीमुत आदि नामोश्री संस्कृत साहित्यमां ओळखनामां आवे छे. ईसवी सनना

सातमा शतकना पूर्वार्धमां श्रयेला महेन्द्रविकमवर्माकृत 'मत्तविलास प्रहसन' (पृ. १५)मां 'खरपटने नमस्कार एम कहो, जेणे चोर-शास रच्युं!' एवो उल्हेख छे. दंडीना 'दशकुमारचरित' (उच्छ्वास र)मां चोरीनो धंधो स्वीकारनार एक पात्र 'कर्णीसुते उपदेशेला मार्गमां में बुद्धि चलावी!' एम कहे छे.

आ छाक्षणिक उदाहरणोथी ए स्पष्ट थरो के जेनी आसपास छोकप्रिय वार्ताचको रचायां छे एवां थोडांक विचित्र अने बिछक्षण पात्रो पैकीनो एक मूछदेव छे. साहस, विद्य्यता अने मुक्त प्रणयमां राचती जे सृष्टि 'दशकुमारचरित ' जेवी प्राचीन कथाओना नायको रजू करे छे तेनो ज एक विशिष्ट प्रतिनिधि आ मूछदेव पण छे. एनी अने एना मित्रोनी कथाओ जेम जैन साहित्यमां छे तेम जैनेतर साहित्यमां पण छे, ए बतावे छे के वत्सराज उदयननी जीवनकथानी जेम मूछदेव विशेनी वातो पण प्राचीन भारतीय कथासाहित्यनुं एक जीवंत अंग हतुं.

- १ उच्, पृ. ११८-२१; उज्ञा, पृ. २१८-२२; उने, पृ. ५९-६५
- २ व्यभा, गा. १६८-६९; व्यम (उद्दे ४) नी बृत्ति, पृ. ३२
- ३ **इ**रिभद्रसूरिकृत 'धूर्ताख्यान ' मां आ त्रण उपरांत कंडरीक नामे चोथो धूर्त छे.
 - ४ निभा, गा. २९४; निच्, माग १, पृ. ९३-९५
 - ५ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४९
 - ६ आम, पृ. ५२१
- ७ आच्, पूर्व भाग, पृ. ५४९; आम, पृ. ५२९; दवैचू, पृ. ५५-५६; दवैद्या, पृ. ५७-५८, इत्यादि.
 - द तत्थ य एगी मूलदेवसरिसी मणुस्सी आगच्छइ, दवैचू, पृ. ५८
 - ९ 'हिस्टरी ओफ इन्डियन लिटरेचर,' भाग २, पृ. ४८८
 - ९० आ विशे वधु विस्तार माटे जुओं 'कुमार ना ३०० मा

अंकमां मारो लेख प्राचीन साहित्यमां चोरशास्त्र.' मेदपाट

मेवाड. मूयक नामे तृणविशेष मेवाडमां प्रसिद्ध छे.

१ प्रध्याअ, पृ. १२७

मोदेरक

उत्तर गुजरातनुं मोढेरा. मोढेरक आहारनो उल्लेख 'सूत्रकृतांग-सृत्र 'नी वृत्तिमां छे. 'ए ज सूत्रनी चूर्जिमां मोढेरकनो ए प्रकारनो उल्लेख छे, जेथी ए एक महत्त्वनुं स्थळ होवानुं सिद्ध थाय छे. '

पुराणोमां आ नगरनुं 'मोहेरक ' एवं नाम मळे छे. उ

- १ सूक्रशी, पृ. ३४३. जुओ खेट आहार.
- २ जहा पुढ़ी केणइ-केसि तुमं मोडेरगातो आगतो भवान्? सो भणइ-णाहं मोडेरगातो, भवद्शामायातो- । सुकृचू, पृ ३४८
- ३ जुओ पुगुमां मोहिरक. मोदेराना इतिहास माटे जुओ श्री. मणिलाल मू. मिस्नीकृत पुस्तिका 'मोदेरा.'

यम्रन

जुओ यवन

यवन

मथुरानो एक राजा. प्राकृतमां एनुं नाम जउण, जबुण अथवा जउणसेण मळे छे. एना मंत्रीनुं नाम वित्तिप्रय हतुं. ए राजा विशे आबी कथा छे: 'जउणाबंक' नामे उद्याममां आतापना हेता दंड नामे अणगारनो ए राजाए वध कथों हतो. दंड अणगार काळ करीने सिद्धिमां गया. तेमनो महिमा करवा आवेळा इन्द्रे राजाने कहुं के 'तुं दीक्षा छईश तो ज आ पापथी मुक्त थईश.' पळी राजाए स्थितिरो पासे दीक्षा छीधी.

जउण, जवुण आदिनुं^ड संस्कृत रूप 'अभिधानराजेन्द्र ' (प्रन्थ

8) तथा 'पाइअ—सद्द—महण्णवो 'ए सूचव्युं छे ते प्रमाणे 'यमुन ' एवुं पण जो के आपी शकाय, तथा मथुरा नगर यमुना नदीना तटे वसेलुं होई त्यांना राजाने पण 'यमुन' नाम आपवामां आवे एमां एक प्रकारनुं कथोचित सारत्य जणाय छे खरुं, परन्तु मने एनी 'यवन' एवी छाया वधारे उचित लागे छे. मथुरामां एक काळे यवन अर्थात् प्रीक राजाओनुं राज्य हतुं ए इतिहाससिद्ध छे. एवो कोई परदेशी राजा धार्मिक असहिष्णुताथी प्रेराई जैन साधुनो वध करे ए पण संभिवत छे. आगमसाहित्यमां आ राजाने 'परपक्ष' नो कह्यो छे, एथी एनुं परदेशीपणुं सूचवाय छे एम समजवुं ?

प विको, पृ २९४

२ आचू, उत्तर भाग, ष्ट. १५५. 'विविध तीर्थकल्प ' (ष्ट. १९) मां आ प्रसंगनो निर्देश छे, त्यां राजानुं नाम 'वकजउण' आप्युं छे अने राजाए साधु उपर घा करतां साधुने केवल ज्ञान थयुं एम कह्युं छे.

३ परपक्खो उ सपक्खे भइतो जह होइ जाउणराया तु । तं पुण अतिसयणाणी दिक्खतिथिकारणं नाउं ॥

निभा, गा. ३६७२

परपक्को सपक्के दुहो जहा मधुराए **जउणराया**, निच् (उद्दे० ११), पृ. ७४३

मधुरा नगरी सबुणो राया, यदुणावक उज्जाणं, आचू, उत्तर भाग, पृ. १५५

महुराए जडणसेजो राया, चित्तप्पिओ य से मंती, विको, पृ. २९४

यशोदेवस्रि

चंद्रगच्छना वीरगणिना शिष्य श्रीचन्द्रसूरिना शिष्य. एमणे सं. ११८० = ई. सं. ११२४ मां जयसिंहना राज्यमां अणिहल-बाइमां सीवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौषधशाळामां रहीने 'पाक्षिक सूत्र' उपर ' सुखावबोधा ' नामे षृत्ति रची हती. यशोदेवसूरिए संख्याबंध आगमेतर धार्मिक प्रन्थो उपर पण टीकाओ छखी छे.

- ९ पाय, प्रशस्ति
- २ जैसाइ, पृ. २४४

यादव

यदुना वंशजो, जेओ प्रथम शौरिपुरमां अने पछी दारकामां वसता हता.

9 जैन साहित्य अनुसार यदुना वंशवृक्ष माटे जुओ जैन, ' ॲन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३७६

यौगन्धरायण

वत्सराज उदयननो मंत्री. अवंतिना राजा प्रदोते उदयनने केद पकडचो हतो, एने छोडाववानो प्रयत्न करतो यौगंधरायण उज्जियिनी आव्यो हतो. उदयन अने वासवदत्ताने हाथणी उपर बेसाडीने नसाडवानी योजना तेणे विचारी, अने पछी ए योजना परत्वे पोताना बुद्धिवैभवनुं अभिमान नहि जीरवी शकायाथी मार्गे जतां ते एक स्रोक बोल्यो के—

यदि तां चैव तां चैव तां चैवायतलोचनाम् । न हरामि नृपस्यार्थे नाहं यौगन्धरायणः ॥

ए ज समये नगरमां फरवा नीकळेला प्रद्योत राजाए आ शब्दो सांभळ्या अने कुद्ध दृष्टिथी एनी सामे जोयुं. पण यौगंधरायणे गांडपणनो देखाव कर्यों, एटले प्रद्योत पोताना कोपनो निप्रह करीने चाल्यो गयो. थोडा समय पछो वत्सराज अने वासबदत्ता उज्जियनीथी कौशांबी चाल्यां गयां अने घणो प्रयत्न करवा छतां प्रद्योत एमने पकडी शक्यो नहि. अहाँ ए नोंधवुं रसप्रद थरों के उपर टांकेलो ''यदि तां चैव०'' ए श्लोक नजीवा पाठांतर साथे, भासना 'प्रतिज्ञायौगंधरायण' नाटक (अंक ३, श्लो. ८) मां यौगंधरायणना मुखमां मुकायेलो छे. एक ज जीवंत, लोकप्रिय वस्तुनो जुदी जुदी परंपराओमां केवी रीते विनियोग थयो एनुं आ पण एक रसिक उदाहरण छे.

जुओ उदयन, प्रधोत

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. १६२-६३. जैन परंपरा अनुसार आ आखा ये प्रसंगना रसप्रद वर्णन माटे जुओ हेमचन्द्रकृत 'त्रिष्टिशलाका-पुरुष्चरित्र,' पर्व १०, सर्ग ११.

रक्षित आर्य

आर्य रक्षित अथवा रिततसूरिनी स्तुति 'नंदिसूत्र'नी स्थिवरा-वर्लीमां अनुयोगोना रक्षक तरोके करेली छे. आर्य रितत दशपुरना राजाना पुरोहित सोमदेवना पुत्र हता. एमनी मातानुं नाम रुद्रसोमा हतुं; तोसलिपुत्र नामें आचार्य जेओ दशपुर आव्या हता तेमनी पासे प्रमणे दीक्षा लीधी हती. उज्जियनीमां वज्रस्त्रामी पासे जईने तेमणे साडानव पूर्वनो अभ्यास कर्यो हतो, तथा ते पहेलां उज्जियनीमां एक बृद्ध आचार्य भद्रगुप्तस्रिने अनशननी आराधना करात्री हती. अर्थ रिक्षित एमना पिता सोमदेव अने भाई फल्गुरिक्षित सुद्धां आखा कुटुंबने दीक्षित कर्युं हतुं. तेमना पिता सोमदेव एक याज्ञिक ब्राह्मण होई, पोताने बीजाओ वंदन करे के न करे, पण वक्षनो त्थाग करवानी विरुद्ध हता. छेवटे तेमणे कटिवस्त्रने बदले चोलपहक धारण कर्यो हतो. जो के 'प्रभावकचरित ' आदि प्रन्थो कहे छे के स्वर्गवास पामेला एक मुनिनो मृतदेह ज्यारे सोमदेवे उपाडचो हतो त्थारे एमनुं अधोवस्त्र खेवी लेवामां अत्युं, अने त्यार पठी एमणे वक्ष धारण कर्युं निह.

पूर्वकाळमां साधुओने मात्र एक ज पात्र राखवानी छूट हती.

आर्य रिक्षतस्रिए चोमासाना चार मास माटे पात्र उपरांत एक मात्रक (नानुं पात्र) राखवानी छूट आपी हतो. आर्थ रिक्षतस्रिना समय पूर्वे साध्वीओ साध्वीओनी पासे आहोचना हेती, पण एमना समयथी साध्वीओए साध्वओनी पासे आहोचना हेतानुं टर्यु.

आर्थ रक्षिते पोतानी पछी गच्छनुं आधिपत्य दुवेल पुष्पित्र नामें साधुने सोंग्युं हतुं, आशी गोष्टामाहिल नामे बीजा विद्वान सुनि जेओ एमना मामा थता हता तेमने मादुं लाग्युं गोष्टामाहिल सातमा निद्वव बन्या. एमनो मत 'अबद्धिक' तरीके जागीतो छे.

अगर्य रक्षितनो जन्म वि. सं. ५२=ई. स. पूर्वे ४ मां, दीक्षा सं. ७४=ई. स. १८ मां, युगप्रधानपद सं. ११४=ई. स. ५८ मां अने अवसान सं. १२७=ई. स. ७१ मां थयां हतां. "

- १ 'अभिधान राजेन्द्र,' भाग १, छ. २१२
- र जुओ दशपुर
- ३ जुओ तोसलिपुत्राचार्यः
- ४ जुओ भद्रगुप्ताचार्य तथा वज्र आर्थ.
- ५ उशा, ष्ट. ९८: उने, ष्ट. २३-२५.
- ६ जुओ 'परिशिष्ट पर्व ' मां तेरमो सर्ग तथा 'प्रभावकचरित ' मां ' आर्थरिक्षितसूरिचरित '. आर्थ रिक्षितना कृतान्त माटे जुओ उनि, गा. ९४-९७; उद्या, पृ. ९६-९८; उने, पृ. २६-२५, इत्यादि. एमने विशेना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे हे, जेमके— मस, गा. ४८९; जीकमा, पृ. ५३; किक. पृ. १७२-७३; कदी, पृ. १५१, इत्यादि
- ं जिमा, गा. ४५१४; निच्च, भाग ४, प्र. ८८७; व्यम (उद्दे०:८ उपरनी वृत्तिं), प्र. ४१–४२.
 - ८ व्यम (उद्दे॰ ५ उपरनी वृत्ति), पृ. १६
 - ९ जुओ गोष्ठामाहिल.
 - ः १० प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. २९ ः २०

रत्नशेखरगणि

तपागच्छाधिपति सोमसुन्दरसूरिना शिष्य भुवनसुन्दरसूरिना शिष्य. एमणे सं. १४९६ = ई. स. १४४०मां 'श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र 'उपर 'अर्थदीपिका' नामे वृत्ति रचो छे. रत्नशेखरनी वृत्तिनो उल्लेख शान्तिचंद्रे 'जंबुद्धीपप्रज्ञति 'नी वृत्तिमां कर्यों छे. र

- श्राप्रर, मंगलाचरण तथा प्रशस्ति
- २ जंप्रशा, पृ. ३२७, ३६६, ४३१

रथनेमि

शौरिपुरना समुद्रविजय राजाना, राणी शिवादेवीथी थयेला चार पुत्रो हता—अरिष्टने म (नेमिनाथ), रथनेमि, सत्यनेमि अने दढनेमि. उप्र-सेननी पुत्री राजीमतीने परणवा माटे नेमिनाथ जता हता त्यां मार्गमां जानने भोजन आपवा माटे बांधेलां पशुओना चित्कार सांभळी तेमने वैराग्य उत्पन्न थयो अने तेमणे दीक्षा लीधी. एमनां वाग्दत्ता राजी-मती पण दीक्षित थयां. पछी एक वार वर्षऋतुमां द्वारका पासेना रैवतक उद्यानमां रहेला नेमिनाथने वंदन करीने आवतां राजीमतीनां वस्त्रो वरसादमां भीजायां. तेमणे एक गुफामां आश्रय लीधो अने तमाम वस्त्रो उतारीने ते स्कववा मंडचां. ए समये नेमिनाथना भोई रथनेमि जेमणे पण दोक्षा लीधी हती तेओ वृष्टिना कारणथी गुफामां प्रवेश्या अने राजीमतीने जोईने विकारवश थया. पण राजीमतीना उपदेशथी तेओ पोतानो मूल समज्या, अने अंते रथनेमि अने राजीमती बन्ने केवल ज्ञान पाम्यां. '

१ रथनेमि अने राजीमतीना अह्भुत कवित्वमय संवाद माटे जुओ छ, अध्याय २२ (रथनेमीय); वळी जुओ कसु, पृ. ३९९-२४; ककौ, पृ. १६९-७०; किक, पृ. १३७-४२; कदी, पृ. १२०-२३, इत्यादि.

रथावर्त्तगिरि

वजस्वामीए बार वर्षना दुष्काळनी शरूआतमां आ पर्वत उपर

जईने अनशनपूर्वक देहत्थाग कयों हतो. एमना देहत्याग पछी इन्द्रे त्यां आवीने पोताना रथ साथे ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी हती, अने ए कारणथी पर्वतनुं नाम 'स्थावर्त ' पड्युं हतुं. '

रथावर्तगिरि कुंजरावर्तनी पासे आवेलो हतो. बीजी एक परं-परा प्रमाणे, वज्रस्वामी पांचसो साधुओनी साथे रथावर्त पर्वत उपर आव्या हता. त्यां एक क्षुल्लक—नाना साधुने मूकीने तेओ बीजा पर्वत उपर गया हता. क्षुल्लकना कालधर्म पाम्या पछी लोकपालोए रथमां आवीने एमनी शरीरपूजा करी हती; आथी ए गिरि रथावर्तगिरि तरीके लोकमां प्रसिद्ध थयो. बीजा पर्वत उपर वज्रस्वामी मरण पाम्या. इन्द्रे हाथी उपर त्यां आवीने ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी त्यारथी ए गिरि 'कुंजरावर्त' तरीके ओळखायो.

रथावर्त ए जैनोनुं एक प्रसिद्ध तीर्थ हतुं. मुनि कल्याणविजय-जीना मत प्रमाणे ते माळवामां विदिशानी पासे आवेर्छ हतुं.*

१ आम, पु. ३९६

२ जुओ कुञ्जरावतं; वळी मुनि कस्याणविषयजीकृत 'वीरनिर्वाण संवत और जैन कालगणना,' पू. ९०.

३ मस, गा. ४६७-४७३

४ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. १७. बीजा उल्लेखो माटे जुओ रुष्ट, पृ. ५११-१३; कदी, पृ. १४५.

राजधन्यपुर

राधनपुर. उपाध्याय धर्मसागरे 'राजधन्यपुर 'मां सं. १६२८= ई. स. १५७२मां 'कल्पसूत्र ' उपर 'किरणावली ' नामे प्रमाणमृत टीका रची हती.

जुओ धर्मसागर उपाध्याय

राजीमती

जुओ नेमिनाथ, रथनेमि राध आचार्य

अचलपुरना जितरात्रु राजाना युवराजे राध आचार्य पासे दीक्षा लीधी हती. तेओ एक वार बिहार करता तगरा नगरीमां आव्या हता. राध आचार्यना बीजा एक शिष्य—जेमनुं नाम पण राध हतुं तेओं— उज्जियनीमां हता. त्यां राजपुत्र अने पुरोहितपुत्र साधुओं ने हेरान करता हता, एना समाचार आपका उज्जियनीथी साधुओं तगरामां आव्या हता.

- **९** जुओ तगरा.
 - २ अयलपुरे जुवराया सीसो राहस्स नगरीमुक्जेणि । अक्जा राहकसमणा पुरोहिए रायपुत्तो य ॥ (डाने, गा. ९८)

अचलपुर नाम पतिद्वाणं तत्थ जियसत् राया, तस्स पुत्तो जुनराया, स्रो राहायरियाण अंतिए पन्नइओ । स्रो य अन्नया विद्वरंतो गतो तगरं नगरि, तस्स राहायरियस्स सञ्झंतेवासी अञ्जराह्स्समणा उज्जेणिए विद्वरंति, तभो आगया साहुगो तगरं, गया राहसमीवं, ते पन्छिया निरुवसागं ति, भणंति-रायपुत्तो पुरोहियपुत्तो य वाहिति,...उद्या, पृ. ९९-१००

वळी जुओ-राहायरियस्स सङ्झंतेबासी अञ्जराहा नामा आयरिया उज्जेणीए विहरति, तेसिं स्यासाओ साहुणो तगरं गया राहायरियसमीव, उने, पृ. २६

राष्ट्रक्ट

एक क्षत्रियकुल. 'राठोड ' शब्द ते उपरथी राष्ट्रकूट रहऊड र राठोड ए क्रमे आवेलो छे. शीलाचार्ये जे परिचिततानी रीतिए 'राष्ट्रकूट 'नो निर्देश क्यों छे ते उपरथी अनुमान थाय छे के एमना समयमां गुर्जर देशमां राष्ट्रकूटो सुज्ञात हता.'

१ 'यहिमन् ' राष्ट्रकूटादौ कुछ जातो ... स्कृशी, पू. १३

राष्ट्रवर्धन

उज्जयिनीना पालक राजानी पुत्र. विशेष माटे जुओ अवन्तिवर्धन, पालक, मणिपभ

रिष्टपुर

दशमा तीर्थंकर शीतलनायने प्रथम भिक्षा रिष्टपुरमां मळो हती. जुओ अरिष्टपुर

१ आनि, पृ. ३२४

रैवतक

उज्जयंत अर्थात् गिरनारनुं बीजुं नाम रैवतक छे. रैवतक पर्वत द्वारकानी ईशाने आवेलो हतो. रैवतकमां नंदनकन नामे उद्यान हतुं अने सुरप्रिय नामे यक्षनुं आयतन हतुं. सामान्य रौते रैवतकमो उल्लेख पर्वत तरीके छे. मूलसूत्रो जेवां के 'अंतकृत्दशा', 'वृष्णि-दशा,' 'ज्ञातावर्मकथा' आदिमां रैवतकने पर्वत कह्यो छे, ज्यारे पछीना समयनी केटलीक टीकाओ आदिमां रैवतकनो उल्लेख उद्यान तरीके छे. व

रैवतकना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ ' विविधतीर्थकल्प'मां 'रैवतकल्प '; वळी जुओ उज्जयंत, द्वारका

१ 'निष्कम्य ' निर्णम्य द्वारकातः द्वारकापुर्याः ' रैवतके ' उज्जयते.
 'स्थितः ' गमनान्निष्टतः, उशा, पृ. ४९२

२ लुओ द्वारका.

३ वृकम, भाग १, पृ. ५६-५७, कपु, पृ. ३९९-४२४; क**को**, पृ. १६२-६८, इत्यादि.

रोइक

उज्जियनी पासेना नटोग एक गामडामां वसतो नटपुत्रः पूनी जीवित्तकी बुद्धिनी चतुराई मरी कथाओ आगमसाहित्यमां जाणीती छे. १५८] [रोहक

ए कथाओ प्रमाणे रोहक छेवटे उज्जियनीना राजाने प्रसन्न करीने एनो मंत्री थयो हतो. लोकवार्ताना तुलनात्मक अभ्यासमां रोहकना संबंधमां मळती कथाओ घणी महत्त्वनी छे, केम के एनी ए कथाओ सहेज फेरफार साथे भोज अने कालिदास तथा अकवर अने बीरवलने विशे पण प्रचलित छे. रोहकने नामे चढेली कथाओनो निर्देश 'नैदिस्त्र ना भाष्यमां छे-जो के एनो विस्तार तो टीकाचूणिंओमां छे-ए उपरथी लोककथा तरीके पण एमनी प्राचीनतानुं सहेजे अनुमान थई शके छे.

१ आम, पृ. ५१५-१८; नंम, पृ. १४५-४९.

२ रोहकना बुद्धिचातुर्यनी कथाओ माटे जुओ 'प्रजाबंधु-गुजरात-धमाचार 'दीपोत्सवा अंक, सं. १९९९ मां मारो लेख 'नटपुत्र रोहक अने राजा.'

लाट

छाटदेश. 'कल्पसूत्र 'नी टीकाओमां 'राज्यदेशनाम ' आप्यां छे त्यां छाटनो पण उल्लेख छे. े छाटदेश वडे सामान्यतः आजनो दक्षिण गुजरात उदिष्ट छे, जेनुं पाटनगर भरुकच्छ हतुं. पण एक काळे छाट वडे उत्तर सिन्धना छाडकाणा (छारखाना)थी मांडी पश्चिम भारतनो समुद्रकिनारानो आखो प्रदेश उदिष्ट हतो. ए विषयनी विगतवार चर्चा माटे तथा छाटनी न्युपित्त माटे जुओ 'पुगु'मां छाट.

जैन आगमसाहित्यना उल्डेखोमां ' लाट ' वडे हालनो दक्षिण गुजरात ज उदिष्ट होय एम जणाय छे. एमांथी लाट तथा त्यांना बतनीओ विशे केटलीक प्रकीण पण रसिक सामग्री मळे छे. लाट-विषयमां वरसादनां पाणीथी धान्य नीपजे छे. लाटना वतनोओने 'गुंठ'—कपटी कह्या छे तथा एने लगती एक रसिक वार्ता आपी छे: एक लाटवासी गाडामां बेसीने कोई नगर तरफ जतो हतो. मार्गमां स्राट]

एक महाराष्ट्री मळ्यो. तेणे लाटवासीने प्छचुं के 'लाटवासीओ कपटी कहेवाय छे ते केवा ?' लाटवासीए कहुं, 'पछीथी बतावीश.' मार्गमां सवारनो समय वीती जतां पोते ओढेलुं वस्त्र महाराष्ट्रीए गाडा उपर मूक्युं. लाटवासीए एनी दसीओ (लटकता छेडा) गणी लीधी. पछी नगरमां पहोंच्या पछी महाराष्ट्रीए पोतानुं वस्त्र लेवा मांडचुं, एटले लाटवासी बोल्यों के 'आ तो मारुं वस्त्र छे.' महाराष्ट्री एने राजदर-बारमां लई गयो. त्यां विवाद थतां लाटवासी बोल्यों, 'महाराष्ट्रीने पूछों के वस्त्रनी दसीओ केटली छे.' महाराष्ट्री ए कही शक्यों नहि अने लाटवासीए ते कही, एटले वस्त्र लाटवासीने मळ्युं. राजदरबारमांथी बहार नोकळ्या पछी लाटवासीए महाराष्ट्रीने बोलावीने वस्त्र पार्खुं आप्युं अने कहुं के 'मित्र! तें पूछचुं हतुं एनो आ जवाब छे. लाटवासीओ आवा होय छे. '

लाटवासीओ जेने 'क्षीर' कहे छे तेने कुडुक (घणे भागे कूर्ग)ना वतनीओ 'पीलु' कहे छे. लाटदेशमां 'दवरक—वलनक '—दोराना गूंचळाने मांगलिक गणवामां आवे छे. आ 'दवरक—वलनक' ए नाडाछडी होय ए संभवित छे.

लाटदेशमां धान्य भरवानी कोठी 'पल्लग' अथवा 'पल्लक ' (सर• गुज 'पाल्लुं '=कोठी) कहेवाय छेते ऊंचे अने नीचे पहोळी, पण छेक उपर कंईक सांकडी होय छे. लाटदेशनी 'रूतपोणिका'-रूनी पूणी महाराष्ट्रमां 'पेलु 'कहेवाय छे. '

लाटदेशमां समान वयनी सखीओने 'हलि' (गुज. 'अली') अने नणंदने 'भट्टा' कहीने संबोधवामां आवे छे. कणसलांमांथी अनाज लूटुं करवानी किया 'जोवण,' चोखानुं घोवण 'कांजिय' के 'कांजिक' (गुज. 'कांजी') कहेवाय छे. लाटवासीओ जेने 'अड्डपल्लाण' (घोडानुं पलाण; एनुं गुजराती रूप 'आडपलाण' **१६०**] [लाड

एवं थई शके) कहे छे ते बीजा प्रदेशोमां 'थिछि' तरीके ओळखाय छे." एक खास प्रकारनी वनस्पति लाटवासीओमां 'इकडा' (अर्वाचीन गुज. 'ईकड') नामे प्रसिद्ध छे." लाट अने महाराष्ट्रना वतनी चोखाने 'कूर' कहे छे; एने ज पूर्वदेशना वासीओ 'ओदन,' द्राविडो 'चोर' अने आन्धो ' कनाय ' कहे छे."

लाटनी केटलीक रूढिओनो पण निर्देश छे. 'निशीथचूर्णि ' प्रमाणे, लाटमां मामानी दीकरी गम्य छे, पण माशीनो दीकरी अगम्य छे.'³ 'स्थानांगसूत्र 'नी अभयदेवस्रिनी वृत्ति प्रमाणे लाटदेशमां 'मातुलभगिनी '-माशी गम्य छे, पण अन्यत्र ते अगम्य छे.'⁸

आ छेल्लो उल्लेख चिन्त्य लागे छे, केम के सामान्य रीते आवुं बने नहि. जो के टीकानो पाठ आ बाबतमां स्पष्ट छे. तो छुं अर्थनी स्पष्टता होवा छतां पाठमां कोई प्रकारनी श्रष्टता प्रवेशी हरो ! ""

'निशीथचूिं।'मां प्राकृत शब्द 'भोयडा 'नी समजूती भा प्रमाणे आपी छे: लाटवासीओ जेने 'कच्छ ' कहे छे ते महाराष्ट्रमां 'भोयडा' कहेवाय छे. स्त्रीओ बालपणथी मांडीने लग्न थया बाद सगर्भा थतां सुधी कच्छ बांधे छे. सगर्भा थाय त्यारे भोजन करवामां आवे छे, स्वजनीने बोलावी वस्त्र पाथरवामां आवे छे, अने ए समयथी कच्छ बांधवानुं बंध थाय छे.''

लाटदेशमां वर्षाऋतुमां गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल—संखिडि नामे उत्सव थाय छे. मूमिदाह ए पण एनुं बीजुं नाम छे. लाटवासीओ आवणपूर्णिमाने दिवसे आबाढी पूर्णिमा करे छे एम 'आवश्यक चूर्णि ' नोंधे छे. दक्षिणापथमां लोहकार अने कलाल जात्यधम गणाय छे तेम लाटमां चर्मकार अधम गणाय छे.

लाटदेशनी स्त्रीओनां रूप अने विदग्धतानुं वर्णन करतो एक स्रोक आगमसाहित्यमां केटलेक स्थळे उद्धत करवामां आव्यो हो. लाटदेशनी स्त्रीओना कच्छ-बंघादि नेपध्यनी प्रशंसा माटे औदीच्य देशनी स्त्रीओनां वस्त-परिधाननी निन्दा करतो श्लोक पण एक स्थळे उद्गत थयेलो ले.^{२१}

- १ बुकक्षे, भाग २, पृ. ३८३-८४
- २ व्यभा, गा. ३४५; व्यम, भाग ४, पेटा भाग २, पृ. ६९-७०
- ३ आचू, पूर्वभाग, पृ. २७
- ४ आम, पृ. ६; विको, पृ. १८
- ५ आम, पृ ६८, ११३; नेम, पृ. ८८; प्रम, पृ. ५४२
- ६ विको, पृ. ९२२. जुओ महाराष्ट्र.
- ७ दवैचू, पृ. २५०. अहीं चूर्णिकार एको झीणो मेद पाडे छे के लाटमां सखीने 'हिलि' कहे छे, ज्यारे वरदातट (वर्धा नदीना किनाराना प्रदेश) मां तेने 'हिलि' तरीके संबोधाय छे.
 - ८ ओनिद्रो, पृ. ७५
 - ९ बुकक्षे, भाग ३, पृ. ८७१
 - १० औसूअ, पृ. ५९; जीम, पृ. २८२; श्राधअ, पृ. ४३
 - ११ निचू, पृ २५४
 - १२ दबैचू, पृ. २३६
- १३ निचू, भाग १, पृ. ४६; आचू, उत्तर भाग, पृ. ८१; आम (उत्तर भाग, पृ. ८१) एटलं ज कहे छे के लाटमां मामानी दीकरी गम्य छे; आचू वधारामां एम पण नींधे छे के गोल्ल देशमां भगिनी गम्य छे, 'विच्चो 'ने ('विच्चाण'-अर्थात् वचमां रहेनाराओने ! मध्य प्रदेशमां रहेनाराने ?) मातानी सपत्नीओ गम्य छे.
- १४ स्थासूअ, पृ. २**१**१. छन्दो-गम्यागम्यविभागो यथा-लाटदेशे मातुलभगिनी गम्या अन्यत्रागम्येति ।
 - १५ संभव छे के 'मातुलभागिनेया '-माशीनी पुत्री होय.
- १६ णेवत्यं भोयडादीयं भवति । ''भोयडा '' णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहृद्रयाणं भोयडा भण्णति । तं च बालप्पभिति इत्थिया ताव वंधन्ति जाव परिणीया जाव य आवण्णसत्ता जाया ततो भोययं कज्जति,

लाउ

स्यमं मेलेकण पडओ दिज्जति, तप्पिश्चः फिट्टः भोयडा । निचू, भाग १, पृ. ४६

१७ विशेषचूर्णिकारः पुनराह-गिरिजन्नो ति मत्तवास्तरंखडी भन्नइ, सा लाडविसए वरिसारते भवइ ति [गिरिक(ज)न्नित भूमिदाहो ति भणितं होइ] वृकक्ते, भाग ३, पृ. ८०७

१८ आसाडी-आसाडपुण्णिमा इह, लाडाण पुण सावण्णपुण्णिमाए भवति, आचू, उत्तर भाग, पृ. २२१

१९ निचू भाग ५, पृ. १११७

२० स्थासूअ, पृ. २१०, ४४५; प्रव्याअ, पृ. १३९; पाय, पृ ४८. जुओ-तथा अन्ध्रीप्रमृतीनामन्यतमाया यहप्रशंसादि सा रूपकथा.

चन्द्रवक्त्रा सरोजाक्षी सद्गीः पीनघनस्तनी । कि ठाटी नो मता साऽस्य देवानामपि दुर्लमा ॥ स्थासूक्ष, पृ. २१०

२१ तासामेवान्यतमायाः कच्छवन्थादिनेपथ्यस्य यश्परांसादि सा नेपथ्यकथा यथा---

धिग् नारीरौदीच्या बहुवसनाच्छादिताङ्गलितकतात् । यद्यौदनं न यूनां चक्षुमोदाय भवति सपेति ॥ पाय, प्र. ४८ लाटाचार्य

एक आचार्य. एमना नाम उपरथी तेओ लाटना हरो एवं अनुमान श्राय छे.

जैन शास्त्रनुं सामान्य विधान एवं छे के शय्यातर—वसित आप-नारना गृहेशी साधुए पिंड न ठेवा. हवे, एक ज गुरुना शिष्यो जग्यानी संकडाशने कारणे वे जुदी वसितमां रहेता होय तो शय्यातर कोने गणवो १ बोजे स्थळे रहेला साधुओ सवारे सूत्रपौरुषी कर्या पछी मूल उपाश्रयमां आवे तो बन्ने स्थानना मालिको शय्यातर गणाय अने जो मूल उपाश्रयमां आवीने सूत्रपौरुषी करे तो एक ज शय्यातर गणाय. आ वाबतमां लाटाचार्यनो मत एवो छे के ज्यां आचार्य वसता होय ते वसतिनो मालिक शय्यातर गणाय, बीजो दसतिनो मालिक शय्यातर गणाय नहि. बन्न आर्थ] [१६३

१ बुकमा, गा. ३५३१; बुकक्षे, भाग ४, पृ. ९८३; निमा, गा. १९३९; निच्, भाग २, पृ. २५५

लोहजङ्घ

उज्जयिनीना राजा प्रचोतनो दूत. ते एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो.

जुओ भरकच्छ.

वज्र आर्य

एमने विषेनी कथा आ प्रमाणे छे:

आर्थ वज्र अथवा वज्रस्वामी अवंति जनपदमां तुंबवन प्राममां वसतां धनिगिरि अने सुनन्दा ए दंपतीना पुत्र हता. वज्रस्वामी माताना गर्भमां ज हता, अने धनिगिरिए सिंहिगिरि गुरु पासे दीक्षा छोधी हती. जन्म पछी वज्रस्वामी पोताना जृंभक देव तरीकेना पूर्वजन्मनुं स्मरण करीने रोया करता हता; अने एना आ सतत रुदनथी माता खूब कंटाळी गई हती. आ वाळक एना दीक्षित पिता धनिगिरिने सोंपवामां आव्यो त्यारे ज छानो रह्यो. वज्र जेवो शिक्तशाळी होवाथी आ बाळक वज्र नामथी ओळखायो. केटलाक समय पछी सुनंदाए आ बाळकने साधुओ पासेथी पाछो मेळववा प्रयत्न कर्यों, पण ज्यारे से न आव्यो त्यारे माताए पोते ज जैन साथ्यी तरीके दीक्षा छोधी.

बाळक वज्रस्वामीने राज्यातर स्त्रीओए उन्नेर्या तथा साध्वीओना उपाश्रवमां रहीने तेओ अगियार अंग भण्या. बाल्यावस्थामां ज एमनी असाधारण विद्वताथी प्रसन्न थईने गुरुए एमने बाचनाचार्य बनाव्या हता. एक बार गुरु सहित बज्रस्वामीनी दशबुरमां स्थिति हती त्यांथी उज्जियनीमां दश पूर्वधर भद्रगुप्ताचार्य पासे जहने तेमणे दश पूर्वोनो अभ्यास कर्यो. ए पठी वज्रस्वामीने गच्छ सोपीने सिंहगिरि आचार्य अनशनपूर्वक कालधर्म पाभ्या.

दुष्काळथी पीडा पामता जैन संघन तेओ पाटिलपुत्रथी पुरिका-पुरी नामे नगरीमां लई गया हता. आ नगरनो राजा बौद्ध हतो, अने तेणे जैनोने पर्युषण पर्वमां पुष्पो आपवानो निषेध कर्यो हतो, तेथी वज्रस्वामी आकाशगामिनी विद्यार्थी माहेश्वरी नगरीमां जईने जिनपूजा माटे पुष्पो लाव्या हता. आ आकाशगामिनी विद्या तेमणे 'आचारांगसूत्र'ना 'महापरिज्ञा' अध्ययनमांथी उद्धरी हती एम कहेवाय ले.

बार वर्षना एक मोटा दुष्काळना समयमां वज्रवामी एक पर्वत उपर अनशन करीने कालधर्म पाम्या, जे पर्वत पाछळथी 'रथावर्त' तरीके प्रसिद्ध थयो."

वज्रस्वामी एक प्रमावक जैन आचार्य हता. तेमनो विहार मुख्यत्वे माळवा, मगध अने कल्लिंगना प्रदेशमां थयो हतो. जो के तेमना शिष्योए कोंकणमां विहार करेलो छे, एटले संभव छे के तेओ पण कदाच कोंकणमां आव्या होय. आर्थ रिक्षतसृरिए साडानव पूर्वोनुं अध्ययन वज्रस्वामी पासे कर्युं हतुं. वज्रस्वामीना नामथी साधुओनी वज्रशाखा प्रवर्तमान थई हती.

युगप्रधान पद्दावछीओने आधारे मुनिश्री कल्याणविजयजीए वजू-स्वामीना समय विशे एवो निर्णय कयों छे के तेमनो जन्म सं २६ =ई. स. पूर्वे ३०मां, दीक्षा सं. ३४=ई. स. पूर्वे २२मां, युग-प्रधानपद सं. ७८=ई. स. २२मां अने स्वर्गवास सं. ११४=ई. स. ५८मां थयो हतो.

वज्रस्वामीना जीवनना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे छे.^{१०}

- १ जुओ भद्रगुप्ताचार्य.
- २ पुरिकापुरी ए प्राचीन कलिंगनी पुरी (जगन्नाथपुरी) होवा

संभव छे. जुओ 'लाइफ इन एन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ ३२५.

- ३ जुओ माहेश्वरी.
- ४ जुओ रथावर्त

५ आचू, पूर्व भाग, पृ. ३९० थी आगळ; आम, पृ. ३८७-९१ तथा ५३२; विभा, गा. २७७५-८३ तथा ते उपरनी कोळाचार्यनी वृत्ति. आगमेतर साहिस्यमां वज्रस्वाभीना वृत्तान्त माटे जुओ हेमचन्द्रना 'परिशिष्टपर्व 'मां स्र्ग १२ तथा प्रभाचन्द्रसूरिना 'प्रभावकचरित 'मां 'वज्रस्वामिचरित '.

- ६ जुओ वज्रसेन.
- जुओ भद्रगुप्ताचार्य, रिक्षत आर्य.
- ८ कसं, पृ. १३०
- ९ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. १७

१० जुओ आनि, गा. २६४; आशी, पृ. २३७, ३८६; जीकभा, गा. ६१०-१२; जीकचृब्या, पृ. ३५; बुकम, पृ. १९९; नंस, पृ. १६७, इत्यादि. 'कल्यसूत्र' नी विविध टीकाओमां वंत्रस्वामीनुं चरित्र ठीक ठीक विस्तारथी आपेछुं छे, जेम के किक, पृ. १७०-७३; कपु, पृ. ५१९-१४; कदी, पृ. १४५, इत्यादि.

वत्रभूति आचार्य

भरुकच्छवासी एक आचार्य.

भरुकच्छमां नभोवाहन राजा हतो. तेनी पद्मावतो देवी हती. ए नगरमां वज्रभृति नामे आचार्य रहेता हता. तेओ मोटा कवि हता, पण रूपहोन अने अत्यंत कृश हता. एमने शिष्यादि परिवार पण नहोतो. एमनां काव्यो राजाना अंतःपुरमां गवातां हतां. ए काव्योथी पद्मावती देवीनुं चित्त आकर्षायुं हतुं अने ए रचनाओना कर्ताने जोवाने ते उत्सुक बनी हती. एक बार राजानी अनुज्ञा लड्डने तथा योग्य मेटणुं साथे लड्डने अनेक दोसीओ सहित ते वज्रभृतिनी वसति तरफ गई. पद्मावतीने वसतिना बारणामां ऊभेली जोईने वज्रभृति पोते ज, परि- वारने अभावे, हाथमां आसन छईने बहार नीकळ्या. पद्मावतीए प्छयुं, 'वज्रमृति आचार्य क्यां छे ?' वज्रमृतिए उत्तर अध्यो, 'बहार गया छे.' पण दासीए राणीने निशानीथी समजाव्युं के 'आ ज वज्रमृति छे.' आथी पद्मावती विराग पामीने, विचार करीने बोलो के –'हे कसेरुमती नदी ! तने जोई अने तारुं पाणी षीधुं! तारुं नाम सारुं छ, पण दर्शन सारुं नथी '' पछी पोते आणे छं मेटणुं राणीए वज्रमृतिने सौंध्युं, अने पोते एमने ओळखती ज नथी एवो देखाव चाछ राखी, 'आ आचार्यने आपजो,' एम कहीने पाछी गई. है

अगाउ सूच्युं छे तैम, नभौवाहननो समय ईसवी सनना बीजा सैकाना पूर्वार्धमां मानीए तो वजुमूतिनो समय पण ए ज मगवो जोईए.

- १ जुओ नभोवाहन.
- २ जुओ कलेरुमती.

३ व्यभा, गा. ५८-५९; व्यम, विभाग ४, पेटा वि. २, पृ. १४-१५

४ जुओ नभोवाहन.

वज्रसेन

वज्स्वामीन। शिष्य.

एक मोटा दुर्भिक्षने कारणे साधुओने भिक्षा मळवानुं मुश्केल बन्युं त्यारे बज्रस्वामी अनरान करका माटे रथावर्तगिरि तरफ गया. त्यार पहेलां एमणे पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्यं हतुं के ' जे दिवसे तने रातसहस्र मृल्यनी भिक्षा मळे तेने बीजे दिवसे सुभिक्ष थरो. ' आ पछी केटलेक समये क्ल्रसेन विहार करता सोपारकमां अल्या. त्यां जिनदत्त नामे श्रावक अने तेनी ईश्वरी नामे पत्नी हती. तेमनुं आखुं कुटुंव धान्यना अभावे दुःखाकुल बनी गयुं हतुं. आश्री छेवटनो लक्ष-मृल्य पाक शंधी, तेमां विष नाखीने मरणने मेटवानो निश्वय तेओए बलभी]

कयों. आ प्रमाणे लक्षम्लय पाक रांधीने ईश्वरी एमां विष नास्तशा जती हती एउलामां वज्रसेन मुनि त्यां आवी पहोंच्या. ईश्वरीए हर्षित थईने मुनिने ए पाक भिक्षा तरीके आप्यो अने बधी वात करी. पोताना गुरुए भाखेला भविष्य उपरथी वज्रसेने तेओने कहाुं के 'हवे तमारे चिन्ता करवानी जरूर नथी, केम के आवती काले सुभिक्ष थरो.' बीजे दिवसे अनाजथी भरेलां वहाणो सोपारक बंदरे आव्यां अने लोकसमुदाय निश्चिन्त थयो. जिनदत्त अने तेना कुटुंबीजनोए वज्रसेन पासे दीक्षा लीधी.

- १ जुओ रथावर्त्त.
- २ जुओ जिनदत्त.

३ आम, पृ, ३९५-९६; वळी कम्र, पृ, ५९३; किक, पृ. ९७० -७३, इत्यादि

वत्सका

एक नदी.

आ नदी उज्जयिनी अने कौशांबीनी व समां आवेशी छे. ए नदीने किनारे पर्वतकंदरामां धर्मयशमुनिए तपश्चर्या करी हती.

१ वितिओ धम्मबसो विभूसं नैच्छतो कोसंबीए उज्जेणीए अंतरा
वश्यकातीरे पव्वतकंदराए एकस्थ भत्तं पच्चकस्ताति । आचू, उत्तर भाग, पृ.
१९०. वळी जुओ वरृ, पृ. ९०-९२.

वलभी

सौराष्ट्रनुं वळा अथवा वलभीपुर, जे वलभी वैशना राजाओनी राजधानी हतुं. जैन आगमनो नागार्जुनी वाचना जे 'बालभी' वाचना नामधी ओळखाय छे ते तथा जैन श्रुतनुं लिखित स्वरूपे संकलन वलभीमां थयां हतां.

जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, स्कन्दिष्ठ आर्थ.

वसुदेवचरित

'वसुदेव-हिंडी 'नुं खरुं नाम, जे एना कर्ताने उदिष्ट हतुं.

जुओ सङ्घदासगणि वाचक

वासुदेव

जुओ कृष्ण वासुदेव

विजयसिंहसूरि

'श्राद्रप्रतिक्रमण सूत्र ' उपर विजयसिंहस्रिए सं. ११८३ = ई. स. ११२७ मां रचेली चूर्णिनो उल्लेख रत्नशेखरस्रिए 'श्राद्रप्रति-क्रमण सूत्र 'नी वृत्तिमां कर्यों छे. एनो साथोसाथ रत्नशेखरे ए ज प्रन्थ उपरना जिनदेवस्रिकृत भाष्यनो निर्देश कर्यो छे, पण एवं कोई भाष्य हजी सुधी जाणवामां आव्यं नथी

१ श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रस्य च विक्रम ११८३ वर्षे श्रीविजयसिंहसूरि-श्रीजिनदेवसूरिकृते चूर्णिभाष्ये अपि स्तः, वृत्तयश्च वहवः, श्रापर, पृ. २०१.

२ जुओ जिस्की, पृ. ३९०.

विदिशा

माळवामां भोपालथी आशरे २४ माइल ईशान खूणे बेटवा अथवा वेत्रवतीने किनारे आवेलुं भिलसा.

'अनुयोगद्वार सूत्र 'मां 'समीप नाम 'नां उदाहरण आपतां कहुं छे के गिरि पासेनुं नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनुं नगर ते वैदिशनगर (विदिशा), वेणा पासेनुं नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनुं नगर ते तगरातट. आ उल्लेखमांनी 'विदिशा' ते बेस अथवा बेसली नदी छे, जे भिल्लसा पासे बेटवाने मळे छे. भिल्लसानुं बेसनगर एवं नाम ए नदी साथे संबंध धरावे छे, जेनुं मूळ 'वैदिशनगर' (प्रा. वेदिसणयर)मां छे. आर्य महागिरि विदिशामां जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाप्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकन्छपुर गया हता, एवो उल्लेख ' आवश्यक-सूत्र 'नी चूर्णिमां छे."

जुओ एलकच्छपुर, गजाग्रपद, वेत्रवती

- १ से किंतं समीवनामे ? २ गिरिसमीव णयरं गिरिणयरं विदिसा-समीवे णयरं वेदिसं णयरं बेन्नाए समीवे णयरं बेन्नायडं तगराए समीवे णयरं तगरायडं, ते तं समीवनामे । अनु, पृ. १४९
 - २ ज्यांडि, पृ. ३५
- ३ दो वि जणा वहिंदिसं गता, तस्थ जिणपिडमं वंदिऊण अ**उ**जमहागिरि एलकच्छं गता गयागपदं वदका। आचू, उत्तर भाग, पृ. १५६-५७.

विनयविजय उपाध्याय

हीरविजयस्रिना शिष्य कीर्तिविजयना शिष्य. एमणे रामविजय पंडितना शिष्य विजयगणिनी अभ्यर्थनाथी सं. १६९६=ई. स. १६४० मां 'कल्पस्त्र' उपर 'सुबोधिका' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती, अने ते विमलहर्ष वाचकना शिष्य भावविजये शोधी हती.

विनयविजये सं १७०८=ई. स. १६५२ मां जूनागढमां जैन विश्वविद्याविषयक महान प्रन्थ 'लोकप्रकाश ' रच्यो हतो. न्याय, व्याकरण, काव्य, स्तोत्र आदि विविध विषयो उपर तेमणे रचनाओं करेली ले.

- १ कसु, प्रशस्ति
- २ जुओ जैसाइ, पृ. ६४७-४९

विराटनगर

साडीपचीश आर्यदेशो पैकी मस्स्यदेशनुं पाटनगर.ी

जयपुर राज्यमां आवेछं वैराट ए ज विराट के वैराट नगर होय ए संभवे छे.

२२

जुओ मत्स्य

् पुरुशी, पृ. १२३; वृक्क्षे, भाग ३, पृ. ९१२-१४ वीतिभयनगर

महावीरना समयमां सिन्धु—सौवीर देशनुं पाटनगर. एनी पूर्व-दिशामां मृगवन नामे उद्यान आवेछुं हतुं. बीतिभयमां उदायन राजा राज्य करतो हतो. वीतिभयनुं बीजुं नाम कुंभकारप्रक्षेप हतुं.

पंजाबनुं भेरा गाम ए प्राचीन वीतिभयनगर होवानुं मानवामां आबे छे.

- 9 ससू, शतक १३, उदे. ६; वृकक्षे, भाग २, पृ. ३९४; भाचू, उत्तर भाग, पृ. ३६-३७; आम, पृ. ३९२; किंक, पृ. १९९; कर्को, पृ. ९३४, इत्यादि
 - २ भसू, शतक १३, उ. ६
 - ३ जुओ उदायन.
 - ४ जुओ कुम्भकारप्रक्षेप.
- ५ मुनि कल्याणविजय, 'श्रमण भगवान महावीर', पृ. ३८८

वेत्रवती

एक नदी. चारुदत्त वेत्रलताने वळगीने ए नदी ओळंगो गयानी उल्लेख छे. चारुदत्तनी आ कथा 'वसुदेव—हिंडी 'ना 'गन्धर्वदत्ता छंभक 'मां विस्तारथी वर्णवेली छे एमां एवं वर्णन छे के नै वैतादच-पर्वतमांथी नीकळती इषुवेगा नदी अताग छे. एनां पाणीनो वेग एटलो बधो छे के तीरछा मार्गे पण सामे पार जई शकाय एम नथी. मात्र वेत्रलताओनो आधार लईने, उत्तर तरफथी पवन वाय त्यारे, एना उत्तर किनारेथी दक्षिण किनार जवातुं, अने दक्षिण तरफथी पवन वाय त्यारे ए ज रीते उत्तर किनारे जई शकातुं. प्रवासे नीकळेलो चारुदत्त ए रीते वेत्रवती नदी ओळंगी गयो हतो. इषुवेगा अने वेत्रवती ए बन्ने नाम एक ज नदीनां होय एवं अनुमान आ वर्णन उपरथी थई शके.

कवि कालिदासना 'मेघदूत ' (पूर्वमेघ, २४)मां माळवाना वर्णनमां वेत्रवतीनां ऊळळतां पूरनो निर्देश छे. एना तटे विदिशा आवेलुं हतुं एवुं सूचन पण त्यां छे.

गुजरातनी वात्रक नदीनो पण पुराणोमां वेत्रवती तरीके उल्लेख छे ए अहीं नोंधवुं जोईए."

माळवामां वहेती बेटवा नदी ए आगमोक्त वेत्रवती होवानुं मानवामां आवे छे.

जुओ विदिशा

- १ वेत्रमागों यत्र वेत्रलतोपष्टममेन जलादों गम्यते इति, तद्यथा— चारुदत्तो वेत्रलतोपष्टमभेन वेत्रवतीं नदीमुत्तीर्थ परकूलं गनः। मुक्तशी, पृ. १९६ वळी जुओ स्कूच्, पृ. २३९.
 - २ 'वसुदेव-हिंडी ' (भाषान्तर), पृ. १९२
 - ३ पुगुमां वेशवती.
- ४ ए ज; तथा ज्योडि, पृ. ३५; जैन, 'छाइफ इन एन्झ्यन्ट इन्डिया, पृ. ३५४

वेणातट

आभीरदेशमां वेणानदोना किनारे आवेलुं नगर एनां प्राकृत रूपो वेणातड, वेणायड, वेन्नायड, एवां शाय छे. राजगृहना राजा प्रसेनजितनो पुत्र श्रेणिक ज्यारे कुमारावस्थामां हतो त्यारे वेणातटमां गयो हतो. त्यां एक विणकनी नंदा नामे पुत्रीथी तेने अभयकुमार नामे पुत्र थयो हतो, जे मोटो थतां राजगृह आवीने पोतानी चतुराईथी श्रेणिकने प्रसन्न करीने तेनो मंत्री थयो हतो एक वारनो चोर मूलदेव भाग्ययोगे वेणातट नगरनो राजा बन्यो हतो एवी कथा छे.

वेणातरमां बौद्धो तेम ज जैनोनी वस्ती हती तथा आ बन्ने संप्रदायो वस्चे स्पर्धा चालती हती, एम केवळ लोककथाना प्रकारनो एक दुचको 'नंदिस्त्र'नी वृत्तिमां आप्यो छे ते उपरथी अनुमान थाय छे : " नेणातट नगरमां कोई बौद्र भिक्षुए श्वेतांबर क्षुछक—नाना साधुने पूछ्युं, 'अरे क्षुछक ! तमारा अर्हतो सर्वज्ञ छे अने तमे एमना दीकराओ छो, माटे कहे के आ नगरमां केटला कागडा छे?'" क्षुछके चातुर्यथी उत्तर आप्यो—

'सर्डि कागसहस्सा इह(यं) बिन्नायडे परिवसंति। जइ ऊणगा पवसिया अन्धिहिया पाहुणा आया॥

(आ वेणातट नगरमां साठ हजार कागडा वसे छे. ए करतां जो ओछा होय तो ते प्रवासे गया छे अने वधारे होय तो परोणा तरीके आक्या छे.)'

आ सांभळीने बौद्ध मिक्षु माथुं खणतो चूप थई गयो.'

हरिषेणाचार्यना 'बृहत्कथाकोरा 'मां कह्युं छे के विन्यातटपुर वराट विषयमां विन्या (वेणा) नदीना किनारे आवेर्छ छे.

१ जुओ आभीर.

२...से किं तं समीवनामे ! २ गिरिसमीवे णयरं गिरिणयर विदिसासमीवे णयरं वेदिसं णयरं बेन्नाए समीवे णयरं बेन्नायडं तगराए समीवें णयरं तगरायडं, से तं समीवनामे ।

३ आचू, पूर्वभाग, पृ. ५४७; आम, पृ. ५१९.

४ जुओं मूलदेष.

५ नम, पृ. १५२. वळी आ कथा माटे जुओ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४७; आम, पृ. ५२•.

६ वराटिविषये रम्ये दिशाभागे च पश्चिमे । वैराक्तस्य सारस्य जनानन्दविधायिनः ॥ विन्यानदीसमीपस्यं साल्रापणराजितम् । विहरन् स सुनिः कवापि प्राप विन्यातटं पुरम् ॥ 'बृहस्क्याकोशः, 'पृ. १९९.

१७३

वैतरणि

कृष्ण वासुदेवनो एक वैद्य. जुओ भन्वन्ति

शकुन्त

अवन्तिपति प्रद्योतनो अंध मंत्री.

वासवदत्ताए उदयननी साथे उज्जियनीथी कौशांबी चाल्यां जवा माटे हाथणी सज्ज करवानी आज्ञा करी. हाथणीने ज्यारे तंग बांधवा मांडचो त्यारे हाथणीए गर्जना करी. ए सांभळीने शकुन्त नामे अंध मंत्रीए कह्युं के 'तंग बांधती वखते आ हाथणी गर्जना करे छे, माटे सो योजन जईने ते मरण पामशे. '' मार्गना श्रमथी थाकेछी हाथणी सो योजन जेटलो प्रवास करीने कौशांबीमां प्रवेशतां मरण पामी हती.

जुओ उदयन, पद्योत

कक्षायां बध्यमानायां यथा रसति हस्तिनी ।
 योजनानां शतं गरवा प्राणत्यागं करिष्यति ॥
 आच्र, पृ. १६२

शङ्खपुर

- ' उत्तराध्ययन सूत्र 'नी नेमिचन्द्रनी टीका प्रमाणे, अगडदत्त रांखपुरना राजानो पुत्र हतो.'
- 'विविधतीर्थकल्प ' अनुसार, राजगृहनो राजा प्रतिवासुदेव जरासंघ, वासुदेव कृष्ण साथे युद्ध करवा माटे पश्चिम दिशा तरफ नीकळ्यो. कृष्ण पण बधी सामग्री साथे द्वारवतीथी नीकळीने पोताना प्रदेशनी सीमा सुधी आव्या. ए स्थळे अस्टिनेमि कुमीरे रांखनाद कर्यों अने त्यां जरासंघ उपर विजय प्राप्त थया पछी शंखपुर अथवा शंखेश्वर नामे नगर वसाववामां आव्युं, तथा त्यां पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापित करवामां आवी.

१७४] [शङ्खपुर

उत्तर गुजरातमां विद्यारमां आवेलुं जैन तीर्थ शंखेश्वर ए आ शंखपुर होवा संभव छे.

१ जुओ अगडदत्त.

२ 'विविधतीर्थकल्प ' मां 'शंखपुरपार्श्वकल्प; ' वळी जुओ सुनि जयन्तविजयकृत 'महातीर्थ शंखेश्वर,' पृ. १६-२५.

शत्रुञ्जय

सौराष्ट्रनो एक पर्वत, ज्यां अर्वाचीन काळमां जैनोनुं सौथी वधु प्रसिद्ध तीर्थधाम छे.

गौतमकुमार अरिष्टनेमि पासे दोक्षा छईने शत्रुंजय उपर निर्वाण पाम्या हता. बोजा केटलाक साधुओनी पण ए निर्वाणमूमि छे. थावच्चापुत्रनुं निर्वाण पण शत्रुंजय उपर थयुं हतुं.

पांच पांडवो कृष्णना मरणथी संवेग पामीने, सुस्थित स्थविरनी पासे दीक्षा छईने शत्रुंजयना शिखर उपर पादपोपगमन (वृक्षनी जेम स्थिर रहीने अनशन करे ते) करीने काछधर्म पाम्या हता ³

'विविधतीर्थकल्प 'मां रात्रुंजयनां नीचे प्रमाणे एकवीस नाम आपेलां छे; सिद्धिक्षेत्र, तीर्थराज, मरुदेव, भगीरथ, विमलादि, बाहु-बली, सहस्रकमल, तालध्वज, कदंब, रातपत्र, नगाधिराज, अष्टोत्तर-रातकूट, सहस्रपत्र, ढंक, लौहित्य, कपिंदिनवास, सिद्धिरोखर, रात्रुंजय, मुक्तिनिलय, सिद्धिपर्वत, पुंडरीक.

- १ अद १
- २ अंद २ तथा ४
- ३ मस, गा. ४५७-४६४; आचू, उत्तर भाग, पृ. १९७. प्रमाणमां अविचीन कही शकाय एवा आगिमक टीकाप्रन्थोमां शत्रुंजयना केटलाक प्रासंगिक उल्लेखो माटे जुओ कसु, पृ. १३-१४; किक, पृ. ८; कवी, पृ. ८; कवी, पृ. ८, इत्यादि.

शान्तिचन्द्र वाचक

तपागच्छना सकलचन्द्र वाचकना शिष्य. एमणे 'जंबुद्दोपप्रज्ञिति' उपर 'प्रमेयरत्नमंजुषा ' नामे टीका रची छे. ए टीकाने अंते आपेली ५१ श्लोकनी विस्तृत प्रशस्ति प्रमाणे, एनी रचना सं. १६५१= ई. स. १५९५ मां थईं हती (श्लो १९). सं. १६१०= ई. स. १६०४मां राजधन्यपुर—राधनपुरमां केटलाक समकालीन जैन विद्वानोने हस्ते विजयसेनस्रिनी समक्ष एनुं संशोधन थयुं हतुं (श्लो. ३४-४०). एना लेखन अने शोधनमां कर्ताना शिष्य तेजचन्द्रे सहाय करी हती (श्लो. ४२). रत्नचंद्रे गुरुभक्तिथी एना अनेक आदशों तैयार कर्या हता (श्लो. ४९) अने लिपिकलामां चतुर धनचन्द्रे एनो प्रथमादर्श लख्यो हतो (श्लो. ५१).

१ जंप्रशा, पृ, ५४३-४६. शान्तिचन्द्र अने तेमना अन्य प्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ. ५४८-५५.

शान्तिसागर उपाध्याय

तपागच्छना उपाध्याय धर्मसागरना शिष्य श्रुतसागरना शिष्य. एमणे सं. १७०७=ई. स. १६५१मां पाटणमां 'कल्पसूत्र ' उपर 'कौमुदी ' नामे वृत्ति रची छे. '

१ ककी, प्रशस्ति

शान्तिसूरि

शान्तिसूरि थारापद्रीय गच्छना आचार्य हता. एमणे 'उत्तराप्य-यन सूत्र' उपर 'पाइअ टीका' नामे प्रसिद्ध प्रमाणभूत टीकानी रचना करी हती.'

'प्रभावकचरित 'ना १६ मा 'वादिवेताल शान्तिसूरिचरित 'मां आ आचार्यनुं चरित विस्तारथी आपेछुं छे. तेओ पाटण पासेना उन्नतायु—ऊण गामना वतनी हता (श्लो. ९–१८). एमना गुरुनुं नाम विजयसिंह हतुं (श्लो. ७). भोज राजाना आश्रित कवि

धनपालकृत 'तिलक्षमंजरी 'कथानुं संशोधन तेमणे कर्युं हतुं तथा भोजे तेमने 'वादिवेताल 'नुं बिरुद आप्युं हतुं (क्षो. २४-५९). शान्तिस्रिनुं अवसान सं. १०९६ € स. १०४०मां थयुं हतुं (क्षो. १३०).

आगमसाहित्यमां केटलेक स्थळे शान्तिसूरिनो 'वादिवेताल' तरीके उल्लेख हो.

शान्तिसूरि नामना अनेक आचार्यो थई गया छे. एमने माटे जुओ 'न्थायावतारवार्त्तिक वृत्ति,' प्रस्तावना, पृ. १४६-१४९.

१ उशा, प्रशस्ति.

२ कसं, पृ. ११९-२०; कदी, पृ. ११५, इत्यादि

शालवाहन

जुओ सालवाहन

शीलाचार्य

'आचारांग सूत्र' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र'ना टीकाकार. 'आचा-रांगसूत्र'नी टीका गंभूता (गांभू) गाममां रचाई हती. आ बन्ने टीकाओनी रचनामां शीलाचार्यने वाहरिगणिए सहाय करी हती.

'आचारांग सूत्र 'नी टीकानी जुदी जुदी प्रतोनी पुष्पिकाओमां तेनी रचनासंवत जुदी जुदी आप्यो छे. कोईमां शक सं. ७८८, कोईमां शक सं. ७८८, कोईमां शक सं. ७९८, कोईमां गृप्त सं. ७७२, तो कोईमां शक सं. ७७२ छे. आ चारमांनी कई साल साची ए नकी करवानो कोई चोक्रस पुरावो नथी. उद्योतनसूरिनी 'कुवलयमाला 'नी प्रशस्तिमां जेमनो उल्लेख छे ते तत्वाचार्य ए ज शीलांक अथवा शीलाचार्य एवो एक मत छे, अने आ शीलांक अणिहिलवाडना स्थापक वनराजना गुरु हता एवी पण एक परंपरा छे. आ सर्व उपस्थी, शीलाचार्य हरिभद्र-

स्रिना समकालीन होई ईसवी सनना आठमा सैकामां थया हशे एवी अजमायशी निर्णय आचार्य श्रीजिनविजयजीए क्यों छे.

'प्रभावकचरित 'ना कर्ता प्रभाचन्द्रस्रिए शीलांक अने कोट्या-चार्यने अभिन्न गण्या छे." 'विशेषावस्यक भाष्य ' उपरनी वृत्तिना कर्ता कोट्याचार्य ज 'प्रभावकचरित'ने उदिष्ट हशे एवं अनुमान सहेजे थई शके छे.

शीलाचार्यनी पूर्वे 'स्त्रकृतांग स्त्र ' उपर टीका अथवा टीकाओ होवो जोईए एम एमना ज विधान उपरथी जणाय छे. वळी एक स्थळे तो तेओ छखे छे के-जुदा जुदा स्त्रादशोंमां नानाविध स्त्री देखाय छे, अने टीकासंवादी एक पण आदर्श मळी शक्यो नथी, आथी अमुक एक ज आदर्शने अनुसरीने विवरण कर्युं छे, ए वस्तु वचारीने कोई स्थळे स्त्रथी विसंवाद जणाय तो चित्तव्यामोह न करवो."

- १ जुओ गम्भूता.
- २... निर्वृतिकुलीनश्रीशीलाचार्येण तत्त्वादिखापरनाम्ना वाहरिसाधु-सहायेन कृता टीका परिसमाप्तेति । आशी, पृ. २८८

समाप्ता चैयं सूत्रकृतद्वितीयाङ्गस्य टीका । कृता चैयं शीलाचार्येण वाहरिगणिसहायेन । यदवाप्तमत्र पुण्यं टीकाकरणे मया समाधिमृता, तेनापेततमस्त्रो भन्यः कल्याणभाग् भवतु ॥ सूकृशी, पृ. ४२७

- ३ 'जीतकल्पसूत्र, ' प्रस्तावना, पृ. ११-१५; वळी जुओ 'वस्तु-पालनुं साहित्यमंडळ अने संस्कृत साहित्यमां तेनी फाळो, ' पेरा १९.
 - ४ जुओ अभयदेवस्ररि, कोटचाचार्य.
 - ५ व्याख्यातमङ्गमिह यद्यपि सृिरमुख्ये— भेक्त्या तथापि विवरीतुमहं यतिष्ये । कि पक्षिराजगतमित्यवगम्य सम्यक् येनेव वाञ्छति पथा शलभो न गन्तुम् ॥ सृ्क्रशी, पृ. ९
 - ् ६ इह च प्रायः सूत्रादर्शेषु नानाविधानि सूत्राणि दस्यन्ते, न च २३

३७८

[शीलाचार्य

टीकासंबायेकोऽप्यस्माभिरादशेः समुपलब्घोऽत एकम दर्शमङ्कीकृत्यास्माभिर्विवरण कियते इत्येतदवगम्य सूत्रविसंवाददर्शनाच्चित्तव्यामोहो न विधेय इति ।

स्कृशी, पृ. ३३६

आ अवतरणमां स्पष्ट रीते 'टीका 'नो निर्देश के, एटले शीलाचार्य अहीं 'सूत्रकृतांग सूत्र 'नी प्राचीनतर चूणिनो उल्लेख करता नधी-प्राचीनतर कोई टीकानो करे छे-ए देखीतुं छे.

शैलकपुर

थावच्चापुत्र अणगार द्वारवतीथी शैलकपुर आव्या हता अने स्यांना शैलक राजाने उपदेश आपीने श्रमणोपासक बनाज्यो हतो.

वर्णन उपरथी शैलकपुर सौराष्ट्रना प्रदेशमां होय एवं अनुमान थाय छे. 'शैलकपुर'ए नाम जोतां सौराष्ट्रना पार्वतीय प्रदेशमां ते आवेळें हुहरो.

जुओ थावच्चापुत्र

शोभन

कवि धनपालनो भाई. 'शोभनस्तुति ' नामे एणे रचेलुं स्तोत्र प्रसिद्ध छे.

जुओ धनपाल

शौरिपुर

साडीप बीश आर्य देशो पैकी कुशावर्तनुं पाटनगर. दारकानी पहेलां ए यादवीनी राजधानी हतुं. महाबीर शौरिपुरमां आव्या हता. पमना समयमां शौरिपुरना राजानुं नाम सौर्यदत्त हतुं. त्यांना सौर्याव तंसक उद्यानमां एक माछीमारना पूर्वभवोनुं महाबीरे वर्णन कर्युं हतुं. व

आग्रा जिल्लामां यमुना नदीना किनारे बटेश्वरनी पासे आवेल सूर्यपुर अथवा स्रजपुर ए प्राचीन काळनुं शौरिपुर मनाय छे.

जुओ कुशावर्त

- १ आचू, गा. १२८९; आचू, उत्तर भाग, पृ. १९३.
- २ मुनि कल्याणविजय, 'श्रमण भगवान महावीर,' पृ. ३९६-९७
- ३ जैन, 'लाइफ इन एम्स्यन्ट इन्डिया, ' पृ. ३३७

श्याम आर्य

परंपरानुसार, आर्य स्थाम ' प्रज्ञापना सूत्र 'ना कर्ता गणाय छे.'

आर्य स्थाम तथा आर्य कालक के कालका नार्य एक होना संभव हे एवो केटलाक निदानोंनो मत हो, पण कालका नार्य एक करतां नधु थया हो जेमांथी कोने आर्य स्थाम गणवा एनो निर्णय सरल नथी एम तेओए ज स्वीकार्युं हो. बीजा केटलाक एम माने हो के पहेला कालका नार्य जेओ 'निगोदन्याख्याता ' तरीके प्रसिद्ध हो तेओ ज आर्य स्थाम हो."

- १ विको, पृ. १४२; नंग, पृ. १०५, ११५, ११८; आम, पृ. ५३६; श्राप्रर, पृ. १३३, इत्यादि
- २ पं. बेचरदासकृत 'भगवती सूत्र,' अनुवाद, भाग २, पृ. १३९-४०, टिप्पण
- ३ 'कालककथासंप्रह,' उपोद्धात, पू. ५२. जुओ कालकाचार्य-१ श्रीचन्द्रसूरि

चंदकुलना शीलभद्रसूरिना शिष्य धनेश्वरसूरिना शिष्य. एमणे सं. १२२७=ई. स. ११७१ मां अणहिलवाडमां 'जीतकल्प सूत्र 'नी बृहच्चूर्णि उपर विषमपदन्याख्या रची छे.'

१ जीकचृत्या, प्रशस्ति. श्रीचन्द्रसूरिना अन्य मन्धो माटे जुओ जैसाइ, पृ. २४३.

श्रीमाल

'कल्पसूत्र 'नी विविध टीकाओमां 'राज्यदेशनाम ' आप्यां छे तेमां श्रीमाल पण छे.' श्रीमालनुं बीजुं नाम भिल्लमाल के भिन्नमाल छे. भिल्लमालमां द्रम्म नामनुं खपानाणुं चालतुं हतुं. वळी 'निशीशचूर्णि' अनुसार, भिल्लमालमां चालतो रुपानो एक सिको 'चम्मलात'—(सं 'चम्लित') कहेवातो. माहेश्वर, उज्जियनी, श्रीमाल वगेरे नगरोमां लोको उत्सव-प्रसंगोए एकत्र शईने सुरापान करता हता.

भिद्धमालमां चालता एक सिकाने 'चम्मलात '-' चर्मलात ' कह्यों छे ए वस्तु जरा विचारवा जेवी छे. सिकानुं ए नाम ज विलक्षण अने अर्थरहित छागे छे. 'निशीथचूर्णि 'नी टाईप करेली आवृत्तिना संपादनमां अनेक अशुद्धिओ छे, अने अहीं पण मूळ प्रतना 'व' ने बदले भूछथी 'च' वंचायो होय अथवा मूळ प्रतोना लहियाओए 'व' नो 'च' करी नाख्यो होय एम बनवुं असंभवित नथी. आ रीते 'चम्मलात'ने स्थाने 'वम्मलात' (=सं.'वर्मलात') वांचवामां आवे तो ए नामनुं श्रीमालना इतिहास साथे अनुसंघान थई शके तेम छे. श्रीमालना राजा वर्मछातनो उन्छेख ' प्रभावकचरित 'मां छे. गुजरातना सप्रसिद्ध संस्कृत कवि माघे पोताना 'शिशुपालवध 'नी प्रशस्तिमां जे वर्मलातनो निर्देश क्यों छे ते ज आ होय एम बने. माघनो दादो सप्रभदेव आ वर्मलातनो मंत्री हतो. वर्मलात राजाना नामथी बहार पडेला सिका ' वर्मेलात' नामथी ओळखाता होय ए तदन शक्य छे—जेम मध्यकालना केटलाक राजाओना सिकाओनो निर्देश 'भीमप्रिय,' 'वीसल प्रिय ' आदि वडे करेलो छे तेम. कदाच ' वर्मलात ' ए वर्मलात-प्रिय 'नं संक्षिप्त रूप पण होय.

श्रीमालना पौराणिक वृत्तान्त माटे जुओ 'पुगु'मां श्रोमाल. एना इतिहास माटे जुओ ' बोंग्वे गेझेटियर,' पु. १, भाग १मां 'भिन्नमाल' विशेनुं परिशिष्ट, तथा ' काव्यानुशासन, ' प्रस्तावना, पृ. ८३-१०२.

१ जुओ गुर्जर.

२ ह्रपसंय वा नाणकं भवति, यथा-भिल्लमाले हम्मः । वृक्क्षे, भाग २, पृ. ५७४. श्रीमालना हम्मने 'पारीपथ हम्म ' कहेता. 'श्रीमालनी टंकशाळमां पांडेला, त्रण वार परखेला, बजारना व्यवहारमां आवता, चाल, मेळसेळ विंनाना, रोकडा ' पारीपथ हम्मनं चलण गुजरातमां ओछामां ओछं, विक्रमना तरमा शतकना अंत सुधी हतुं एम 'लेखपद्धति' (पृ. २०, ३३, ३५, ३७, ३९ ४२, ५५ इत्यादि) उपस्थी जणाय छे.

३ धवडुगा से दिश्जंति, ताम्रभयं वा जंणाणगं ववहरति तं दिश्जिति । जहां दिश्खणावहे कागणी, रूपमयं जहां भिल्लमाले चम्मलातो, निच्, भाग ३, पृ. ६१६-१७

४ आसूचू, पृ. ३३३

५ हेमचन्द्रकृत 'काञ्चानुशासन, 'प्रस्तावना (प्रो. र. छो. परीख), प्र. ९५

श्रीस्थलक

श्रीम्थलक नगरमां भानु राजा हतो. एना सुरूप नामे पुत्रने मोदक भावता होवाथी ते 'मोदकप्रिय' नामे प्रसिद्ध थयो हतो. सुरूपने एक बार वैराग्य पेदा थतां सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य सांपड्यां हतां अने छेवटे ते केवलज्ञान पाम्यो हतो, एवी कथा छे.

गुजरातनुं सिद्धपुर प्राचीन काळथी 'श्रीस्थल' तरीके जाणीतुं छे. ते आ श्रीस्थलक हरो ?

१ पिनिम, पृ. ३३.

श्रीहर्ष

ईसवी सनना बारमा सैकाना उत्तरार्धमां थई गयेलो 'नैषधीय-चरित 'नो कर्ता. 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र 'नी रत्नशेखरसूरिनी दृत्तिमां 'नैषध '' अने श्रीहर्षनो नामोल्लेख करीने ए काव्यना क्लोको टांकेला छे. मंत्री वस्तुपालना समयमां 'नैषध 'नी नकल गुजरातमां आवी त्यार पछी ए काव्यनुं अध्ययन—अध्यापन अहीं चालतुं रह्युं हतुं एनो आ एक विशेष पुरावो छे.

- १ बदुक्त नैषधेऽपि-पूर्वपुण्यविभवन्ययबद्धाः० श्राप्तर पृ. १०२
- २ श्रीहर्षमहाकविमापि यहे हिंसा दोषहेतुर्दशिता, यन्नेषघे द्वाविशे सर्गे षट्सप्ततितमं वृत्त-इज्येव देववजभोज्यऋद्धिः । ए ज, पृ. ४१

३ आ संबंधमां 'भारतीय विद्या, ' सिंधी स्मृतिष्रन्थमां मारो लेख 'गुजरातमां नैषधीयचरितनो प्रचार तथा तथा ते उपर लखायेली टीकाओ.'. आ लेख 'वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने भीजा लेखों ' ए पुस्तकमां पण संग्रहीत थयो हो.

सङ्घदासगणि क्षमाश्रमण

'व्यवहारभाष्य,' 'बृहःकल्पमाष्य,' 'पंचकल्पभाष्य ' आदि भाष्यप्रन्थोना कर्ता. तेओ 'वसुदेव—हिंडी 'ना कर्ता संघदासगणि बाचकथी भिन्न छे तथा तेमनाथी कंईक अर्वाचीन काळमां थयेला छे एवं मुनिश्री पुण्यविजयजीनुं मंतन्य छे.'

जुओ सङ्घदासगणि वाचक

१ जुओ 'बृहत्करूप सूत्र,' ग्रन्थ ६, प्रस्तावना, पृ. २०-१३.

सङ्घदासगणि वाचक

पैशाची प्राकृतमां रचायेला, गुणादच कविकृत लुत कथाप्रन्थ 'बृह्कथा 'ना प्राकृत गद्यमां थयेला जैन रूपान्तर 'वसुदेव-हिंडी 'ना कर्ता. एनी रचना ईसवी सननी पांचभी शताब्दीनी आसपास थयेली ले.'

'वसुदेव-हिंडी 'नं जे नाम एना कर्ताने इष्ट हतुं ते 'वसुदेव-चरित' छे; पण वसुदेवना 'हिंडण '--परिश्रमणनो वृत्तान्त एमां होबाथी ए प्रन्थ समय जतां 'वसुदेव-हिंडी ' तरीके वधु प्रख्यात थयो. आगमसाहित्यमां आ प्रन्थ विशेना सौथी प्राचीन उल्छेखो 'आवश्यक सूत्र 'नी चूर्णिमां छे, त्यां एनं नाम 'वसुदेव-हिंडी ' आयं छे. जो के 'वसुदेव-चरित' नाम पण क्वचित् मळे छे खंडे. 'श्राइप्रतिकामण सूत्र 'नी रत्नशेखरसूरिनी वृत्तिमां 'वसुदेव-हिंडी 'ने 'आगम' कहेल छे अने 'ज्ञाताधर्मकथा 'नी साथे तेनो उल्डेख कर्यों छे, ते उपरथी कथानुयोगना प्रन्थ तरीके एनुं केटलुं महत्त्व गणातुं एनी कल्पना थई शके छे. जैन साहित्यना सर्व उपलब्ध आगमेतर कथाप्रन्थोमां 'वसुदेव-हिंडी ' प्राचीनतम छे.

जुओ सङ्गदासगणि क्षमाश्रमण

१ 'वसुदेव-बिंडी ' (अनुवाद), उपोद्घात, पृ. १-२

र एज, पृ. ३-५

३ आचू, पूर्वभाग, पृ. १६४, ३२४, ४६०. आगमसाहित्यमां 'वसुदेव-हिंडी 'ना अन्य आधारो तथा उल्लेखो माटे जुओ आम, पृ. २१८; व्यम (उदे. ५ उपरनी वृत्ति), पृ. ६; श्राप्रर, पृ. १६५; वत्रु, पृ. १६५; किंक, पृ. ३५.

४ नंम, पृ. ११७; बुकक्षे, भाग ३. पृ. ७२२

५ न च तेषामिष्टसिद्धिभवनं सन्दिग्धमिति वाच्यं, हाताधर्मकथाङ्ग-वसुदेवहिण्डिप्रमृत्यागमे साक्षादुक्तत्वात् । श्राप्रर, पृ. १६५.

६ संघदासगणिनो समय, 'वसुदेव-हिंडी' अने 'बृहत्कथा 'नो संबंध, 'वसुदेव-हिंडी 'नी भाषा, एमांथी प्राप्त थती सांस्कृतिक-सामाजिक माहिती अने बीजा आनुषंगिक सुदाओनी चर्चा माटे जुओ 'वसुदेव-हिंडी' (अनुवाद), उपोद्धात.

सपादलक्ष

राजपूतानामां आवेल शाकंमरी-सांभरनी आसपासनो प्रदेश. सांभर ए प्रदेशनुं मुख्य नगर हतुं.

सपादलक्ष आदिमां 'बरड़ी '-बंटी नामनुं धान्य प्रसिद्ध छे. र

जुओ साम्भरि

१ ज्यांडि, पृ. १५४ तथा १७८

२ 'बरग 'त्ति बरही धान्यविशेषः सपादलक्षादिषु प्रसिद्धः । जंप्रशा, पृ. १२४

समयमुन्दर

खरतरगच्छना जिनचन्द्रसूरिना शिष्य सकलचन्द्रना शिष्य.

१८४ ो

तेमणे स्तंभतीर्थमां सं. १६९१=१६३५ मां 'दशवैकालिक सुत्र' उपर 'दीपिका' नामे टीका रची हती.' आ उपरांत 'कल्पसूत्र' उपर पण 'कल्पलता' नामे एमनी टोका जाणीती छे. समयसुन्दर संस्कृतना एक उत्तम विद्वान हता, अने तेमणे अनेक प्रन्थो रचेला छे. जैन गुर्जर साहित्यना पण तेओ एक सुप्रसिद्ध किव छे. तेमनी साहित्य-प्रवृत्ति सं. १६४२=ई. स. १५८५ ('भावशतक' रचायुं) थी मांडी सं. १६९८=ई स. १६४२ ('जीविवचार,' 'नवतत्त्व' अने 'दंडक' उपरनी टीकाओ) सुधीना अर्घी शताब्दी करतां ये लांबा समयपट उपर विस्तरेलो छे.

१ दवैस, पृ. ११७ (प्रशस्ति)

२ समयसुन्दरना जीवन अने तेमना प्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ. ५७६ तथा ५८८-८९. तेमनां गुजराती काव्यो माटे जुओ पांचमी गुजराती साहित्य परिषदमां स्व. श्री. मोहनलाल द. देसाईनो निवंध 'कविवर समयसुन्दर'.

समिताचार्य ।

समिताचार्य अथवा आर्य समित वज्रस्वामीना मामा हता. जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक शास्त्रा तेमना कर्तृत्वथी केवी रीते प्रवर्तमान थई ए विशे नीचेनो वृत्तान्त मळे छे: आभीरदेशमां कृष्णा अने वेणा नदीओना संगमस्थाने ब्रह्मद्वीपमां पांचसो तापसो रहेता हता. एमांनो एक तापस पोताना पग उपर अमुक प्रकारनो छेप करीने पाणी उपर फरतो हतो. आ चमत्कारथी छोको आश्चर्य पामता हता अने श्रावकोनी हेछना थती हती. वज्रस्वामीना मामा आर्य समित एक वार विहार करता त्यां आव्या. श्रावकोए तेमने बधी वात करी. 'आ तापस कोई प्रयोगधी श्रावकोने छेतरतो हशे ' एवं अनुमान करीने आर्य समित तमने कर्बुं के 'तापसने तमारे घेर आमंत्रणथी बोछावीने चरणप्रक्षाछनना मिषथी एना पग बरावर धोई नाखो. ' पछी एक श्रावके तापसने

आमंत्रण आपीने तेना पग धोई नाख्या, एटले पेलो लेप पण धोवाई गयो. तापस नदीकिनारे आवी पाणीमां ऊतयों, एटले डूबी गयो. पछी आचार्य त्यांथी नीकळ्या. तेमणे नदीकिनारे आवी वासक्षेप नाखी कह्युं, 'आव, पुत्रि! मारे सामे किनारे जवुं ले. ' एटले नदीना बने तट मळी गया, अने आचार्य सामे किनारे चाल्या गया. आथी बधा तापसोए चमत्कृत थईने आर्य समित पासे जैन दीक्षा लीधी. तेशो सर्वे बहादीपमां रहेता हता, तेथी 'ब्रह्मदीपक ' तरीके प्रसिद्ध थया.'

वसन्तपुरना निलय श्रेष्ठीना पुत्र क्षेमंकरे समितिसूरि पासे दीक्षा लीधी हती. हरन्त नामे संनिवेशमां समितिसूरि आव्या त्यारे त्यांनी जिनदत्त नामे श्रावक साधुओ प्रत्येनी मिक्तथी खास तेमने निमित्ते आहार तैयार करावतो हतो, तेथी आचार्ये पोताना साधुओने ए वहोर-वानो निषेध कर्यो हतो, एवो चुत्तान्त पण मळे छे.

जुओ अचलपुर, ब्रह्मद्वीप, वज्र आर्य

१ आचू, पूर्वभाग, पृ. ५१४-१५; निभा, गा. ४४४८-५०; निचू, भाग ४, पृ. ८७४-७५, वळी जुओ जीकभा, गा. १४६३; कसं, पृ. १३२; कसं, पृ. १५१३-१४; किंक, पृ. १७१; कही, पृ. १४९-५०, इत्यादि.

२ विनिम, पृ. १००.

३ पिनिस, पृ. ३१.

समुद्र आर्य

अर्थि समुद्र ए अर्थि मंगूना गुरु होय एम जणाय छे. एमतुं शरीर घणुं दुर्बळ हतुं. आथी एमने माटे आहारनी वानीओ जुदां जुदां मात्रक आदिमां जुदा जुदी लेवामां आवती हती, ज्यारे आर्थ मंगू तो बघी चीजो एक ज पात्रमां लेता हता; जुदां जुदां पात्रमां लावेली चीजो तेओ खाता नहोता. एक वार ए बन्ने आचार्यो विहार करता सोपारकमां गया. त्यांना वे श्रावकोमांनो एक गाडां चलावतो हतो, ज्यारे बीजो दारू माळवानो धंधो करतो हतो. तेओए आ बन्ने आचा-योंनी आहार स्वीकारवानी रीतिनो भेद जोईने आर्य मंमूनी पासे आवीने आ विशे पूछ्युं, त्यारे आर्य मंमूए तेनो नीचे प्रमाणे उत्तर आप्योः गाडांवाळा श्रावकने तेमणे कह्युं, 'हे शाकिटिक! तमारुं जे गाडुं दुवळ होय तेने तमे प्रयत्नपूर्वक दोरडांथी बांधो छो; पछी ते चाले छे. बांध्या विना ज चलाववामां आवे तो ते तूटी पढे छे. मजबूत गाडुं बंध विना पण चाली शके छे, एटले तेने तमे बांधता नथी. 'पली वैकटिक—दारूवाळाने तेमणे कह्युं, 'हे वैकटिक! तमारी जो कुंडी दुवळ होय तेने वांसनी पटीओधी बांधीने पली तेमां मद्य भरो छो; पण मजबूत कुंडीने बंधननी जहूर पडती नथा. आर्य समुद्र दुवळ गाडा अथवा कुंडी जेवा छे, ज्यारे अमे मजबूत गाडा अथवा कुंडी जेवा छीए. आर्य समुद्र सारी रीते योगसंधान करी शके, ए माटे तेमनो आहार आ रीते लेवामां आवे छे. '

'बृहत्कल्पसूत्र'नी वृत्तिमां आर्य मंगू, आर्य समुद्र अने आर्य सुहस्तीना मतोनो एक साथे उल्लेख करेलो छे."

जंशाबल क्षीण थतां आर्थ समुद्रे पादपोपगमनशी देहत्याग कर्यो हतो.

१ जुओ मंगू आर्य.

२ तत्र च द्वौ धावकावेकः शाकिटकोऽपरो वैंकिटिको । वैकिटिको नाम सुरासन्धानकारी । व्यम (उद्दे. ६), पृ. ४४

३ व्यमा (उद्दे. ६), गा. १४१-४६; व्यम (उद्दे. ६), पृ. ४३-४४

> ४ वृक्तम, भाग १, ए. ४४ ५ भाशी, ए. २३८

भ त

मीर्थंचंशीय राजा अशोकना अंध पुत्र कुणालनो पुत्र. जैन परं-परा प्रमाणे, ते उज्जयिनीमां वसतो हतो अने त्यां रहीने एणे आख दक्षिणापथ, सुराष्ट्र तथा आंध्र, द्राविड आदि देशों ताबे कथी हता.

जैन कथा अनुसार, संप्रति पूर्वजन्ममां कौशांबीमां भिखारी हतो अने मरती वखते आर्थ सहस्तीनो शिष्य थयो हतो. बोजा जन्ममां ते राजा थयो, ए वखते आर्थ सहस्तीनो शिष्य थयो हतो. बोजा जन्ममां ते राजा थयो, ए वखते आर्थ सहस्ती उज्जियनीमां जीवन्तस्वामीनी प्रतिमानुं वंदन करवा माटे आव्या त्यारे रथयात्रामां एमने जोईने संप्रतिने पूर्वजन्मनुं स्मरण थयुं अने ते आचार्यनो शिष्य अने मोटो प्रवचनभक्त थयो. संप्रतिनो राजिपंड आर्थ सहस्तीना शिष्यो वापरता हता ए निमित्ते महामिरि अने सहस्ती ए बन्ने आचार्यो बच्चे मतमेद थयो हतो, जेमां छेवटे सहस्तीए क्षमा मागी हती.

ए समये साडीपचीश आर्यदेशो सिवायना प्रदेशोमां जैन साधु-ओनो विहार थतो नहोतो. आथी संप्रतिए पोताना सरहदी मांडिक्कोने बोलावी तेमने जैन धर्मनो उपदेश आप्यो, अने साधुओ ज्यारे एओना देशमां विहार करे त्यारे एमनी प्रत्ये केवा प्रकारनुं प्रचचनोचित वर्तन थवुं जोईए एनुं सूचन कर्युं. पळी संप्रतिए राजपुरुषोने साधुवेश धारण करावी ए देशोमां मोकल्या, अने ए रीते त्यांनी प्रजाने साधुओ साधे केवी रीते वर्तवुं एनी विधियी परिचित बनावी. पळीथी साधुओ पण त्यां जवा लाग्या, अने सरहदी देशो 'भद्रक'—विहार योग्य बन्या. आ प्रमाणे संप्रतिए आन्ध्र, द्रविड, महाराष्ट्र, कुडुक आदि सरहदी प्रदेशो, जे अनेक अपायोथी भरेला हता तेमां साधुओनो सुखविहार प्रवर्ताव्यो.

संप्रति राजा ए जैन इतिहासमां मोटो प्रवचनमक्त राजा गणाय छे. तेणे सवा करोड जिनचैत्य, सवा करोड जिनधिव, छत्रीस हजार जीर्ण जिनचैत्योमो उद्धार, पंचाणु हजार विकळनां विव तथा हजारो उपा-श्रयो कराव्यां होवानी अनुश्रुति छे. आजे पण कोई स्थळे भूगर्भमां दरायेछी प्रतिमा मळे छे एने श्रद्धाळु जैनो संप्रति राजाना समयनी माने छे.

- १ जुओ कुणाल.
- २ बृकक्षे, भाग ३, पृ. ९१७-१८
- ३ निचू, भाग २, पृ. ४३८
- ४ जुओ महागिरि आर्थ, सुहस्ती आर्थ.
- ५ बुकक्षे, भाग ३, पृ. ९१७-२१
- ६ किक, पृ. १६४-६५; ककौ, पृ. १९६

सरस्वती

उत्तर गुजरातनी सरस्वती नदी, जेना किनारे पाटण, सिद्धपुर वगेरे अतिहासिक स्थानो आवेलां छे.

सरस्वती नदीनो पूर्विदिशाभिमुख प्रवाह ज्यां छे त्यां जईने आनंदपुरवासी छोको शरदऋतुमां यथावैभव संखडि—उजाणी करे छे. वळी अन्यत्र, एक दिवसनी संखडि माटे सरस्वतीयात्रानुं उदा-हरण आपेलुं छे.

सरस्वतीनो प्रवाह पूर्वथी पश्चिम वहे छे, आथी जे थोडा प्रदेश-मां पण ए पूर्वाभिमुख थाय छे ए प्रदेश पिवत्र गणाय छे. सर-स्वतीनो आ 'प्रावीनवाह' प्रवाह सिद्धपुर पासे छे, अने त्यां जूना समयथी कार्तिकी पूर्णिमाने दिवसे मोटो मेळो भराय छे, ज्यां आस-पासना प्रदेशमांथी हजारो माणसो एकत्र थाय छे. 'आनंदपुरवासी छोको 'नो अर्थ 'प्राचीन आनंदपुरनी आसपासना विस्तारमां वसता छोको ' एवो करीए तो एथी अतिहासिक औचित्य जळवाशो.

सरस्वतीना पूर्वाभिमुख प्रवाहनो उल्लेख जयसिंहसूरिना 'हम्मीर-मदमर्दन ' नाटक (ई. स. ना १३मा शतकनो पूर्वार्ध) मां सिद्धपुरना । रुद्रमहालयना वर्णनप्रसंगमां पण छे.

सर्ख्वतीना इतिहास माटे जुओ ' खंगातना इतिहास 'मां परि-शिष्ट २; पुगु मां सरस्वती, तथा श्री. कनैयालाल दवे संपादित 'सर-

स्वती पुराण '.

- ९ वृक्क्षे, भाग ३, पृ. ८८३-८४. जुओ **आनन्दपुर.**
- २ तत्य ताओ संखडीओ एगदेविषयाओ जहा सरस्कईजता, आसूचू, पृ ३३२
- ३ नूनमस्याः [सरस्वत्याः] सिद्धपुरपरिसरे प्राचीमुखप्रसमरं पयः-प्रवाहमधिवसन् सुचिरविरश्चिशिरःकर्त्तनसञ्चातपातकविद्युद्ध्यर्थमिव भगवान् भदमहाकालः, हम्भीरमदमर्दन, पृ. ४७

सहस्राम्रवन

उज्जयंतिगरि उपरनुं ए वन, ज्यां नेमिनायने केवलज्ञान थयं हतुं.

१ ककी, पृ. १६९-७०

सह्यपर्वत

पश्चिमघाटने। उत्तर तरफनो भाग. एनो उल्लेख 'आवश्यकसूत्र'-नी निर्युक्तिमां छे.' एक दुर्गमां वसता कोकण देशना पुरुषो सहा नामे पर्वत उपरथी घउं, गोळ, घी, तेल आदि उतारवानुं अने त्यां चढाववानुं काम करे छे, ' एवो पण निर्देश छे

१ आति, गा. ९२५

२ एकस्मिन् दुर्गे निवसन्तः कुङ्कुणयेशोद्भवाः पुरुषाः सहानामनः पर्वताद् गोधूमगुडवृततैलादिभाण्डमवतारयन्त्यारोहयन्ति च । आहेहा, पृ. ५५

कोङ्कणे एगम्मि दुग्गे सञ्झरस मंड आहरति विलयंति य, आम, पृ. ५१२

सातवाहन

जुओ सालवाहन

साम्ब

जांबवतीथी थयेरो कृष्णनो तोफानी पुत्र. एना अडपछांनी कथाओ अनेक स्थळे छे, अने ते पुराणादिमां वर्णवेस्री कृष्णनी कीडाओ साधे १९०] [साम्ब

केटलेक अंशे मळती आवे छे. केटलीक उदाहरणरूप कथाओनी संक्षेप अहीं आप्यो छे:

द्वारवतीमां बलदेवना पुत्र निसदनो पुत्र सागरचन्द्र खुब रूपाळो हतो अने सांब वगेरे सर्वने ते प्रिय हतो. द्वारवतीमां वसता बीजा एक राजाने कमलमेला नामनी एवी ज रूपवान पुत्री हती. उपसेनना भाणेज धनदेव साथे एनं सगपण करेछं हतं. एक बार नारद मुनि सागरचन्द्र पासे आव्या अने तेनी आगळ कमछमेलानी प्रशंसा करी. आथी सागरचन्द्र कमलमेलामां आसक्त थये। अने ते कन्यानी आकृति चीतरतो तथा एनं नाम रटतो रहेवा लाग्यो. पछी नारद कमलमेला पासे गया, अने एनी आगळ तेमणे सागरचन्द्रनी प्रशंसा करी अने धनदेवनी निन्दा करी. आथी कमलमेला पण सागरचन्द्रमां आसक थई. नारदे आ बात जर्हने सागरचन्द्रने करो. पछी सागरचन्द्रे सांबने कमल-मेला साथे पातानो मेळाप करी आपवानी विनंति करी. बीजा कुमारोए सांबने मद्य पिवरावीने तेनी पासे आ विनंती स्वीकारावी, पण मधनं घेन ऊतरी गया पछी सांबने आ कामनी मुश्केछीनुं भान थयुं. विचार करीने तेणे प्रद्युम्न पासे प्रज्ञप्तिविद्यानी मागणी करी. प्रज्ञप्तिनी सहायथी तेणे कमलमेलांनुं प्रतिरूप विकुन्धुं तथा कमलमेलानी जगाए गोठवी दीधुं अने जे दिवसे कमलमेलानुं धनदेव साथे लग्न थवानं हतुं ते दिवसे एनं हरण करीने रैवतक उद्यानमां एने सागरचंद्र साथे परणावी दीवी. पछी धनदेव साथेना लग्न समये विद्याप्रतिरूप तो अइहास करीने आकाशमां ऊडी गयं. कमलमेला विशे नारदने पूछवामां आवतां तेमणे कहुँ। के 'कमलमेलाने में रैवतक उद्यानमां जोई हती; कोई विद्यावर एने हरी गया छै. 'आ सांभळी कृष्ण सैन्य सहित नगरनी बहार नीकळ्या, सांब पण विद्या-धरने रूप धारण करोने लडवा माटे सामे आव्यो. सर्व राजाओनो सांबे पश्जय कर्यी, पण ज्यारे एणे जीय के पिता कोधायमान श्रया छ त्यरि ए कथाने परे पडचो, अने कहीं, 'आ कमलमेला आपवात स्तक्ष] [१९१

करवा माटे गोखमांथी पडतुं मूकती हती, तेने बचावीने अमे अहीं लाव्या छीए. 'पछी कृष्णे उप्रसेननुं सान्त्वन कर्युं अने बधा सुखपूर्वक रहेवा लाग्या.

एक बार भगवान अरिष्टनेमि द्वास्वतीमां समोसर्का. एमने। उपदेश सांभळीने सागरचन्द्रे एमनी पासे दीक्षा छीधी. ए पछी एक वार सागरचन्द्र शून्यगृहमां एकरात्रिकी प्रतिमोमां रहेला हता त्यारे धनदेवे एमना वीसे नखमां त्रांबानी सोयो ठाकी दीकी. आश्री सागरचन्द्र मरण पाम्या. बीजे दिवसे तपास करतां त्रांबाना कारीगर पासेथी माद्यम पड्युं के आ सोयो धनदेवे घडावी हती. क्रोधायमान थयेला सांब आदि कुमारोए धनदेव पोताने सोंपी देवामां आवे एवी मागणी करी. परिणामे यादवोना वे पक्षो वच्चे युद्ध थयुं, परन्तु देव थयेला सागरचन्द्रे बन्नेने शान्त कर्या. पछी कमलमेलाए पण भगवान अरिष्ट-नेमि पासे दीक्षा लीधी.

एक वार जांबवतीए कृष्णने कह्युं के 'मारा पुत्रनुं कोई तोफान हजी जोवामां आव्युं नथी,' त्यार कृष्णे कह्युं के 'काई वार बताबीश.' पछी कृष्ण पोते आभीर थया अने जांबवतीए आभीरीनुं रूप छोधुं, अने तेओ द्वारवतीमां दहीं वेचतां फरवा लाग्यां. सांबे जांबवतीने जोईने दहीं लेवा बोलाको; अने पछी तेने एकलीने पराणे एक देवळमां खेंचो जवा लाग्यो. पाछळथी आभीरना रूपमां कृष्ण आव्या, अने बन्ने वच्चे युद्ध थयुं. आभीर कृष्ण वासुदेव थया अने आभीरी जांबवतीरूपे प्रकट थई, एटले माबापथी शरमायेलो सांब अवगुंठन करीने नासी गया. बोजे दिवसे यादवोनी सभामां एने पराणे बोलाव-वामां आव्यो त्यारे ते लाकडानो एक खोलो घडतो घडतो आव्या. कृष्णे एनं कारण पूजतां ते बोल्यो, 'से गई कालनी बात कहेशे एना मुखमां आ ठोकवानो छे.'

१ आमे, ए. १३६-३७; आच्, प्वभाग, ए. ११२-११४.

१९२]

सांब भने प्रयुग्ननी कीडाओं, सत्यभामाना पुत्र भानुनी सांचे करेली पजवणी, कृष्णे करेल सांवनं देशनिर्वासन, तथा हेवटे एना उपर करेलो अनुमह, ए सर्व माटे जुओ 'वयुदेव-हिंडी 'ना पीठिका, मुख भने प्रतिमुख ए विभागो (गुज. अनुवाद, ए. ९२-१४३). आवी कथाओ तेमनी अतिशयतामां काल्पनिक हरो, पण यादव गणराज्यनी वास्तविक स्थिति तथा यादवोना आंतरिक संघर्ष उपर ते द्वारा केटलोक प्रकाश पडे छे.

साम्भरि

सांभर-शाकंभरी; सपादलक्षनुं मुख्य शहर. सांभरिना खवणनो उल्लेख मळे छे.

१ ज्याहि, पृ. १७४ भने १७८. वळी जुओ सपाद्रस्थः

🤏 'लवणं च' सांभरिलवणं, दवेहा, पृ. १९८

पुनः सौवर्चेलं, सैन्ववं पर्वतदेशैकजातं, लवणं च सांभरलवणं, दवैस, पृ. ७

साखवाहन

गोदावरीने किनारे आवेला प्रतिष्ठाननो राजा. एनां 'शालिवाहन,' 'शालवाहन' अने 'सातवाहन' एवां पण नाम मळे छे. ए दर वर्षे भरु-कच्छना नभोवाहन राजा उपर आक्रमण करतो हतो. सालवाहनना मंत्रोनुं नाम खरक हतुं. सालवाहननी सूचनाथी कालकाचार्ये पर्युषण-पर्व चतुर्थाने बदले पंचमीए करवानुं शरू कर्युं हतुं.

सालवाहन विशेनां केटलांक रसप्रद कथानको आगमसाहित्यमां छे. एक वार सालवाहन राजाए एना दंडनायकने आज्ञा आपी के 'शीष्र मथुरानो कबजो लई लो.' दंडनायक वधारे केई पूल्या सिवाय सैन्य लईने नीकल्यो, पण पली तेने विचार थयो के 'कई मथुरानो कबजो छेवो है उत्तर मथुरानो के दक्षिण मथुरा (मदुरा)नो है पण सालवाहननी आज्ञा घणी कडक गणाती हती, आधी वधारे पूल्यपल करवानुं शक्य नहोतुं. एणे पोताना सैन्यना वे माग पाडी दीधा, अने उत्तर

साळवाहन] [१९३

मथुरा तेम ज दक्षिण मथुरा बन्ने उपर विजय कयों. पछी जईने राजाने विजयनी वधामणी आपी. ए ज समये बीजा कोई दृते राजाने जईने कहुं के 'अम्रमहिषीने पुत्र जन्म्या छे.' त्यारे वळी त्रीजाए खबर आपी के 'अमुक स्थळे विपुल निधि प्रकट थयो छे.' आ प्रमाणे एक साथे अनेक मंगल समाचारो आववाथी अतिहष्ने कारणे सालवाहन दीप्तचित्तं थई गयो. ते पलंगो तोडवा लाग्यो, स्तंभो उपर प्रहार करवा लाग्यो, अने अनेक प्रकारे असमंजस बोलवा लाग्यो. एना प्रलापमां नीचेनी गाथाओ पण हती:

सचं मण गोदावरि ! पुन्वसमुद्देण साविया संती । साताइणकुळसरिस, जित ते क्ले कुळं अत्थि ॥६२४६॥ उत्तरतो हिमवंतो, दाहिणत साळिवाहणो राया । समभारभरकंता. तेण न पल्हत्थए पुहवी ॥ ६२४७॥

[अर्थात् हे गोदावरी ! पूर्व समुद्रना सोगन खाईने साचुं कहे : सातवाहनना जेवुं बीजुं कोई कुछ तारा कूछ-किनारा उपर छे !

उत्तरमां हिमालय अने दक्षिणमां शालिवाहन राजा-एम (बन्ने दिशामां) सरखा भारथी आकान्त थयेली पृथ्वी चलायमान थती नथी.]

पछी राजाने भानमां लाववा माटे खरक मंत्रीए एक उपाय कर्यों. अनेक स्तंभों अने भींतों तेणे तोडी नाख्यां. राजाए पूछ्युं : 'आ कोणे कर्युं ?' एटले मंत्रीए उत्तर आप्यो : 'आपे.' पछी 'आ मारी आगळ मिथ्या भाषण कुं ले 'एम मानीने राजाए तेने लात मारी. संकेत प्रमाणे बीजा माणसीए अमात्यने अन्यत्र खुपावी दीधो. पछी कंईक जरूर पडतां राजाए पूछ्युं: 'अमात्य क्यां ले ?' पेला माणसीए कर्युं: 'आपनी आगळ अविनय कर्यों, तेथी एमनो वध करवामां आव्यों ले. ' त्यारे राजा सोरवा मांड्यों 'में आ सारुं न कर्युं; ए समये मने कंई भान न रह्युं. ' पछी पेला राजपुरुषों बोल्या के

'कदाक चंडालोए अमात्यनुं रक्षण कर्युं होय तो अमे तपास करीए.' पछी अमात्यने छाववामां आव्यो, अने राजा प्रसन्न थयो.

सातवाहननी अप्रमहिषीनुं नाम पृथ्वी हतुं. एक वार राजा क्यांक बहार गयों हतो त्यारे तेनो वेश धारण करीने, बधी राणीओथी वीटळाईने ते राजाना आसन उपर बेठी. केटलीक वार पछी राजा त्यां आव्या, तो पण ते ऊठी नहि. पृथ्वीनुं आ वर्तन राजाने गम्युं नहि. त्यारे पृथ्वी बोली के 'राजा ज्यारे दरबार भरीने बेठो होय त्यारे गुरुजनो सिवाय बोजो गमे तेवो मोटा माणस आवे तो पण ते ऊभी थतो नथी. हुं तमारी लीला करतो हती, तेथी ऊमी न थई. जो प्रमान होत तो जरूर ऊभी थईने तमारं अभिवादन करत. ' एम कहीने तेणे राजाने प्रमन्न कर्यों."

१ जुओ प्रतिष्ठानः

र जुओ नभोवाहन. नभोवाहन ते ईपनी सनना बीजा शतकना पूर्वार्धमां ययेलो क्षहरातवंशीय शक-क्षत्रप नहपान, तथा सालवाहन अथवा सातवाहन ते एनों समकालीन सातवाहन वंशनो गोतमीपुत्र शातकिं। होई शके आ संबंधमां पण जुओ नभोवाहन.

- ३ वृक्क्षे, भाग ६, ए. १६४७
- ४ जुओ कालकाचार्य-२.

५ आ ' वीसचित्त ' शब्द मूळनो छे. त्यां एनो अर्थ ' हरखघेछों, हवींनमत्त ' (Excited) एवो छे. झीणी अर्थच्छायाओ व्यक्त करवा माटे आपणने अनेक शब्दोनी जरूर छे त्यारे आ जूनो शब्द प्रवस्ति करवा जेवो छे. आवों एक बीजो शब्द ' क्षिप्तचित्त ' छे. राग, भय, अपमानादिशी जेनी सज्ञा नध्ट थई गई होय ए ' क्षिप्तचित्त ' कहेवाय छे। (जुओ। ' अभिधानराजेन्द्र ' प्रन्थ ३ मी 'खित्तचित्त ');

६ वृक्तमाः गा. ६२४४-४९; वृक्क्षे, भागः ६; पृ. १६४७-४९ ७ व्यभा (उद्दे. ६, गा. १९९-२०१), व्यम (उद्दे. ६), ष्ट्र ३६-३७:

सिखराज जयसिंह

सं. ११४९ थी ११९९=ई. स. १०९३ थी ११४३ सुधी अणहिलवाडनी गादी भोगवनार गुजरातनो चौलुक्यवंशीय राजा.

अभिलिषित धन होय छतां एनी रक्षा, प्रतिष्ठाप्राप्ति अने अभीष्ट स्नीनी कामना करतां मनुष्य दुःस्ती थाय, अने स्नीनी प्राप्ति थाय छतां मनुष्य पुत्रादिनी आशाथी दुःस्ती थाय-ए संबंधमां राजा सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नी रत्नशेखरनी वृत्ति (ई. स. १४४०) मां आपेलुं छे.

सिद्धराज विशेनी आ प्रकारनी किंवदंती लोकप्रसिद्ध हरो, ते उपरथी आ उदाहरण लेवायुं लागे छे.

१ एवमभिजिषितधनत्वेऽपि तद्रक्षास्त्रप्रतिष्ठाप्राप्त्यभीष्ट-स्त्रीसंयोगका-मितकामभोगाद्याशया तत्प्राप्तावपि सिद्धराज-जयसिंद्दनुपादिवत् पुत्रा-द्यपत्याशया.....स्वदापि दुःखिन एव,...श्राप्तर, पृ. १०१

सिद्धसाधु

तेओ हरिभद्रस्रिना शिष्य हता. बुद्धधर्मनो मर्म जाणवा माटे तेओ बौद्धो पासे गया हता; त्यां बौद्ध मतथी तेओ भावित थया, पण गुरुने वचन आप्युं हतुं, एटले तेमनी विदाय लेवा माटे आल्या. गुरुए तेमने प्रतिबोध कर्यो, पण बौद्धोने पण वचन आप्युं हतुं एटले पाला तेमनी विदाय लेवा माटे गया. ओम एकवीस वार थयुं. लेवटे हिरिभद्रस्रिए तेमना प्रतिबोध माटे 'लिलितविस्तरा' वृत्ति रची, त्यार-पली तेओ गुरु पासे स्थिर थईने रहाा.

'प्रभावकचरित ' अनुसार आ सिद्ध साधु ते 'उपमितिभवप्रपंच-कथा'ना कर्ता सिद्धिषि छे. पण ऐतिहासिक प्रमाणो आपणने निश्चित-पण एम मानवा प्रेर छे के सिद्धिषि ए हरिभद्रसूरिना प्रत्यक्ष शिष्य नहोता, केम के सिद्धिषिना पोताना ज कथन मुजब, तेमनी छपर्युक्त कथा सं. ९६२=ई. स. ९०६मां रचाई छे, ज्यारे हरिभद्रसूरि ए विक्रमना आठमा सैकाना उत्तरार्धमां अने नवमा सैकाना पूर्वार्धमां अई गया. सिद्धिए पोताना 'धर्मबोधकर गुरु ' तरीके हरिभद्रनो उल्लेख क्यों छे अने तेमणे 'लिलितिवस्तरा' वृत्ति अनागतनो विचार करीने पोताने माटे ज निर्मा होवानुं बहुमानपूर्वक नोध्युं छे. 'लिलितिवस्तरा' वृत्ति जाणे के अनागत—भविष्यनो विचार करीने पोताने माटे हरिभद्रे रची ए सिद्धिना शब्दोनो वास्तविक अर्थ तो ए थई शके के बन्ने प्रत्यक्ष समकालीनो नथी. एमां तो एक पूर्वकालीन विद्वाने पोतानी आध्यात्मिक दृष्टिने बराबर रुचे एवी कृति लखी ए माटेना सिद्धिना प्रशंसाना उद्गारो छे. सिद्धिने बौद्धमतनुं आकर्षण हृशे, पण 'लिलितविस्तरा'नुं अध्ययन करीने तेओं जैन मतमां स्थिर थया एवो अर्थ पण उपर टांकेली अनुश्रुतिनो करी शकाय.

- १ श्राप्रर, पृ. ३२
- २ प्रच, 'सिद्धविंचरित,' श्रो. ९९-१४७
- ३ पहेली ओरियेन्टल कान्फरन्समां आचार्य जिनविजयजीनो निबंध 'इरिभदाचायस्य समयनिर्णयः '

सिद्ध सेनगणि

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत 'जीतकल्पसूत्र ' उपरनी चूर्णिना कर्ता. आ सिद्धसेनगणि जिनभद्रगणिनी पछी अर्थात् ई. स. ६०९थी अर्थाते काळमां थया एटछं तो नक्की छे, पण तेमना समय विशे तथा तेओ कोण हता ए विशे निश्चयपूर्वक कही शकाय एम नथी. ै

- 🤋 जीतकश्पचूर्णिः समाप्ता । सिद्धसेनक्कतिरेषा । जीकसू , पृ. 🤾 🗸
- २ जीकसू, प्रस्तावना पृ. १७

सिद्धसेन दिवाकर

आदि जैन तार्किक, कवि अने स्तुतिकार, जेमने परंपराथी राजा

विक्रमादिःयना समकालीन गणशामां आवे छे, तथा विक्रमने जेमणे जैनधर्मी कर्यो होवानुं मनाय छे.

एमने विशेना केटलाक प्रकीण उल्लेखा आगमसाहित्यमां छे एमां सीथी महत्त्वनो उल्लेख केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युग-पत् थतुं होवा विशेनो तेमनो मत छे. आगमिक मत एवो छे के केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युगपत्—एक साथे थतुं नथी, पण एक समये केवलज्ञान अने बीजे समये केवलदर्शन एम वारंवार थयां करे छे. सिद्धसेन आ मतने तर्कथी असिद्ध गणे छे. जिनभद्दगणि क्षमा-श्रमण जेवा पळीना आचार्योए सिद्धसेनना आ मतनुं खंडन कर्युं छे. आगमसाहित्यमां सिद्धसेन अने जिनभद्दनां आ मतांतरोनी वारंवार नौध लेवामां आवी छे.

सिद्धसेनकृत 'द्वार्त्रिशिकाओ ' मांथी कवित् अवतरण आपवामां आवेलुं छे. ' निशीथसूत्र ' उपर सिद्धसेने एक टीका रची हती, एम ' निशीथचूर्णि ' मांना उल्लेखो उपरथी जणाय छे. पण आजे ए टीका विद्यमान नथी. ' योनिप्राप्तत ' शास्त्र थी सिद्धसेनाचार्ये घोडा बनाव्या होवानो उल्लेख पण छे. एमना सुप्रसिद्ध न्यायप्रन्थ ' सन्मतितर्कः-' नो उल्लेख प्राचीन चूर्णिओमां 'दर्शनप्रमावक शास्त्र ' तरीके करेलो छे.

'न्यायावतार सूत्र' अने 'कल्यागमन्दिरस्तोत्र' ए सिद्धसेन-नी अन्य कृतिओ छे.

सिद्धसेनना समय विशे विद्वानोमां जबरो मतमेद छे अने ईसवी सननी पहेली शताब्दीथी मांडी सातमी शताबदी सुधी जुदा जुदा विद्वानोए एमनो समय गण्यो छे. 'सन्मतितर्क'नी प्रस्तावना (पृ. ३५-४३)मां तेमनो समय विक्रमनो पांचमो सैको गणेलो छे. मिस शालोंट कौझेए सिद्धसेनने समुद्दगुतना समकालीन गण्या छे. सिद्धसेन विशेना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ ' प्रभावकचित-' मां 'वृद्धवादिचरित ' तथा 'प्रबन्धकोश 'मां 'वृद्धवादि—सिद्धसेन-सूरिप्रबन्ध, ' तथा एमना जीवन विशे अतिहासिक चर्चा माटे जुओ 'सन्मतिप्रकरण, ' प्रस्तावना, पृ. ३५-८२. सिद्धसेननी विशिष्टताओना संक्षित, पण समर्थ निरूपण माटे जुओ 'भारतीय विद्या, 'पु. ३, सिंघी स्पृतिप्रन्थमां पं. सुखलालजीनो लेख 'प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन दिवाकर.'

जुओ गन्धहस्ती

१ भसूल (शतक १, उ. ३), नंहा, पृ. ५२; नंम, पृ. १३४, १३५, १३८, १७८; कसं, पृ. ११५; कि. पृ. १२७; इत्यादि.

२ बृकक्षे, भाग २ पृ. ३५५

३ एतस्स चिरातनगाहापायस्स सिद्धसेनाचार्यः स्पष्टेनाभिधानेनार्थम-भिधते । निचू, भाग १, पृ ७८

अस्यैवार्थस्य स्पष्टतरं व्याख्यानं सिद्धसेनाचार्यः करोति-भुंजस्य पश्च-क्खातं (भा. गा. ३०३), ए ज, प्र. ९६

भा. गा. ५०४ (एकेकं तं दुविहं०) सिद्धसेनकृत छे, केम के एनी पूर्वे लख्युं छे: इदमेवार्थे सिद्धसेनाचार्यों वक्तुकाम इदमाह, ए ज, पृ. १५३

४ यत्र योनिप्रामृतादिना यदेकेन्द्रियादिशरीराणि निर्वर्त्तयति, बथा विद्वसेनाचार्येणाश्चा उत्पादिताः ।

बृकक्षे, भाग ३, ए. ७५३

'निशीयचूर्णि मां पण आ प्रकारनो उल्लेख छे ('सन्मतिवकरण', प्रस्तावना, पृ. ३७).

५ प्रच, (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. ४९

६ विन्टरनित्स, 'हिस्टरी ओफ इन्डियन लिटरेचर, 'प्रन्थ २, पृ. ४७७, टिप्पण.

७ 'विक्रम वाल्युम' (पृ. २१३-२८०)मां विमनी लेख 'सिद्धसेन दिवाकर अन्ड विक्रमादित्य.'

सिनवङ्घी

सिनवल्ली रण जेवी जगा हती. कुंभकारप्रक्षेप नगर त्यां आवेलुं हतुं.

'सिनवन्ली 'नुं 'सिन' अंग 'सिन्ध ' शब्दनुं अपश्रष्ट रूप हरो ? जुओ कुम्भकारप्रक्षेप, वीतभयनगर १ आचू, उत्तर भाग, पृ. ३४-३७

सिन्धु

- [१] सिन्धु नदीः गंगा, सिन्धु वमेरेने महानदीओ कही छे अने तेमना जळने 'महासिल्लाजल' कहां छे."
- [२] सिन्ध देश. सिन्ध आदि देशो ' असंयम विषय ' (ज्यां संयम पाळतो कठण पडे एवा प्रदेश) होवाथी त्यां वारंवार विहार करवानो निषेध करेलो छे. सिन्धु, ताम्रहिस (खंमात) आदि प्रदेशोमां मच्छर पुष्कळ होय छे. सिन्धनां ऊंटनुं चर्म घणुं मृदु होय छे. सिन्धनां गोरसनो खोराक व्यापक प्रचारमां होवाथी जे सिन्धवासीए दीक्षा लीधी होय ते गोरस विना रही शकतो नथी. सिन्ध देशमां अग्निन मंगल गणेलो छे, तथा त्यां धोबीओने अपवित्र गणवामां आवता नथी. सिन्धु विषयमां वगर फाडेलां, आखां वस्त्रों पहेरवानो खिवाज छे. दुर्मिक्षना समयमां मांसभक्षण सामान्य छे, पण सिन्धमां सुमिक्षना समयमां पण लोको मांस खाय छे. त्यां नदीनां पाणीथी धान्य नीपजे छे. सिन्धमां दास्त्र राखगना पात्रमां पण भोजन गर्हित गणातुं नथी, एवो देशाचार छे. तथा त्या पात्रमां पण भोजन गर्हित गणातुं नथी, एवो देशाचार छे. तथा न्याना पात्रमां पण भोजन गर्हित
 - १ बुकक्षे, भाग ४, पृ. ९५७
 - २ ए ज, भाग ३, पृ. ८१६
 - ३ स्कृच्,, ए. १०१. जुओ ताम्रहिष्ति.
 - ४ आसूच, पृ. ३६४

- ५ बुकक्षे, भाग ३, पृ. ७७५
- ६ विको, पृ. १८; आम, पृ. ६
- ७ निच्न, भाग २, प्र. ३४६; बुकक्षे, भाग २, प्र. ३८३-८४
- ८ बृकक्षे, भाग ६, पृ. १६८१
- ९ एज, भाग २, पृ. ३८३-८४
- १० एज, भाग २, पृ. ३८३-८४
- ११ बुक (विशेषचूर्णि), भाग २, पृ. ३८४ टि.

सिन्धु-सौवीर

साडीपचीरा आर्यदेशो पैकीनो एक देश. एनी राजधानी वीति-भय नगरमां हती, ज्यां उदायन राजा राज्य करतो हतो.

अल बिरूनीए मूलताननी आसपासना प्रदेशने सौबीर कह्यो छे. सिन्धु—सौबीरनो सामान्यतः एक साथे उल्लेख होय छे, ए उपरथी बन्ने प्रदेशोनुं एक ज एकम गणातुं होवुं जोईए. आजना सिन्ध तथा पश्चिम पंजाबना प्रदेशोनो समावेश सिन्धु—सौबीरमां थतो हतो.

सिन्धु-सीवीरादिमां त्याग करवा लायक विरूप वन्न पहेरनार गहित थाय छे, तेथी त्यां आखां वन्नो पहेरवानं विधान छे."

- ९ सूक्त्रशी, पृ. १२३; वृक्क्षे, भाग ३, पृ. ९१२-१४
- २ जुओ वीतिभयनगर,
- ३ जुओ उदायन.
- ४ ज्यांडि, पृ. १८३
- ५ भसू, शतक १३, उद्दे. ६; किक, पृ. १९९; इ. पृ. ५८७-८८; कदी, पृ. २३; ककी, पृ. २३४, इत्यादि. जुओ उदायन, वीतिभयनगर.
 - ६ ज्यांकि, पृ. १८३
- ७ वृक्सा, गा. ३९१३; वृकक्षे, सांग ४, पृ. १०७३-७४. सरखावो सिन्धु.

सिमा

माळवानी एक नदी, जेना किनारे उज्जयिनी आवेलुं छे.

रोहकने सिप्रा नदीना किनार बेसाडीने एनो पिता कोई वीसरायेछी वस्तु छेवा माटे पाछो उज्जयिनीमां गयो, त्यारे रोहके नदीनी रेतीमां प्राकार सहित आखी उज्जयिनीनुं आछेखन कर्युं हतुं. एवी वार्ता छे.

१ नम, पृ. १४५. जुओ रोहक.

सिंहपुर

अगियारमा तीर्थंकर श्रेयांसनाथना जन्मस्थान तरीके सिंहपुरनो उल्लेख छे, ते बनास्स पासेनुं जैन तार्थ सिंहपुरी मानवामां आवे छे.

पण 'सूत्रकृतांग सूत्र'नो शोलांकदेवनी वृत्तिमां उद्धत थयेला एक हालरडामां नकपुर, हस्तकल्प, गिरिपत्तन, कुक्षिपुर, पितामहमुख अने शौरिपुर ए नगरोनी साथे सिंहपुरनो उल्लेख छे. आ सिंहपुर ते बनारस पासेनुं सिंहपुरी के सौराष्ट्रनुं सिंहपुर—सीहोर ए प्रश्न विचारवा जेवो छे. ए हालरडामां निर्देशेलां हस्तकल्प अने गिरिपत्तन ए वे नगरो नि:शंकपणे गुजरातनां छे ए पण साथोसाथ याद राखवुं जोईए.

- १ आनि, ३८३
- २ 'प्राचीन तीर्थमाला, ' पृ. ४
- ३ सुक्रशी, पृ. ११९; अवतरण माटे जुओ कान्यकब्ज.
- ४ जुओ हस्तिकल्प.
- ५ जुओ गिरिनगर.

सुन्दरीनन्द

एने विशेनी कथानो सारांश आ प्रमाणे छे. नासिक्य-नासीकमां नंद नामे विणक हतो, एनी सुन्दरी नामे पत्नी हती. सुन्दरीमां नंद अत्यंत आसक्त होवाने कारणे छोकोए एनुं नाम 'सुन्दरीनन्द' पाड्युं हतुं. एना भाईए दीक्षा छीधी हती, ए नंदने प्रतिबोध पमाडवा माटे आव्यो.

सुन्दरीनंदे तेने भोंजन वहोराव्युं. पछी साधुए तेनी पासे पात्र उपडाट्युं अने पोतानी साथे चलाव्यो. सुन्दरीनन्दना मनमां हतुं के 'हमणां भाई मने रजा आपरो. ' पण साधु तो तेने पोताना निवास ज्यां हतो ते उद्यान सुधी छई गया. लोकोए हाथमां पात्र सहित नंदने जोयो, अने कहेवा लाग्या के 'सुन्दरीनंदे दीक्षा लीधी छे!' एटलामां तो उद्यान-मां साध्य नंदने देशना आपी, पण उत्कट रागवाळी होवाने कारणे तेने प्रतिबोध पमाडी शकायो नहिं. साधु वैकिय छव्धिवाळा-इच्छा मुजबनां रूपो उत्पन्न करवानी शक्तिवाळा हता. तेमणे वानर्युगल विकुर्व्यु, अने नदने पृष्ठधुं के, 'सुन्दरी अने वानरी वच्चे केट छं अंतर ! ' नदे उत्तर आप्यो, 'भगवन्! सरसव अने मेरु जेटछं. ' पछी साधुए विद्याधरमिथुन विकुट्युँ अने नंदने पूछचुं, एटले तेणे उत्तर आप्यो के 'विद्याघरी अने सुन्दरी तुल्य रूपवाळां छे.' पछी साधुए देविमथुन विकुर्ल्यु, एटले ए देवांगनाने जोईने नंद बोल्यो के 'भगवन्! आनी आगळ सुन्दरी वानरी जेवी छे.' साधुए कह्युं के 'आ तो थोडा धर्मथी पामी शकाय छे. ⁷ आ पछी साचा धर्मनुं फळ विचारीने सुन्दरीनन्दे दीक्षा छीत्री

बुद्धनो ओरमान भाईं नंद पोतानी पत्नी सुन्दरीमां अत्यासक्त हतो, एने पराणे दीक्षा आपवामां आवी हती अने द्रश्टान्तोथी वैराग्यमां स्थिर करवामां आव्यो हतो—एनी कथा वर्णवता अश्वघोषना 'सौन्दरानन्द काव्य'ना वस्तुनुं कोई स्वरूपान्तर उपर्युक्त कथामां रजू थयुं छे एम जणाय छे.

एक भाई दीक्षित होय अने ते गृहस्थ भाईने त्यां भिक्षा माटे आवी पात्र उपडावी एने पोतानी साथे छई जाय अने पछी दीक्षा आपे ए प्रसंग उपर्युक्त कथानी जेम जंबुस्वामीनी पूर्वभवकथामां भवदत्त अने भवदेवना संबंत्रमां मळे छे, जे एना प्राचीनतम रूपे 'वसुदेव-हिंडी' (भाषान्तर, पु. २५-२७)मां प्राप्त थाय छे.

जुओ नासिक्य

१ आचु, पूर्व भाग, पृ. ५६६; आम, पृ. ५३३

सुरिय

एक यक्ष. एनुं आयतन द्वारवती पासेना नंदनवन उद्यानमां हतुं. जुओ द्वारवती, रैवतक

सुराम्बर

एक यक्ष. एनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं.ै १ पाय, प्र. ६७

सुराष्ट्र

साडीपचीस आर्य देशो पैकी एक. जेनी राजधानी द्वारवती— द्वारकामां हती.

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रनी वात करतां, मगध, मालव, महाराष्ट्र अने कोकणनी साथे सुराष्ट्रनो उल्लेख कर्यों छे. 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेलां 'राज्यदेशनाम'मां 'सौराष्ट्र' पण छे. 'सुरद्वा' अथवा सुराष्ट्र छन्नु मंडलमां वहेंचायेलो हतो.

एक माणस 'सौराष्ट्र' एटले के 'सुराष्ट्रनो' केवी रीते कहेवाय ए नीचे प्रमाणे समजान्युं छेः िरिनगरमां निवास करवानी इच्छाथी कोई माणस मगधमांथी सुराष्ट्र तरफ जवा नीकळे अने सुराष्ट्रना सीमाडे आवेला गाममां पहोंची जाय, पछी एनो निर्देश करवानो प्रसंग उपस्थित थतां एने माटे 'सौराष्ट्र'—अर्थात् 'सुराष्ट्रनो'—एवा शब्दनो व्यवहार थाय छे. वळी 'सूत्रकृतांगचूणिं'मां मगधना श्रावक साथे सुराष्ट्रना श्रावकनो उल्लेख छे ('खेत्ते जो जत्थ खेते पुरिसो, जहा सोरहो सावगो मागधो वा एवमादि,' पृ. १२७), ए वस्तु सूचवे छे के चूर्णि-कारना समयमां जैनधर्मनां केन्द्रोमां मगध अने सुराष्ट्र पण हतां. ३०४]

एक संनिवेशमां वे दिरद्र भाईओ हता; तेओए सुराष्ट्रमां जईने एक हजार रूपक उपार्जित कर्या हता एवं एक प्राचीन कथानक छे. ते उपरथी समुद्रथी वीटायेला सुराष्ट्रमां बहोळो वेपार चालतो हतो एवं अनुमान स्वाभाविक रीते ज थाय छे.

'वसुदेव-हिंडी' (ई. स. ना पांचमा सैका आसपास) ना 'गन्धवंदत्ता लंभक' मांथी सुराष्ट्रनी वेपारी जाहोजलाली नुं समर्थन करतो पुरावो प्राप्त थाय छे. एमां चारुदत्त नामे विणकपुत्र चीनस्थान, सुवर्ण-भूमि, कमलपुर, यवद्वीप, सिंहल तथा पश्चिमे बर्बर अने यवन देशनो जलप्रवास खेडीने पाले। फरतां सुराष्ट्रना किनारे प्रवास करतो हतो अने किनारो दिष्टमर्यादामां हतो त्यारे एनुं वहाण भांगी गयुं अने सात रात्रिओ एक पाटियाने आधारे समुद्रमां गाळ्या पली 'उंबरावतीवेला' ए नामथी ओळखता तीरप्रदेश उपर ते फेंकाई गयो हतो ('वसुदेव-हिंडी,' मूळ पृ. १४६; भाषान्तर, पृ. १८९).

कुणालना पुत्र संप्रतिए उज्जयिनीमां रहीने सुराष विषय स्वाधीन कर्यो हतो. सुराष ए नेमिनाथनी जन्ममूमि अने विहारमूमि होई त्यां जैन धर्मनुं जोर होय अने जैन साधुओ ए प्रदेशमां विचरता होय ए स्वामाविक छे, पण संप्रतिनुं आधिपत्य त्यां स्थपाया पछी जैन धर्मनी प्रवृत्तिने वेग मळ्यो हशे. आ अनुमानने समर्थन आपतां प्रमाणरूप कथानको आगमसाहित्यमां मळे छे: सुराष्ट्र विषयमां बे आचार्यो हता. एक आचार्य कायम त्यां ज रहेता हता, तेओ आगंतुक आचार्यने सुगमदुर्गम मार्गो तथा सुखिवहार करी शकाय एवां क्षेत्रो वगेरे बधुं समजावता हता. जुदा जुदा प्रदेशोना वतनी साधुओना देशराग विशे आम कह्युं छे: एक साधु सुराष्ट्रनी प्रशंसा करे छे के सुराष्ट्र विषय रमणीय छे. बीजो साधु बोल्यो के 'तुं कूपमंडूक छे. तने शी खबर छे! सारो देश तो दक्षिणापथ छे.' आम देशरागथी चालता उत्तर-प्रत्युत्तरोमांथी कल्ह उत्पन्न थाय छे.

सुराष्ट्र] [२०५

सुराष्ट्रमां जैन साधुओनो विहार घणा प्राचीन काळथी व्यापक हतो एम स्चवतुं एक लोकप्रचलित पद्य, ई. स. ना पांचमा सैका आसपास रचायेल प्राकृत गद्यकथाप्रन्थ 'वसुदेव–हिंडी'ना 'गंध्व-दत्ता लंभक'मां मळे छे. जुओ—

अह णियंठा सुरहं पविद्वा, कविद्वस्स हेटा अह सन्निविद्वा। पडियं कविद्वं फुटं च सीसं, अन्वो ! अन्वो ! वाहरंति हसंति सीसा॥

(मूछ, पृ. १२७)

अर्थात् आठ निर्प्रन्थे। सुराष् मां प्रवेश्या, अने त्यां एक कोठना झाडनी नीचे बेठा; कोठ पडचु अने (निर्प्रन्थनुं) माथुं फूटी गयुं; 'अब्बो!' ' अब्बो!' एम बोलता शिष्यो हसवा लाग्या (माषान्तर, पृ. १६२).

सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जियिनी जतो हतो. दुष्काळनो समय हतो. एने बौद्ध साधुओनो संगाथ थयो. मार्गमां चालतां एनं भाथुं खूटी गयुं. बौद्रोए कह्युं के 'अमारो धर्म स्वीकार तो तने खावानुं आपीए.' पछी श्रावकने पेटमां दर्द थयुं; बौद्रोए अनुकंपाथी तेना उपर चीवर ओराढचुं, पण ते तो नमस्कारमंत्रनो जाप करतो काल-धर्म पाम्यो."

सुराष्ट्र अने उञ्जयिनी वन्चेनो व्यवहार, सुराष्ट्र तथा आसपासना प्रदेशोमां बौद्धोनी वस्ती वगेरे बाबतो उपर आ कथानक केटलोक प्रकाश पांडे छे.

तेल भरवा माटेनुं विशिष्ट प्रकारनुं माटीनुं पात्र सौराष्ट्रमां 'तैलकेला' नामथी प्रसिद्ध हतुं. ए तूटी न जाय तेम ज चोराई न जाय ए माटे एनुं सारी रीते संगोपन करवामां आवतुं हतुं.

'कंगु'-कांग नामे धान्य सुराष्ट्रमां सारा प्रमाणमां थतुं हतुं. 'हें आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां 'सौराष्ट्र' करतां 'सुराष्ट्रा -सुराष्ट्र' (प्रा. सुरट्ठा, सुरट्ठ) शब्दना प्रयोग प्रत्ये स्पष्ट पक्षपात जोवामां आवे छे. अन्य साहित्यमां पण एम ज छे ए वस्तु नोवपात्र छे.''

[सुराष्ट्र

- १ स्कृशी, पृ. १२३; वृक्कक्षे, भाग ३, पृ. ९१२-१४
- २ अनु, पृ. १४३
- ३ जुओ गुर्जर.
- ४ छन्नउइं मंडलाइं सुरद्वा, निचू, भाग ५, पृ. ९४०

मण्डलमिति देशसम्बद्धम् , यथा-पण्णवितमण्डलानि सुराष्ट्रादेशः, वृकक्षे, भाग १, पृ. २९८

- ५ जीम, पृ. ५६
- ६ दवैचू, पृ. ४०; दवैहा, पृ. ३५
- ७ निचू, भाग २, पृ. ४३८
- ८ जुओ सम्प्रति.
- ९ निचू, भाग २, पृ. ४३४
- ९० बृकक्षे, भाग ३, पृ. ७६●
- ११ आचू, उत्तर भाग, पृ. ३७८
- १२ तैलकेला-सौराष्ट्रप्रसिद्धो मन्मयस्तेलस्य भाजनिवशेषः स च भक्तभयाक्षोच(ठ)नभयाच्च सुट्ठ संगोप्यते... हाधअ, पृ. १४
 - १३ निच्, भाग २, पृ. २६५
 - १४ जुओ पुगु मां सुराष्ट्र.

सुहस्ती आर्य

आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती ए बे स्थूलभद्र स्वामीना शिष्यो हता. एमां महागिरि ए सुहस्तोना उपाध्याय हता. आगमप्रोक्त आचारपाळन माटे आर्य महागिरि खूब आप्रही हता. आर्य सुहस्तीना साधुओ राजा संप्रतिनो राजपिंड स्वोकारता हता अने सुहस्ती ए बस्तु चालवा देता हता ए सुद्दा उपर तेमनी अने सुहस्ती सोपारक]

वच्चे मतमेद थयो हतो, जेमां छेवटे सुहस्तीए पोतानी मूलनो स्वीकार

अर्थि महागिरिए गजाग्रपदमां अनशन कर्यु त्यारपछी आर्थे सहस्ती पोताना शिष्यो साथे उज्जियनी गया अने त्यां भद्रा नामे शेठाणीनी यानशाला—वाहनशालामां निवास कर्यो त्यां भद्रानो अवंति-सुकुमाल नामे पुत्र एमने। शिष्य थयो हतो.

भार्य सहस्तीना नीचे प्रमाणे बार शिष्यो हताः आर्थ रोहण, भद्रयश, मेघ, कालर्थि, सुस्थित, सुप्रतिबुद्ध, रक्षित, रोहगुप्त, ऋषिगुप्त, श्रीगुप्त, ब्रह्मा अने सोम.

- १ जुओ महागिरि आर्य, सम्प्रति.
- २ जुओ गुजायपद.
- ३ जुओ अवन्तिसुकुमाल.
- ४ किक, पृ. १६८

सोपारक

मुंबईनी उत्तरे थाणा जिल्लामां दरियाकिनारे आवेल सोपारा.

आगमसाहित्यना उल्लेखो पण सोपारक समुद्र किनारे आवेलुं होवानुं कहे छे. त्यांनो सिंहगिरि राजा मल्लविद्यानो शोखोन हतो.

सोपारक जैन धर्मनुं एक केन्द्र हतुं. आर्य समुद्र, आर्य मंगू अने वज्रस्वामीना शिष्य वज्रसेन जेवा आचार्योती ए विहारमूमि हतुं, तथा नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधर—ए साधुओनी चार शाखाओ सोपारकथी प्रवर्ती हती.

प्रसिद्ध शिल्पी कोकास सोपारकनो वतनी हतो अने त्यांथी पोतानुं नसीब अजमाववा माटे उज्जियिनी आब्यो हतो.

सोपारकमां कलालो बहिष्कृत गणाता नहि होय, केम के आर्य समुद्रना श्रावकोमां एक वैकटिक-दारू गाळनार पण हतो एवी २०८] [सोपारक

उल्लेख हो. पडोशना महाराष्ट्रमां पण कलालो बहिष्कृत नहोता अने तेमनी साथे बीजाओ भोजन लई शकता, पवा अन्य उल्लेखनी तुलना आ साथे करवा जेवी हो.

सोपारक दिखाकिनारानुं नगर होई वेपारनुं केन्द्र हतुं. परदेशथी धान्य भरीने वहाणो आवतां त्यां एक वार दुर्भिक्षनो सुभिक्ष थयो हतो. " 'निशीथचू णिं'मां नोंधायेळी एक अनुश्रुति प्रमाणे, सोपारकमां वेपारीओनां पांचसो कुटुंबो हतां. एमनो कर माफ थयेळो हतो, पण त्यांना राजाए मंत्रीना कहेवाथी तेमनी पासे कर माग्यो, परन्तु 'एम करवाथी पुत्रपौत्रादिए पण कर आपवो पडशे' एम समजीने वेपारीओए ना पाडो. राजाओ कह्युं के 'कर आपवो न होय तो अग्निप्रवेश करो.' आथी पांचसो ये विणको पोतानी स्त्रीओ साथे अग्निप्रवेश करीने मरण पांच्या हता. आ विणकोए अगाउ सोपारकमां पोतानुं एक सभागृह कराव्यं हतुं, एमां पांचसो सालभंजिकाओ हती."

आ छेल्छो उल्छेख आर्थिक—सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए घणो अगत्यनो छे. एमांथी मुख्य आरछो वस्तुओ फिलत थाय छे: सोपारा वेपार मुंदुं मोदुं मथक होई एमां वेपारीओनां पांचसो कुटुंबो हतां. ए वेपारीओनुं एक महाजन हतुं. महाजन पासे तेनी पोतानी कचेरी अने एमां मोटुं समागृह हतुं, जेमां पांचसो प्तळीओ हतो. अर्थात् शिल्पनी दृष्टिए पण ए समागृह नोंधपात्र हरो. माफ करेलो कर राजाए लेवा धार्यो ए सामे विरोध करतां बधा वेपारीओ मरण पाम्या, ए वस्तु पण प्राचीन 'श्रेणि'ओ (Quilds) ना संगठनना प्रतीक जेबी छे. 'निश्रीधसूत्र'नी चूर्णिमां ज निह, पण तेना भाष्यमां ये आ अनुश्रुति नोंधाई छे, ए एनी प्राचीनता सूचवे छे.

सोपारक-शूर्पारकना उल्लेखो पुराणो अने बौद्ध साहित्यमां तेम ज ग्रीक भूगोळप्रन्थोमां पण छे. जुओ 'पुगु'मां शूर्पीरकः

- १ इभी य समुद्दतंडे स्रोपारयं नाम नगरं। उने, पू. ७९. वळी जुओ आचू, उत्तरभाग, पृ. १५२
 - २ जुओ अट्टण.
 - ३ जुओ समुद्र आर्य.
 - ४ जुओ मङ्गू आर्थ.
 - ५ जुओ चन्नसेन.
 - ६ जुओ जिनदत्त.
 - जुओ कोकास.
- ८ जुओ समुद्र आर्थ.
 - ९ जुओ महाराष्ट्र.
- ९० निभा, गा. ५९३३—३४; निच् , भाग ५, पृ. ९०२०. वळी वृकक्षे, भाग ३, पृ. ७०८

सौर्यपुर

जुओ शौरिपुर

सौराष्ट्र

जुओ सुराष्ट्र

सौराष्ट्रिका

सौराष्ट्रमां थती एक खास प्रकारनी माटीने 'सौराष्ट्रिका' (प्रा. सोरिट्ठिआ) कहे वामां आवे छे. एनो जूनामां जूनो उल्लेख 'दशवैकालिक स्त्र'मां छे. 'एमांना 'सोरिट्ठिआ' शब्दनो अर्थ टीकाकार समयसुत्तर 'तुविरिका' एवो पर्याय आफीने समजावे छे, 'परन्तु ते पण आजे तो अपिरिचत छे. सिद्रसेननी 'जीतकल्पचूर्णि'मां पृथ्वीकायना भेदोमां 'सोरिट्ठिया'नो उल्लेख कर्यों छे तथा ते उपस्ती वृत्तिमां श्रीचन्द्रसृत्यि 'तूविरिका' नाम आप्युं छे. ' 'व्यवहार स्त्र'नी मलयमिरिनी वृत्तिमां पण 'सौरिष्ट्रिकी' शब्द छे. ' श्रीचन्द्रस्र्रिए एने 'वर्णिका' कही छे ते उपस्थी ए कदाच गोपीचंदन जेवी रंगीन माटी होय एवी तर्क थाय छे,

- पं. हरगोविन्ददासना 'पाइअ-सद-महण्णवो'मां 'सोरट्वियांना एक अर्थ 'फटकडी' आप्यो छे.
 - १ गेरुअवन्निअसेडिअ-सोरहिअपिहकुकुसए, दवे, ५-१-३४
 - २ सौराष्ट्रिका तुवरिका, दवेस, पृ. ३०
- ३ ...मिट्टिया-ओ**स-ह**रियाल-हिगुलुय-मणोसिला-अंजण-लोण-गेर्घ -वन्निय-सेल्डिय-सोरिट्टिय-मिक्खए क्रमत्ते सन्वश्य पुरिमङ्हं । एयं पुढ विमिक्ष्स्यं । जीक्सू, पृ. १५-१६
- ४ ...एस्येत्यादिना पृथ्वीकायो मृत्तिकालवणोषत्व रिकावणिकादिरूपः । जीकचूव्या, पृ. ४७
- ५ ...तथा हरितालहिंगुलकमनःशिलाः प्रतीताः, अंजनं सौवी-राजनादि, लवणं सामुदादि, एते सिचत्तपृथिवीकायमेदाः, उपलक्षणमेतत् , तेन गुद्धशिष्यूषगेहकवर्णिका सेटिका सौराष्ट्रिक्यादयोऽपि सिचत्तपृथ्वीकाय मेदाः प्रतिपत्तन्याः । न्यम (प्रथम भाग), पृ. ४३-४४

सौवीर

'कल्पसूत्र 'नी विविध टीकाओमां आपेलां 'राज्यदेशनाम 'मां सौबीर पण छे."

जुओ सिन्धु-सौत्रीर

१ जुओ गुर्जर.

स्कन्दिल आर्य

अर्थ स्कन्दिल अथवा स्कन्दिलाचार्येना अध्यक्षपणा नीचे ईसवी चोथा सैकामां मथुरामां जैन श्रुतनी वाचना थई हती, जे 'माथुरी वाचना' तरीके प्रसिद्ध छे. देविर्धिगणि क्षमाश्रमणे वलभीमां आगमो लिपिबद्ध कथीं तेमां आ 'माथुरी वाचना'ने मुख्य वाचना तरीके स्वीकारी हती.

जुओ देवधिंगणि समाश्रमण, पथुरा, वल्रमी

स्थानक

मुंबईनी उत्तरे आवेलुं थाणा.

कोंकण देशना स्थानकपुरनो उल्डेख ' द्रोणमुख '—अर्थात् जळ अने स्थळ एम बन्ने मार्गे जई शकाय एवा स्थान—तरीके करेलो छे.'

'स्थान' पदान्तवाळां स्थळनामो-पंजाबनुं मूलस्थान (मुलतान), सौराष्ट्रनुं थान तथा आ थाणानो संबंध भाषाशास्त्र तेम ज सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए विचार्या जेवो छे. मूलस्थान अने थान तो सूर्यप्जानां प्राचीन केन्द्रो छे; थाणा विशे वधु संशोधन अपेक्षित छे.

९ तस्य वा द्रोणमुखं जल[स्थल]निर्गमप्रवेशम्। यथा कोङ्कण-देशे स्थानकं नामकं पुरम् । न्यम, भाग ३, प्र. १२७

अहीं कौसमां मूकेलो 'स्थल' शब्द मुदित प्रतमां नथी. व्यम नुं ए संपादन हजारो अशुद्धिओथी भरेलुं छे. बीजी तरफ 'द्रोणमुख'नो उपर्युक्त अर्थ निश्चित छे (जुओ भरुकच्छमां टि. २, तथा ' अभिधानराजेन्द्र'मां दोणमुह), एटले आटलो सुधारो आवश्यक छे.

स्नपन

उज्जियनीनुं एक उद्यान. त्यां साधुओ ऊतरता हता.

स्नपन शब्दनुं प्राकृत रूप 'ण्हवण' छे; ए उपस्थी त्यां कोई जाहेर स्नानागार अथवा नाहवाधोवानी जग्या हशे एवं अनुमान करी शकाय !

१ अवंतीजणवए उज्जेणीगयरीए ण्ह्वणुक्जाणे साहुणो समोसरिया, उज्ञा, पृ. ४९-५०

इरन्त संनिवेश

समिताचार्य विहार करता एक वार हरंत संनिवेशमां गया हता.

हरंत संनिवेशनुं स्थान निश्चित थई शक्युं नथी, पण समिता-चार्यनी विहारम्मि मुख्यत्वे माळवा अने कृष्णा तथा वेणा आसपासनी प्रदेश जे ए समये आभीर देश तरीके ओळखातो हतो त्यां हती, एटले हरंत संनिवेश पण एटला प्रदेशमां क्यांक होवा संभव छे.

जुओ आभीर, ब्रह्मद्वीप, समिताचार्य १ पिनिम, ए. ३१

हस्भिद्रसूरि

याकिनी महत्तरासूनु (याकिनी नामे साधीना धर्मपुत्र) हरि-भद्रसूरि आगमोना पहेला संस्कृत टीकाकार छे. एमनो समय आचार्ये जिनविजयजीए सं. ७५७ थी ८२७=ई. स. ७०१ थी ७७१ सुधीनो निश्चित कर्यो छे हिरिभद्रसूरि पूर्वाश्रममां चित्रकूटना समर्थे विद्धान बाह्मण हता. एमना परंपरागत ब्रत्तान्त माटे जुओ प्रभावक-चरित मां हिरिभद्रसूरिचरित.

अभमो उपरनी हरिभद्रसूरिनी संस्कृत टीकाओमां 'आवश्यक,'' 'द्रावैकालिक,'' 'अनुयोगद्वार,' तथा 'नंदिसूत्र '' उपरनी टीकाओ मुख्य छे. एमनी टीकाओना उल्लेख अने आधार पछीना समयनी आगमटीकाओमां अनेक स्थळे आपवामां आग्या छे, जेम के—'तत्त्वार्थ सूत्र ' उपरनी हरिभद्रसूरिनी वृत्तिनुं उद्धरण मलयिगिरिए 'जीवाभिगम सूत्र' उपरनी वृत्तिमां आखुं छे. हरिभद्रनी 'अनुयोगद्वार' टीकानो आधार पण मलयिगिरिए 'ज्योतिष्करंडक ' वृत्तिमां आधी छे." वळी 'वृह्त्कल्पसूत्र 'ना टीकाकार क्षेमकीर्तिए हरिभद्रसूरिकृत 'पंचवस्तुक 'मांथी, 'आद्धप्रतिक्रमण सूत्र 'ना वृत्तिकार रत्नशेखरसूरए 'द्रावैकालिक 'नी हरिभद्रकृत वृत्तिमांथी, तथा 'कल्पसूत्र 'ना टीकाकार धर्मसागरे हरिभद्रकृत 'पंचाशक 'मांथी, अवतरण आप्यां छे, अने 'कल्पसूत्र 'ना बीजा टीकाकार विनयविजये 'पंचाशक' उपरनी नवांमोवृत्तिकार अमयदेवसूरिनी टीकानो पण आकार आप्यो छे." हरिभद्रकृत कथानक 'धूर्तो ख्यान 'नुं वस्तु पण प्रावीनतर आगमसाहित्यमां प्राप्त थाय छे." हरिभद्रनी पछी थयेला

' बृहत्कल्पसूत्र 'ना टीकाकारे कर्तानुं नाम लीधा सिवाय 'धूर्ताख्यान 'नो उल्लेख कर्यो छे. संभव छे के तेमने हरिभद्रनी कृति उद्दिष्ट होय.

जैन साहित्यना इतिहासमां हिरिभद्रसूरि एक असामान्य व्यक्ति छे. आगमोनी टोकाओ ए तो तेमनी साहित्यप्रवृत्तिनी एक अंशमात्र छे. न्याय, योग, धर्मकथा, औपदेशिक साहित्य आदि अनेक विषयोनी एमनी रचनाओ छे, अने 'षड्रशनसमुच्चय ' जेवी कृतिमां—जे भार-तीय साहित्यमां ए प्रकारनी पहेलो ज संप्रह्मंथ छे तमाम भारतीय दर्शनीनो सार समर्थ रीते तेमणे आप्यो छे. परंपरा तो एमना उपर १४०० प्रन्थोना कर्तृत्वनुं आरोपण करे छे. एमनी रचनाओनी समा-लोचना माटे जुओ 'समराइच्चकहा 'नी डां. याकोबीकृत प्रस्तावना तथा 'जैन साहित्यनो संक्षित इतिहास,' पृ. १५३—१७०.

- १ पहेली ओरियेन्टल कें।न्फरन्समां आचार्य जिनविजयजीना लेख हरिभद्राचार्थस्य समयनिर्णयः '
 - २ जुओ जिनभटाचार्थ.
 - ३ महत्तराया याकिन्या धर्मपुत्रेण चिन्तिता । आचार्यहरिमद्रेण टीकेय शिष्यगेधिनी ॥

दवैहा, ष्ट. २८६ (अंते)

४ समाप्तेयं शिष्यहिता नामानुयोगद्वारटीका, कृतिः सिताम्बराऽऽचार्थ-इरिभरस्य ।

कृत्वा विवरणमेतत्त्राप्त यत्किञ्चिदिह मया कुशलम् । अनुयागपुरस्सरस्व लभतां भन्यो जनस्तेन ॥ अनुहा, पृ. १२८ ५ आ टीकानो उल्लेख मलयगिरिए 'नंदिसूत्र' उपरनी ब्रत्तिमां कर्यों छे. जुओ जिरको, पृ. २०१.

६ आह च तत्त्वार्थटीकाकारो हिरिमद्रसूरि:-'' नात्यन्तं शीतार्थन्द्रमधः नात्यन्तोष्णाः सूर्याः किन्तु साधारणा द्वयोरपी ''ति, जीम, पृ. ३४१. आ टोकानो उल्लेख ' प्रवचनक्षारोद्धार 'ना टीकाकार सिद्धसेने (पृ. ३३७) पण कर्यो छे. पं. सुखलालजीना मत प्रमाणे ('तत्त्वार्थसूत्र', बीजी आवृत्ति, प्रस्तावना, पृ. ५५-६५) तत्त्वार्थटीकाकार हिर्भद्रसूरि ए याकिनी महत्तरासूनु ज छे, बीजा कोई हरिभद्र होवा संभव नथी.

- ७ ज्योकम, पृ. ४६
- ८ बृइक्षे, भाग २, पृ. ३९६, ४८५
- ९ श्राप्रर, पृ. २
- १० किकि, पृ. ६, १२
- ११ कम्रु, पृ. २०-२१. जुओ अभयदेवस्रि.
- १२ जुओ मूलदेव.

हर्षपुर

अजमेरु पासेनुं एक नगर, ज्यां सुभटपाल राजा राज्य करतो हतो. हर्षपुरमां ब्राह्मणो यज्ञमां बकरानो वध करता हता त्यारे प्रिय-प्रन्थसूरिए पोतानी मंत्रशक्तिथी बकराने वाचा अपीं, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो, एवी कथा छे.

विक्रमना अगियारमा सैकामां थयेला मेवाडना राजा अल्खू अथवा अल्लटनी राणी हरियदेवीए हर्षपुर वसाव्युं हतुं. जैनोनो हर्ष-पुरीय गच्छ जे पाछळथी मलधार गच्छ तरीके ओळखायो ते आ हर्षपुर उपरथी थयो छे. ए गच्छना जयसिंहसुरिना शिष्य अभयदेवसूरि वस्त्रमां मात्र एक ज चोलपट्टी अने पछेडी राखता हता. तेमने मलिन वस्त्र अने देहवाळा जोईने सिद्धराजे (मतांतरे कर्णदवे) 'मलधारी ' बिरुद आएंगु अने त्यारथी एमनो गच्छ 'मलबार गच्छ' कहेवायो.

- १ कसु, पृ. ५०९-१०; किक, पृ, १६९; कदी, पृ. १४८-४९
- २ 'राजपूताने का इतिहास, भाग १, पृ. ४२६-२८
- 🛊 जैसाइ, पृं. १९३, २२७

हस्तकल्प

जुओ हस्तिकस्प

इस्तिकल्प

द्वारवतीनुं दहन थया पछो बलराम अने कृष्ण त्यांथी पूर्व तरफ नीकळीने द्वस्तिकल्प (प्रा. हत्थिकप्प, हत्थकप्प) नगरमां आव्या हता. त्यांना राजा अच्छदंतने हरावी पछी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोसुंबारण्य नामे अरण्यमां आवी पहोंच्या हता. दक्षिण मथुरामां वसता पांच पांडवो अरिष्टनेमि अरिहंत सुराष्ट्र जनपदमां विहार करे छे एम सांभळीने सुराष्ट्र आव्या. त्यां हस्तकल्प नगर पासे एमणे सांभळचुं के अरिष्टनेमि गिरनार उपर निर्वाण पाम्या छे.

आ उल्लेखो उपरथी स्पष्ट छे के हस्तकल्प के हस्तिकल्प नगर सुराष्ट्रथी दक्षिण तरफ जवाना मार्गमां, पण सुराष्ट्रनी भूमि उपर ज आवेलु हुतुं.

'पिंडनिर्युक्ति ' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमां क्रोधिपंडना उदाहरणमां हस्तकल्प नगरमां एक बाह्मणना घरमां भिक्षार्थे गयेला जैन साधुनुं कथानक छे. 'सूत्रकृतांग सूत्र ' उपरनी शीलाचार्यनी वृत्तिमां उदाहृत करवामां आवेला एक हालरडामां बीजां नगरोनी साथे हस्तकल्पनो पण उल्लेख छे. 'जीतकल्प भाष्य मां हस्तकल्प (प्रा. हत्थप्प, हत्थकप्प)नो निर्देश छे.

भावनगर पासेनुं कोळियाक तालुकानुं 'हाथब' गाम ए ज आ हस्तकल्प होई राके. ' जीतकल्पभाष्य'मांनुं एनुं 'हत्थप्प' नाम एना अर्वाचीन उच्चारणने मळतुं ज छे. वल्लभीनां दानपत्रोमां तेनुं 'हस्तवप्र' एवं नाम मळे छे. '

- १ उने, पृ. ४०. जुओ कोसुंबारण्य.
- २ इाध, पृ २२६; आचू, उत्तर भाग, पृ. १९७
- ३ पिनिम, पृ. १३४
- ४ सूक्त्रशी, पृ. ११९; अवतरण माटे जुओ कान्यकुटज.
- ५ जीकमा, गा. १३९४-९५.
- ६ 'गुजरातना अतिहासिक छेखो, ' नं. २५, ६१; अहीं तळ हस्तवप्रनो उल्लेख छे. बलमीना अन्य लेखोमां हस्तवप्रनो उल्लेख ए नामना आहार अथवा आहरणीना मुख्य शहेर तरीके छे ('गुजरातना अतिहासिक लेखो, ' नं. १६, १७, १९, ३०, २१, २२, २३, ४१, ४५, २६ अ तथा ६१, ७०, ७९, ८०).

हस्ति भित्र

उज्जयिनीना एक गाथापित—गृहस्थ. एमनुं कथानक नीचे प्रमाणे छेः हस्तिमित्र गाथापितए पोतानी पत्नी मरण पामतां पुत्र हस्तिमृति साथे दीक्षा छीधी. एक बार तेओ उज्जयिनीथी भोजकटक जवा माटे नीकळ्या. मार्गमां अटवीमां हस्तिमित्रने पगे छाकडानो खूंटो वाग्यो, एटछे बीजा साधुओने आह्रहथी विदाय करी तेओ एक गिरिकंदरामां अनशन करीने रह्या. हस्तिमृति क्षुल्छकने साधुओ पराणे छई गया, पण ते एमने विश्रंभ पमाडीने पाछो पिता पासे आव्यो. वेदनाने छीधे हस्तिमित्र ते ज दिवसे काछधमें पामीने देवछोक्षमां गया, पण तेमनो पुत्र तो पिता मरण पाम्या छे' ए समजती ज नहोतो, आथी देव तेना पिताना शरीरमां प्रवेशीने तेनी साथे वातो करवा छाग्या. देवे हस्ति-भृतिने बृक्षो पासे भिक्षा माटे जवा कहुं. बृक्षो पासे जईने धर्मछाभ कहेतां एमांथी साछंकार हस्त नीकळीने भिक्षा आपवा छाग्यो. आ प्रमाणे एक वर्ष बीती गयुं. बीजे वर्षे साधुओ त्यां आव्या. एमणे क्षुछकने जोगो तथा बृद्धना छुष्क शरीरने पण जोयुं, अने तेओ सम-ज्या के देवोए अनुकंप। करी छे. प

१ उनि, गा. ८६; उशा, पृ. ८५-८६; उने, पृ. १८; मस, गा. ४८५ मां पण क्षा कथानकना सारभागतुं सूचन छे.

हारिळ वाचक

हारिल वाचककृत वे वैराग्यबोधक श्लोको 'उत्तराध्ययन' उपरनी शान्तिस्रिनी वृत्तिमां उद्भृत करेला छे. आ हारिल वाचक कोण, तेओ क्यारे थया तथा एमना कई रचनामांथी आ उदाहरण आपवामां आव्यां छे ए निश्चित करवानुं साधन नथी. श्लोको सामान्य वैराग्यबोधना छे अने एमांथी कर्ताना संप्रदाय परत्वे कई अनुमान करी शकाय निह, परन्तु 'दा वक' पदवी तेमना जैनत्वनी सूचक छे.

अलबत्त, पट्टावलीओ प्रमाणे एक हारिल नामे युगप्रधान आवार्थे वीर सं. १०५५ (वि. सं. ५८५=ई. सं. ५२९)मां स्वर्गावासी थया हता ('प्रमावकचरित,' भाषान्तर, प्रस्तावना पृ. ५४), तेमने आ हारिल वाचकथी अभिन्न गणवामां आवे तो हारिल वाचक ईसवी सनना पांचमा शतकना उत्तरार्घमां अने छठा शतकना प्रारंभमां विद्यमान हता एम गणी शकाय.

९ प्रस्तुन उद्दरणो नीचे प्रमाणे छे:

तथा च हारिलवाचक:-

" चलं राज्येश्वर्य धनकनकसारः परिजमो नृपाद वाह्यभ्यं च चलममरसौद्ध्यं च विपुलम् । चलं रूपारोग्यं चलमिद्दं चरं जीवितमिदं जनो दृष्टो यो वै जनयति सुखं सोऽपि हि चलः ॥ "

बसा, पु. २८९; उने, पु. १२६

तथा च हारिल:--

वासोद्धतो दहति हुतभुग्वेहमेकं नराणां बसो भागः कुपितभुजगवैष्यदेहं तथैव । ज्ञानं सीलं विनयविमनौदार्थविद्वानदेहान् सर्वानर्थान् दहति वनिसाऽऽमुष्मिकानैहिकां ॥

उशा, पृ. २९७

बीजा एक अवतरण साथे जो के हारिल वाचकतुं नाम आप्युं नथी, पण एनी रचनारीली जोता ए पण हारिलनुं होय ए असंभवित नथी: खास करीने एना शिखरिणीनी तुलना उपर टांकेला पहेला अवतरण साथे करवा जैवी छे:

तथा चाहः-

भिवित्री भूतानां परिणितमनाकोच्य नियतां पुरा यद्यस्किश्चिद्विद्वितमञ्जभं यौवनमदात् । पुनः प्रत्यासन्ने महति परलोकैकगमने तदेवैकं पुंसां व्यथयति जराजीणवपुषाम् ॥

उशा, पृ. २४६

हिन्दुक देश

हिन्दुओनो देश-हिन्दुस्तान.

जेनो रचनाकाळ लगभग ई. स. ना सातमा सैका जेटलो जूनो छे ए ' निशीथचूर्णि 'मां ' हिन्दुक देश 'नो प्रयोग छे. उज्जयिनीना राजा गर्दभिल्ले एमनी बहेन सरस्वतीनुं हरण कर्युं होवाथी कालका-चार्य ' पारस कूल 'मां जईने छन्नु 'शाहि ' राजाओ-शक राजाओ-जेओ एमना अधिराजा 'साहानुसाहि ' (सर० शहेनशाह)थी त्रासेला हता एमने ' हिन्दुक देश 'मां आववा प्रेरे छे; अने सर्वने लईने सुराष्ट्रमां आवी पहेंचि छे. '

जुओ कालकाचार्य-२

१ साहिणा भणियं-परमसामिणा रहेण एत्य अच्छित ण तरह। कालगज्जेण भणियं-एह हिन्दुगदेसं वच्चामो । रण्णा पिहस्सुयं । तत्त्रल्लाण य अण्णेसि पि पंचाणजतीए साहिणा सअकेण कद्यारियाओ मुद्दे पैसि-याओ । तेण पुव्वित्लेण द्या पेसिया-मा अप्याणं मारेह । एह वच्चामो हिंदुगदेसं । ते छण्णजति पि सुरहमागया । कालो य णवपाउसो वद्द । विसाकाले ण तीरित गंतुं । छण्णजहं महलाई क्यांतिणि विभित्तिकणं । जं कालगज्जो समल्लीणो सो तत्थ अधिराया ठवितो । ताहे सगवसो उप्पणो । निचू, भाग ३, पृ. ५७१-७२

हेमचन्द्रः कल्लिकालसर्वज्ञ

गुजरातमां बारमा सैकामां थयेला प्रतागी राजाओ सिद्धराज तथा कुमारपालना समकालीन आ महान आचार्यनां जीवन अने कार्य प्रसिद्ध छे. ए माटे जुआ हैं। ब्युलरकृत 'लाईफ ऑफ हेमचन्द्राचार्य,' अध्यापक रसिकलाल हो परीखनी हेमचन्द्रकृत 'काब्यानुशासन'नी अप्रेजी प्रस्तावना, तथा श्री. मधुसूदन मोदीकृत हैमसमीक्षा,' इत्यादि.

आचार्य हेमचन्द्रनी पछी थयेला आगमसाहित्यना टीकाकारो एमना विनिध प्रन्थोना आधारो घणा वार टांके छे. उदाहरणरूपे एमांना केटलाकनो निर्देश अहीं कर्यों छे.'

- ९ हेमचन्द्रकृत 'प्राकृत व्यकरण': जंप्रशा, पृ. १३, २४, २६, ४१, १७७;
 - 'देशीनाममाला': जंप्रशा, पृ. १२४
 - 'अनेकार्थकोशः' श्राप्रर, पृ. १७५
- 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र 'अंतर्गत 'ऋषमदेवचरित्रः ' जंप्रशा, ष्ट. १२७, १३४, १३६; 'शान्तिनाथचरितः ' जंप्रशा, ष्ट. १९७; 'महावीरचरितः ' किंक, ष्ट. १२५; 'परिशिष्टर्पवः ' जप्रशा, ष्ट. २८८
- 'द्वात्रिंशिका': किक, पृ. १२५. 'अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका'-मांथी मलयगिरिए पण अवतरण आप्युं छे, जे मलयगिरिनो समय नकी करवामां उपयोगी थाय छे (जुओ मलयगिरि).
 - ' योगशास्त्रः ' श्राप्रर, पृ. २०२

प्रन्थनी नामोल्लेख कर्या विना हेमचन्द्रमांथी अवतरणः श्रापर, प्र. ७, ६२, १४९, इंस्यादि

हेमचन्द्र मलधारी

हर्षपुरीय (मलधार) गन्छना मुनिचन्द्रस्रिना शिष्य अभयदेवस्रिना शिष्य मलधारी राजशेखरस्रि सं. १३८७=ई. स. १३३१मां
रचायेली पोतानी प्राकृत 'द्रचाश्रय कृतिमां जणावे ले तेम,
हेमचन्द्र पूर्वाश्रममां प्रशुम्न नामे राजसचिव हता अने तेमणे चार
स्रोओ त्यजोने अभयदेवस्रिना उपदेशशी तेमनी पासे दीक्षा लीधी
हती. मलधारी हेमचन्द्रकृत 'जीवसमास' विचरण सं.११६४=ई.
स. ११०८ मां, 'भवभावनास्त्र' सं. ११७०=ई. स. १११४ मां
अने 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी बृहद्वृत्ति सं. ११७५=ई.
स. १११९ मां रचायेल होई तेओ ईसवी बारमा शतकना पूर्वार्धमां
विद्यमान हता ए निश्चित ले. हेमच्छद्रना शिष्य श्रीचंद्रस्रि पोताना
'मुनिसुवतचरित'नी प्रशस्तिमां जणावे ले ते प्रमाणे, राजा सिद्धराज
जयसिंह आ आचार्य प्रत्ये खूब मिक्तभाव राखतो हतो अने घणी
वार तेमना दर्शन करवा माटे पोते ज तेमना उपाश्रयमां आवतो हतो.

आगमोना नामांकित टीकाकारोमां मलधारी हमचन्द्रनी पण गणना थाय छे. 'आवश्यक सूत्र' अने 'नंदिस्त्र' उपर टिप्पण तथा 'अनुयोगद्वार सूत्र' अने 'विशेषावश्यक माध्य' उपरनी वृत्तिओ ए आ क्षेत्रमां एमनो मुख्य फाळो छे. 'विशेषावश्यक माध्य'नी वृत्तिनी रचनामां तेमणे पोताना सात सहायकोनां नाम आप्यां छे, जे एमना शिष्यसमुदायनी व्यक्तिओ होय एम जणाय छे: अभयकुमारगणि, धनतेषगणि, जिनभदगणि, लक्ष्मणगणि, विवुधचन्द्रमुनि. तथा आनंदश्री महत्तरा अने वीरमती गणिनी ए वे साध्वीओ."

मलधारी हेमचन्द्रे 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी वृत्तिमां जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणनी स्वोपज्ञ टीकानो उल्लेख कर्यो छे, एटले ए टीका ओछामां ओछुं बारमा सैका सुधी तो विश्वमान हती ज. वळी आ सिवायनी पण बीजी वे प्राचीन टीकाओना हवाला तेओ आपे छे.

उपर्युक्त जीवसमास ' वृक्तिनी मलधारी हेमचन्द्रना हस्ताक्षरो-मां लखायेली ताडपत्रीय प्रत खंभातमां शान्तिनाथना भंडारमां छे, एटले मंत्री वस्तुपालनी जेम आ प्रकांड विद्वानना हस्ताक्षर पण अनेक शताब्दीओना अंतर पछी आपणने जीवा मळे छे. मंत्री वस्तुपालना हस्ताक्षरोमां सं. १२९०=ई. स. १२३४ मां लखायेली 'धर्माम्यु-द्य' महाकाल्यनी साडपत्रीय प्रति पण खंभातमां ए ज भंडारमां छे.

- १ जुओ इर्षपुर
- २ जैसाइ, ए. २४६-४७
- ३ ए ज. एमना अन्य प्रन्थो साटे पण जुओ त्यां.
- ४ आ लक्ष्मणगणि ते प्राकृत ' द्युपार्श्वनाथचरित 'ना कर्ता है.
- ५ जैसाइ, पृ. २४७
- ६ ' विशेषावश्यक भाष्य, ' श्रीसागरानंदस्रिनी प्रस्तावना, ए. ३ ७ ए ज.

मुचि

[संस्कृत-प्राकृत अवतरणोमां आवतां विशेषनामोनो समावेश आ सूचिमां कयों नथी.]

अकबर १५८ अक्लंक ६४ अक्रियावादी ६९ अक्षोभ ८३ अखो ६२ अगडदत्त ३,४,५,२६,१७३ 'अगडद्त्त पुराण' ४ अगियार अंग १६३ अग्निकमार देव ४६, ५६, ५७ अग्निपुजक वणिक ६६ अचल ८३,१४३,१४४,१४७ अचलग्राम ५ अचलपुर ५, २०, २६, १५६ अच्छदंत ५६. २१५ अजमेर ५ अजमेर १०६. २१४ अजातरात्र १३ अजितसेन ११७, ११८ अङ्ग ६, ७, ८ अङ्ग महा २८, ६२, १०६० १११, १३७ अडोलिका ६५

अणहिल पत्तन ९७ अणिहरूपाटक ९६ भणहिल भरवाड: ८ अणहिलबाड ९, ८६, १५०, १७६, १७९, १९५ अणहिलवाड पारण ८, ४७ 'अण्णा' १३५ अतिमुक्तक २४ अनशन ७३, ८१, १३३, १५५, १६३, १६४, १६६. २०७. २१६ 'अनुत्तरोपपातिकद्शा' १० अनुयोग १५२ 'अनुयोगद्वार' टीका २१२ 'अन्योगद्वारसूत्र' २८, ७३, ६७, !38, 888, 886, २०३,२१२, २२० 'अनेकार्थकोश' २१९ अनेषणा ३९. १३२ अनगसेना ८७ अनंतवीर्य ३७% 'अन्ययोगव्यवक्रेडद्रानिशिका'

8219 289

अबद्धिक ६९, १५३
अबद्धिक मत ७०
अमयकुमार १०२,१०३,१७१
अमयकुमारगणि २२०
अमयदेव ११, ७६
अमयदेवसूरि ९,१०,१२,४६,
४८,८६,८८,१६०,
२१२,२१४,२१९
'अमयदेवसूरि—चरित' ११,१२
अमयतिलक्ष्मणि १२६
अमञ्य ९०
अभिचन्द्र ८३
'अभिधानराजेन्द्र' ४५,१०१,
१३६,१४९,१५३,

अरिष्टनेमि ८०, ९६, १५४, १७३,१७४,१९१,२१५ अरिष्टपुर १४ अर्कस्थल १४, १५ अर्कस्थली १४, १५,१% 'अर्थदीपिका' १५४ अर्घमामध—धी १५ अर्बुद पर्वत १५

अभीचि १३, १४, ५०

अमदावाद ९० अमोघरथ ३

अर्हत्-प्रतिमा १२० अर्हतक ७८ अल बीरूनो २०० 'अलेकारमंडन' ११८ 'अलंकारसर्वस्व' १३६ अल्लट २१४ अल्छ २१४ अल्बर ११९ अविध १२० अवन्ति १५, ७१, १००, १०२, १११, १५१, १७३ अवन्ति जनपद २५, २८, ४५, ८०,१३८,१४०,१४२, 963 अवन्तिवर्धन १६.१००, ११७, 286 अवन्तिसकुमाल १६,१७, ४३, १३१. २०७ अवन्तिसेन १६.११८ अन्यवहारी ७८ अशकटा १७ अशकटापिता १७, १८ अशोक २५, ४३, ५२, १८६ अशोकश्री ४३ अश्वघोष २५. २०२ अश्वसेन वाचक १८

'अश्वावबोध कल्प' ६! अश्वावबोध तीर्थ ६०, ६१ अष्टोत्तरशतकृट १७४ अष्टांग महानिमित्त ३९ असंदीन द्वीप ५३ असंयम विषय १९९ अरहमित्र ७८ अंग ६८, १०९ अंगारवती १०१, १०४ 'अंतकृत् दशा' १०,८८, १५७ अंधकवृष्णि ८३, ८६ अंग्रेजी ६८ आकाशगामिनी विद्या ९५, १६४ आगमेतर साहित्य ४ आप्रा जिल्लो १७८ 'आचारांग' ९, ११, ५५ 'आचारांग सूत्र' ६४, ६५, ६९. १६४. १७६ आचार्य मलयगिरि ७५ आचार्य श्रीजिनविजयजी १७७. १९६, २१२, २१३ आजीवको ३९, ४० आतापना १२१, १४९ आनते ५९ आनंदपुर १४, १८, १९, २१,

३२, ४२, ९१, ९४, 90,988, 984,866 आनंदश्री महत्तरा २२० आन्ध्र १८७ आन्ध्रवासी १३४ आन्ध्रो १६० आब १५, ६१ आभीर २१, २६, ३२, ६८, आमीर जाति १७, २० आभीर देश ५, ७८, १०८, १७१, १८४, २१२ आभीरी १९१ आम राजा ३६ आम्रदेव उपाध्याय ९५ ्आयामुख ३६ 'आराधनाकुलक' १० आर्य कालक १७९ आर्य क्षेत्र १५. ४८ आर्य देशो ५२ आर्थ धर्म ८४ आर्य नागार्जुन ८३ आर्य महागिरि ५७, ६४, १३२, १३३, १६९, २०६, 200

आर्य मंग्र १ १६, ११७, १२२, १८५, १८६, २०७ आर्य रक्षित ८०, १०९, १२२, ं आवश्यक सूत्र' ७, ३६, ५८, 840 आर्य रक्षितसूरि ६९, ८२, १५३. १६४ 'आर्थ रक्षितसूरिचरित' १५३ आर्थ रोहण २०७ आर्य वज्र ५, २०, ८२, १०८, १०९, १६३ आर्य स्याम १७९ आर्थ समित २०, १८४, १८५ आर्य समितसूरि १०८ आर्ये समुद्र ११६, १८५. १८६. २०७ आर्य सधर्मा ८४ आर्य सहस्ती ५७, १३१, १३३, १८६, १८७, २०६ आर्य स्कन्दिल २०० आर्यास ७८ आछोचना १५३ आन्सडाफ ५ 'आवन्त्य **खंड'** १७ 'आवश्यक चूर्णि' ५१ ५३, इन्द्रदत्त २३ ६२, ६९, ७३, ११०, | इन्द्रदिन ८४ ११५. १६०

'आवश्यक मूलटीका' ७५ 'आवश्यक वृत्ति' १२९ ६०, ६४, ७४, ७५, ९३, १२०, १२२, १२७, १२८, १२९, १४६, १६९, १८२, १८९, २१२, २३० आषाढ २२. २५ आषादभूति २२ आहरणी ६२, ११०, २१५ 'आहार' ६२, ११०, २१५ आहीर २१ इक्ष्गृह २२ इंडर ११४ 'इतिहासनी केडी' २९, ४५, पर, ६७ 'इन्डो-आर्यन ॲन्ड हिन्दी' ४७ इन्दउर २४. इन्दोर २४, १४३ इन्द्र ३७, ६३, १५५ इन्द्रकील २३

इन्द्रपुर २३, २४, ११९

इन्द्रभूति १४२ इन्द्रमहोत्सव ३९ इम्य २७. ४४ इष्वेगानदी १७० ईरान ३८ ईश्वरी ७२, १६६, १६७ उपसेन २४, ८७, ९६,१५४, १९०, १९१ उज्जयन्त २४, २५, ६६, ६७, १५७ उज्जयन्तगिरि १८९ उज्जयिनी ३, ६, ७, १५, १६, २२, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३७, ३८, ३९, ४१, ४३, ४५, ५०, ५८, ६५. ७०, ७८, ८१, ८२, ८4, ९0, ९१, १०0, १०१, १०२, १०३, १०४. १०६, १०९, १११, ११५, ११७. ११८, १३१, १३३. १३७, १३८, १४०, १४३, १४४, १४५, १५२. १५६. १५७. १५८, १६३, १६७;

१७३, १८०, १८६, १८७, २०२, २०४, २०५, २०७, २११. २१६, २१८ 'उज्जयिनी इन एन्श्यन्ट लिटरेचर' २९ 'उज्जयिनीतस्कर' १३८ उत्तर मथुरा १२२, १९५ 'उत्तराध्ययन' ५, ९, २६, ४०, ६२, २१६ 'उत्तराध्ययन' टीका १८ 'उत्तराध्ययन सूत्र' ३, ४, ३०, ३३, ३४,६४,७३.९६. १४४, १७३, १७५ उत्तरापथ ५२, ८९, १२० उदयगिरि ५२ उदयन १०४, १०५, १४८, ् १५१, १७३ उदायन १३, ३०, ३१, ४७, ५०, ८१, ८२, १०३, १०४, १७०, २०० उद्योतनसूरि १७६ उन्नताय १७५ 'उपमिति<mark>भवप्रपंचकथा' १९५</mark> उपाच्याय धर्मसागर १५**५.१**७५

उपाध्याय महेन्द्र ६०

'उपासक द्शा' १० उमाकान्त शाह १३४ उवधास्त्रि ४९ उस्मानाबाद ७८ उँछवृत्ति ९५ दंबस्वतीवेला २०४ ऊण १७५ कभो 'सरकंच्क' १२५ ऋषभदेव ९६ 'ऋषभदेवचरित्र' २१९ ऋषिगुप्त २०७ ऋषितडाग २७ ऋषिपाल २७ ऋषिप्राणित तळाव ५१ एकरात्रिकी प्रतिमा १९१ एकेन्द्रिय जीब ६९ एरछ ३२ 'ए नोट अनि भी क्रिकापण' २९, ४५ 'ए नोट आन धी वर्ड किराट-ए डिसीटफुल मर्चन्ट' २२ 'ए न्यू वर्झन औफ धी अगहदत्त स्टोरी' ५ 'एन्श्यन्ट इन्डिया' १५२ 'एन्स्यन्द्र टाउन्स ॲन्ड सिटीझ इन्ाजरात अंग्ड काठि-

एलकच्छ ३१, ३२, ६४
एलकच्छपुर ८२, १६९
एलाबाढ १४५
'ऐतिहासिक संशोधन' १४४
ऐरावत ६३, ६४
'ओधनिर्युक्ति' १३८, १३९
'ओधनिर्युक्ति' १३८, १३९
'ओधनिर्युक्ति वृत्ति' ९, ८६, १२८
ओशा ३६
ओरिसा ४७
औदीच्य देश १६१
औत्पित्तिकी बुद्धि १५७
औपदेशिक साहित्य २१३
'औपपातिक टीका' '१०
कच्छ १९, २१, ३२, ३३,

कटक ४७

'कट' पदान्त ४६

कडी ४७

कड्डे ४७

कथानुयोग १८३

'कथासरित्सागर' १४७

कदंब १७४

कनकामर ७८

कनैयाह्यास दवे १९, १८८

कनोज ३६

याबाड' ८९

कनड १३६ 'कन्याचोलक' १२५ कपर्दक ३४ कपर्दिनिवास १७४ कमलपुर २०४ कमलमेला १९० कमलसेना ३ कमलसंयम उपाध्याय ३३ क. मा. मुनशी १४३ 'करफंडचरिउ' ७८, ७९ करटक १४७ कर्णदेव २१४ कर्ण सोलंकी १२५ कर्णाटक ६८ कर्णीस्त १४७ 'कर्मविपाक' ८५ 'कर्मस्तव' ३३, ८५ कछाचार्य ३ कलाल २०७, २०८ कलांक्र १८७ कलिंग ६८ कलिंग देश ५१, ५२, १६४ कलिंगविजय ५२ 'कल्पलता' १८४ 'कल्पसूत्र' १८,२१, ४०, ४२, €0, 00, ८8, **९**0,

९१,९७,१२४,१४२, १५५,१५८,१६५, १६९,१७५,१७९, १८४,२०३,२१०,

कल्याणकटक ४७ 'कल्याणमंदिरस्तोत्र' १९७ कल्याणविजयजी ३७,३८,१२२ कल्याणी ८ 'कविवर समयसुन्दर' १८४ कसेरूमती नदी ३४. १६६ कसेरूमान् ३४ कंडरीक १४६, १४८ कंथारकडंग १७ कंबल-संबल ३३, ३४, ७३ कंस ७. २४ काकवर्ण ५०. ५१ काकिणी ३४, ३५, ४३, ४४ काकिणीरत्न ३५ 'कादंबरी' १४७ काननद्वोप ३५, ९७ कान्यकुब्ज ३६, ६८ कार्तवीर्थ ३७, १४३ कालक ४०,८४ 'कालक कथासंप्रह' १७९ 'कालकाचार्य कथा' ४०. ४१

कालकाचार्य २६,३७,३८,३९, 🗇 क्रीडापर्वत २५ ४०, ४१, ६०, ६५, कुक्षिपुर ३६, २०१ १०१, १०७, १३५, १७९. १९२. २१८ कालणद्वीप ३५ कालनगर १९. ४२ कालर्घि २०७ 'कालजान' ९९ काला ४२ कालाश्यवेशिपुत्र ४२ कालिदास १५८, १७१ कायोत्सर्ग १६, १७ कायोःसर्ग ध्यान ४२, ६३ काव्यगोष्टि ८९, ९० 'काव्यमनोहर' ११८ 'काव्यमंडन' ११८ 'काव्यमीमांसा ' ३ ४ 'काव्यानुशासन' १८०, १८१, 286 काशी १०५ काश्मीर ६८. कांचीपुर ८९ कांटासेरियो ५५ 'किरणावछी ' ९०, १५५ : किराट ११

कुटंबेश्वर १७ कडंगेश्वर १७ कुडंगेसर १७ कुड्रक १३४, १५९, १८७ कुडुंगेश्वर १७ कुणाल २५, ४३, ११०, १८६, २०४ कत्रिकापण २६, २७, ४४, ४५, १०२, १११, ११५ 'क्तिकापण - प्राचीन भारत जन-रल स्टोर्स' २९. ४५ 'कुन्ती ८३ 'कुमार' १४८ कुमारपाल ४६, १२७, २१८ कुमारभुक्ति २५, ४३ क्ररंटक ५५ 'कुलिक' १२६ 'कवलयमाला,' आठमा सैकानी एक जैन कथा ४८, १७६ कुशस्थल १५ कुशावर्त ४९, १७८ कुसुमपुर १२१

कीर्तिविजय १६९

कुंजरावर्त ४२, ५५ कंडलमेंठ ४४, ११० कंभकर्ण ११८ कंभकारकट ४६ कुंभकारप्रक्षेप ४८, १७० कुंभकारप्रक्षेप नगर १९९ कुंभराणा ११८ कुंभवती नगरी ४८ कृणिक १३ क्पदारक १०७ क्रम १५९ कृष्ण ७, २०, २४, ५०, ५६, ८७, ९५, ९६, १०७, १७४, १८९, १९०, १९१, २१8 कृष्ण वासुदेव ४९, ५६, ५७, ६३,७७,८०,८३,८६, ९०, १०६, १७३ कृष्णा ५, १०८, १८८, २११ 'कॅम्ब्रिज हिस्टी आफ इन्डिया' १६. ३१ केवलज्ञान ६३, ७१,७७,१८१, १८९. १९७ केवलदर्शन १९७ केवली १९७

केशी १३, १४, ३१, ४८, ५० कोऊहरू १४७ कोकास ५०, ५१, ५२, २०७ कोटिकगण ७३ कोटिनगर ६६ कोटिपताका ५४ कोटचर्क १४ कोटचाचार्य ११, ७४, ७५, ९३, १६४, १७७ कोडिनार ६६ कोपकट ४७ कोरंटक ५५ कोरंटक उद्यान ५५, ११० कोमुइआ ५७ कोल्लकचक्रपरंपरा १३५ कोशांबकानन ५७ कोसलवासी १३४ कोसंबवण काणण ५७ कोसंबा ५६, ५७ कोसंबी आहार ५७ कोसंबारण्य ५६, १०७, ११३, ११४. २१५ कोसंबाहार ५७ कोळियाक २१५ कोकण ५२, ५३, ७६, १३४, १३७, १४१, १६४,

१८९, २०३, २११ कोंकणक ५२ कोंकणकश्चान्त ५३, ५४ कोंकणाचार्य ५३ क्रोधपिंड २१५ 'कौमदी' १७५ 'कोमुदी' टीका ६७, ९७ कौमोदको गदा ५७ कौशल ६८ कौशांबी ३,७,२६,३०,१०४, ११७, ११८, १५१, १६७, १७३, १८७ कौशांबी आहार ५७ क्षपकश्रेणि ७१ क्षहरातवंशी ९२, ९३, १९४ किप्तचित्त १९४ क्षल्लक ९०, १३९, १५५, १७२. २१६ 'क्षेत्रसमास' १३० 'क्षेत्रसमास'नी टीका १२९ क्षेमकीर्ति १६, ४५, ५७, ५९, ६९,१२६,१२८,२१२

क्षेमंकर १८५ स्विनिज तेल १२६ स्वपुटाचार्य ५९,६०,६१,६७ स्वरक १०१,१९२ खरक मंत्री १९३ खरतर गच्छ १०. ३३, १८३ खरपट १४७, १४८ खारवेळ ५२ खेट ६१. ६२ खेटकाहार ६२ खेटाहार ६३ खेड ६१ खेडा ६१, ६२ खेड़ं ६२ खेडब्रह्मा ६१ खेडेगांव ६२ खंडकर्ण १०१ खंडपाना धूर्ता १४५, १४६ खंभात ७९,८५, १९९, २२० 'खंभातनो इतिहास ' ८०. १८८ गच्छनिश्रा १३२ गजसुकुमाल ६३ गजाप्रपद ६४, १३३, २०७ गजाप्रपद तीर्थ ३२, ८२, १६९ गणधर १४२ गणराज्य १९२ गणसत्ताक राज्य ३०,८७,१४० 'गणितसार' ३५

गर्दभिल्ल २६, ३७, ३८, ६५, 386 गर्बेभीविद्या ३८ 'गल्छक' जाति १३७ गल्लार नदी १३६ गंगा नदी १९९ गंत्र १३६ 'गंधर्वदत्ता लंभक' १७०, २०४, २०५ 'गंधहस्ती' ६ ४ गंघहस्ती 'महाभाष्य' ६४ गंभूता १७६ 'ग्लोरी घॅट वाझ गुर्जरदेश' ३६ गाथापति २१६ 'गाथासप्तशती' ९९ गान्धर्व विवाह १०३ गांधार १०३ गांमू ९, ६५, १७६ गिरनार २४, २३, ९६, १५७, 384 गिरिनगर ६६, ६७, १६८, २०३ गिरिपत्तन ३६, २०१ गिरियज्ञ ५३, १६० ग्रीक १५० प्रीक भूगोळप्रन्थो २०८

गुजरात ५७ 'गुजरातना अतिहासिक छेखो' ४७, २१५ 'गुजरातनां स्थळनामो' ६७ 'गुजरातमां नैषधीयचरितनो अ चार तथा ते उपर संखा येली टीकाओ '१८२ गुजरात विद्यासमा ८ गुडशस्त्रनगर ५९ गुणाढच ४, १८२ गुर्जर देश ७९ गुर्जरो ४८, ६७ गुलान २८ गोचरी ७७ गोदावरी ४६, १०१, १९२ गोपालक १६, १००, १०५ गोपालगिरि ६८, ७१ गोपीचंद २०९ गोपेन्द्रदत्त ७८ गोवालिय महत्तर ७३ गोविन्द ६८, ८४ गोविन्दाचार्य ११० 'गोविन्दनिर्युक्ति' ६९ गोली १३६ गोल्ल १३६ गोल्छदेश १३५, १३६, १६१ गोष्ठामाहिल ८२, १५३ गौड ६८ गौतमकुमार १७४ गोतमीपुत्री शातकणि ९२, १९४ 'गौरीपुत्रो' ७० चणक १३६ चण्डप्रद्योत ३०, ३१, ४५, ७१, १०१, १११ चण्डरुद्राचार्य २५, ७०, ७१ चतुर्वेदी १९, २१ 'चन्दालक' १२२ चन्द्र ७२ चन्द्रकुल १७९ चन्द्र गच्छ १०, १५० चन्द्रगुप्त ४३, १३६ 'चम्मलात' १८० 'चर्मछात' १८० चाणक्य १३६ चानखेडा ६१ चारुदत्त १७०, २०४ चावडावंश ८ चितोड १३८ चितोड गढ ७१ चित्तप्रिय १४९ चित्रकूट ६८, ७१, २१२ चीन ६८

चीनस्थान २०४ चीवर २०५ चूर्णि ४, ११, ४४, ५३, ५४, ७३, ७४, ९९, १२९, १७८ चूर्णिकार २०३ चेटक ३०, ३१, १०१ चेटरजी ४७ चैत्यपरिपाटी १०२ चोरशास्त्र १४७ 'चोलक' १२५, १२६ चोलपदृक १५२ चोलपद्दो २१४ चौड ६८ चौद पूर्वी ८१ चौलुक्य ८, ७२, ८६ चौलुक्य युग १३७ चौलुक्यवंशी ४६, १९५ चंपा १३ चंपानगरी ४६ ' चंपूमंडन ' ११८ ज उण १४९ जउणसेण १४९ 'जउणावंक' उद्यान १४९ जकर्त ४७ जगच्चन्द्रसूरि ८५

जगदीशचन्द्र जैन ३२ जगनाथपुरी १६४ जमदग्नि ऋषि ३७ जमालि ४४ जयपुर ११९, १६९ जयशिखरो ४७ जयसिंह १५० जयसिंहसूरि ६१, १८८, २१४ जयंती श्रमणोपासिका ३० जराकुमार ५६, ११३, ११४ जरासंघ २४. ४९, ८७, १२२, १७३ 'जर्नल ऑफ धी ओरियेन्टल इन्स्टिट्यूट' १३४ जर्मन १०० जलपत्तन ३५, ८८, ९७ जवणालओ १२५ जवुण १४९ जहाल ६८ जळघोध २५ 'जंबुद्वीयप्रज्ञिति' ११८, १२८, १३०. १५४. १७५ जंबुस्वामी ८४, २०२ जातक ४८ जातिस्मरण १३३ जाबालिपुर ४८

जालि ४९ जाछोर ४८ जावा ४७ जांबवती १८९, १९१ जितशत्रु राजा ३, ४२, १५६ जिनकल्प १३२ जिनचंद्रसूरि १०, १८३ जिनचैंत्य १८७ जिनदत्त ७२, १२०, १६६, १६७, १८५ जिनदास ७३ जिनदासगणि ७३ जिनदासगणि महत्तर ७३ जिनदास श्रावक ३३ जिनदेव ११० जिनदेवसूरि १६८ जिनप्रभसूरि १४. ४२ जिनबिंब १८७ जिनभट १२९ जिनभटाचार्य ७४, ७५ जिनभद्र ११, ५५, ७६ जिनभद्रगणि ७५, २२० जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण १९६. १९७. २२० जिनभद्रसूरि ३३ जिनविजयजी ४८, ७५

30

जिनेश्वरसूरि १० 'जीतकल्प चूर्णि' २०९ 'जीतकल्प भाष्य' २१५ 'जीतकल्प सूत्र' ९, ७४, ः १७७, १७९ 'जीतकल्प सूत्र ' उपर्नी चूर्णि 898 जीर्णोद्यान १४५ 'जीवविचार' १८४ 'जीवसमास' विवरण २१९ 'जीवसमास' वृत्ति २२० जीवंतस्वामी २५, ८१, १०३, **१**३२, १३३, १३४, १८७ 'जीवाभिगम सूत्र' १२८, १२९, २१२ ' जीवाभिगमसूत्र ' उपरनी वृत्ति **२१२** जुनागढ ६६, १६९ जभक देवताओ ९५, १६३ जेहिल ८४ जेसलमेर ९८ जेसलमेर मंडार ७५, १२८ जैन गुफाओ ७८ 'जैन गूर्जर कविओ' ५ जैन श्रुत ८३, २१० 'जैन साहित्य और महाकाल-मन्दिर '१७

'जैन साहित्य संशोधक' ९०, 800 जैन स्तूप १२०, १२१ जोग्यकर्त ४७ 'ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण' ८ 'ज्योतिष्करंडक' ९८, १२८, १२९, १३० 'ज्योतिष्करंडक ' वृत्ति २१२ 'ज्ञाताधर्मकथा' १०, १५७, १८२ ' ट्राइब्स इन एन्श्यन्ट इन्डिया ' १२३ 'डाइनेस्टिझ ऑफ ध किल एज ' 30 डाहल ६८ डांग ४६ डिभाइ २४ डिंभरेलक ७६ डोड २१ डा अळतेकर ८८ डा. ब्युलर २१८ डॉ. याकोबी २१३ डा. विन्टरनित्स १४६ हंक १७४ ढंकापुरी ९९

दंद १०७

ढंढणमुनि ७७ ढंढणा ७७ ढांक ९९ णधवाहण ९२ णहवाहण ९२ तगरा २०, ७७, ७८, १६८ तगरातट ७७, १६८ तगरा नगरी १५६ 'तत्त्वबोधविधायिनी' १२ 'तत्त्वार्थसूत्र' ६४, ६९, १२८, १२९, २१२, २१३ तपागच्छ ७२, ८५, ९०, १५४, १७५ 'तरंगवती' ९८, १०० 'तंत्रोपाख्यान' ४७ तापस ८५, १८४ तामलुक ७९ तामिल १३६ ताम्रिक्ति ७९, ११०, १९९ ताराचन्द्र ५८ तालध्वज १७४ 'तिरथोगाछी' प्रकीर्णक १०० 'तिलकमंजरी' ८९_{४ ः}१७६ तीर्णा ७८ तीर्थकर ९६ तीर्थराज १७४, २०१

तुम्बवनप्राम ८०, १६३ तुरुमिणी ३७ तेजचन्द्र १७५: तेजपाल ६१ तेरा ७८ तेरापुर ७८ 'तैलकेला' २०५ तोसलिनगर २७, ५२ तोसलिपुत्राचार्य ८०, १०९, १५२ ' त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' ४९, ६१, १०७, १५२, २१९ थान २११ थाणा ५४, २११ थाणा जिल्लो २०७ थारापद्रीय गच्छ १७५ थावच्चा ८० थावच्चापुत्र ८१. १७४ थावन्चापुत्र अणगार १७८ दक्षिण मथुरा ५६, १२३, १९२, १९३, २१५ दक्षिणापथ २०,२५,३४,५७, ८९, ११३, ११३, १४३ १६०, १८७, ३०४ दत्त ३७ 'दशकुमारचरित '१४८

दशपुर २२, ६९, ८०, ८१, दीत्र ८८, ८९, ९७
८२, १०९, १५२, १६३
दश पूर्वधर १६३
दश पूर्वो १६३
दश पूर्वे १०७
दश पूर्वे १०९

दशार्पभद्र ८२ दशाह १०, ८३, १२२ दसार ८३, ८७, ९६ दंड अणगार १४९ 'दंडक' १८४ दंडकारण्य ४६ दंडकी ४६ दंडी १४८ दाक्षिण्यांक उद्योतनसूरि ४८ द्यानपत्रो २१५ दिगैकर आचार्य ७८ विशंबर परंपरा ५९ दिशंबर संप्रदाय ६४ दिवेशकद सरकार २४ दिश ८४ दियरवट्टं २१ ' दीपिका रे १८४

दुर्बल पुष्पमित्र ६९, १५३ दुर्मुख १०७ दुष्यगणि क्षमाश्रमण १०८ दढनेमि १५४ दृष्टिबाद ४०. १०९ देवकुछ ९२ 'देवसामूर्ति प्रकरण अने रूप-मंडन ११९ देवदत्ता २८, १०३, १४४, १४६, १४७, 'देवनिर्मित स्तूष' १२०, १२१ देवर्घिगणि ८३, ८४, ९४, १०८ 'देवर्धिगणि क्षमाश्रमण' १२२, २१०

देवसेना १४६
देवेन्द्रगणि ९६
देवेन्द्रस्रि ११७
देविलासुत ८५
'देवीपुत्र' ७०
देशना १०४
'देशीनाममाला' १२९, १३०,

देहोत्सर्गनं तीर्थ ११४ वोहडि श्रेष्ठी ९, ९६ द्रम्म १८० द्राविड १८७ द्राविड प्रदेश ८९ द्राविडो १६० दोणमुख ७९, ११७, २११ द्रोणाचार्य ९, १०, १३८ 'द्याश्रय' महाकाव्य १२५, १२६ द्वारका १०, २४, ५६, ६३, 99, ८०, ८६, ८७, ९०, १०७, १५१, १५४. १५७. १७८. २०३ द्वारवती २४, ४९,८६,११३, १७३, १७८, १९०. २०२, २१४ 'द्वात्रिंशिकाओं' १९७, २१९ द्वीप ८८, ९७ द्वैपायन ५६, ८७ धनगिरि ८०, ८४, १६३ धनचन्द्र १७५ 👚 धनदेव १९०, १९१ धनदेवगणि २२० धनपाल ८९, ९०, १३०,

धनमित्र ९० धनशर्मा ९० धनेश्वरसूरि १७९ धन्वन्तरि ९० धरण ८३ धर्म ८० धर्मकथा ९८, २१३ धर्मयश मुनि १६७ धर्मसागर ९१, २१२ 'धर्मसंप्रहणि टीका' १२९ धर्मान्वम ७८ 'धर्माभ्यदय' २२० धारावासनगर ३८ घारिणी ११७, ११८ धंधमार १०१ 'धूर्ताख्यान' १४५, १४६, १४८, २१२. २१३ ઘૂર્તો **१**४५. १४६ ध्रवसेन राजा १८, ४२, ९१ नकपुर ३६, २०१ नक्षत्र ८४ नगाधिराज १७४ नद २८. ३० नष्टिक ९१, १११ 'नष्टकृत्र रोहक अने राजा' ३० १७६. १७८ | नडविड्स ९१

नभोवाहन ९**१**, ९२, १**०**१, १११, १६५, १**६६** १९२, **१**९४

'नभोवाहन खाई' ९२ नमस्कार मंत्र २०५ नयप्रम ५८ नरदेव ५८ नरहरि ५५ नमेदा नदी ९३, १४३ नक्षिरि हाथी १०३ 'निटिनोगुल्म' अध्ययन १६ नवकार १२० 'नवतत्त्व' १८४ नवांगी वृत्तिकार ९, १०, १२,

नव्य कर्मग्रन्थो ८५
नहपान ९२, १९४
नंद ९५, २०२
नंदनवन ८६, १५७
नंदनवन उद्यान २०३
नंदाराणी १०२
नंदाराणी १०२
नंदिस्त्र' ४०, ७३, ८३, ८४, १२८, १२८, १५२, १५८,

१७२, २१२, २१३, २२०

नाग ८४ नागरी १३८ नागवलिका ९४ नागगृह ९१, १११ नागपुजा ९४ नागभद्र बीजो ३६ नागहस्ती ८४ नागार्जुन ८४, ९४ नागार्जुनीय वाचना ९४, १६७ नागेन्द्र ७२, २०७ 'नाटचशास्त्र' १०५ 'नाममाला' १३० नार ६६ नारद ९५ नारदमुनि १९० नाशिक ९५ नासिक्य २०१ नासिक्य नगर ९५ नासीक २०१ निगोदना जीवो ३७ 'निगोदव्याख्याता ' १७९ 'निषंदु आदर्श' ५५,५६ 'निघंदुशेष' ५५ निमित्तशास्त्र ४०

निरंगण ७ निर्प्रनथनामित ६० निर्प्रन्थो २०५ निर्यामक १०९ निर्युक्ति १८, १७, १८९ 'निर्वाणकलिका' ९९. १०० निर्वृति ७२. २०७ निर्वृतिक्ल १० निलयश्रेष्ठी १८५ निषढ १०७. १९० 'निशीथचूर्णि' ५७, ११३, १३५, १३८, १४६. १६०, १८०, १९७, १९८, २०८, २१८ ंनिशीथ **सूत्र '** ७३, ८८, **१**४५ १९७, २०८ निह्नव ६९, ८२, १५३ 'निह्वववाद ' ७० 'नीवि' १२५ नेपाल ६८ नेमिचन्द्र ३, ४, ९, २६, ६२, ९६, ९८, १४४, १७३ नेभिनाथ २४, ४९, ५६, ६३, ७७. ८३, ९६, १०७, १५४. १८९, २०४ 'नेमिनाथचरित्र' ४९. १०७

नेलक ८९ 'नैषधीयचरित ' १८१ नार्मन ब्राउन ४१ न्याय २१३ 'न्यायावतारवार्त्तिक वृत्ति ' १७६ 'न्यायावतार सूत्र' १९७ 'न्यू इन्डियन एन्टिक्वेरी' ५ पहण ९७, ११० पद्दन ९७, ११० पद्टाविल ८४, २१७ पत्तन ९७. ११०. ११९ पत्तनपत्तन ९७ पद्मचन्द्र ५८ 'पद्मप्राभृतक भाण ' १४६ पद्मस्थल १४. १५ पद्मावती ९२, १६५, १६६ परशुराम ३७ 'परिशिष्ट पर्व' १७, ५७, १५३, १६५. २१९ पर्युषण १०१, १०३ पर्युषण पर्व ३७, १९२ पवनचंड ३ पश्चिम खानदेश ५४ पश्चिम घाट १८९ पश्चिम पंजाब २००

पहेली ओरियेन्टल कॅान्फरन्स १९६. २१३ पंक्ति बहार ६१ 'पंचकल्प' भाष्य ३९, ४०, १८२ 'पंचतंत्र' २२, ४७, १४७ 'पंचवस्तुक' २१२ 'पंचाख्यान' १४७ 'पंचाशक' १०, २१२ पंचासर ४७ पंजाब १४० पंडित परिषद ८६ पं. बेचरदास ६४, १७९ पं. भगवानदास ७५, ७६ पं. सुखलालजी ६४, १९८, २१३ पं, हरगोविन्ददास २१० 'पाइअ टीका ' १७५ 'पाइअङ्छीन।ममाला ' १३० 'पाइअसइमहण्णवो ' ५५, १५०, २१० 'पक्षिक सूत्र' ९, १५० पारण ९, ३५, ४७, ६५, 90, 904, 966 पाटलिपुत्र २७, ५०,८२,८९, ९८, १२१, १३२, १४४. १६%

पादपोपगमन १७४, १८६ पादलिसपुर ९८, ९९ 'पादलिससूरिचरित' ६०, ९९ पादलिप्ताचार्य ७९, ९८, ९९ पारसकूल ३८, ६६, २१८ 'पारीपथ द्रम्म ' १८१ पार्जिटर ३० पाश्वनाथ ९६, १७३ पार्श्वापत्य ४२ पालक १६, १००, १०५. 289 पाछक राजा १६, १५७ 'पालि प्रापर नेम्स' १४. ३१ पालि साहित्य १४. ३० पालीताणा ९८ पांच दिव्य १४४ पांचमी गुजराती साहित्य परिषद 828 पांचाल १४ पांडवो २४, ५६, १०५, १७४, २१५ पांड्र मथुरा २४ पांड्सेन १०५ पितामहमुख २०१

विपासा परीषह ५० 'पिंडनिर्युक्ति' १९, १२८, १२९, २१५

पुण्यसागर १२८ प्रंदरयशा ४६ पुराण ३०, १८९ 'पुरातनप्रबन्धसंप्रह' ७६, ७७ पुरिकापुरी १४३, १६४ पुरी १६४ पुष्यगिरि ८४ पुष्यमित्र ७८ पुरुषसेन ४९ पंडरीक ८१, १७४ पूरण ८३ पूर्णभद्र मुनि १४७ पूर्वी ८२, १०९, १५२ प्रथ्वी १९४ पेरलाद ६६ पैठण १०१ पैशाची प्राकृत १८**२** पोतनपुर १४३ 'पोलिटिकिल हिस्टरी आफ ॲन्स्य-

प्रज्ञितिचा ९५, १९० 'प्रज्ञापनासूत्र' १०, ४०, १२८, 📗 प्रबन्ध २३

प्रज्ञा परीषह ३९ प्रजापति १४३ ' प्रजाबंध-गुजरात समाचार ! ३०, १५८ 'प्रतिज्ञायौगंधरायण' १५२ ' प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन दिवाकर ' १९८

प्रतिमा ४२ प्रतिवासदेव ४९, ८७, १७३ प्रतिष्ठान ३९, ९१, ९२, १०१ ?00, ?**?**?

प्रतिष्ठानपुर ९९ प्रतिष्ठाविधि ९९ प्रतिहारवंशीय ३६ प्रथमादरी १७५ प्रथमानुयोग ४० प्रधम्न ४९, ८७, १९०, १९२, 386

प्रद्योत १६, २६, ३०, ५८, ७१, ८२, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १११, १५१. १६३. १७३

प्रपात २५ १२९, १३६, १७९ 📗 'प्रबन्धकोश' ६८, १९८

न्ट इन्डिया' ९३

प्रभवस्वामी ८४ प्रभाचन्द्रसूरि ७९, १६५, १७७ 'प्रभावकचरित' ११, १२, ३६, ३७, ३८, ६०, ७९, ९९, १५२, १५३, १६५, १७५, १७७, १८०, १९५, १९८,

प्रभावती ३१ प्रभास ११४ प्रभास तीर्थ १५, १०५, १०६ ' प्रमेयरत्नमंजुषा ' १७५ प्रवक्ता १४७ ' प्रवचनसारोद्धार ' २१३ 'प्रश्नप्रकाश' ९९ ⁴ प्रश्नव्याकरण ¹ १० 'प्रश्वव्याकरण ' वृत्ति १४ 'प्रश्नव्याकरण सूत्र' १३८ प्रसेनजित १७१ 'प्रस्थान' ४१ प्राकृत ९३, ९८, ९९, १४६ प्राकृत टीकाओ ७३ प्राकृत 'द्याश्रय' वृत्ति २१९ ' प्राकृत व्याकरण ' २१९ प्राचीन कर्मप्रन्थो ८५ 'प्राचीन तीर्थमाळा ' २०१

'प्राचीन भारतमां विमान' ५२ प्राचीनवाहिनी सरस्वती १९ 'प्राचीन साहित्यमां चोरशास्त्र' १४९

९९, १५२, १५३, प्रापुक ९० १६५, १७५, १७७, प्रियग्रन्थसूरि ५, १०६, २१४ १८०, १९५, १९८, प्रो. ल्युमेन १०० २१२, २१७ फल्ही ८, १०६ फल्ही मल्ल ६, ६२, १११,

फलगुमित्र ८४
फलगुरित १५२
बटेश्वर १७८
बनारस २०१
बनास नदी १०६
बनासा १०७
बप्पमिहिस्रि ३६
'बप्पमिहिस्रिचरित' ३६
बर्बर २०४
वलदेव ८६, ८७, १०७,

बल्लभद्र १०७ बल्लभानु ३९, १०७ बल्लभित्र ३८, ३९, १०७, १११ बल्लभित्र-भानुमित्र ६० बल्लराम ७, ५६, ८७, २१४ बलिस्सह ८४ बंग ६८ बंगाल ६८, ७९ बंगाली १३९ 'बंधस्वामित्व' ८५ बंध्दत्त ३ बाण १४७ बापालाल ग. वैद्य ५५ बारमुं गुज. साहित्य-संमेलन ३५ बालतप ८७ बाल्हिक ५२ बाह्बली १७४ बिन्दुसार ४३ विंब १८७ बीरबल १५८ बुद्ध ३१, ५९, ९५, २०२ बुद्धनी मूर्ति ६० बुद्धिसागरसूरि १० 'बुद्धिस्ट इन्डिया ' ३० बुलंदशहर २४ बृहच्चूर्णि १७९ 'बृहत्कथा' ४, १८२, १८३ बौद्धधर्म १९५ 'बृहत् कथ कोरा' ७८, ७२, बौद्ध भिक्ष ६८, १७२

'बहत्कल्पसूत्र' ५७, ५८, ६९, १०६, १२६, १२८, १२९, १८६, २१२, २१३ 'बहःकल्पसूत्र' वृत्ति २७ 'बृहत् संग्रहणि' १३० बृहद् गच्छ ९५ बेटवा नदी १६८, १७**१** बेण्णायड १७१ बेन्नायड १७१ बेस १६८ बेसनगर १६८ बेसली नदी १६८ बोड्डि ३५ बोडी ३५ बोध १२३ बोधिक १०८, १२१, १२३, १३८, १३९, १४१ 'बॉम्बे गेझेटियर' १८० बौद्ध १६४ बौद्धमत १**९**५, १९६

'बृहाकल्प भाष्य' १८२

बौद्ध साधुओ २०५

बौद्ध साहित्य २०८ बौद्ध स्तूप ६० बोद्धाचार्य ५९ बौद्धो ११०, १२०, १२१, १२२, १७१, १९५,

ब्रह्मा ११४, २०७ ब्रह्मद्वीप ५. १८४, १८५ ब्रह्मद्वीपक १८५ ब्रह्मद्वीपक शास्त्रा ५, १०८,१८४ ब्रह्मद्वीपक सिंह ८४. १०८ भक्तपान १३२ 'भगवती' १०, १२८ 'भगवती वृत्ति' ११ 'भगवती सूत्र' ४२, १७९ भगोरथ १७४ भट्टि १०९ महि आचार्य १०६ 'भट्टिकाव्य' १०९ भदंतिमित्र ११० भद्र ८४ भद्रगृप्त ८४ भद्रगृतसूरि १५२ भद्रगुप्ताचार्य २५, १०९, १६३ भद्रबाहु ७५, ८४ भद्रबाह्स्वामी १०१

भद्रयश २०७

भद्रा १६, ३७, १४३

भद्रा शेठाणी २०७

भरत १०५

भरत चक्रवत्ती ३२, १०६

भरकच्छ ६, २६, २७, ३३,

३४, ३८, ४१, ४४,

५५, ५७, ५९, ६०,

६७, ७९, ९६, १०५,

११०, ११६, १६२,

१६५, ११६,

भरुकच्छ आहरणी ६२ भरुयच्छ ११२ भरूच ५५, ६०, १४०, १४३ भल्लोगृह ५७, ११२, ११३,

भल्छकेश्वस ११६ भवदत्त २०२ भवदेव २०२ भवसावना सूत्र¹ २१९ भव्य ९० भंडीर उद्यान ११९ भंडीर यक्ष ७३, १०९, ११९ भंडीर यक्षनी यात्रा ३३ भागवत ७, ११३ भागवत संप्रदाय ११२ भाण १४७ भानु ४९, १९२ भानु राजा १८१ भानुमित्र ३८, ३९, १०७,

भानुश्री ३९ 'भारतीय विद्या ' २२, ७६ 'भारतीय विद्या, ' सिंघी स्मृति ग्रन्थ १८२, १९८

भारकच्छ ११२
भारकुं ११४
भावनगर ५६, २१५
भावना ७७
भावविजयगणि ७२, १६९
भाष्य २०८
भाष्य २०८
भाष्यप्रन्थो १८२
भाष्यप्रन्थो १८२
भाष्यामी ६४
भिक्षाको ७०
भिन्नमार १८०
भिरुमार १६८
भीक्षमार १६८

'भीमप्रिय' १८० मुक्ड ४७ भुवनसुन्दरसूरि १५४ भूतगुहा १२२ भूततडाग २७, ११२, ११५,

मृतदिन ८४

भृतिदाह १६०

भृतिदाह १६०

भृतिस्सर ११४, ११५

भृतिस्सर ११४ ११५

भृतिस्सर ११४ ११५

भृतिस्सर ११४ ११५

भृतिस्सर ११४ ११५

भृतिस्सर ११४, ११६

भृतिस्सर ११४, ११६०

भृतिदाह १६०

भृतिस्सर ११४, ११५

भृतिस्सर ११४, ११४

मणिप्रभ ११७, ११८
मणिलाल म्. भिस्ती १४९
मति १०५
मत्तवाल-सैंखडि १६०
'मत्तविलास प्रहसन! १४८

રેકદ્ 🕽

मत्स्यदेश ११९, १६९
मधुरा १४, १८, ३३, ३५,
४२, ६९, ७३, ८७,
९४, ९७, १०९, ११६,
११९, १२०, १२१,
१२२, १४९, १५०,

'मथुरा मंगू ' ११७ मथुराहार ६३, १२० मदनमंजरी ३ मद्रा १२२, १९२ मधुसदन मोदी २१८ मध्यप्रदेश १६१ मरहदू १३४, १३६ मराठी १३५ मरु १२४ मरुतेल्ल १२७ मरुतैल १२६, १२७ मरुदेव १७४ मरुदेश १२४, १२६ मरुभूमि १२४ मरुमंडल १२५ मरुविषय १२४, १२५ महस्थल ६८, १२४ १२५, मयणल्ला १२५

मयालि ४९ मलधार गच्छ २१४ मलधारी २१४ मलघारी राजशेखरसूरि २१९ मलधारी हेमचंद ९, ६४, ७५, २१९, २२० मलयगिरि ९, ३६, ५८, ९८, ११२, १२७, १२९, १३०, २०९, २१२, २१३, २१५. २१९ मलाड १३१ मलालसेकर १४. ३१ 'मछपुराण ' ८ मछयुद्ध ६, ७, ८ मञ्जविद्या ७, ८. २०७ ' मल्लविनोद ' ८ महिकार्जुन ७६ महाकाल १७, १३२ महागिरि २५, ३२, ८४, १८७ महाजन २०८ ' महातीर्थ शेखेश्वर ' १७४ ' महापरिज्ञा ' अध्ययन र १६४ 🕆 ' महाभारत ' ७, १२३ महाराष्ट्र १४, ६२, ९२, १०१ १३४, १३५, १४१,

सचि]

२०३, २०८ महाराष्ट्री १३४, १५९ महावीर १३, १६, ३१, ३३, मंदसोर ८१ ५०, ८१, ८४, ८७, । मुंज ८९ ९६, १००, १०३, १०४, १०५, १२२, माघ १८० १४२, १७०, १७८ 'महावीरचरित' ९६, २१९ महाचीन ६८ ' महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव प्रन्थ ' ६९ महावीरस्वामी ४४, ६३ महासेन ३१ महास्थल १५ महिरावण ७६ महेन्द्रविक्रमवर्मा १४८ महेन्द्रसिंह ४८ महेश १४३ महेश्वर १४३ मंगल चैःय १२० मंग् ८४ मंडन ११८ ' मंडन प्रन्थसंप्रह ' ११९ मंडपदुर्ग ११८ मंडळ २०३

१५९, १६०, १८७, मिंडिक १४४, १४५ मंत्रशक्ति ९८ मंथनिकाञ्चद्धि २१ मागध १३४. १४१ मात्रक १५३, १८५ माहिस्यक ८ मास्यिक-माछी मछ ६, १०६ मादी ८३ माथुरी वाचना ८३, ९४, १२२ २१० माध्यमिका १३७, १३८ ' मानसोल्लास ' ८ मान्धाता १४३ मारवाड १२४ माल १३९ 'माल' जाति १३९ मालम्मि १३९ मालव २८, ६८, १०८, १२३, १३४, १३८, १३९, १४१, १४२, २०३ मालवक १३८, १४१ मालव जाति २८. १३८ मालव देश १४१

मालव पर्वत १३८ मालव म्लेच्छो १३८ मालव राबरो १३९ मालव स्तेन १३९ मालवो १३९, १४० मालुया कच्छ ३३ 'मालोइ' १४० माहिष्मती ३६, १४३ माहेश्वर १४३, १८० माहेश्वरी २८, १४३ माहेश्वरी नगरी १६४ माळवा १५,८९,१११,११८, १४१, १५५, १६४, १६८, १७१, २०१, २११ मांडण ११८ मांड १०८ मिथिला १४ मिध्यावादी ६९ मुक्तिनिलय १७४ मद्गरीलपुर ४२ मुनशी ३६ मुनि कल्याणविजयजी ६०, ८४, १५५, १६४, १७०, १७९

मुनिचन्द्र ९६ मुनिचन्द्रसूरि २१९ मुनि जयन्तविजयजी ६१,१७४ मुनि धुरंधरविजयजी ७० मुनिश्री पुण्यविजयजी ६९, ९८, १८२ 'मुनि सुव्रतचरित' २१९ मुनि सुत्रतचैत्य ६१ मुनि सुवतस्वामी ५५ मुनि सुव्रतस्वामीनं चैत्य ११० मुरुंडराजा ९८, ९९ मुलतान १४०, २००, २११ 'मुष्टिव्याकरण' १२७, १२८ मंबर्ड १३१, २११ 'मूछ टीका ' ७५, १२९ मूलदेव २८, ११९, १४४, १४५, १४७, १४८, १७१ 'मूलदेवी' १४७ मूल 'प्रथमानुयोग' ४० मूलभद्र १४७ मूलश्री १४७ मूलस्थान २११ मृगवन उद्यान १७० मृगावती २९, १०४, १४३ मेघ २०७

मेघकुमार ४५ 'मेघदूत' १७१ मेवाड ११८, १४९, २१४ मोढेरक १४९ मोढेरकाशर ६३, १४९ मोढेरा ३६, १४९ 'मोढेरा' १४९ मोथ तहेसील ३२ मोहनलाल द. देसाई १८४ मोहेरक १४९ मौर्यवंशी १८६ म्लेच्छ १३४ म्ळेच्छदेश १३८ यक्ष २०३ यक्षनुं मंदिर ५९ यक्षप्जा १९, ९४ यक्षायतन १२०, १२२ यज्ञदत्त ९४ यज्ञयश तापस ९४ यदु १५१ यद्कुळ ९ यमुन १५० यमुना नदी ४९, १०४, १५०, १७८ यवद्वीप २०४ यवन १५०, २०४

यवन विषय ९९ यवनालक १२५ यवनो १२५ यवराजा ६५ यशश्चंद ११ यशोदेवसूरि ९, १५१ यशोधर मुनि ५ यशोधरा २१ यशोभद्र ८४ यंत्रकपोत ५० यंत्रप्रतिमा ९८ यंत्रविद्या ९८ याकिन २१२ याकिनी महत्तरासूनु ७१, ७४, र१२, २१३ यादव १९२ यादवकुळ ९६ यादवो ४९, १७८ यांत्रिक ५० यांत्रिक गरुड ५० युगप्रधान आचार्य ८४, २१७ युगप्रधान पद्दावलीओ १६४ योग २१३ 'योगशास्त्र' २१**९**

योगनी २१
'योनिप्रामृत' शास्त्र १९७
योगंधरायण १५१
रक्तपट २६, १२१
रक्ष ८४
रक्षित २२, २५, ८४, २०७
रक्षितस्रि १५२
रन्नचंद्र १७५
रन्नशेखरस्रि ७४, ८९, १६७,
१३०, १५४, १६८,
१८१, १९५, २१२

रथ ८४ रथनेमि १५४ रथयात्रा १३३, १८७ रथावर्ते गरि ४२, १५५, १६४, १६६

रसिकलाल छो. परीख २१८ राजगच्छ १२

राजगृह २६, २७, ४४, ४५, १०२, १०३, १७१, १७३

राजधन्यपुर ९०, १५५, १७५ 'राजिधंदु' ५५ राजिपंड १८७, २०६ राजपुताना १८३

'राजपूनाने का इतिहास' ३६, २१४ 'राजप्रश्नीय' १२८ थी १३० राजशेखर ३४ राजस्थान ११८ राजिमती २४, ९६, १५४ राज्यवर्धन १६, १००, ११७ राठोड १५६ राध आचार्य ७७, १५६ राधनपुर ९०, १५५, १७५ राम ३७ रामित्रजय पंडित १६९ 'रामायण' १२३ रायचौधरी ९३ 'रावणवभ ' १०९ राष्ट्रकूट १५६ रा ट्रार्धन १६, १००, ११७ रिष्टपुर १४, १५७ रुक्मिणी ८७, ९५ रुद्र ६१, ७१, १०६ रुद्रमहालय १८८ रुद्रसोमा १५२ रुप्यक १३६ स्त्राक १९, ३४, ३५, ८९, 'रूपमंडन' ११८

रूपा नाणुं १८० रेणुका ३७ रेवती नक्षत्र ८४ रैवतक ६६, ८६, ९१, १५७ रैवतक उद्यान ९६, १५४, १९० 'रैवतकल्प '१५७ रोहक १५८, २०१ रोहग्प २०७ स्रक्ष्मणगणि २२० लब्धि ७७ ' लिलतिवस्तरा ' वृत्ति १९६ लवण समुद्र १०६ ' लाइफ इन एन्स्यन्ट इन्डिया ' ३२, १२४, १३६, १६५, १७१, १७९ 'लाइफ ओफ हेमचन्द्राचार्य' २१८ छाक्खाराम ८ लाट २६, ३८, ६०, ६८, १६०, १६२ लाटदेश ६७, १५८, १६१ छाटवासी ४८, १५९, १६० लाटाचार्य १६२ लाडकाणा १५८ हारखाना १५८

लिच्छवी ८७ लिपिकला १७५ ' लीलावई कहा ' १४७ 'लेखपद्रति ' १८१ ' लोकप्रकाश ' १६९ होकप्रचित पद्य २०५ लोच ७० छोहजंघ १११ लौहित्य ८४, १७४ वज्जी ८७ बज् ८४ वज्भृति आचार्य ३४, ९२, १११, १६५, १६६ वज्ञाखा ७३, १६४ वज्सेन ५८, ७२, १६६, १६७, २०७ वज्रवामी ७२, ८०, १४३, १५२, १५४, १५५, १६३ थी **१६६**. १८४, २०७ 'वज्रामी चरित' १६५ वडनगर १८, १९ वढवाण ७८

वत्सदेश ३०, १०४ वत्सराज २१, ३०, १४८, १५१

वनराज ८, १७६
'वन्दारु वृत्ति ' ५८, ८५
वरदातट १६१
वराट विषय १७२
वराहमिहिर १०१
वर्षा १६१
वम्मछात १८०
वर्मछात १८०
वर्षा ६२, ८३, ९४, १०९
१२२, २१०, २१५

वस्त्रभी वाचना ८३, ९४ वस्त्रभी वाचना ८३, ९४ वस्त्रभीवंश १६७ वस्ति १६२, १६५ वसन्तपुर १८५ 'वसन्त रजतमहोत्सव स्मारकग्रंथ'

वसुदेव ८३ 'वसुदेव—चरित' १८२ 'वसुदेव-हिंडी' ४, ५,१४, २६,४०,४१,४९, १७०, १८२, १८३, १८२, १९२, २०४, २०४, २०४, १८३, २०५ १७१, १८३, २०२ वस्मृति १३२ वस्तुपाल २३, ८५, १८१, २२० वस्तुपाल—तेजपाल ६१ 'वस्तुपाल—तेजपाल प्रशस्ति '६१ 'वस्तुपाल-तेजपाल प्रशस्ति '६१ 'वस्तुपाल-तेजपाल प्रशस्ति '६१ 'वस्तुपाल-तेजपाल प्रशस्ति '६१ 'वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो ' १८२ 'वस्तुपालनुं साहित्यमंडळ अने संस्कृत साहित्यमंडळ अने संस्कृत साहित्यमां तेनो

फाळो ' १७७

वळा १६७ वंशकट ४७ वंशकडण १५० वंशकडंग १७ वाचक १८ वाचक पदवी २१६ वाचक विमलहर्ष ७२ वाचनाचार्थ १६३ वाजिय कुल ७३ वाजक नदी १७१ वाद ६८, ६९ 'वादमहार्णव' १२

स्वि]

वादि देवसूरि ५५ वादिवेताल १७६ 'वादिवेताल शान्तिसूरि चरित ' १७५

वानमंतर ११४ वायुयान ५१ वाराणसी ३ वालभी वाचना १६७ वासक्षेप १८५ वासवदत्ता ३०, १०५, १५१,

वासिष्ठीपुत्र पुळुमायी ९३ वासुदेव ७७, ८१, ११३, ११४, १९१

वासुदेव कृष्ण १७३
वासुदेवो ४९, ५६
वास्तुशास्त्र ११८
वास्तुसार '११८
वाहरिगणि १७६
विक्रमराजा १४४
'विक्रमस्मृतिग्रंथ '१७
विक्रमादित्य १४७, १९७
'विक्रम वाल्युम '१९८
विजय २६, ९१, १११
विजयगणि १६९
विजयसंद्रस्रि ५८, ८५

विजयसिंह १७५ विजयसिंहसूरि ७४. १६८ विजयसेनस्रि १७५ विजयानंदसूरि ७२ विट १४४ विदिशा ३२, ६४,७७, १५५, १६१, १६९, १७१ विण्या नदी १७२ विद्याधर ७२, २०७ विनयविजय १६९, २१२ विन्टरनित्स १९८ बिन्ध्य १९ विन्ध्याटवी १९, १४७ विन्यातटपुर १७२ विपाक १० विदुल १४७ 'विपाकसूत्र' १२२, १३७ विबुधचन्द्र मुनि २२० विमलहर्ष वाचक १६९ विमलाचरण लें। २९, २१३ विमलादि १७४ विराटनगर १६९ 'विविध तीर्थक्रल्प' १४, १७, ६१, १५०, १५७, १७३, १७४ 'विशेषचूर्णि' ३३, ४४, ५३, वीरसेन १८, ४९, ८७ भ्र, २०० वीरस्थल १४ वीसलदेव २३ वीसलदेव २३ वीसलप्रिय १८० २२० वृद्ध ८४ प्रिशेषावस्यक भाष्य' बृहद्दृत्ति वृद्धकर व्यंतर ५९. ६५

२१९ विश्वविद्या १६९ 'विषमपद व्याख्या ' १७९

विषम्पद व्याख्या १ १७९
विष्णु ५७, ८४
'विष्णुधर्मोत्तर पुराण ' १०५
वीणावःसराज ३०
वीत भय १३, ३१
वीनभयनगर ४७, ८१
वीतिभय १७०
वीतिभयनगर २००
वीर ७८
वीराणि १५०
वीरानिर्वाण ९४
'वीरानिर्वाण संवत और जैन
कालगणना ' ८४, ८५,

98. 838. 844

वीरमह ९८ वीरमद ९८ वीरमती गगिनी २२० वीरसिंह ३८ वीरसेन १८, ४९, ८७
वीरस्थल १४
वीसलदेव २३
वीसलप्रिय १८०
वृद्ध ८४
वृद्धकर व्यंतर ५९, ६७
वृद्ध तपागच्छ ५८
'वृद्धवादिचिरत' १९८
'वृद्धवादि—सिद्धसेनसूरि प्रबन्ध'
१९८

बृद्धवादी ६४ वृद्धिविजय ७२ 'बृष्णिद्शा' १५७ वेढिन १८ वेणा ५, २०, ७७, १०८, १६८, १७१, १७२,

वेणाकटक ४७
वेणातट २०, ७७, ११९,
१४४, १६८, १७२
वेणातड १७१
वेत्रवती १६८, १७०, १७१
वेदिस णयर १६८
वैकटिक १८६, २०७
वैकिय छन्धि २०२

वैतादच पर्वत १७० विदिशनगर ७७, १६८ वैद्यकशास्त्र ९० वैभार २५ वैराटनगर ११९, १६९ वैशाली ३०, ३१ व्यवहार किया—प्रवर्तक ७८ 'व्यवहार भाष्य' १८२ 'व्यवहार सूत्र' १२८, १३४,

व्यवहारी ७८ व्यंतरगृह १२२ व्यंतरो ५९, ११४ व्याकरणकाव्य १०९ व्याकरणकाव्य १०९ व्याकरति अलंकार १३६ क्षक ३८, ६५ शक-क्षत्रप ९२, ९६, १९४ शक राजा २१८ शक लोको २६ शक्त १०१, १७३ 'शतक' ८५ शतपत्र १०४ शतानीक ३०, १०४ शतंत्रय ८१, ९९, १७४ ' शब्दानुशासन ' १२७, १२८, १२०

शायातर १६२, १६३
शायंभव ८४
शश १४५, १४७
'शस्त्रपरिज्ञा' अध्ययन ६४, ६९
शंखपुर ६, १७३, १७४
'शंखपुर पार्श्वकलप' १७४
शंखेश्वर १७३, १७४
शाकंभरी १८३, १९२
शातकर्णि ६३
शान्तिचन्द्र १५, ११८, १२८,

शान्तिनाथ ९६
'शान्तिनाथचरित' २१९
शान्तिनाथनो भंडार २२०
शान्तिसागर ९७
शान्तिसार ३, ४, ९, १८,
३४, ६२, ६४, १४४,

१७५, १७६, २१६ शान्याचार्य ३० शालीटे काउसे १९७ शालबाहन १९२ शालिभद्र ४४ शालिबाहन १९२ शालिबाहन राजा १९३ शासनदेवी ११ 'शाहि' राजाओ २१८ शांहिल्य ८४ शिल्प ११८ शिव ११४ शिवकोष्ठक ७८ शिवमृति ८४ शिवादेवी ९६, १०१, १५४ शिविराजा १४ ' शिशपालबध रे १८० शिष्यचोरी ८० शीतलनाथ १५७ शीलभदस्रि १७९ शीलाचार्य ११, ३६, ५५, ६४, ६५, ६६, १५६, १७६, १७८, २१५ शीलांक ११, १७६, १७७ शीलांकदेव २१. २०१ शीलांकाचार्य ९ शुक्त ८१ शुक्रराष्ट् ४९ शुद्रोदनसुत ५९ श्रुक्रध्यान ६३ शदक किन १४६ शूरसेना जनपद ११९ शूर्पारक २०८

शैलकपुर ८१, १७८ शैलकराजा ८१, १७८ शोमन ८९ 'शोभनस्तति ' १७८ शौचमूलक प्रवचन ८१ शौरिपुर ९, ३६, ४८, ४९, 98, 848, 848, १७८, २०१, २०३ शौरि राजा ९. ४९ श्रमण ११४ 'श्रमण भगवान महावीर ' १७० १७९ श्रमणपूजा उत्सव १३५ श्रमणोपासक ८१, १७८ 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' ७४. ८५, ८९, ११७, १३०, १५४, १६८, १८१, १८२, १९५, २१२ श्रावस्ती ४६ श्रीकालक-कथासंग्रह ४१ श्रीकृष्ण ४९, ६३, ११४ श्रीगुप्त २०७ श्रीचन्द्रसूरि ९, १५०, १७९, २०९, २१९ श्रीमाल २८, ६८, १४३,

श्रीमालना दम्म १८१ श्रीमालनी टंकशाळा १८१ श्रीमाली वणिक ११८ श्रीस्थल १८१ श्रीहर्ष १८१ श्रुत १२२ श्रुतज्ञान ४० श्रुतधर ६४ श्रुतसागर १७५ श्रेणिक ४४, ४५, १०२,

श्रेणी २०८
श्रेयांसनाथ २०१
स्याम ४०
स्यामाचार्य ८४
स्वेतांवर १७२
स्वेतांवर संप्रदाय ६४
'षट्स्थानक' १०
'षड्सीति' ८५
'षड्दर्शनसमुच्चय' २१३
सकलचन्द्र १८३
सकलचन्द्र वाचक १७५
सचित्त ९०
सत्कार—पुरस्कार परिषह २३
सत्यनेमि १५४
सत्यभामा १९२

'सन्मतितर्क' १२, ६४, ६५, ६९, ७४, १९७ 'सन्मतिप्रकरण' १९८ सपादलक्ष १८३, १९२ सभागृह २०८ समयसुन्दर १८४, २०९ ' समराइच्चकहा ' २१३ 'समवायांग' १० समितसूरि ५ समिताचार्य १८४, २११ समीपनाम ७७ समुद्र ८४ समुद्रगुप्त १९७ समुद्रविजय १०, ८३, ८७, ९६, १५४ सम्यक्त ६९ सरस्वती ८, १९, २६, ३८, ६५, १८८, ३१६ सरस्वतीनो पूर्वाभिमुख प्रबाह 'सरस्वतीपुराण' १८८, १८९ सरस्वतीयात्रा १८८ सर्वज्ञ १७२ सर्वार्थसिद्धि ३३ सहस्रकमल १७४ सहस्रपत्र १७४

सहस्रयोधी मह ५८ सहस्राजुन ३६ सहस्रानीक ३० सह्यपर्वत ५३, १८९ संखडि १५, १९, ४४, १०६,

संखेडा ६१ संघदासगणि ४, ३९, ४०, १८३

संघदासगणि वाचक १८२ संघपालित ८४ संनिवेश २०४ संपिलितभद्र ८४ संप्रति २५, ४७, ५७, १३३, १३४, १८७, २०४,

संमृतिविजय ८४
संवेसना १०९
'संवेगरंगशाला' १०
साकेत २७
सागर ८३
सागरचन्द्र १९०, १९१
सागरअमण ३९
सागरानंदस्रि २२०
साडानव पूर्वा १६४

साडीपचीस आर्यदेशो १५. ४८. ८६, ११९, १६९. १७८, १८७, २०0, 203 सातमी अखिल भारत प्रान्यविद्या परिषद १५ सातमी ओरियेन्टल कोन्फरन्स ३९ सातवाहन ३९, ९३, १८२, १९३, १९४ सातवाहन वंश १९४ साधुदासी ७३ साभरक ८९ सामायिक अध्ययन ७५ सारण ९४ साराभाई नवाब ४१ सार्थमार्गी २७, ११९ सार्थवाह २७. ४४ सालभंजिका २०८ सालवाहन ९१. ९२, १०१. १११, १९२, १९४ सालवाहन वंश ९२ सालवाहन ९३ सावद्य औषध ९० साहसदण्ड २०

साहानुसाहि २१८

सांकेतिक भाषा १४७ सांब ४९, ५६, ८७, १९०, १९१, १९२

सांभर १८३, १९२ सांभरिन छवण १९२ सांभोगिक १३३ सिकंदर १४० सिद्धनागार्जुन ९९ सिद्धपुर १९, १८८ सिद्धराज २१४. २१८ सिद्धराज जयसिंह १९५. २१९ सिद्धि १९५. १९६ 'सिद्धर्षिचरित' १९६ सिद्धसाध १९५ सिद्रसेन ६४, १९७, १९८, २०८. २१३ सिद्धसेनगणि ७४, १९६ सिद्धसेन दिवाकर ६४ 'सिद्धसेन दिवाकर ॲन्ड विक्रमाः दित्य' १९८ 'सिद्धांतसारोद्धार ' सम्यक्त्वोछास

सिद्धि ८५ सिद्धिक्षेत्र १७४ सिद्धिपर्वत १७४ 'सिद्धिविनिश्चय' ६४ सिद्धिशेखर १७४ सिनवल्लि ४७, १९९ सिन्ध १९९, २०० सिन्ध देश १९९ सिन्धवासी १९९ सिन्धु ७९, १५८, १९९ सिन्धु—सोवीर १३, ३१, ४७, ५०, १०३, १७०,

सिप्रा २०१ 'सिलेक्ट इन्स्किप्शन्स' २४. ९३ सिंह ८४ सिंहगिरि ६, ८४, १६३ सिंहगिरि राजा २०७ सिंहपुर ३६ सिंहपुरी २०१ सिंहछ ६८, २०४ सिंहसूरि ६४ सीहोर २०१ सुकोशल मुनि ७१ 'सखावबोधा' १५१ सुदर्शन ८१ सुदर्शन तळाव २५ सदरीन यक्ष ११९ 'सदर्शनाचरित्र' ८५ सुनंदा ८०, १६३

टिप्पन ३३

'सुपार्श्वनाथचरित' २२० सुप्रतिबुद्ध २०७ सुप्रभदेव १८० 'सुबोधिका' १६९ सुभटपाल ५, २१४: सुभद्रा १० सुभूम ३७ सुमति १०५ सुमुख १०७ सुरदू २०६ मुख्द्रा २०३, २०६ सुरप्रिय उद्यान ८० सुरप्रिय यक्ष ८६, १५७ सुरभिपुर ३३ सुराष्ट्र ६, २४, २५, २६, स्रियाम २१ ३८, ४९, ५६, ५८, सूरजपुर १७८ ८६, १०५, १८७, स्रात ५४ २०३, २०४, २०५, सूर्यपुर १७८

सुराष्ट्रा २०५
सुरूप १८१
सुवर्णगुलिका १०३
सुवर्णभूमि ३९, २०४
सुवीर ४९
सुस्थित २०७
सुस्थितदेव १०६

सुस्थित-सुप्रतिबुद्ध ८४, १०६ सुस्थित स्थविर १७४ सुहस्ती १६, २५, ८४ सुंदर ३ सुंदरी ९५, २०१, २०२ सुंदरीनन्द ९५, २०१, २०२ सुंसुमारपुर १०१ 'सूत्रकृतांग चूर्णि' २०३ 'सूत्रकृतांग सूत्र' ९, ११, २१, ३६, ५५, ५६, ७९, १०८, १२१, १७६-१७८, २०१, २१५ सूत्रधार ११८ सूत्रपौरुषी १६२ २१५ सर्यपूजा २११ 'स्वप्रज्ञप्ति ' १२८, १२९ सेकोड वुक्स ऑफ ध इस्ट ३५ सोपारक ६, ५०, ७२, १०६, ११६, १३१, १३७, १६६, १६७, १८५, २०७, २०८ सोपारकवाळा मंगू ११७

स्वि]

सोपारा २०७, २०८
सोम २०७
सोमदेव ८२, १५२
सोमदेव मह १४७
सोमयश ९५
सोमयश ९५
सोमस्ट्रिया २०९, २१०
सोगंधिकानगरी ८१
'सोन्दरानन्द' काव्य ९५, २०२
सौराष्ट्र ६७, ६८, ८८, ९७,
९९, १०५, १३४,
१४१, १६७, १७४,
२०८, २०५, २०९,

सौराष्ट्रका २०९
सौराष्ट्रका २०९
सौराष्ट्रका २०९
सौर्याद्रकी २०९
सौर्याद्रकी २०९
सौर्याद्रकी २०८
सौर्याद्रकेस उद्यान १७८
सौर्वार्यक्र नेमिचन्द्र ९, १५०
सौर्वार ६८, २००, २१०
स्कन्द्र १०६
स्कन्द्र गुप्त १७
स्कन्द्र गुप्त १७
स्कन्द्र गुप्त १७

स्कन्दिल ७८ स्कन्दिलाचार्य ८४, ९४, १२१. २१० 'स्टोरो ऑफ कालक ' ४१ स्तिमित ८३ स्तेयशास १४७ स्तूप ५९, १२०, १२१ स्तंभतीर्थ ७९, १८४ स्थलपत्तन १८, ३५, ९७. ११९ स्थविरावली ४१, ८४, ११६, ११७. १५२ स्थविरो ८१ स्थानकपुर २११ 'स्थानांग' १० 'स्थानांगवृत्ति ' ११ 'स्थानांगसूत्र' १६० स्थूडभद्र ८४, १३२, २०६ स्नपन उद्यान २६. ७० स्नानागार २११ 'स्याद्वादरत्नाकर' ५५ स्वाति ८४ स्वामी समैतभद ६४ हतशत्र ४२ हत्थप २१५

रहर]

हत्थकष २१४, २१५ हित्थकष २१४ 'हम्मीरमदमर्दन' नाटक १८८ हरन्त संनिवेश १८५, २११, २१२ हिरमद ७६, १२९, २१३

हरिभद्र ७६, १२९, २१३ हरिभद्रस्रि ९, १०, ७१, ७४, १२८, १४५, १४६, १४८, १७६, १९५, १९६, २१२

'हरिभद्रसूरिचरित' २१२ 'हरिभद्राचार्यस्य समयनिर्णयः' १९६, २१३

हरियदेवी २१४ 'हरिवंदा' ७ हरिषेणाचार्य ७, ८, १७२ हर्षपुर ५, १०६, २१४ हर्षपुरीय गच्छ २१४ हर्षपुरीय (मलधारी) गच्छ २१९ हस्तकल्प ३६, ५६, २०१, २१५

हस्तवप्र २१५ हस्ति ८४ हस्तिकल्प २१४, २१५ हस्तिनापुर ३६ हस्तिभूति २१६ हाथब ५६: २१५ हाथीगुंफा ५२ हारिल २१७ हारिलवाचक २१६ हाल ९९ हालरडुं ६६, २०१, २१५ हिमवंत ८४ हिमवान ८३ हिमालय १९३ हिन्द्कदेश ३८, २१८ 'हिस्ट्री ओफ इन्डियन लिटरेचर' १४८, १९८ हीरविजयसूरि ९०. १६९ हंडिक १२० हेमचन्द्र १७, ३५, ५५, ७६, १२५, १२७, १२८, १३०, १५२, १६५, १८१, २१८, २१९ ' हेमचन्द्राचार्यचरित ' ७९ हेमचन्द्राचार्य सभा ११९ हैदराबाद ७८ 'हैमसमीक्षा' २१८ Erzahlungen in Maha-

rastri 5